कॉर्नेल वूलरिच के

डर के चार उपन्यास

आँखें जो आपको देखती हैं

जिस रात मैं मरा

तुम मुझे फिर कभी नहीं देखोगे

हत्या हमेशा गति पकड़ती है

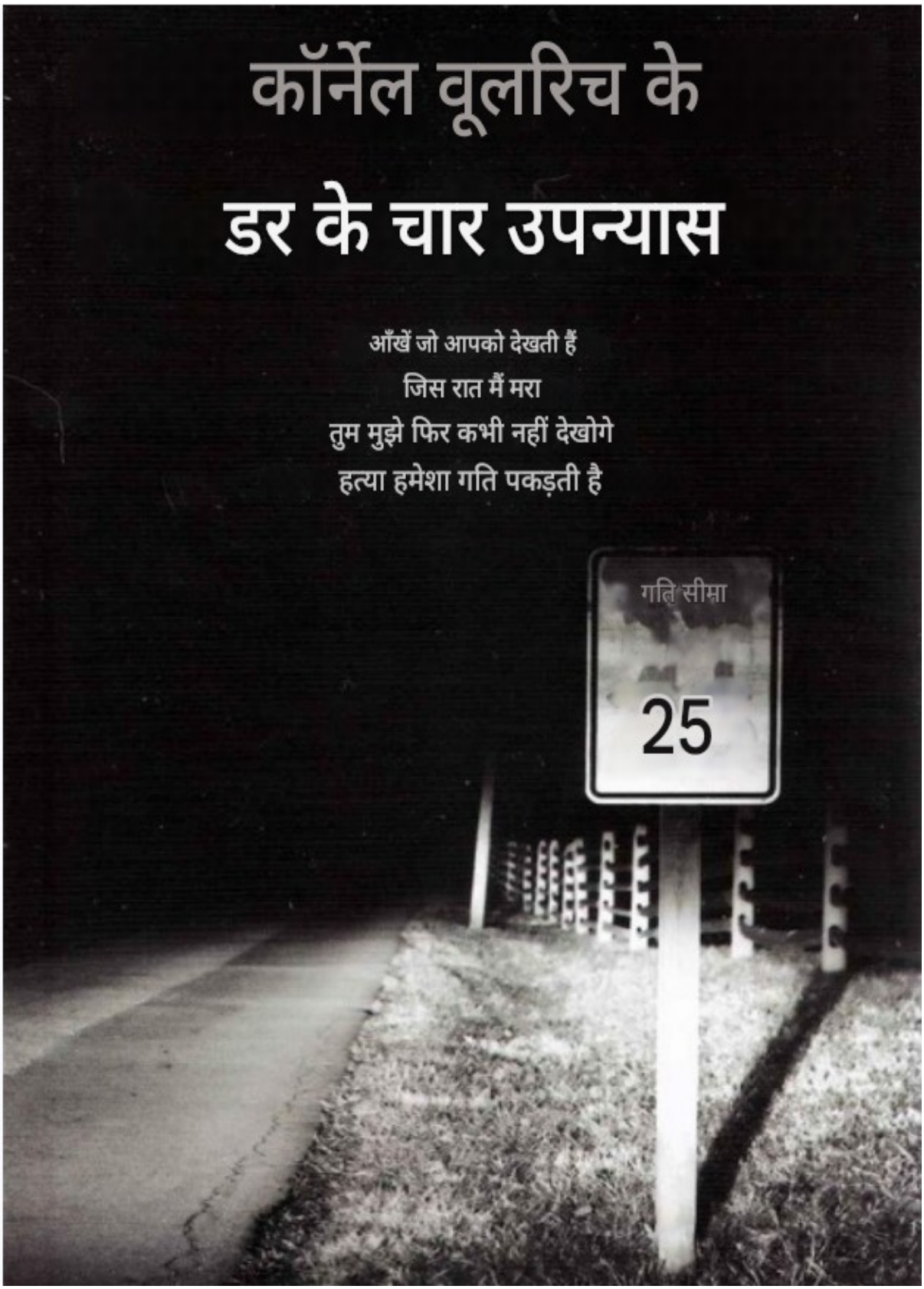

भय की चार लघु उपन्यास
कॉर्नेल वूलरिच द्वारा

अंतर्वस्तु

1. वो आँखें जो आपको देखती हैं
2. जिस रात मेरी मृत्यु हुई
3. तुम मुझे फिर कभी नहीं देखोगे
4. हत्या हमेशा गति पकड़ती है।

“आँखें जो तुम्हें देखती हैं” © 1939 सर्वाधिकार सुरक्षित
मूल रूप से सितंबर 1939 में डाइम डिटेक्टिव में "द केस ऑफ द टॉकिंग आइज" के रूप में प्रकाशित हुआ था।

“द नाइट आई डाइड” © 1936 सर्वाधिकार सुरक्षित
मूल रूप से 8 अगस्त, 1936 को डिटेक्टिव फिक्शन वीकली में प्रकाशित।

“तुम मुझे फिर कभी नहीं देखोगे” © 1939 सर्वाधिकार सुरक्षित
मूल रूप से नवंबर 1939 में डिटेक्टिव स्टोरी में प्रकाशित।

“हत्या हमेशा गति पकड़ती है” © 1940 सर्वाधिकार सुरक्षित
मूल रूप से डिटेक्टिव फिक्शन वीकली में 14 दिसंबर, 1940 को प्रकाशित।

वो आँखें जो तुम्हें देखती हैं

यह घर एक रमणीय दो मंजिला उपनगरीय मकान था, जो अपने भूखंड पर बना था। यह पड़ोसियों से इतना करीब नहीं था कि निजता और एकांत भंग हो, लेकिन इतना दूर भी नहीं था कि अकेलापन या अलगाव महसूस हो। पेड़ों के बीच से और लॉन को अलग करने वाली झाड़ियों के ऊपर से आप चारों ओर के पड़ोसियों की झलक देख सकते थे। आप उनमें से किसी को भी पूरी तरह से नहीं देख सकते थे, और न ही वे घर को पूरी तरह से देख सकते थे।

इसमें एक पीछे का बरामदा और एक आगे का बरामदा था, और आगे और पीछे दोनों तरफ बरामदे के खंभों के चारों ओर बेलदार गुलाब की लताएं लिपटी हुई थीं।

दोपहर का समय था और श्रीमती जेनेट मिलर घर के पिछले बरामदे में अपनी कुर्सी पर बैठी थीं। ऐसा इसलिए था क्योंकि घर का पिछला हिस्सा पश्चिम की ओर था और वहाँ दोपहर की धूप आती थी। सुबह वह सामने वाले बरामदे में बैठती थीं, दोपहर में पिछले बरामदे में। उनके लिए जीवन बहुत पहले ही अपनी मूलभूत आवश्यकताओं तक सिमट चुका था। उन पर गर्म धूप का स्पर्श, ऊपर नीला आकाश, कानों में वर्न मिलर की आवाज़—बस यही चीजें बची थीं, बस यही उनके जीवन का सार था। उन्हें और कुछ नहीं चाहिए था, बस इतना था कि ये चीजें भी उनसे वैसे ही न छीन ली जाएं जैसे बाकी सब कुछ छीन लिया गया था।

वह वहाँ बिना शिकायत किए, संतुष्ट, लगभग—हाँ, लगभग खुश, अपनी रबर के टायरों वाली व्हीलचेयर पर बैठी थी, उसके पैरों और गोद पर कंबल लिपटा हुआ था। उसे धूप महसूस हो रही थी, बरामदे के खंभों के बीच से आसमान दिख रहा था, और जहाँ तक उसकी आवाज़ की बात है, वह थोड़ी देर बाद आएगी—अभी उसके लिए समय नहीं था। कम से कम इतना तो उसके लिए और भी बहुत कुछ था जिसका वह इंतज़ार कर सकती थी।

वह साठ वर्ष की थीं, उनके गाल गुलाबी थे, चेहरा झुर्रियों से रहित था, बाल बर्फ जैसे सफेद थे और आंखें नीली और भरोसेमंद थीं। वह पिछले दस वर्षों से सिर से पैर तक पूरी तरह से लकवाग्रस्त थीं।

ऐसा लगता था मानो बहुत समय बीत गया हो, मानो एक और जन्म बीत गया हो, जब उसने आखिरी बार फर्श पर कदम रखा था, सीढ़ियों पर चढ़ी-उतरी थी, अपने बालों को संवारने के लिए हाथ उठाए थे, अपना चेहरा धोने के लिए हाथ उठाए थे, खाना खाने के लिए मुंह तक पहुंचे थे, या अपने उन विचारों को शब्दों के

माध्यम से व्यक्त किया था जो आज भी उसके मन में उतने ही स्पष्ट और अविचलित थे। अब वह सब कुछ बीत चुका था, चला गया था और किसी को इसका अफसोस नहीं था। उसने खुद को प्रशिक्षित किया था, खुद को मजबूर किया था, खुद को मजबूत बनाया था, ताकि वह इस बात का अफसोस न करे।

कोई नहीं जान पाएगा कि इतना सब हासिल करने में उसे कितनी कीमत चुकानी पड़ी, कोई नहीं जान पाएगा कि उसने किस निजी यातना से गुज़रा था, किस दर्द भरी राह को पार किया था। लेकिन अब वह बाहर आ चुकी थी, उसने अपनी लड़ाई जीत ली थी। उसने अपने बचे हुए हिस्से को थामे रखा। सबसे अज्ञानी और असभ्य लोगों द्वारा पूजे जाने वाले किसी भी राक्षस-देवता में इतनी क्रूरता नहीं हो सकती थी कि वह उसके उस दयनीय बचे हुए हिस्से को भी छीन ले। सूरज, आकाश, वर्न की आवाज़, सब कुछ शेष था। उसने त्याग, स्वीकृति और संतोष प्राप्त कर लिया था। इसलिए वह ढलते सूरज में, लताओं से घिरी गुलाब की बेलों के पीछे, वहाँ बिना हिले-डुले बैठी रही। कुछ मानवीय, कुछ जीवित, जो अपनी खुशी भी चाहता था।

घर के दूसरे छोर पर घंटी बजी, और वर्न की पत्नी वेरा के कदमों की आहट ऊपर की मंजिल से दरवाजा खोलने के लिए सुनाई दी। लेकिन जल्दी से, हड़बड़ी में, मानो वह इस बुलावे का इंतज़ार कर रही हो, मानो उसने ऊपर की किसी खिड़की से देख लिया हो कि कौन है। ज़रूर कोई मेहमान होगा, कोई व्यापारी या फेरीवाला नहीं।

जेनेट मिलर जहां बैठी थी, वहां से उसे सामने का दरवाजा खुलने और फिर तुरंत बंद होने की आवाज सुनाई दी। लेकिन महिलाओं की ओर से अभिवादनों की बौछार नहीं हुई। इसके बजाय एक पुरुष की आवाज, सावधानीपूर्वक धीमी, लेकिन इतनी भी धीमी नहीं कि उसकी उन तीक्ष्ण बुद्धि तक न पहुंच पाए, जिनकी संवेदनशीलता अन्य इंद्रियों के चले जाने के बाद कम होने के बजाय बढ़ गई थी: "क्या आप अकेली हैं?"

और वेरा की आवाज़ ने जवाब दिया: "हाँ। क्या किसी ने आपको अंदर आते देखा?"

वह पहली, भारी, संभली हुई आवाज़, वो आवाज़ नहीं थी, वो वर्न की नहीं थी। इतनी सुबह तो हो ही नहीं सकती थी—अभी एक घंटा या उससे भी ज़्यादा समय बाकी था। तो फिर कौन हो सकता है? एक आदमी—मतलब वो वर्न का कोई दोस्त था। वो उसके सभी दोस्तों को जानती थी और उसने उसे पहचानने की कोशिश की, पर पहचान नहीं पाई। वे लोग कभी इस समय नहीं आते थे। वे सब शहर में व्यस्त थे, जैसे वर्न खुद था।

खैर, उसे एक मिनट में पता चल जाता। वर्न के दोस्तों की एक खासियत यह थी कि वे सब सबसे पहले आकर उससे मिलते, उसका हालचाल पूछते और अक्सर उसके लिए कुछ न कुछ लाते, कोई छोटी-मोटी मिठाई या स्वादिष्ट चीज़। वेरा उसे अपने साथ उससे मिलने ले जाती या फिर उसे व्हीलचेयर पर बिठाकर उसके पास ले जाती। उसे लोगों से मिलना अच्छा लगता था। यह उन तीन ज़रूरी चीज़ों में से एक नहीं थी; यह तो बस एक तरह का लाड़-प्यार था जो वह खुद को देती थी।

लेकिन घर को दो हिस्सों में बांटने वाले गलियारे से होकर उसके पास आने के बजाय, वे बैठक कक्ष में मुड़ गए, और उसने उनके पीछे दरवाजा बंद होने की आवाज सुनी, और उसके बाद कोई और आवाज नहीं आई।

उसे यह बात समझ नहीं आई। वेरा ने पहले कभी मेहमान आने पर इस तरह दरवाजा बंद नहीं किया था। यह शायद उसकी भूल ही गई होगी। उसने बिना सोचे-समझे ऐसा कर दिया होगा। या फिर शायद वेरा या वर्न के लिए कोई छोटा सा सरप्राइज तैयार कर रहे थे और उसे गुप्त रखना चाहते थे। लेकिन वर्न का जन्मदिन तो बहुत पहले ही बीत चुका था और उसका अपना जन्मदिन तो फरवरी में आना था।

वह धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करती रही, लेकिन दरवाजा बंद ही रहा। ऐसा प्रतीत हुआ कि उसकी मुलाकात उस व्यक्ति से नहीं होगी, न ही उसे व्हीलचेयर पर उसके पास ले जाया जाएगा। उसने थोड़ी निराशा के साथ आह भरी।

फिर अचानक, बिना किसी चेतावनी के, वे घर के पिछले हिस्से, रसोई में आ गए। रसोई में एक खिड़की थी जो पीछे के बरामदे की ओर खुलती थी, ठीक उसके बगल में जहाँ वह बैठी थी। वह अपनी आँखों के दूर के कोनों से देखकर कमरे के एक बहुत ही संकरे हिस्से में भी देख सकती थी। बेशक, वह अपनी आँखें घुमा सकती थी।

वेरा पहले अंदर आई, उसके बाद फोन करने वाला आया। उसने रसोई की मेज पर कुछ रखा, फिर कागज़ों की तेज़ आवाज़ के साथ उसे खोलना शुरू किया। ज़ाहिर है, कोई पार्सल था। तो वे किसी सरप्राइज़, किसी तोहफ़े की तैयारी में व्यस्त थे।

उसने वेरा को यह कहते हुए सुना, "तुम्हें यह विचार कहाँ से आया?" उसकी आवाज़ में एक प्रकार की प्रशंसा और सराहना का भाव था।

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया: “मैंने अखबारों में पढ़ा था कि लंदन और पेरिस में इन्हें बांटा जा रहा था, जब उन्हें युद्ध छिड़ने का डर था। मेरा एक परिचित उस समय वहीं था और अपने साथ इनमें से कुछ लेकर आया था। मैंने ये उससे प्राप्त किए।”

“क्या तुम्हें लगता है कि यह काम करेगा?” उसने पूछा।

उन्होंने कहा: "खैर, अब तक जितने भी विचार आए हैं, उनमें से यह सबसे अच्छा विचार है, है ना?"

"इससे बाकी लोगों के बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं चलता," वेरा ने जवाब दिया।

अब तक रैपर खोलने की सरसराहट लगातार सुनाई दे रही थी। आखिरकार वह रुक गई।

कुछ पल की खामोशी छा गई, फिर उसने कहा: "क्या ये अजीबोगरीब दिखने वाली चीजें नहीं हैं?"

उस आदमी ने कहा, "लेकिन इनसे काम चल जाएगा। इनकी शक्ल-सूरत कैसी भी हो, कोई फर्क नहीं पड़ता।"

कागज आखिरी बार चटका, फिर वेरा ने कहा: "तुम दो क्यों लाए हो?"

“एक बुढ़िया के लिए,” उसने जवाब दिया।

जेनेट मिलर के मन में आशा की एक सुखद अनुभूति हुई। उनके पास उसके लिए कुछ था, वे उसे कुछ देने वाले थे, कोई छोटा सा उपहार या स्मृति चिन्ह।

"किसलिए?" वेरा को अधीरता से कहते हुए सुना। "दोनों को एक साथ क्यों नहीं?"

“दिमाग का इस्तेमाल करो,” उस आदमी ने गुर्राते हुए कहा। “यही एक चीज़ है जिससे हम बचना चाहते हैं। वो हमारी सुरक्षा है; समझ नहीं आ रहा? एक तरह से बहाना। जब तक उसे कुछ नहीं होता, तब तक किसी दुर्घटना के लिए काफी है। लेकिन अगर दोनों चले गए तो ऐसा लगेगा कि हम सब कुछ साफ़ करना चाहते थे। अपने ही खिलाफ़ पासा मत पलटो। घर में तीन में से एक के जाने पर तो हम बच सकते हैं। लेकिन तीन में से दो के जाने पर शक होने लगेगा। यह मत भूलो कि तुम उसके साथ एक ही कमरे में हो। वो हॉल के दूसरे छोर पर है। अगर वो चला जाए और तुम, ठीक उसके बगल में, न जाओ तो क्या होगा? और फिर वो भी चली जाए, बिल्कुल बाहर दूसरे कमरे में, जिसके बीच में दो बंद दरवाजे हैं?”

“ठीक है,” वेरा ने अनिच्छा से मान लिया। “लेकिन अगर तुम्हें उसे दिन भर इधर-उधर धकेलना पड़े और मेरी तरह उसकी सेवा करनी पड़े—”

जेनेट मिलर पर पड़ने वाली धूप का रंग बदल गया था। अब वह ठंडी और भयावह लग रही थी। उसे अपने दिल की धड़कन सुनाई दे रही थी, जो उसकी पसलियों से टकरा रही थी, और डर से फूली हुई नाक से उसकी सांसें तेज़ चल रही थीं।

उस आदमी ने आगे कहा: "जब मैं यहाँ हूँ, तो बेहतर होगा कि मैं तुम्हें इसे सही तरीके से पहनना सिखा दूँ, ताकि समय आने पर तुम्हें पता चल जाए कि इसे कैसे पहना जाता है।"

वेरा कुछ कहने लगी, लेकिन उसकी आवाज अस्पष्ट हो गई, मानो उसने अपना सिर किसी थैले में डाल लिया हो।

अचानक वह खिड़की के बहुत करीब आ गई, अनजाने में कमरे के उस संकरे हिस्से में पहुँच गई जहाँ तक जेनेट मिलर की आँखों की पहुँच थी। उसका पूरा सिर गायब हो गया था। अगर लकवाग्रस्त महिला बोल पाती, तो चीख पड़ती। वेरा के पूरे चेहरे पर घोड़े के चारे की थैली जैसी कोई चीज़ बंधी हुई थी। उसमें से एक नोजल निकला हुआ था जो कहीं नज़र से ओझल हो रहा था। आँखों की जगह दो गोल चश्मे जैसी डिस्क थीं।

एक गैस मास्क!

वह कमरे में और पीछे हट गई, फिर से नज़र से ओझल हो गई। उसकी आवाज़ एक बार फिर साफ़ सुनाई दी। उसने उसे उतार दिया होगा। "उफ़! घुटन हो रही है। क्या आपको यकीन है कि यह काम करेगा? मैं खुद कोई जोखिम नहीं लेना चाहती, आप जानती हैं।"

"वे आज रात आपको मिलने वाली चीजों से कहीं ज्यादा बुरी चीजों को सहने के लिए बने हैं।"

“मैं इन्हें कहाँ रखूँगी? मैं नहीं चाहती कि मेरे तैयार होने से पहले ही उसे ये मिल जाएँ। मुझे डर है कि अगर मैं इन्हें अपने साथ कमरे में ले जाऊँगी तो वो—”

जेनेट मिलर ने ओवन का दरवाज़ा खुलने और फिर बंद होने की आवाज़ सुनी। “ये वो जगह है जहाँ वो कभी झाँकेगा भी नहीं। खाना पक चुका है। मैं बस इसे चूल्हे पर गर्म कर लूँगी। वो रसोई में ज़्यादा समय नहीं बिताते। मैं नीचे आकर उनके लिए खाना ले आऊँगी, उनके सो जाने के बाद। अखबार अपने साथ ले जाओ।”

कागज के सरसराने की एक और आवाज, इस बार उसे चिकना करके छोटा-छोटा मोड़ा जा रहा है, ताकि वह किसी की जेब में समा सके।

उस आदमी की आवाज़ आई: “बस हो गया। अब सब ठीक से समझ लिया? दूसरी चीज़ उस बुढ़िया को पहना दो। इस बारे में मुझसे कोई गलती मत करना। अगर तुमने उसे उसके साथ जाने दिया तो हम खुद को बहुत बड़े खतरे में डाल देंगे। अपनी चीज़ पहले से मत पहनना—कहीं वो जागकर तुम्हें पहने हुए देख न ले। जितना हो सके इंतज़ार करो, फिर ही शुरू करो; थोड़ा सा लेने से कोई नुकसान नहीं होगा। याद रखना, बाद में तुम्हें इनहेलेटर टीम से निपटना होगा।”

उनके आने से पहले खिड़कियों के नीचे ठूंसे हुए सारे कागज़ और चिथड़े हटा दो। और जब अलार्म बजाओ, तो फ़ोन पर बात मत करना। तुम्हारी आवाज़ बहुत तेज़ लग सकती है। बस रिसीवर को पटक दो और उसे वैसे ही छोड़ दो; इससे वे आ जाएँगे। थोड़ा ज़्यादा समय लगेगा, लेकिन तुम्हारा क्या नुकसान? तुम दरवाज़े के पास ज़मीन पर बेहोश पड़े हो, बस पहुँच नहीं पाए। लेकिन सबसे ज़रूरी चीज़ है मास्क। अगर बाद में ये यहाँ कहीं मिल गए, तो हम गए काम से। उनके आने से पहले, जब तुम्हें यकीन हो जाए कि वो अपना काम खत्म कर चुका है, तो उसके और अपने मास्क उतार लो और दोनों को कार की पिछली सीट पर, गैरेज में बंद कर दो। उसके जाने के बाद तुम कार का इस्तेमाल नहीं करोगे। तुम्हें तो गाड़ी चलाना भी नहीं आता। एक-दो दिन में एजैक्स गैराज को फ़ोन कर देना—वो मेरा गैरेज है—कि वो आकर कार ले जाएँ, तुमसे ले लें और तुम्हारे लिए बेच दें। मैं उन्हें अपने यहाँ से ले जाऊँगा और जैसे ही मौका मिलेगा, वापस कर दूँगा। मैं कर सकता हूँ। किसी को कभी फर्क पता नहीं चलेगा।

“मैं उसे कितना समय दूँ? मैंने सुना है कि वे लोगों को एक घंटे, कभी-कभी उससे भी अधिक समय तक कड़ी मेहनत कराने के बाद भी बचा लेते हैं। हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि ऐसा न हो।”

“बस यह देख लेना कि वह पर्याप्त ऑक्सीजन सोख ले, वरना यकीन मानो दुनिया भर की ऑक्सीजन भी उसे बचा नहीं पाएगी। उसके चेहरे पर नज़र रखना। जब वह पूरी तरह नीला पड़ जाए, धब्बेदार हो जाए, तो चिंता की कोई बात नहीं। उसके बाद करीब एक महीने तक शांत रहना। उन्हें संपत्ति का निपटारा करने का मौका दे देना। मैं आज रात से लगभग तीस दिन बाद तुम्हें फोन करूंगा। क्या सब कुछ ठीक हो गया है?”

“हाँ। उसका पूरा बीमा है। उसके सारे शेयर मेरे नाम पर खरीदे गए हैं। कारोबार बढ़िया चल रहा है, और दखल देने के लिए कोई और रिश्तेदार भी नहीं है। हम ज़िंदगी भर के लिए निश्चिंत हो जाएँगे, जिमी डार्लिंग। इसीलिए मैंने इसे करने के अलावा किसी और तरीके से करने से मना कर दिया था। कोई और तरीका होता तो उसका कोई मतलब ही नहीं होता।”

“बुढ़िया कहाँ है?” उसने अचानक पूछा।

"पीछे वाले बरामदे में, जहाँ वह हमेशा रहती है।"

“अरे, वो हमारी बातें सुन सकती है, है ना? चलो यहाँ से चलते हैं!”

वह निर्दयता से हंस पड़ी। "मान लो अगर वह ऐसा कर भी दे तो? वह क्या कर सकती है? वह किसे बताएगी? वह बोल नहीं सकती, लिख नहीं सकती, यहां तक कि इशारे भी नहीं कर सकती।"

उन्होंने यह देखने की जहमत तक नहीं उठाई कि वह सो रही है या जाग रही है।

“ठीक है,” ये आखिरी शब्द थे जो उन्होंने कहे। “अब घबराओ मत। बस अपना धैर्य बनाए रखो, सब ठीक हो जाएगा। एक महीने बाद मिलते हैं।” उन्होंने एक दूसरे को चूमा। मौत का खूनी चुंबन।

फिर वे रसोई से निकलकर वापस बैठक में आ गए। उन्होंने बैठक का एक दरवाज़ा खोला और दालान में आ गए। सामने का दरवाज़ा खुला और फिर बंद हो गया और जेनेट मिलर घर में अकेली रह गईं—अपने बेटे की हत्या की संभावित साजिश के बारे में उन्हें पता था।

वर्नोन मिलर एक मिलनसार, सहज, नेक दिल और सीधे-सादे स्वभाव के व्यक्ति थे, ठीक वैसे ही जैसे वेरा जैसी महिलाएं अक्सर उन्हें अपना जीवनसाथी बनाने के लिए आकर्षित करती हैं। वे आसानी से बहकने वाले या भोले-भाले इंसान नहीं थे। व्यापार में वे काफी सतर्क रहते थे, पुरुषों और प्रेम संबंधों की दुनिया में वे जरूरत पड़ने पर कठोर और बेबाक भी हो सकते थे। समस्या यह थी कि वे घर में अपनी सुरक्षा को गलत जगह पर कमज़ोर कर देते थे—घर में वे पूरी तरह से असुरक्षित हो जाते थे।

जेनेट मिलर ने दरवाजे में उसकी चाबी की आवाज सुनी। उसने मानो पूरे घर को "नमस्ते!" कहा। वेरा सीढ़ियों से नीचे आई, और जेनेट मिलर ने उन दोनों को एक-दूसरे को चूमते हुए सुना। एक ऐसा चुंबन जो धोखे जैसा था।

फिर वह उससे मिलने के लिए पीछे के बरामदे में आया, और उसकी त्रिमूर्ति का तीसरा घटक, उसकी आवाज, उसे प्राप्त हुई।

"क्या आपको धूप अच्छी लगी?"

उसकी आंखें।

"क्या मैं तुम्हें अभी अंदर ले जाऊं?"

उसकी भयानक आँखें।

"देखो मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ।"

उसकी आंखें, उसकी भयानक विनती भरी आंखें।

“क्या तुम्हें मेरी याद आई? क्या तुम मेरे वापस आने से खुश हो? इसीलिए तुम मुझे ऐसे देख रही हो?” वह कुर्सी के स्तर तक नीचे बैठ गया और अपने घुटनों पर हाथ रखकर बोला, “तुम मुझे क्या बताना चाह रही हो, जान?”

उसकी आंखें, उसकी उदास आंखें।

“क्या मैं आपके लिए कोशिश करूँ? ना के लिए एक बार पलकें झपकाएँ, हाँ के लिए दो बार।” यह उनके बीच एक पुराना स्थापित सांकेतिक नियम था, उनका एकमात्र संपर्क बिंदु। “क्या आपको भूख लगी है?” नहीं। “क्या आपको ठंड लग रही है?” नहीं। “क्या आप—”

वेरा ने रसोई से आवाज़ लगाई, मानो उसे अंदाज़ा हो गया हो कि जेनेट क्या करने की कोशिश कर रही है: "पूरी रात बाहर मत रहो, वर्न। मैं तुम्हारे लिए पूरी तरह तैयार हूँ।"

उसकी आंखें, उसकी निराशा से भरी आंखें।

वह सीधा खड़ा हुआ, कुर्सी के पीछे छिप गया, उसकी नज़रों से ओझल हो गया, और उसे अपने आगे लिविंग रूम में ले गया। उसे वहाँ एक मिनट के लिए छोड़कर वह ऊपर चला गया।

यहां तक कि उसका एकमात्र हथियार, उसकी आंखों का इस्तेमाल भी कुंद पड़ गया था, क्योंकि उसकी आंखें लगभग हमेशा कमरे में, दरवाजों के अंदर और बाहर, उसका पीछा करती रहती थीं, यहां तक कि उन रातों में भी जब उन्हें कोई भयानक संदेश नहीं देना होता था, तो आज रात उससे अंतर बताने की उम्मीद कैसे की जा सकती थी?

वेरा ने मेज सजाना समाप्त कर लिया। "ठीक है, वर्न," उसने ऊपर से आवाज़ दी।

वह फिर नीचे आया, हाथ अच्छे से धोए हुए थे, उसने उसकी कुर्सी को भोजन कक्ष में ले जाकर वेरा के बगल में मेज पर रख दिया और उनके सामने बैठ गया। वेरा ही हमेशा उसे खाना खिलाती थी।

उसने अपना नैपकिन खोला, नीचे देखा और चम्मच से सूप निकालने लगा।

वेरा ने संक्षिप्त प्रारंभिक चुप्पी तोड़ी। "वह अपना मुंह नहीं खोलेगी।"

वह जेनेट मिलर के कसे हुए दांतों के बीच से चम्मच भर खाना जबरदस्ती खिलाने की कोशिश कर रही थी। जेनेट मिलर के जबड़े की मांसपेशियों में अभी भी इतना ही नियंत्रण बचा था कि वह अपना मुंह बंद कर सके या थोड़ा ढीला कर सके, ताकि खाना खा सके। लेकिन अब उसका मुंह पूरी तरह से बंद था।

उसने उसकी तरफ देखा और उसने पलकें झपकाईं। एक बार, तीन बार। नहीं, नहीं, नहीं।

“क्या आपकी तबीयत ठीक नहीं है? क्या आपको कुछ चाहिए?”

वेरा ने कहा, "वह बस जिद्दीपन दिखा रही है। वह दिन भर बिल्कुल ठीक थी।"

हां, मैं ठीक थी, जेनेट मिलर ने भयावह ढंग से सोचा, जब तक तुमने मेरे बेटे के घर में मौत को नहीं आने दिया।

वह चम्मच को जबरदस्ती अंदर डालने की कोशिश करती रही। जेनेट मिलर ने इसका विरोध किया। चम्मच एक तरफ झुक गई और सूप छलक कर बाहर गिर गया। "अब देखो ये!" उसने चिड़चिड़ेपन से कहा।

“क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें खाना खिलाऊं?” उसने पूछा।

वह पलकें झपकाने का वो तीन बार इशारा करने में इतनी तेज़ी से नहीं कर पाई। हाँ, हाँ, हाँ।

वह उठा और व्हीलचेयर को अपनी व्हीलचेयर के बगल में ले आया।

वेरा ने धीरे से बुदबुदाते हुए अपना खाना खाना शुरू किया और कहा, "तुम यह नौकरी रख लो; मुझे क्या फर्क पड़ता है।"

अब तक सब ठीक था। वह अब उसके बिल्कुल पास थी, और करीब। इतनी नज़दीक होकर भी इतनी दूर। उसकी दयनीय, हताश योजना थी कि पहले उसका ध्यान इस बात पर केंद्रित करे कि कुछ गड़बड़ है, कुछ उसे परेशान कर रहा है, और उसे वहीं रोके रखे। यह सबसे आसान हिस्सा था। एक बार यह हो जाने पर, उसे किसी तरह उसका ध्यान उस ओवन की ओर खींचना था जिसमें दो गैस मास्क छिपे हुए थे। उसे वहाँ जाने के लिए मजबूर करना था, हो सके तो उसे खुद ही खोलने के लिए कहना था। अगर यह भी संभव न हो, तो उसे वेरा को वहाँ जाने और उसे खोलने के लिए मजबूर करने के लिए कहना था।

ऐसी स्थिति में वेरा निस्संदेह उन्हें उनके छिपने की जगह से चुपके से निकालने की कोशिश करेगी, और उसे ऐसा करते हुए देखे बिना उनके लिए कोई दूसरी जगह खोज लेगी। लेकिन वे बड़े और भारी थे, जिन्हें आसानी से छिपाया नहीं जा सकता था। उसके उन्हें खोज निकालने की संभावना बहुत अधिक थी। और अगर उसने उन्हें खोज भी लिया, तो इसकी कोई गारंटी नहीं थी कि वह उनका मतलब समझ पाएगा, यह जान पाएगा कि उनका मतलब उसकी अपनी मौत है। वेरा शायद उसे टालने के लिए कोई बहाना ढूंढ लेगी। लेकिन वह हिम्मत हार सकती है, और कम से कम इससे कुछ समय के लिए ही सही, मौत की सजा टल सकती है। उसे चेतावनी देने के लिए उसके पास शब्द न होने के कारण, जेनेट मिलर के पास इससे ज्यादा कोई उम्मीद नहीं थी।

इसलिए उसने लंबा, घुमावदार और टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता अपनाया, जो उसके लिए खुला एकमात्र रास्ता था, ताकि वह उसका ध्यान गैस ओवन पर केंद्रित कर सके - चूल्हे के ऊपर खुले बर्नर पर तैयार किए गए सभी व्यंजनों को एक-एक करके छूने से इनकार करके।

“वो किसी चीज को छू भी नहीं रही है,” उसने अंत में कहा। उसने चिंता से अपना हाथ उसके माथे पर रखा, यह महसूस करने के लिए कि कहीं उसे बुखार तो नहीं है। उसका माथा पीड़ा से नम था।

"उसकी इतनी परवाह मत करो," वेरा ने झल्लाकर कहा। "इस खाने में कुछ भी खराबी नहीं है।"

“क्या बात है, प्यारे, क्या तुम्हें भूख नहीं लगी?” वह इसी सवाल का इंतज़ार कर रही थी! उसने अनगिनत बार हाँ का इशारा किया था।

“उसे भूख लगी है!” उसने आश्चर्य से कहा।

“तो फिर वह अपने सामने रखा खाना क्यों नहीं खाती?” वेरा ने गुस्से से कहा।

"हो सकता है कि वह कुछ खास चाहती हो।"

दूसरा चरण! काश, यह सिलसिला ऐसे ही चलता रहता। काश, उसे उसे बचाने का मौका मिल जाता...

“मुझे यह पसंद है,” वेरा ने तिरस्कारपूर्वक कहा। वह अब भी उससे सावधान नहीं थी। जेनेट मिलर जानती थी कि जैसे ही ऐसा हुआ, उसकी मुश्किलें दोगुनी हो जाएंगी।

वह कोमलता से उसकी ओर झुका। "क्या तुम कुछ खास चाहती हो, प्रिय? कुछ ऐसा जो उपलब्ध न हो?"

हां, हां, हां, हां, उसकी पीड़ा भरी आवाजें आ रही थीं।

“देखो, मुझे पता था!” उसने विजयी भाव से कहा।

"खैर, उसे यह नहीं मिलने वाला है," वेरा ने झल्लाकर कहा।

उसने उसे फटकार भरी नज़र से देखा। उसने नरमी से, लेकिन दृढ़ता से कहा: "हाँ, वह है।" लेकिन उसका मतलब स्पष्ट था—"क्या आप किसी इतनी बदकिस्मत लड़की को ऐसी छोटी सी चीज़ से वंचित कर देंगे, अगर आपको पता हो कि इससे वह थोड़ी खुश हो जाएगी?"

वेरा को एहसास हुआ कि वह हद से ज़्यादा बोल गई है। उसने अपनी गलती को छुपाने की कोशिश की। "वैसे भी, तुम्हें कैसे पता चलेगा कि यह क्या है?" उसने रूठते हुए पूछा।

उन्होंने थोड़ी रूखेपन से कहा, "मैं इसे अपना काम बना लूंगा।"

जेनेट मिलर के दिमाग में तरह-तरह के विचार दौड़ रहे थे। उस ओवन में कई चीज़ें बनाई जा सकती थीं, लेकिन उनमें से ज़्यादातर, जैसे रोस्ट, पाई वगैरह, बनाना नामुमकिन था, क्योंकि उन्हें बनाने में काफी समय लगता था। ज़रूर कोई ऐसी चीज़ होनी चाहिए जो सिर्फ़ उसी में बन सके और जिसमें बिल्कुल भी समय न लगे। उसमें एक तार की जाली और एक ग्रिल थी। बस! बेकन। वो तो लगभग झटपट बन सकता था और घर में हमेशा रहता भी था।

वह धैर्यपूर्वक व्यंजनों की सूची पर विचार कर रहा था, और छांट-छांट कर सही व्यंजन तक पहुंचने की कोशिश कर रहा था। "क्या आपको क्रोकेट्स चाहिए?" नहीं। "सुकोटाश?" नहीं—

“इस बीच तुम्हारा खाना ठंडा हो रहा है,” वेरा ने व्यंग्य से कहा। आगे क्या होने वाला था, यह सोचकर वह थोड़ी घबराई हुई थी। वैसे तो वह जेनेट के प्रति इतनी निर्दयी नहीं थी। या यूँ कहें कि थी, पर उसने इसे उससे छुपाने की पूरी कोशिश की थी। उसकी माँ ने उसे दिन के समय, जब वह घर पर नहीं होता था, जो कुछ हुआ था, उसकी एक अलग कहानी सुनाई होगी।

उसके पास खाने के नामों की कमी होने लगी; उसके सुझाव धीमे होते गए, मानो रुकने ही वाले थे। डर उसके मन में घर कर गया। उसने आँखें चौड़ी करके उससे विनती की कि वह आगे बोले।

वेरा अनजाने में ही उसकी मदद के लिए आगे आई। "कोई फायदा नहीं, वर्न," उसने चिढ़कर कहा। "क्या तुम पूरी रात ऐसे ही जागते रहोगे?"

उसके अप्रत्यक्ष विरोध ने उसके इरादे को और भी मजबूत कर दिया, उसे और भी प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। "मैं उसे इस मेज से भूखा नहीं जाने दूंगा!" उसने हठपूर्वक कहा और फिर से शुरू किया, इस बार नाश्ते के व्यंजन, क्योंकि रात के खाने के व्यंजन खत्म हो गए थे। "सीरियल?" नहीं। "हैम और अंडे?" नहीं। ओह, वह कितना करीब पहुँच गया था। "बेकन?"

हां, हां, हां, उसकी आंखों से यही आवाज निकली। उसका दिल कृतज्ञता से झूम उठा।

उसने अपनी जीत का जश्न मनाते हुए अपना हाथ मेज पर पटका।

मुझे पता था कि आखिरकार मुझे यह मिल ही जाएगा।

उसकी निगाहें उससे हटकर वेरा पर टिक गईं। उसके चेहरे का रंग उड़ चुका था; वह उसके सामने बिछे मेज़पोश की तरह सफ़ेद था। दोनों औरतें, माँ और पत्नी, भावी रक्षक और भावी हत्यारा, एक-दूसरे को लंबे समय तक देखती रहीं। वेरा की नज़र में था, "तो तुमने हमारी बात सुन ली!" "तो तुम्हें पता चल गया।" और फिर क्रूर, आसानी से समझ में आने वाले तिरस्कार के साथ बोली, "अच्छा, तो उसे बताने की कोशिश करो। उसे बचाने की कोशिश करो।"

उसने उदास स्वर में कहा: "तुमने सुना वो क्या चाहती है, वेरा। तुम वहाँ क्यों बैठी हो? बाहर जाओ और उसके लिए कुछ स्ट्रिप्स भून लो।"

वेरा का चेहरा मानो फँस गया हो। उसने निगलने की कोशिश की, हालाँकि उस समय वह कुछ चबा नहीं रही थी। "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मैंने एक खाना तैयार कर लिया है। मैं बीच में उठकर दूसरा खाना बनाना शुरू नहीं करूँगी! इससे चूल्हा पूरा चिकना हो जाएगा और—और—"

उसने अपना नैपकिन नीचे फेंक दिया। "तो मैं खुद ही बना लूँगा। बेकन तो उन कुछ चीज़ों में से एक है जिन्हें मैं पकाना जानता हूँ।" लेकिन इससे पहले कि वह हिल पाता, वह अपनी कुर्सी से झट से उठ खड़ी हुई और रसोई की ओर जाने वाले बिना दरवाज़े वाले खुले हिस्से की ओर दौड़ पड़ी, मानो वहाँ कुछ जल रहा हो।

"क्या तुम मज़ाक भी नहीं समझ सकते?" उसने भारी स्वर में कहा। "तुम मुझे किस तरह की पत्नी समझते हो? मैं तुम्हें ऐसा करने नहीं दूंगी, खासकर जब तुम दिन भर कड़ी मेहनत कर चुके हो। एक मिनट भी नहीं..."

वह इतना असहाय और बेखबर था—क्योंकि उसे लगा था कि उसने अपने सभी दुश्मनों को दरवाजे के बाहर ही छोड़ दिया है। वह उसकी बातों में आ गया और उसके पीछे मुस्कुराते हुए चला गया।

काश, वो बस देखता रहता, जहाँ बैठा था वहीं से उसे निहारता रहता! वो जहाँ बैठा था वहाँ से उसे ओवन का दरवाज़ा दिख रहा था। वो देख सकता था कि एक मिनट में उसे उसमें से क्या निकालना होगा, यहीं से। लेकिन उसके दिल में कोई शक नहीं था, न ही धोखे का कोई ख्याल। वो फिर से जेनेट की तरफ मुड़ा, उसके चेहरे पर तसल्ली भरी मुस्कान बिखेरी और उसके एक बेजान हाथ को थपथपाया।

आज उसकी निगाहें उस पर नहीं टिकीं। उनकी नज़रें उससे आगे बढ़कर रोशन रसोई की ओर टिकी रहीं। काश, वह भी मुड़कर उनकी ओर देखने लगता!

उसने देखा कि वेरा ने पहले चालाकी से उनकी तरफ देखा, मानो वह अपनी आने वाली हरकत को छिपाने की संभावना तलाश रही हो। फिर वह नीचे झुकी, ओवन का ढक्कन खोला। फिर उसने दोबारा देखा, यह सुनिश्चित करने के लिए कि इस बीच उसके सिर की स्थिति में कोई बदलाव तो नहीं हुआ है। फिर उसने दो भारी-भरकम जैतून-हरे रंग के मास्क को अपने ऊपर दबाया, चुपके से उन्हें लेकर इस तरह मुड़ी कि उसकी पीठ भोजन कक्ष की तरफ हो गई, कमरे के उस पार बगल से सरकती हुई गई और उन्हें एक ऐसे अलमारी में रख दिया जिसका इस्तेमाल कम ही होता था और जिसमें संरक्षित खाद्य पदार्थ रखे जाते थे।

तो यह महज एक बुरा सपना नहीं था। घर में उनके साथ हत्या भी हुई थी। उस संक्षिप्त घटना के दौरान जेनेट मिलर की निगाहें स्थिर नहीं थीं। वे वेरा से उसकी ओर, उससे वेरा की ओर बेचैनी से घूम रही थीं, मानो वह भी उनके पीछे-पीछे उनके भीतर झांकने की कोशिश कर रहा हो।

वह असफल रही। उसने गलत समझा, उसे लगा कि वह बस बेकन के लिए अधीर हो रही है। "तुम्हें अभी एक मिनट में मिल जाएगा," उसने दिलासा दिया, लेकिन वह रसोई में देखे बिना अपना खाना खाता रहा।

आखिरकार वेरा उसे लेकर आई, और उसने जेनेट मिलर को जो मुस्कान दी, वह वैसी मीठी या सहानुभूतिपूर्ण नहीं थी जैसा उसने सोचा था, बल्कि वह एक शातिर औरत की व्यंग्यपूर्ण और क्रूर मुस्कान थी। वह जानती थी कि जेनेट ने देख लिया है कि उसने अभी-अभी अंदर क्या किया है, और वह उसे यह बताने में असमर्थता जताकर उसे चिढ़ा रही थी।

“ये लीजिए,” उसने मधुर स्वर में कहा। “बहुत बढ़िया और कुरकुरा, एकदम सही पका हुआ!”

“धन्यवाद, वेरा।” उस बदकिस्मत आदमी ने कृतज्ञता से उसकी ओर मुस्कुराते हुए देखा।

खाना खत्म होने के बाद, वह अखबार पढ़ने के लिए बैठक में चला गया और उसे भी अपने साथ ले गया। वेरा ने उसे एक गंभीर, लेकिन गर्व भरी नज़र से देखते हुए, बर्तन धोने के लिए रसोई में वापस चली गई।

जब तक वे दोनों अकेले वहाँ बैठे रहे, जेनेट मिलर की निगाहें लगातार उसके चेहरे पर टिकी रहीं, लेकिन उसने उसकी तरफ देखा तक नहीं; वह बाज़ार रिपोर्टों और फ़ुटबॉल के नतीजों में डूबा रहा। काश, उसकी आवाज़ होती—भले ही धीमी, कर्कश फुसफुसाहट ही सही—कितना अच्छा मौका था, उन दोनों का वहाँ अकेले होना! लेकिन अगर उसकी आवाज़ होती भी, तो उसे यह मौका मिलता ही नहीं। शायद उसे शुरू से ही ये सब सुनने की इजाज़त नहीं मिलती।

फिर भी, वेरा बातचीत के किसी भी घुमावदार तरीके, जैसे कि उसने मेज पर उसकी इच्छा जानने के लिए इस्तेमाल किया था, पर भरोसा नहीं करना चाहती थी। दो बार वह बैठक के दरवाजे तक आई, वहाँ खड़ी रही और कुछ पल के लिए अंदर देखती रही, हाथ में एक कपड़ा लिए, किसी न किसी बहाने से।

उसका बदकिस्मत सिर कागज पर झुका रहा, उसे उन उन्मादी निगाहों का कोई एहसास नहीं था जो उसे भेद रही थीं, बिजली के झटकों की तरह उसका ध्यान खींचने की कोशिश कर रही थीं।

वेरा ने अपने बगल में खड़ी असहाय महिला पर एक दुष्ट मुस्कान डाली और संतुष्ट होकर वहीं लौट गई जहाँ से वह आई थी।

समय बहुत कीमती था और बहुत तेजी से बीत रहा था। आखिरकार जब वेरा उनके साथ यहाँ आई, तो वह उस शाम के बाकी समय के लिए उन्हें कभी नहीं छोड़ेगी।

एक पल के लिए उसे महसूस हुआ कि उसकी विनती भरी निगाहें उस पर टिकी हैं, उसने हाथ बढ़ाया और बिना ऊपर देखे ही अनजाने में उसके नसों से भरे हाथ को सहलाया, लेकिन यही एकमात्र मौका था जब

वह उसकी बेखबर निगाहों को भेदने में कामयाब हुई। फुटबॉल का स्कोर, बॉन्ड का कोई उद्धरण, कोई कॉमिक स्ट्रिप, ये सब चीजें उसे मौत की ओर ले जा रही थीं।

आखिरकार वेरा उनके पास आई, उसकी कोट की जेब से एक सिगरेट निकाली और रेडियो चालू कर दिया। उसने ऊपर उसकी ओर देखा और कहा: "ओह, वैसे क्या तुमने गैस कंपनी को फोन करके बाथरूम में लगे उस गर्म पानी के हीटर को देखने के लिए किसी को भेजने को कहा? मैं आज रात नहाना चाहता हूँ।"

जेनेट मिलर के दिल में डर की एक लहर दौड़ गई। तो ये था तरीका! ऊपर वाले बाथरूम में लगा वो खराब वॉटर हीटर। उसने घबराहट में अपनी आँखें बंद कीं, फिर खोलीं। उसे अब तक पता नहीं था कि क्या होने वाला है—बस इतना पता था कि किसी न किसी रूप में गैस से ही कुछ होगा।

वेरा ने बनावटी निराशा जताते हुए उंगलियां चटकाईं। "मैं करना चाहती थी, पर यह बात मेरे दिमाग से बिल्कुल निकल गई!" उसने पश्चाताप भरे लहजे में कहा।

ऐसा नहीं हुआ था। जेनेट मिलर जानती थी। उसने जानबूझकर इसकी रिपोर्ट नहीं की थी। यह उनकी योजना का हिस्सा था, ताकि बाद में यह अधिक स्वाभाविक लगे। एक अपरिहार्य दुर्घटना।

"हम इसे इतने लंबे समय से इस्तेमाल कर रहे हैं, एक बार और इस्तेमाल करने से कोई नुकसान नहीं होगा," उसने आश्वस्त करते हुए कहा।

“मुझे पता है, लेकिन इसे चालू करने पर जिस तरह से रिसाव होता है, वह खतरनाक है। हम सभी किसी न किसी रात इसकी चपेट में आ सकते हैं। अगर यहाँ किसी को कुछ करवाना है तो उसे खुद ही करना होगा,” उसने बड़बड़ाते हुए कहा।

"मैं सुबह उठते ही सबसे पहले उन्हें सूचित कर दूंगी," उसने विनम्रतापूर्वक वादा किया।

लेकिन उसके लिए कोई सुबह नहीं होगी।

कुछ देर बाद उसने बड़ी चतुराई से उसका ध्यान रेडियो पर चल रही किसी चीज़ की ओर दिलाकर विषय से हटा दिया। “क्या तुमने अभी-अभी वो सुना? बहुत बढ़िया था! इसे देखना मत भूलना—मुझे लगता है कि वो दोनों बहुत मज़ेदार हैं।”

रेडियो पर एक चुटकुला। इससे ज्यादा हानिरहित और क्या हो सकता है? फिर भी, यह एक आदमी की जान लेने में सहायक साबित हुआ।

स्टेशन से एक घोषणा आई—“रात दस बजे, पूर्वी मानक समय—”

"हालात सुधर रहे हैं। अगर ये ऐसे ही चलते रहे, तो मुझे लगता है कि हम अगले गर्मियों में वो क्रूज ट्रिप कर पाएंगे।"

नहीं, तुम ऐसा नहीं करोगे, जेनेट मिलर ने भयानक सन्नाटे में उस पर चिल्लाते हुए कहा; आज रात तुम्हारी जान ले ली जाएगी! ओह, मैं तुम्हें अपनी बात क्यों नहीं समझा पा रही हूँ?

स्टेशन की घोषणा फिर सुनाई दी। उसे लगा जैसे पिछली घोषणा सुने हुए बस एक मिनट ही बीता हो। "रात के दस बजकर तीस मिनट, पूर्वी मानक समय—"

उसने आराम से जम्हाई ली। “पता ही नहीं चला और छुट्टियाँ आ गईं। क्रिसमस पर तुम्हें क्या चाहिए?”

"आप मुझे जो कुछ भी देना चाहें," उसने विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा।

उसने मुड़कर जेनेट की ओर देखा, फिर उसे गौर से निहारा। “क्या बात है, प्रिय? अरे, तुम्हारे माथे पर पसीने की बूँदें हैं।” वह पास आया, अपना रुमाल निकाला और धीरे से एक-एक करके उन्हें पोंछ दिया।

लेकिन वेरा ने तुरंत मोर्चा संभाल लिया। अब वह पूरी तरह सतर्क थी। जेनेट को न सिर्फ वेरा से बल्कि अपनी अक्षमता से भी मुकाबला करना था। हालात बेहद मुश्किल थे। "कमरा बहुत तंग है, बस यही बात है। मुझे खुद महसूस हो रहा है..." वेरा ने माथे से पसीना पोंछने का नाटक किया।

उसने झुककर जेनेट के हाथों को छुआ।

लेकिन उसके हाथ इतने ठंडे हैं! ऐसा तो हो ही नहीं सकता—”

“ओह, अच्छा—” वेरा ने चतुराई से अपनी नज़रें झुका लीं। “उसकी रक्त वाहिका, तुम्हें पता है ना,” उसने धीमी आवाज़ में कहा, मानो लकवाग्रस्त व्यक्ति की भावनाओं को ठेस न पहुँचाने की कोशिश कर रही हो।

उसने संतुष्टि से सिर हिलाया।

जेनेट की निगाहें उस पर टिकी हुई थीं। मेरी बात सुनो! तुम मेरी बात क्यों नहीं सुन पा रहे! मैं तुम्हें जो समझाने की इतनी कोशिश कर रही हूँ, उसे तुम क्यों नहीं समझ पा रहे!

वह उठा, अंगड़ाई ली। “मुझे लगता है मैं ऊपर जाकर उस चीज़ को जलाऊंगा, नहाने की तैयारी करूंगा और सो जाऊंगा। मेरा दिन बहुत कठिन था।”

“मुझे लगता है कि हम सबको ऊपर ही चलना चाहिए,” वेरा ने नरमी से कहा। “अब से सभी स्टेशनों पर सिर्फ़ स्विंग संगीत ही बज रहा है और यह उबाऊ हो जाता है।” डायल की लाइट अचानक बुझ गई। इस तरह के एक साधारण, रोज़मर्रा के, घरेलू माहौल में हत्या की तैयारी शुरू हुई।

उसने जेनेट को सावधानी से अपनी बाहों में उठाया और उसे लेकर सीढ़ियों की ओर चल पड़ा। उसकी कुर्सी हमेशा नीचे ही रहती थी। रात में उसे ऊपर ले जाना बहुत मुश्किल था क्योंकि वह बहुत भारी थी।

वह अनमने ढंग से सोच रही थी, जबकि उसके नीचे बिछी बिना कालीन वाली ओक की सीढ़ियाँ एक-एक करके टिक-टिक कर रही थीं, "सुबह मुझे नीचे कौन ले जाएगा? ओह, मेरे बेटे, मेरे बेटे, तब तुम कहाँ मिलोगे?"

सीढ़ियों पर उनके चेहरे पहले से कहीं ज़्यादा करीब थे। उसके जमे हुए होंठ उसकी ओर खिंचे चले आए, मानो उसे चूमना चाहते हों। उसने मज़ाकिया अंदाज़ में कहा, "इतनी ज़ोर से साँस क्यों ले रही हो? सारा काम तो मैं कर रहा हूँ।"

वह उसे उठाकर उसके कमरे में ले गया, बिस्तर पर लिटाया, वादा किया, "मैं एक मिनट में तुम्हें शुभ रात्रि कहने आऊंगा," और अपने नहाने के लिए पानी गर्म करने के लिए बाहर चला गया।

वेरा ही हमेशा उसे सोने के लिए तैयार करती थी।

उसे पूरी तरह से कपड़े उतारने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी, क्योंकि अब वह आम कपड़े नहीं पहनती थी, बल्कि सिर्फ़ एक गर्म ऊनी बाथरोब और फेल्ट की चप्पलें पहनती थी। बस इन्हें उतारना और अपने ऊपर चादरें ठीक करना ही काफ़ी था।

वेरा अंदर आई और इतनी रहस्यमयी, इतनी सहजता से काम में जुट गई मानो उन्हें आज रात जो होने वाला था, उसकी कोई जानकारी ही न हो। उसके ऊपर झुकी हुई यह औरत किसी हत्यारिन से भी बदतर थी। वह एक राक्षस थी, बिल्कुल भी इंसान नहीं। जेनेट की आँखें उससे विनती कर रही थीं, मानो उससे कह रही हों: "ऐसा मत करो; उसे मुझसे मत छीनो।" यह व्यर्थ था; पत्थर से विनती करने जैसा था। वहाँ दो ऐसी प्रबल भावनाएँ थीं जिन्हें रोका या काबू नहीं किया जा सकता था—किसी दूसरे पुरुष के प्रति जुनून और लालच। दया की कोई गुंजाइश ही नहीं थी।

वह अब बाथरूम में था। गैस जलने की हल्की सी आवाज आई। वेरा ने जेनेट को बिस्तर पर लिटाया ही था कि उसने अंदर आकर कहा, “हे वेरा! क्या इसे जलाना ठीक रहेगा? इसमें ज़रूर कोई बड़ा रिसाव है। हवा लगने से लौ नीली से ज़्यादा सफेद दिख रही है!” गर्म पानी के हीटर से हल्की लेकिन साफ आवाज आ रही थी। हालांकि, यह उसके खराब होने का संकेत नहीं था, बल्कि उसके इस्तेमाल के दौरान आने वाली एक सामान्य आवाज थी।

“बिल्कुल ठीक है,” वेरा ने बिना झिझक जवाब दिया। “इतने डरपोक मत बनो! आज रात नहाने में देरी मत करो। तुम सुबह हमेशा बहुत जल्दी में रहते हो, और फिर मुझसे झगड़ा भी करोगे!”

जेनेट के बेडरूम में एक तीखी चेतावनी की हल्की सी आवाज़ आई, जो उसकी नाक पर एक ही झटके के साथ गायब हो गई। वेरा अपने कपड़े उतारने के लिए बेडरूम में गई थी। वह बाथरोब और चप्पल पहने जेनेट के पास आया, और वह इतना जवान, इतना चुस्त-दुरुस्त लग रहा था—इतनी जल्दी मौत! उसने कहा: "अब मैं तुम्हें शुभ रात्रि कहता हूँ, प्रिय। तुम थक गई होगी और सोना चाहती होगी।"

फिर जब वह उसके माथे पर चुंबन लेने के लिए झुका, तो उसने कुछ देखा और अचानक रुक गया। उसने अपना इरादा बदल दिया और बिस्तर के किनारे बैठ गया, उसे लगातार देखता रहा। "वेरा," उसने पीछे मुड़कर पुकारा, "एक मिनट के लिए अंदर आ जाओ।"

वह हत्यारिन गुलाबी साटन और झागदार लेस में, विनाश की परी की तरह आई, और चांदी की परत वाले ब्रश से अपने खुले बालों को सहला रही थी।

“अब क्या है?” उसने थोड़ा घबराते हुए कहा।

“वेरा, उसे कोई बात परेशान कर रही है। हमें पता लगाना होगा कि क्या बात है। देखो, उसकी आँखों में आँसू हैं। देखो, वह बड़ा सा आँसू उसके गालों पर बह रहा है?”

वेरा का चेहरा डर से थोड़ा तनावग्रस्त था। उसने सहानुभूति और चिंता का भाव दिखाने की कोशिश की, लेकिन आगे की पूछताछ को रोकने के लिए उसके पास एक तैयार जवाब था। "खैर, वर्न," उसने धीमी आवाज़ में, उसके कान के पास कहा, मानो जेनेट को सुनने से रोकना चाहती हो, "यह स्वाभाविक है कि उसे

कभी-कभी ऐसा महसूस हो। उसके पास ऐसा महसूस करने का पूरा कारण है। यह मत भूलो, हम उसके साथ जो हुआ है, उसके आदी हो चुके हैं, लेकिन यह बात उसे बार-बार याद आती होगी।" उसने उसके कंधे पर प्यार से थपथपाया। "बस यही बात है," उसने फुसफुसाते हुए कहा।

वह कुछ हद तक आश्वस्त था, लेकिन पूरी तरह नहीं। “लेकिन बाकी रातों में वह इतना परेशान नहीं होती। तो आज रात क्यों होगी? आज रात जब से मैं घर आया हूँ, वह मुझे घूर रही है। मुझे कई बार अजीब सा एहसास होता है कि वह मुझे कुछ बताने की कोशिश कर रही है...”

अब वेरा के चेहरे की पीली रंगत में कोई संदेह नहीं था, लेकिन इसे आसानी से बीमार व्यक्ति के कल्याण के प्रति चिंता, या अपने पति की चिंता में एक पत्नी के रूप में उसकी भागीदारी के रूप में माना जा सकता था।

उन्होंने कहा, "मुझे लगता है मैं थोड़ी देर उसके साथ बैठूंगा।"

हां, मेरे साथ यहीं रहो, बिस्तर पर लेटी महिला ने विनती करते हुए कहा, यहीं रहो, जागते रहो, और तुम्हें कुछ नहीं होगा।

वेरा ने स्नेहपूर्वक उसके कंधों पर हाथ रखा और धीरे से उसे उठाकर खड़ा किया। “नहीं, तुम अंदर जाओ और नहा लो। पानी अब गर्म होगा। मैं उसके साथ बैठूंगी। सुबह तक वह ठीक हो जाएगी, तुम देख लेना।”

लेकिन वह नहीं करेगा, मेरा बेटा नहीं करेगा।

वेरा ने सहानुभूति जताने के इरादे से मुंह बनाया, जब वह मुड़कर कमरे से बाहर चला गया। "वह बस थोड़ी उदास है, बस इतना ही।"

वह खिड़की के पास गई और कमरे की ओर पीठ करके बाहर देखने लगी। बिस्तर पर लेटी उन इल्ज़ाम भरी निगाहों का सामना करना उसके लिए असहनीय था। बाथरूम के दरवाज़े से पानी के छींटे पड़ने की हल्की सी आवाज़ आई और फिर थोड़ी देर बाद वह बाहर आया।

"क्या तुमने वह चीज़ बंद कर दी है?" वेरा ने चेतावनी भरे लहजे में उससे पूछा। यह चेतावनी बचाने के लिए नहीं थी, और न ही बचा सकती थी।

“हाँ,” उसने तौलिए की तहों के बीच से कहा, “लेकिन गैस की गंध साफ़ महसूस हो रही है। हमें कल सुबह सबसे पहले इसे ठीक करवाना होगा। मैं अब और इसके साथ अंदर बंद नहीं रह सकता। माँ कैसी हैं?”

“चुप रहो! मैंने उसे सुला दिया है। नहीं, अंदर मत जाओ, तुम उसे जगा दोगे।” उसने हाथ बढ़ाकर धोखे से बत्ती बुझा दी।

नहीं! कम से कम मुझे उससे अलविदा तो कह देने दो! अगर मैं उसे बचा नहीं सकती, तो कम से कम तुम्हारे सामने उसे एक बार और देखने दो—

दरवाजा धीरे-धीरे, निर्दयता से बंद हो गया, उसका रास्ता रोक दिया। मदद करो! मदद करो! उसके विचारों का पागलपन भरा भंवर दौड़ रहा था।

कुछ देर तक दीवार के पार से उनकी दो गुनगुनी आवाज़ें धीमी-धीमी सुनाई देती रहीं। फिर खिड़की का एक चौखट ऊपर उठा। उसके बाद उनकी तरफ़ लाइट का स्विच बंद होने की हल्की सी आवाज़ आई। ऐसा लग रहा था मानो वह कागज़ जैसी पतली दीवार के पार से सब कुछ सुन सकती हो। यहाँ तक कि वह भी उससे नहीं बच पाई। उसके चेहरे से पसीना बह रहा था, हालाँकि उसकी खुली खिड़की से ठंडी ताज़ी रात की हवा अंदर आ रही थी।

सन्नाटा। वो सन्नाटा जो घात लगाकर बैठा था, मानो कोई जानवर झपटने के लिए तैयार हो। वो सन्नाटा जो ढोल की तरह बज रहा था, धड़क रहा था। वो सन्नाटा जो अंतहीन था, और इतना लंबा था कि मानो आशा को जन्म दे रहा हो।

फिर अंदर से एक बहुत ही हल्की सी आवाज आई, जो मुश्किल से ही पहचानी जा सकती थी—खिड़की के चौखट के नीचे तक सरकने की आवाज, जिससे कमरा पूरी तरह से बंद हो गया।

उसका अपना दरवाज़ा धीरे से खुला, और एक प्रेत जैसी सफ़ेद पोशाक पहने आकृति चुपचाप दीवार के सहारे सरकती हुई गुज़री, उसने अंदर की खिड़की नीचे की और उसके फ्रेम के चारों ओर कपड़े ठूंस दिए। उसने शायद काफ़ी देर से वॉटर हीटर चालू रखा होगा—लेकिन इस बार जलाया नहीं था। उसके पीछे से जलने वाली गैस की तेज़, तीखी और कर्कश गंध अंदर आई, जो क्षण भर के लिए और भी तेज़ हो गई। वह फिर से बाहर निकल गई, मौत के अपने मिशन पर।

नीचे सीढ़ियों में से एक पायदान उसके गुजरने पर हल्की सी चरमराहट की आवाज हुई। ओवन का दरवाजा खुलने पर हल्की सी घिसने की आवाज भी सन्नाटे में जेनेट मिलर के कानों तक पहुंची। बर्तन धोते समय उसने शायद उन्हें वापस ओवन में रख दिया होगा।

गंध और भी तीव्र हो गई। जेनेट मिलर को अपने कानों में एक भनभनाहट सुनाई देने लगी, पहले दूर से आती हुई, फिर धीरे-धीरे पास आती हुई, मानो कोई ट्रेन किसी लंबी गूंजती सुरंग से तेज़ी से गुज़र रही हो। दीवार के दूसरी तरफ, वह खांसा, नींद में हल्की सी कराह भरी। नींद जो मौत में बदल रही थी। उस पर इसका असर और भी बुरा हो रहा होगा। वह स्नानघर के पास था, विनाश के स्रोत के पास।

वह आकृति फिर से जेनेट के कमरे में आ गई। अब वह हल्की नीली दिख रही थी, सफेद नहीं, गैस के अपवर्तन के कारण। जेनेट मिलर को पेट में अजीब सी बेचैनी होने लगी। उसके कानों में गड़गड़ाहट गूंज रही थी। मानो कोई ट्रेन उसके दिमाग में एक तरफ से अंदर आकर दूसरी तरफ निकल रही हो—और कमरा उसके चारों ओर हिल रहा था।

उसे तकिये से खींचकर उठा लिया गया, मानो मीलों दूर से कोई आवाज़ आई हो, "लगता है तुमने उन्हें बेवकूफ बनाने के लिए काफी कुछ कर लिया है," और उसके सिर पर कुछ गिर पड़ा। अचानक वह फिर से शुद्ध, मीठी हवा में सांस ले सकी। गर्जना कुछ देर तक स्थिर रही, फिर धीरे-धीरे कम होने लगी, मानो ट्रेन अब उल्टी दिशा में जा रही हो। अंत में वह शांत हो गई। नीला धुंधलापन भी गायब हो गया।

मेरे बेटे! मेरे बेटे!

दो गोल चश्मों से उसने देखा कि भोर की रोशनी अजीब तरह से उसके आसपास के कमरे में छनकर आ रही है। थोड़ी देर बाद उनके सामने एक लड़खड़ाती हुई आकृति प्रकट हुई, एक हाथ दीवार का सहारा लिए आगे बढ़ाए हुए वह आगे बढ़ रही थी। वेरा इसलिए नहीं लड़खड़ा रही थी क्योंकि जेनेट मिलर की दृष्टि अब खराब हो गई थी, बल्कि इसलिए कि वायुरोधी कमरों में जमा गैस की मात्रा उस पर असर डालने लगी थी, यहाँ तक कि अपना मास्क उतारने के कुछ ही समय बाद। उसने मास्क की जगह अपने मुँह पर एक गीला रुमाल दबा रखा था और स्पष्ट रूप से अपनी साँस रोकने की कोशिश कर रही थी।

उसमें इतनी समझदारी थी कि वह पहले खिड़की के पास गई, कपड़े के टुकड़े हटाए, उसे नीचे से थोड़ा सा खोला और फिर बिस्तर पर वापस आकर जेनेट को बिठाया और बड़ी मुश्किल से उसका मुखौटा उतार दिया।

जेनेट के कानों में फिर से भनभनाहट शुरू हो गई, ट्रेन उसकी ओर वापस आ रही थी।

वेरा रूमाल में घुट रही थी। "जब तक मैं वापस न आ जाऊं, तब तक अपनी सांस रोके रखो," वह सिसकते हुए बोली। "मैं यह तुम्हारी भलाई के लिए कह रही हूं।" वह मास्क को उसके नोजल से पकड़कर घसीटती हुई लड़खड़ाती हुई कमरे से बाहर निकल गई।

जेनेट मिलर को सीढ़ियों से नीचे उतरते समय उसके चलने की बजाय लड़खड़ाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। घर के बिल्कुल पीछे का एक दरवाज़ा खुला और खुला ही रहा।

कुछ देर तक भिनभिनाहट बढ़ती रही, लेकिन फिर खुली खिड़की से आती हुई स्वच्छ हवा ने उसे शांत कर दिया। हालांकि, गलियारे के दूसरी ओर स्थित बाथरूम में लगे हीटर से अभी भी गैस निकल रही होगी।

उसने अभी कहा था, "जितनी देर हो सके अपनी सांस रोक लो।" लेकिन यही जीने का तरीका था। जेनेट मिलर ने सोचा, "वह चला गया। अब तक तो चला ही गया होगा, वरना वह मेरा मुखौटा उतारने के लिए यहाँ नहीं आती। शायद मैं भी उसके साथ जा सकती हूँ, अभी मेरे लिए यही सबसे अच्छा है।" उसने गहरी-गहरी सांसें लेना शुरू किया, लालच से सारी जहरीली हवा अंदर खींची, उसे अपने फेफड़ों में रोक लिया। जैसे किसी दंत चिकित्सक की कुर्सी पर जानबूझकर बेहोश हो जाना, जब वे आपकी सांसों की गिनती करते हैं।

भनभनाहट फिर से उसकी ओर बढ़ने लगी, एक गहरी गर्जना में बदल गई। कमरा एक गहरे नीले रंग के फिरकी की तरह तेज़ी से घूमने लगा, जिसके किनारे घूमते-घूमते तेज़ी से अंधेरे होते जा रहे थे।

“हम उन्हें बेवकूफ बना देंगे, वर्न, हम साथ चलेंगे,” उसने धुंधले मन से सोचा। अंधेरा अब फिरकी के केंद्र तक पहुँच चुका था; उसके ठीक बीच में नीले रंग का एक छोटा सा बिंदु ही बचा था। कहीं दूर कांच की झंकार सुनाई दे रही थी, लेकिन उससे उसका कोई लेना-देना नहीं था।

नीले रंग का वह छोटा सा बिंदु गायब हो गया और कुछ भी नहीं बचा।

उसे बहुत प्यास लगी थी और वह लगातार हवा पी रही थी। कितनी मीठी हवा! हवा उस पर बरस रही थी और उसका मन नहीं भर रहा था। उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वह एक बड़े तंबू के अंदर थी, कुछ वैसा ही, लेकिन उसे कुछ आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। फिर अचानक तेज़ रोशनी चमकी और मीठी हवा का प्रवाह एक मिनट के लिए रुक गया। फिर हल्की सी अंधेरा छा गया और हवा का प्रवाह फिर से शुरू हो गया।

वह ठीक हो रही है। वह ठीक हो जाएगी।

“अद्भुत है ना? आप सोचेंगे कि उसकी हालत में कोई भी व्यक्ति बस इसकी एक हल्की सी खुशबू से भी न घबराए तो क्या कहेगा—”

प्रकाश की चमक बार-बार दोहराई गई। फिर से, और बार-बार, हर बार तेज़ होती गई, जैसे कोई फिल्म झिलमिला रही हो, और अचानक वह चमक हमेशा के लिए रुक गई, अंधेरा गायब हो गया, और उसकी आँखें खुल गईं।

वह बुरी तरह बीमार थी और हालांकि उसे लगा कि यह एक बुरी बात है, लेकिन उसके आसपास के सभी लोगों के चेहरे उत्साह से भरे हुए थे और वे सिर हिला रहे थे, मानो यह एक बहुत अच्छी बात हो।

“अब वह ठीक है। चिंता की कोई बात नहीं है।”

"बाकी दोनों कैसे हैं?" किसी ने अंदर से दूसरे कमरे में आवाज़ लगाई।

किसी अदृश्य व्यक्ति की आवाज़ ने जवाब दिया, "पत्नी ठीक है। पति की मृत्यु हो गई है।"

उन्होंने उसे उठाया—शायद वह स्ट्रेचर पर थी—और उसे बाहर ले जाने लगे। कमरे से निकलने से ठीक पहले, घर के अंदर कहीं से एक भयानक चीख सुनाई दी। “नहीं, नहीं, रुको मत! उसे वापस लाओ! तुम्हें लाना ही होगा! ओह, काश यह मैं होती? यह उसी के साथ क्यों होना था?”

वे जेनेट मिलर को बाहर ले गए और उसे एक कार की पिछली सीट पर बिठा दिया, और उसके बाद उसे चीखने-चिल्लाने की कोई आवाज नहीं सुनाई दी।

एक पीली पड़ी, शोकग्रस्त आकृति नर्स के साथ कमरे में आई। विधवा के वस्त्रों में वेरा को पहचानना मुश्किल था। यह दो दिन बाद की बात है।

“अब आप घर जा रही हैं, प्यारी,” नर्स ने जेनेट मिलर से खुशी-खुशी कहा। “आपकी बहू आपको अपने साथ ले जाने आई हैं।”

जेनेट मिलर ने अपनी आँखें झपकाईं। नहीं, नहीं, नहीं। कोई फायदा नहीं था। वे उस पुराने सांकेतिक भाषा को नहीं जानते थे जो उसने और वर्न ने इस्तेमाल की थी।

“क्या आप इसे संभाल सकती हैं?” नर्स ने वेरा से पूछा।

“मेरी एक दोस्त नीचे कार लेकर इंतजार कर रही है। अगर आप किसी को व्हीलचेयर नीचे भेजने के लिए कह दें, तो हम उसे सीधे कार में अपने साथ ले जा सकते हैं।”

उसे लिफ्ट से नीचे ले जाया गया, उसकी पलकें अब भी बेजान सी झपक रही थीं, वार्ड बॉय उसे अस्पताल के प्रवेश द्वार तक ले गया, और वहाँ खड़ी एक सेडान कार से एक आदमी उतरा। इस तरह उसने पहली बार अपने बेटे के दूसरे हत्यारे को देखा।

वह वर्न से लंबा और अधिक सुंदर था, बहुत अधिक सुंदर, लेकिन उसका चेहरा कमजोर था, उसमें उतना व्यक्तित्व नहीं था - उस तरह का व्यक्तित्व जिसके लिए इस दुनिया की वेरा जैसी महिलाएं नरक में जाती हैं।

उसने और सहायक ने उसे कुर्सी से उठाया और कार की आगे वाली सीट पर बिठा दिया। फिर कुर्सी को पीछे की तरफ बाहर बांध दिया गया। वह इतनी बड़ी थी कि कार के अंदर नहीं जा सकती थी।

वेरा उसके बगल में बैठ गई—अब वह उन दोनों के बीच में थी—और वे अस्पताल से निकल गईं। ज़ाहिर है, उसे इतने समय तक वहाँ गैस की वजह से नहीं रखा गया था, बल्कि इसलिए रखा गया था ताकि वेरा के "शोक" के शुरुआती, गंभीर चरणों के दौरान उसकी ठीक से देखभाल की जा सके।

"उसमें तो बहुत पैसा खर्च हुआ!" अस्पताल के पीछे छूटते ही वेरा ने गुस्से से कहा।

“वैसे तो यह अच्छा दिख रहा था, है ना?” उसने बहस की। “खैर, छोड़ो भी। अब हमारे पास इसकी कोई कमी नहीं है, है ना?”

"ठीक है, लेकिन उस पर पैसा क्यों बर्बाद करें? हम क्या करेंगे, क्या अब से वह हमारे गले का बोझ बनकर रहेगी?"

उन दोनों के कंधे उसके कंधों से सटे हुए थे, एक-एक तरफ, फिर भी वे आपस में ऐसे बात कर रहे थे मानो वह पांच मील दूर हो, उसकी बेबसी पर जरा भी दया न दिखाते हुए।

“वह हमारी सुरक्षा है। मुझे कितनी बार यह बताना पड़ेगा? जब तक वह हमारे साथ, एक ही छत के नीचे, हमारी देखरेख में रहेगी, तब तक कोई कानाफूसी नहीं होगी। हमें उसे अपने आस-पास रखना ही होगा—कम से कम कुछ समय के लिए तो।”

वेरा ने अपना विधवा का घूंघट हटाया और मुंह में सिगरेट डाली। "अपने मोहल्ले में पहुँचने से पहले मेरे पास बस एक सिगरेट का समय है। काश, ये रोने-धोने का नाटक खत्म हो जाए!"

उसने सिगरेट कार से बाहर फेंक दी, फिर से अपना घूंघट नीचे कर लिया, और वे उस गली में मुड़ गए जो जेनेट मिलर के बेटे के घर की ओर जाती थी। घूंघट की जाली से धुएं का हल्का सा अंश दिखाई दे रहा था, जिससे वह एक राक्षस जैसी लग रही थी।

वेरा पहले अंदर गई, पड़ोसियों की नज़र से बचने के लिए उसने अपना सिर झुका लिया। उसने जेनेट को अपनी बाहों में उठाया, कुर्सी लेने वापस आई और उसे भी अंदर ले गई।

जेनेट के अंदर बैठते ही वेरा ने उससे कहा, "अब चलो, यहाँ से निकलो। अभी यहाँ रुकना ठीक नहीं है; वे तुम्हें देख रहे होंगे।"

“कम से कम मुझे पिक-अप तो करने दो,” उसने नाराज़गी से गुर्राते हुए कहा। “इतनी जल्दी में आने का क्या मतलब है?” उसने एक ही झटके में वर्न की ब्रांडी के दो घूंट पी लिए, सीधे डेकैंटर से गिलास में और फिर मुंह में।

मुझे लगा था कि तुम ही सावधान रहना चाहते हो। हमें धीरे-धीरे आगे बढ़ना होगा।

उसे विदा करने के बाद, वह अपने विधवा वाले टोपी और घूंघट को उतारकर कमरे में वापस आई। उसने देखा कि जेनेट की निगाहें दो चमकदार पत्थरों की तरह उस पर टिकी हुई थीं।

उसने भी उसी की तरह थोड़ा हिचकिचाते हुए, बेढंगे तरीके से, ड्रिंक ली। "अब मैं तुम्हें एक बात बता दूँ," वह अचानक गुस्से से बोली। "अगर तुम मुसीबत से बचना चाहते हो, तो अपनी ये निगाहें मुझसे दूर रखो। मुझे घूरना बंद करो! मुझे पता है तुम क्या सोच रहे हो। बेहतर होगा कि तुम भूल जाओ; इससे तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा!"

उसके आने-जाने की संख्या और अवधि हर बार बढ़ती गई, यहाँ तक कि अस्पताल से उसे वापस लाने के लगभग तीन सप्ताह बाद, उन्होंने शादी कर ली। उन्होंने इसकी घोषणा तो नहीं की, लेकिन जेनेट मिलर ने एक दिन घर आने पर उन्हें इस बारे में बात करते हुए सुन लिया, और उसके बाद से वह फिर कभी घर से बाहर नहीं निकला। वह उनके साथ रहने लगा, इसलिए वह समझ गई कि इसका क्या मतलब है। उसे पहली बार उसका नाम भी पता चला। हैगार्ड, जिमी हैगार्ड। वर्नोन मिलर का हत्यारा।

आम जनता शायद इसे एक अचानक और जल्दबाजी में हुआ प्रेम प्रसंग समझेगी। दुनिया में अकेली एक युवा विधवा, दुख में सहानुभूति दिखाने वाले इकलौते व्यक्ति की ओर रुख करती है—यह स्वाभाविक है। इसकी जल्दबाजी उन्हें चौंका सकती है, लेकिन आखिरकार, इसकी पुष्टि होने में तीन-चार सप्ताह और लगेंगे, और तब तक यह इतना अचानक नहीं लगेगा।

जेनेट मिलर कुछ समय तक एक तरह की अचेतन अवस्था में रहीं, एक ऐसी अवस्था जो मृत्यु और मृत्यु के बीच की थी। वह निस्संदेह सांस ले रही थीं और भोजन ग्रहण कर रही थीं, इसलिए तकनीकी रूप से वह जीवित थीं, लेकिन उनके बारे में इससे ज्यादा कुछ नहीं कहा जा सकता था। न केवल उनकी आवाज चली गई थी, बल्कि उनके साथ दो अन्य प्रमुख तत्व भी गायब हो गए थे - सूर्य और नीला आकाश। तीनों में से कोई भी कभी वापस नहीं आएगा। और इसलिए वह निश्चित रूप से एक या दो महीने के भीतर, जीने की इच्छा के अभाव में मर जातीं, तभी धीरे-धीरे लेकिन निश्चित रूप से एक चिंगारी भड़की, एक नई जीवन शक्ति उदास रूप से चमकने लगी, उन तीनों का स्थान लेते हुए जो गायब हो गए थे। बदला।

एक चिंगारी से आग भड़की, और फिर उस आग ने एक भयंकर प्रलय का रूप ले लिया। उस भयानक त्रासदी के बाद से अब तक वह पहले से कहीं अधिक जीवंत थी। यह आग दिन-रात जलती रही। इसे किसी ईंधन या नवीनीकरण की आवश्यकता नहीं थी। समय का इसके लिए कोई महत्व नहीं था। घंटों का कोई महत्व नहीं, दिनों का कोई महत्व नहीं, वर्षों का कोई महत्व नहीं। वह प्रतीक्षा करेगी। जरूरत पड़ने पर वह

सौ वर्ष तक भी जीवित रहेगी, लेकिन मरने से पहले वह इस जोड़े से अपना बदला जरूर लेगी। निश्चित रूप से, अपरिहार्य रूप से। किसी दिन, किसी न किसी तरह।

वे उसके जाल में फंस गए। उन्हें वह बोझ और परेशानी लगने लगी। वे उसके बारे में आपस में झगड़ने लगे। कोई भी उसकी कुर्सी हिलाने या उसे खाना खिलाने से परेशान नहीं होना चाहता था। उसमें उस औरत से ज़्यादा इंसानियत थी। नहीं, बात सिर्फ इतनी नहीं थी—असली इंसानियत या लिहाज़ नहीं। बात बस इतनी थी कि वह वेरा से कम लापरवाह और ज़्यादा डरपोक था।

“लेकिन हम उसे भूखा नहीं छोड़ सकते, और वह खुद खाना भी नहीं खा सकती! हमारी अनदेखी के कारण वह मर जाएगी, और फिर उन्हें पता चल जाएगा कि हमने उसकी उपेक्षा की है, और फिर एक के बाद एक मामले सामने आते जाएंगे, और देखते ही देखते वे उस पुराने मामले को फिर से खोल देंगे, सब कुछ जोड़कर सवाल पूछने लगेंगे।”

“तो फिर, उसकी देखभाल के लिए किसी को रख लो। मैं हर समय घर पर रहकर उसे खाना नहीं खिला सकती, उसे बिस्तर पर नहीं सुला सकती! उसके लिए एक साथी ढूंढ लो। अब हमारे पास इसके लिए पर्याप्त पैसे हैं। या फिर उसे पूरी तरह से छोड़ दो, किसी नर्सिंग होम में भेज दो।”

“नहीं, अभी नहीं। हमें उसे कम से कम कुछ महीनों तक अपने साथ रखना होगा, जब तक कि हमारा गुस्सा शांत न हो जाए,” उसने ज़ोर देकर कहा। “लेकिन मुझे किसी अजनबी को अपने साथ यहाँ आने देना ठीक नहीं लग रहा। यह थोड़ा जोखिम भरा है। खासकर पड़ोस के किसी ऐसे व्यक्ति को जो मिलर को जानता हो। हमें सावधान रहना होगा। हममें से कोई भी शराब के नशे में कुछ भी बोल सकता है।”

जब वह यह तय करने की कोशिश कर रहा था कि जोखिम उठाए, विज्ञापन दे या किसी एजेंसी से संपर्क करे, तभी एक संयोगवश घटना ने उसका फैसला कर दिया। एक सुबह एक सुसंस्कृत युवक, जो देखने में बदकिस्मत लग रहा था, वहाँ से गुजर रहा था। उसने हैगार्ड को बरामदे में देखा और झिझकते हुए उसके पास जाकर पूछा कि क्या कोई काम है, जैसे कि लॉन काटना या खिड़कियाँ साफ करना। उसने बताया कि वह लिफ्ट मांगते हुए देश भर में यात्रा कर रहा है और आधे घंटे पहले ही शहर पहुँचा है। दरअसल, उसके पास एक छोटा सा बंडल था, जो जाहिर तौर पर उसका सारा सामान था।

हैगार्ड ने उसे संदेह भरी निगाहों से देखा। फिर उसने उस बूढ़ी औरत की ओर देखा। इससे उसे कुछ सूझा। "एक मिनट में आइए," उसने कहा।

जेनेट मिलर उसे बैठक में उससे बात करते हुए सुन सकती थी। फिर उसने वेरा को नीचे बुलाया और उससे सलाह ली। वेरा सहमत लग रही थी—शायद बुढ़िया की देखभाल करने के लिए किसी के आने से वह बहुत खुश थी।

इसके तुरंत बाद वह उसे अपने साथ बाहर ले आई, लेकिन अब उसके पास उसका बंडल नहीं था।

“ये रही वो,” उसने रूखेपन से कहा। “अब समझ गए ना कि क्या करना है? हम काफी देर तक बाहर रहेंगे। तुम्हें उसे चम्मच से खिलाना होगा, और उसकी कोई बदतमीज़ी बर्दाश्त मत करना। उसे भूख हड़ताल करने की एक प्यारी सी आदत है। अगर उससे कोई परेशानी हो, तो उसकी नाक तब तक दबाते रहना जब तक उसे सांस लेने के लिए मुंह खोलना न पड़े। तुम बाहर सो जाना, लेकिन रात नौ बजे तक यहां आ जाना ताकि उसे बरामदे में ले जा सको। उसे कपड़े पहनाने की चिंता मत करना, बस अगर मैं न उठी होऊं तो उसे कंबल में लपेट देना। रात को खाना खिलाने के बाद उसे उसके कमरे में वापस ले जाना। बस इतना ही है। मैं चाहती हूं कि जब हम बाहर हों तो घर में कोई उसके साथ रहे, ताकि कोई गड़बड़ न हो।”

“जी मैडम,” उसने विनम्रतापूर्वक कहा।

"ठीक है—आपका नाम क्या है?"

“कैसमेंट।”

“ठीक है, कैसमेंट। श्री हैगार्ड ने आपको पहले ही बता दिया है कि आपको क्या-क्या मिलेगा। बस, सब कुछ हो गया। आप समझ लीजिए कि आपको नौकरी मिल गई है। अगर आपको कुर्सी चाहिए तो अपने लिए ले आइए।”

वह रबर के टायरों वाली व्हीलचेयर के एक तरफ बैठ गया, जहाँ से वह उसे देख सकता था, उसके हाथ घुटनों पर थे और पैर फैले हुए थे।

बूढ़ी औरत और युवक ने एक-दूसरे की ओर देखा।

उसने हिचकिचाते हुए हल्की सी मुस्कान दी। वह उसकी मुस्कान में सहानुभूति देख सकती थी। उसे कहीं न कहीं यह आभास हुआ कि यह इस तरह का उसका पहला मामला था, कि वह इससे पहले कभी इस तरह की किसी चीज़ के संपर्क में नहीं आया था।

लगभग आधे घंटे बाद वह उठा और बोला, “मुझे लगता है मैं एक गिलास पानी ले आता हूँ। क्या तुम्हें भी चाहिए?” मानो वह जवाब दे सकती थी। फिर यह याद करके कि वह जवाब नहीं दे सकती, वह वहीं असमंजस में खड़ा रहा और उसे देखता रहा। उसे इस तरह के काम का बिल्कुल भी अनुभव नहीं था; यह बात उसकी आँखों में साफ झलक रही थी। उसने धीरे से अपने आप से कहा, “मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम कब...” फिर उसने हैरानी से अपनी गर्दन खुजलाई।

वह मुड़ा और अंदर चला गया। एक मिनट में वापस आया और उसके लिए एक बोतल लाया। उसने बोतल उसके पास लाकर खड़ी कर दी और अनिश्चितता से उसकी ओर देखने लगा। उसने दो बार पलकें झपकाईं, मानो उसे प्यास लगी हो। मानो वह उसे—अगर संभव हो तो—इससे कुछ ज़्यादा दिखाना चाहती हो। उसने बोतल उसके होठों से लगाई और धीरे-धीरे उसका सारा रस उसके मुँह में टपकने दिया, जब तक कि वह खाली नहीं हो गई।

“और चाहिए?” उसने पूछा।

इस बार उसने एक बार पलकें झपकाईं।

उसने गिलास ज़मीन पर रख दिया और उसे देखते हुए, सोच-विचार करते हुए अपनी ठुड्डी सहलाने लगा। “कभी-कभी तुम जल्दी में दो बार पलकें झपकाती हो, कभी-कभी सिर्फ़ एक बार। इसका क्या मतलब है, हाँ या ना? चलो अब पता लगा लेते हैं, ताकि पक्का हो जाए।” उसने एक अख़बार उठाया, उसमें “हाँ” शब्द ढूँढा, अपनी उंगली उसके नीचे रखी और उसे दिखाया। उसने दो बार पलकें झपकाईं। फिर उसने “ना” ढूँढा, उसे भी दिखाया। उसने एक बार पलकें झपकाईं।

“अच्छा, अब हम इतना आगे निकल गए हैं, है ना?” उसने खुशी से कहा।

उसकी आँखें मुस्कुराती हुई प्रतीत हो रही थीं—वे बहुत भावपूर्ण आँखें थीं। इश्क—उन्होंने वर्न के साथ अपना पुराना इश्क फिर से बना लिया था, बस इतना ही! वह बहुत ही होशियार नौजवान था।

दोपहर ढलने लगी। उसने उसकी कुर्सी को खाने की मेज के पास धकेला, बैठ गया और चम्मच से उसके मुंह में खाना डालने लगा, शुरू में थोड़ा अटपटा लगा, लेकिन जल्द ही उसे इसका तरीका समझ आ गया, उसे पता चल गया कि चम्मच में ज्यादा खाना नहीं डालना चाहिए, क्योंकि उसका मुंह एक सीमित सीमा तक ही खुल सकता था।

वेरा ने उसे घूरकर देखा। "लगता है तुम्हारी किस्मत उससे हमसे बेहतर है। कम से कम वह तुम्हारे लिए निगल तो लेती है।"

“ज़रूर,” उन्होंने अपने काम से नज़रें हटाए बिना आराम से कहा, “श्रीमती मिलर और मैं बहुत अच्छे दोस्त बनने वाले हैं।”

जेनेट मिलर को इसका कारण समझ नहीं आ रहा था, लेकिन उसने सच कहा था। उसे एक तरह का आत्मविश्वास महसूस हो रहा था, मानो वह उससे किसी तरह से जुड़ गई हो, हालांकि उसे इसका कारण पता नहीं था।

बाद में वह उसे उठाकर उसके कमरे में ले गया और उस रात उसने उसे फिर कभी नहीं देखा। लेकिन वह अंधेरे में वहीं लेटी रही, संतुष्ट। लौ तेज़ जल रही थी, बुझने वाली नहीं। शायद...

सुबह वह उसे लेने आया, उसे गोद में उठाकर नीचे ले गया, उसे संतरे का रस पिलाया और उसके साथ बरामदे में बैठ गया। कुछ देर तक वह बस बैठा रहा, जैसे वह धूप सेंक रही थी। फिर थोड़ी देर बाद उसने अपना सिर घुमाया और घर की सामने वाली खिड़कियों की तरफ देखा, मानो यह पता लगाने के लिए कि उन कमरों में कोई है या नहीं। लेकिन उसने जिस सहजता से ऐसा किया, उसे कुछ समझ नहीं आया। शायद वह मन ही मन सोच रहा था कि हैगार्ड परिवार देर से उठता है।

उन्होंने काफी धीमी आवाज में, लगभग दबी हुई आवाज़ में कहा: "क्या आपको मिस्टर हैगार्ड पसंद हैं?"

उसकी आंखें एक पल के लिए ऐसे चमक उठीं, जैसे नीली बिजली की चिंगारी।

उसने कुछ देर इंतजार किया, फिर बोला: "क्या आपको मिसेज हैगार्ड पसंद हैं?"

इस बार नकारात्मक प्रतिक्रिया लगभग प्रचंड थी।

"मुझे आश्चर्य है कि ऐसा क्यों है," उसने धीरे से कहा, लेकिन यह एक प्रश्न की तरह नहीं लग रहा था।

गठबंधन और एकजुटता की वह भावना एक बार फिर उसके मन में उमड़ आई, पहले से कहीं अधिक प्रबल। उसकी निगाहें आशा से उस पर टिकी हुई थीं।

"कितनी बुरी बात है कि हम बात नहीं कर सकते," उसने आह भरी और फिर से चुप हो गया।

वेरा नीचे आई, और थोड़ी देर बाद हैगार्ड भी उसके पीछे-पीछे आ गया। दोनों में बहस शुरू हो गई और उनकी आवाजें बरामदे तक साफ सुनाई दे रही थीं।

“मैंने तुम्हें कल रात ही पचास रुपये दिए थे!” वह गुस्से से बोली। “ज़रा नरमी बरतो?”

"तुम क्या करने की कोशिश कर रहे हो, क्या मुझे भत्ते पर ही रखना चाहते हो?"

"वैसे यह किसका पैसा है?"

अगर मैं नहीं होता, तो तुम—”

एक चेतावनी भरी आवाज़ आई, “श!” और फिर कहा गया, “यह मत भूलो कि वह बुढ़िया अब वहाँ अकेली नहीं है।”

अचानक दिखाई गई संयमशीलता किसी भी बेपरवाह खुलासे से कहीं अधिक प्रभावशाली ढंग से अपनी बात कह गई। जेनेट मिलर की निगाहें कैसमैन के चेहरे पर टिकी थीं। उन्होंने जरा भी ऐसा संकेत नहीं दिया कि उन्होंने कुछ ऐसा सुना हो जिससे उन्हें आश्चर्य हुआ हो।

हैगार्ड गाड़ी लेने बाहर गया और उसे सामने के दरवाजे तक ले आया। वेरा बाहर आई, कैसमेंट को लापरवाही से "तुम्हें पता है क्या करना है" कहा और गाड़ी में बैठ गई। वे दोनों गाड़ी चलाकर चले गए।

पेड़ों से घिरी लंबी सड़क पर उनके नज़रों से ओझल होने से पहले ही, वह उठकर अंदर चला गया। न तो जल्दी में, न ही छिपकर, बल्कि मानो उसे कोई ऐसा काम करना था जिसे टाला नहीं जा सकता था।

वह काफी देर तक वहीं रुका रहा। पहले उसे एक कमरे में, फिर दूसरे कमरे में उसकी आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लग रहा था मानो वह ऊपर-नीचे पूरे घर में घूम रहा हो। उसे बीच-बीच में किसी दराज के खुलने या डेस्क के पर्दे के नीचे गिरने की आवाज़ सुनाई देती थी। अगर उसके अंदर का वह अजीब, रहस्यमय आत्मविश्वास न होता, तो शायद वह उसे एक चोर समझ लेती जिसने घर के मालिक की गैरमौजूदगी में लूटपाट करने के लिए यह काम लिया हो। लेकिन किसी तरह यह ख्याल उसके मन में कभी नहीं आया।

लगभग एक घंटे बाद, वह आखिरकार बाहर आया और हल्के से अपना सिर हिलाया। वह उसके बगल में बैठ गया, अपनी अंदरूनी जेब में हाथ डाला और एक छोटी सी आयताकार किताब निकाली—एक पॉकेट डिक्शनरी।

“हमें हां और ना से आगे बढ़ने का कोई रास्ता ढूंढना होगा,” उसने धीमी आवाज़ में कहा। “मैं तुमसे बात करना चाहता हूं। इसीलिए तो मैंने ये नौकरी हासिल की है।”

उसने बरामदे के खंभों के बीच से बाहर, सामने के लॉन के पार, धूप से भरी सड़क पर ऊपर-नीचे नज़र डाली। दूर-दूर तक कोई नज़र नहीं आया। उसने अपनी बनियान की जेब से कुछ निकाला। जेनेट मिलर को एक मिनट के लिए लगा कि यह घड़ी है, जब तक कि उसने यह नहीं देखा कि यह गोल नहीं बल्कि ढाल के आकार की थी। इस पर राज्य की मुहर खुदी हुई थी। उसने उसे दिखाया, फिर वापस रख दिया। "मैं एक जासूस हूँ," उसने कहा। "घटना के तुरंत बाद, कर्तव्य के तहत, मैं यहाँ आया और परिसर का मुआयना किया। श्रीमती हैगार्ड, जैसा कि मैंने पहले समझा, गैस के धमाके से जाग उठीं, लड़खड़ाते हुए नीचे की मंजिल तक पहुँचीं, सामने के दरवाजे का शीशा तोड़ा, फिर मदद के लिए फोन करने की कोशिश में फोन तक पहुँचीं। उनमें केवल रिसीवर उठाने की ही ताकत बची थी, फिर वह उसके साथ गिर पड़ीं और फोन के पास फर्श पर बेहोश पड़ी मिलीं।"

"हालांकि, मैंने अलार्म भेजने वाली स्विचबोर्ड ऑपरेटर से पूछताछ की, और उसने ज़ोर देकर कहा कि मामला उल्टा था। रिसीवर बंद होने के बाद भी, खुले तार पर से उसे कांच टूटने की आवाज़ साफ़ सुनाई दी। इससे बात थोड़ी समझ में नहीं आई। वह दरवाज़ा पतले शीशे का नहीं, बल्कि प्लेट ग्लास का बना हुआ था। उसे तोड़ने के लिए उसे भारी लोहे की छड़ से वार करना पड़ा होगा। अब अगर कोई व्यक्ति फ़ोन पर 'मदद' फुसफुसाने जितना भी मज़बूत नहीं है, तो भला वह प्लेट ग्लास के ठोस चौकोर टुकड़े को कैसे तोड़ सकती है?"

"इसके अलावा, जब वह दरवाजे पर थी तो वह मुड़कर वापस फोन के पास क्यों गई, जो पहले से ही डिस्कनेक्ट था, और वहां गिर पड़ी? दोनों के बीच काफी लंबा गलियारा है। आप समझ रहे हैं ना, वह दरवाजे पर नहीं, बल्कि फोन के पास मिली थी।"

"यह बात मुझे जितनी अजीब लगी, मुझे लगता है कि मैं इसे नज़रअंदाज़ कर देता, लेकिन जब वह अस्पताल में इलाज करवा रही थी, तब मैं उससे मिलने गया और उसकी चीज़ें देखने की इच्छा जताई। उसने जो हल्के सैटिन के बेडरूम स्लिपर पहने थे, उनके किनारे ओस से फीके पड़ गए थे, और मुझे उनके तलवों पर गीली मिट्टी और घास का एक तिनका चिपका हुआ मिला। बेहोश होने से पहले वह घर के बाहर गई थी, फिर अंदर गई, अपने पीछे दरवाजा बंद किया और अंदर से ही शीशे का पैनल तोड़ दिया।"

"फिर इन सबके अलावा, पड़ोस की वही पुरानी गपशप भी हम तक पहुँचने लगी है कि उसके और हैगार्ड की शादी कितनी जल्दी हो गई। यहाँ तक कि एक-दो गुमनाम चिट्ठियाँ भी आ चुकी हैं। मैं आपको ये सब इसलिए बता रहा हूँ क्योंकि हालाँकि ये मेरे लिए अब तक की सबसे मुश्किल चुनौतियों में से एक होने वाली है, मुझे लगता है कि इससे पहले कि ये सब खत्म हो, आप मेरी मदद कर सकते हैं।"

उसे सांस लेने में बहुत मुश्किल हो रही थी। आग की लपटें आसमान की ओर उछलीं और उसने अपनी आँखें दो बार, जितनी तेज़ी से हो सके, झपकाईं।

“तो क्या आप मुझे इसके बारे में कुछ बता सकते हैं? अच्छा। खैर, मैं मुख्य रूप से यह जानना चाहता हूं: क्या उसकी मौत दुर्घटना थी या नहीं?”

नहीं!

उसने उसे गौर से देखा। लेकिन वह समझ गई कि उसकी नज़र में कोई हैरानी नहीं थी, बल्कि पुष्टि थी। उसने जेब में रखी डिक्शनरी को पलटा, एक शब्द के नीचे अपना अंगूठा रखा और उसे उसके सामने उठाया।

उस पर लिखा था, "हत्या।"

हाँ।

“क्या उसकी पत्नी ने?” उसका मुंह थोड़ा कस गया था।

वह रुकी और एक मिनट के लिए सोचने लगी। अगर उसने एक बार उसे गलत संकेत पर, या आंशिक रूप से सही संकेत पर, जो उतना ही बुरा था, गुमराह कर दिया, तो बाद में उसे सुधारने का शायद कोई तरीका न बचे।

उसने एक बार पलक झपकाई। फिर तुरंत बाद उसने दो बार पलक झपकाई।

“हाँ और ना?” उसने कहा। “तुम्हारा मतलब क्या है...?” फिर उसे समझ आ गया! वह एक होशियार नौजवान निकला, उसका यह साथी, यह कैसमेंट। “उसकी पत्नी और कोई और?”

हाँ।

"तो फिर हैगार्ड और आपके बेटे की पत्नी, बिल्कुल।"

हाँ।

“लेकिन—” उसने अनिश्चितता से कहा। “वह खुद भी सदमे में थी।”

नहीं।

"क्या वह अभिभूत नहीं हुई?"

नहीं।

लेकिन मैंने उस एम्बुलेंस डॉक्टर की रिपोर्ट देखी है जिसने उसका इलाज किया था। मैंने उससे बात की है। उसे अस्पताल ले जाया गया था।

उन्होंने बाकी की सुबह इसी बात पर बर्बाद कर दी। उसे इस बात में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी कि वह उसे यकीन दिलाए कि वेरा को गैस से जहर दिए जाने का नाटक किया गया था—दरअसल, यह सिर्फ आंशिक रूप से ही नाटक था—लेकिन वह उसे इस बात से रोकने में बेहद दिलचस्पी रखती थी कि वह आगे न बढ़े और गैस मास्क का जिक्र न करे। एक बार अगर उसने ऐसा कर दिया, तो शायद वह उसे फिर कभी यह नहीं समझा पाएगी कि किस तरीके का इस्तेमाल किया गया था।

दोपहर में वे फिर से पीछे के बरामदे में बहस करने लगे। “वहाँ कुछ ऐसा है जो हमें रोके हुए है। आपको इतना यकीन कैसे है कि वह विचलित नहीं हुई? आप तो खुद विचलित हो गए थे— माफ़ कीजिए, मैं भूल गया था, मैं आपसे केवल ऐसे प्रश्न पूछ सकता हूँ जिनका उत्तर हाँ या ना में हो।”

वह कुछ देर के लिए पूरी तरह से असमंजस में पड़ गया। उसने अपनी जेब से कुछ कागज़ निकाले, रिपोर्ट या किसी तरह के लिखे हुए नोट्स, और कुछ मिनटों तक उन्हें ध्यान से पढ़ा।

“वह और वह उसी कमरे में थे, ऊपर, जिसे अब हैगार्ड्स इस्तेमाल कर रहे हैं। आप ज़ोर देकर कह रहे हैं कि वह गैस से बेहोश नहीं हुई थी। ओह, मैं समझ गया आपका मतलब—उसने खुद को बचा लिया, जैसा कि मुझे उन बेडरूम की चप्पलों को देखकर शक हुआ था, गैस के निकलने के दौरान बाहर ही रही, आपके बेटे की मौत के बाद वापस अंदर आ गई, इस तरह उसने गैस के ज़्यादातर असर से खुद को बचा लिया। क्या यह सही है?”

नहीं।

“उसने इस तरह से अपनी जान नहीं बचाई?”

नहीं।

"क्या वह ऊपर वाले कमरे में, खिड़कियाँ खुली रखकर रुकी थी?"

नहीं।

वह स्पष्ट रूप से हैरान था। "क्या वह गैस रिसाव के पूरे समय उसके साथ उसी कमरे में, पीछे वाले बेडरूम में, नहीं रही?"

हाँ।

उसने अनमने ढंग से अपने बालों को सहलाया। उसने अपनी निगाहें नीचे उसके हाथ में पकड़ी हुई छोटी डिक्शनरी पर टिका दीं और उसे ऐसे घूरने लगी मानो वह उसकी सबसे बड़ी दुश्मन हो।

आखिरकार उसने उस भाव को समझ लिया। “कुछ तो है उसमें। हाँ, लेकिन कौन सा शब्द है उसमें?” उसने बेबसी से पूछा।

उसने इसे खोला क्यों नहीं? अगर उसने जल्दी से इसे नहीं खोला, तो वह उस बातचीत का सिलसिला खो देगा जो उसे प्रेरणा मिलने से ठीक पहले हुई थी। उसे यह भी नहीं पता था कि वह शब्द उसमें है या नहीं। अगर था, तो वह वर्णमाला के क्रम पर भरोसा कर रही थी...

“ठीक है, चाहे पूरा हफ्ता ही क्यों न लग जाए, हम इसे हासिल कर लेंगे। जब उसका दम घुट रहा था, तब वह उसके साथ बेडरूम में ही थी। आप कहते हैं कि उसे कोई नुकसान नहीं हुआ, और आप इसमें कुछ खास बात जानना चाहते हैं। बेडरूम से संबंधित कुछ?”

नहीं।

"खिड़कियों के बारे में कुछ?"

नहीं।

"क्या गैस के बारे में कुछ है?"

हाँ! उसने 'जी' अक्षर तक पहुँचने के लिए उस छोटी सी किताब को लगभग बीच से फाड़ ही दिया था।

“गैस। हम आगे का काम वहीं से संभाल लेंगे, ठीक है?”

पलकें झपकाने के बजाय, उसने पहली बार अपनी आंखें बंद कर लीं।

वह प्रार्थना कर रही थी।

वह पन्ने पर उंगली फेरने लगा और साथ-साथ उससे सवाल पूछता गया। "गैसीय?" नहीं। "पाचन?" नहीं। "गहन विज्ञान?" नहीं। अचानक वह रुक गया। उसने खुद ही देख लिया था; उसके चेहरे पर आई ज्ञान की चमक से वह समझ गई।

“गैस मास्क! यह विचार मेरे दिमाग में क्यों नहीं आया! यह तो मेरे चेहरे पर नाक की तरह स्पष्ट था!”

उसकी आंखों में खुशी के आंसू चमक रहे थे।

"इसलिए उसने गैस मास्क का इस्तेमाल करके अपनी जान बचाई।"

हां, उसने उसे बताया।

"क्या उसने तुम पर भी एक लगाया?"

हाँ।

“बहुत ही चालाक चाल थी। अगर वे तुम्हें उसके साथ जाने देते तो सब कुछ बहुत स्पष्ट हो जाता। उसने ये चीजें किससे लीं, हैगार्ड से?”

हां, उसने उसे बताया।

"क्या वह उस रात यहाँ मौजूद था, जब यह घटना घट रही थी?"

नहीं।

“ज़्यादा चालाक हो, है ना? खैर, वो भी आखिर एक सहयोगी ही है।” उसने अपनी कुर्सी थोड़ा और उसके पास खींच ली। “अब, ज़ाहिर है, आप इन लोगों को सज़ा मिलते देखना चाहती हैं, श्रीमती मिलर। वो आपका बेटा था।”

उसने जो हां कहा, वह कितना व्यर्थ था। प्रतिशोध की ज्वाला अब एक विशाल अग्नि-स्तंभ की तरह भड़क उठी थी।

“तुम्हें पता है कि उन्होंने तुम्हारे बेटे को मार डाला, और अब मुझे भी पता चल गया है। लेकिन मुझे इससे भी पुख्ता सबूत चाहिए। और उन दो गैस मास्क के अलावा और क्या सबूत हो सकता है? सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि मैं उन्हें बरामद कर पाता हूँ या नहीं। तुमने एक मास्क पहना हुआ था, और उसने बाहरी लोगों के आने से पहले उसे उतार दिया था, ज़ाहिर है। उसके उतारने के बाद तुम कम से कम कुछ देर के लिए तो होश में रहे ही होंगे। क्या तुमने देखा कि उसने उन मास्क के साथ क्या किया?”

हाँ।

तकनीकी तौर पर, उसने ऐसा नहीं किया था। लेकिन फिर भी जवाब हां ही था, क्योंकि उसे पहले से ही पता था कि वे उनका क्या करने वाले हैं।

“वाह!” उसने जोश से सांस लेते हुए मुट्ठी भींची। “मुझे लगता है इसे हासिल करने में हमें थोड़ी मुश्किल होगी, लेकिन हम तब तक कोशिश करते रहेंगे जब तक मिल न जाए। क्या मैं तुम्हें थका रहा हूँ?” उसने बीच में ही चिंता से पूछा। “हमारे पास बहुत समय है, तुम्हें पता है। मैं एक ही दिन में इतनी उत्तेजना से तुम्हें परेशान नहीं करना चाहता।”

उसे थका रही थी! उसके भीतर प्रतिशोध की ज्वाला इतनी तीव्र, इतनी तीव्र और इतनी अथक थी कि वह घंटों तक जलती रह सकती थी। नहीं, उसने इशारा किया।

“ठीक है। उसके बाद उनके साथ क्या किया गया, इस बारे में। चलिए कुछ आसान तरीके आजमाते हैं। क्या उसने उन्हें घर में कहीं छिपा दिया था?”

नहीं।

“मुझे नहीं लगा था कि वह ऐसा करेगी। यह बहुत जोखिम भरा होता। क्या उसने उन्हें घर के बाहर कहीं छिपा दिया था?”

हाँ।

"आप जानते हैं कि कहाँ है?"

हाँ।

“लेकिन आप ऐसा कैसे कर सकते हैं? माफ कीजिए। चलिए देखते हैं। किसी बरामदे के नीचे?”

नहीं।

"गेराज?"

उसने हां या ना में जवाब देने से इनकार कर दिया, क्योंकि उसे डर था कि कहीं वह उसे गलत रास्ते पर न भेज दे और बाद में उसे सुधार न सके। कहीं वह उसे छोड़कर बाहर जाकर गैराज को तोड़फोड़ न करने लगे।

तो फिर गैराज नहीं?

उसने फिर भी जवाब देने से इनकार कर दिया।

“गैरेज से कोई जवाब नहीं मिला, और गैरेज के बाहर भी कोई जवाब नहीं मिला।” उसे समझ आ गया। शुक्र है भगवान का कि उन्होंने समझदार नौजवान पैदा किए। “कार?”

हाँ।

“जो उनके पास अभी है?”

नहीं।

“उन्होंने इसे बाद में खरीद लिया। यह मेरे नोट्स में लिखा है। पहले यह एक कार थी। क्या आपने उन्हें बाद में इस बारे में बात करते सुना? क्या इसी से आपको पता चला?”

नहीं।

“उस समय आप इसे होते हुए देखने की स्थिति में नहीं थे, और न ही आपने बाद में उनकी बातचीत सुनी। आपने निश्चित रूप से उन्हें पहले इस पर चर्चा करते हुए सुना होगा।”

हाँ।

उसका चेहरा खिल उठा। “इससे सारी बात समझ में आ गई। तुम्हें इतनी जानकारी कैसे मिली? बहुत बढ़िया। क्या उन्हें पता था कि तुमने उनकी बातें सुन ली थीं?”

वह उसे सच बताने का जोखिम नहीं उठा सकती थी। इससे उसका विश्वास डगमगा सकता था। लेकिन उसे पूरा यकीन था कि उन्होंने उस योजना से जरा भी विचलन नहीं किया था, जिसे उसने उस दोपहर रसोई में बनते हुए सुना था। नहीं, यही उसका जवाब था।

“वह गाड़ी नहीं चलाती।” उसे यह बात पहले ही पता चल चुकी थी, शायद उन्हें आते-जाते देखकर। “तो फिर वह आया और उसके लिए गाड़ी ले गया, जिसमें मास्क अभी भी लगे हुए थे? बस इतना ही?”

उसने कोई जवाब नहीं दिया।

“मैं समझ गया। उसने किसी और को इसे लाने के लिए भेजा होगा, शायद बिना उसे भरोसे में लिए। इसलिए मास्क उसमें छिपाए गए होंगे, और उसने बिना किसी की नज़र में आए उन्हें दूसरी तरफ से निकाल लिया होगा।”

हाँ।

“शादी से पहले उनका एक गैराज और मरम्मत की दुकान थी, है ना?” उन्होंने उनसे यह नहीं पूछा; बस अपने नोट्स में देख लिया। “हाँ, यह रहा। एजेक्स गैराज और सर्विस स्टेशन, क्लिफोर्ड एवेन्यू। मैं वहाँ जाकर अच्छी तरह से जाँच करूँगा। इस बात की बहुत कम संभावना है कि वे दोनों मुखौटे अब तक नष्ट न हुए हों। लेकिन एक संभावना है, और अच्छी संभावना है, कि वे पूरी तरह से नष्ट न हुए हों। अगर मुझे एक या एक से अधिक गैस मास्क से संबंधित पर्याप्त अवशेष मिल जाएँ, धातु के टुकड़े भी, तो काम बन जाएगा। आपने मुझे सब कुछ बता दिया है, श्रीमती मिलर, आपने मेरे लिए पूरी बात को फिर से जोड़ दिया है। बाकी सब इस बात पर निर्भर करता है कि मैं उन दोनों मुखौटों को, साबुत या टुकड़ों में, बरामद कर पाता हूँ या नहीं।” उन्होंने अपने नोट और जेब शब्दकोश, जो उनके लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ था, वापस अपने कोट में रख लिया। “शायद हमें वे दोनों मिल जाएँ, श्रीमती मिलर,” उन्होंने धीरे से वादा किया, जैसे ही वह खड़े हुए।

बदले की आग उसके कानों में ज़ोरों से धधक रही थी। उसकी निगाहें उस पर टिकी थीं, मानो उसे कुछ समझ आ रहा हो। लेकिन भला कौन उनकी बात न समझ पाता, उनकी बातें इतनी प्रभावशाली थीं!

“मुझे धन्यवाद मत दीजिए,” उसने विनम्रतापूर्वक बुदबुदाते हुए कहा। “यह तो बस मेरे काम का हिस्सा है।”

दो दिन बीत गए। वह हमेशा की तरह उसकी देखभाल करने के लिए मौजूद था, इसलिए उसने सोचा कि घर से निकलने के बाद वह रात में अपनी जांच-पड़ताल में लगा होगा। कई बार, जब वह सुबह आता था, तो वह बहुत थका हुआ लगता था, उसके बगल में बरामदे में झपकी लेता था, जबकि उसकी आंखें उसके सोते हुए चेहरे को प्यार से निहारती थीं।

कोई जल्दी नहीं है, अपना समय लो, मेरी दाहिनी भुजा, मेरी प्रतिशोध की तलवार, उसने चुपचाप उसे प्रोत्साहित किया।

उसने उसे अपनी सफलता के बारे में कुछ नहीं बताया, हालाँकि हैगार्ड परिवार पहले की तरह ही खूब बाहर जाता था और अवसर भी भरपूर थे। उसके चेहरे के भावों को समझना मुश्किल था, यह बताना मुश्किल था कि वह सफल हो रहा है या नहीं। उसकी आँखें अब भी उसी तरह विनती से उस पर टिकी हुई थीं, जैसे वे पहले कभी वर्न मिलर पर टिकी रहती थीं।

“तुम जानना चाहते हो, है ना?” उसने आख़िरकार कहा। “तुम जानने के लिए बेताब हो, और तुम्हें और ज़्यादा इंतज़ार करवाना नाज़ुक होगा। खैर—मुझे अभी तक कोई कामयाबी नहीं मिली है। उनकी कार अभी भी गैराज में है, बिकने के लिए रखी हुई। मैंने उसे लगभग खोलकर फिर से जोड़ा, एक संभावित खरीदार बनकर। ज़ाहिर है, जब वह आस-पास था तब नहीं। वे अब उसमें नहीं हैं। और सबसे अहम बात, गैराज के आस-पास किसी ने भी, किसी भी कर्मचारी ने, उसे उन्हें ठिकाने लगाने के लिए ले जाते हुए नहीं देखा, या उन्हें कहीं भी नहीं देखा। मैंने उन सभी से पूछताछ की है; मुझे इस बारे में कोई शक नहीं बचा है। मैंने गैराज को ऊपर से नीचे तक छान मारा है, राख, कूड़ा, मलबा, आस-पास के कई ब्लॉकों में हर खाली जगह छान डाली है। मैंने उस जगह की भी जाँच की है जहाँ हैगार्ड यहाँ आने से पहले रहता था। कुछ भी नहीं मिला।”

बोलते समय वह बरामदे के खंभों के बीच बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा था।

“किस्मत ही खराब है!” उसने गुस्से से कहा। “ये चीज़ें बहुत भारी हैं। ये यूँ ही हवा में गायब नहीं हो सकतीं। चाहे उसने तेजाब का इस्तेमाल ही क्यों न किया हो, कोई भी चीज़ इतनी पूरी तरह से गायब नहीं हो सकती। उसने इन्हें गहरे पानी में नहीं बहाया, न ही तल में, क्योंकि मैंने उसकी हर गतिविधि पर नज़र रखी है। वह किसी फेरी या नाव पर नहीं था, न ही किसी बंदरगाह या पुल के पास। ये कहाँ से आईं, कहाँ गईं?”

वह अचानक रुक गया, उसकी तरफ देखा। “बस यही तो चाहिए!” उसने हैरानी से कहा। “मुझे पहले यह ख्याल क्यों नहीं आया? अगर मैं यह पता नहीं लगा सकता कि वे कहाँ गए, तो शायद मैं यह पता लगा सकूँ कि वे कहाँ से आए थे। अगर मैं उल्टा तरीका अपनाऊँ तो शायद मुझे ज़्यादा सफलता मिले। ऐसी चीज़ें यूँ ही किसी दुकान से नहीं मिल जातीं। क्या तुमने उन्हें यह कहते सुना कि उन्हें ये चीज़ें कहाँ से मिलीं, जब तुमने उन्हें ये सब योजना बनाते सुना था?”

हां, उसने उत्सुकता से उत्तर दिया।

"क्या उसने उन्हें खरीदा था?"

नहीं।

"क्या उन्हें ये दिए गए थे?"

नहीं।

क्या उसने उन्हें चुराया था?

हाँ।

“क्या ये उस कारखाने से हैं जहाँ इन्हें बनाया जाता है?”

नहीं।

“क्या यह सेना की चौकी से है?”

नहीं।

उसने अपना सिर खुजाया। "उसे इस तरह की चीजें और कहाँ से मिल सकती थीं? किसी दोस्त से, किसी जान-पहचान वाले से?"

हाँ।

“इससे कुछ खास मदद नहीं मिलती। वह कौन है? उसे ये कहाँ से मिले?”

उसने सुबह के सूरज को टकटकी लगाकर देखा, दो बार पलकें झपकाईं, फिर उसकी निगाहें उसकी ओर गईं। फिर उसने यही दोहराया। फिर तीसरी बार।

मुझे आपकी बात समझ नहीं आई। सूरज? उसने उन्हें सूरज से प्राप्त किया?

इस बार उसने सूर्य से थोड़ा नीचे, सूर्य और क्षितिज के बीचोंबीच देखा। "पूरब?" वह समझ गया।

हाँ।

लेकिन हम तो पहले से ही पूरब में हैं। ओह—यूरोप?

हाँ।

"एक मिनट रुको, अब मुझे समझ आ गया कि तुम्हारा क्या मतलब है। उसने उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति से चुराया है जो उन्हें वहां से वापस लाया था।"

हाँ।

“बस हो गया!” वह खुशी से चिल्लाया। “अब मुझे पता चल गया कि मैं उसका पता कैसे लगाऊँगा! सीमा शुल्क कार्यालय के ज़रिए। उसे इन चीज़ों की घोषणा करनी ही होगी, खासकर अगर वह एक साथ कई चीज़ें लाया हो। ये सब उसके सीमा शुल्क घोषणा पत्र में दर्ज होंगी। अब मुझे समझ में आया कि मुझे राख के ढेरों या कूड़े के ढेरों में इनका कोई सुराग क्यों नहीं मिला। वह इन्हें कहीं सुरक्षित रखे हुए होगा, और इन्हें लौटाने के मौके का इंतज़ार कर रहा होगा, अगर उसने अभी तक नहीं लौटाया है। वह इन्हें चुपके से वहीं वापस पहुँचाने की कोशिश करेगा जहाँ से उसने इन्हें लिया था। यही उसके लिए सबसे समझदारी भरा काम होगा। आखिरकार मुझे लगता है कि हमें एक सुराग मिल गया है, श्रीमती मिलर—काश बहुत देर न हुई हो!”

कमरे के लगभग घोर अंधेरे में टेलीफोन की तीखी घंटी बजी। कैसमेंट ने अपनी कलाई की कलाई पीछे की और अपनी कलाई घड़ी के रेडियम डायल पर नज़र डाली। पौने बारह बज रहे थे। वह हिला नहीं, बस बजने देता रहा जब तक कि वह अपने आप बंद नहीं हो गई। उसे अंदाज़ा था कि कौन है—यह पता लगाने की कोशिश कर रहा है कि इस घर में कोई है या नहीं। उसने सोचा कि अगर उसने फोन उठाया तो उसे कुछ सुनाई नहीं देगा—बस दूसरी तरफ से एक क्लिक की आवाज़ आएगी, और उसकी योजना विफल हो जाएगी।

"कितना जोखिम लेना है ना?" उसने मन ही मन बुदबुदाया। "हालांकि अब तक उसे हैमिल्टन की लिखावट वाला वह पोस्टकार्ड मिल ही गया होगा जो मैंने बोस्टन के रास्ते भेजा था।"

उसे सिगरेट पीने की तीव्र इच्छा हो रही थी, लेकिन वह जानता था कि ऐसा करना ठीक नहीं होगा। ज़रा सी भी बात, जैसे कि इस खाली समझे जाने वाले घर की अंधेरी खिड़कियों से झाँकती एक जलती हुई सिगरेट, उसकी सारी सावधानीपूर्वक की गई तैयारी को बर्बाद कर सकती थी। उसने इतनी मेहनत और धैर्य से काम किया था कि अब ऐसा नहीं होने देना चाहता था।

उसने थोड़ी देर बाद फिर अपनी घड़ी देखी। अब सवा एक बज चुका था; आधा घंटा बीत चुका था।

"बस अब किसी भी मिनट में जन्म हो सकता है," उसने धीरे से कहा।

अगले तीस सेकंड के भीतर ही बाहर से धीमी गति से चलती कार की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। घर के सामने आते ही कार की रफ़्तार थोड़ी धीमी हुई, लेकिन न तो वह अंदर आई और न ही रुकी। इसके बजाय, वह धुंधली स्ट्रीटलाइटों के नीचे एक भूत की तरह अगले मोड़ की ओर आगे बढ़ गई। उसे पहचानते ही वह उदास मुस्कान के साथ मुस्कुराया। वह गली का चक्कर लगाएगी, जायज़ा लेगी, फिर दोबारा आएगी और रुक जाएगी। उसका मालिक हर संभव सावधानी बरत रहा था, सिवाय एक सही सावधानी के—यहाँ से पूरी तरह दूर रहना।

टकराव का समय आ गया था। कैसमेंट आखिरकार उस बड़ी कुर्सी से उठा जिस पर वह शाम ढलने के बाद से बैठा था, अपनी कमर पर टटोली बंदूक ढूंढी और चुपचाप हॉल में चला गया। वह सीढ़ियों के पीछे गया, जहाँ एक दरवाजा था जो सीढ़ियों के ढांचे में ही बने एक छोटे से भंडारगृह में खुलता था।

वह अंदर चला गया, तभी बाहर से पहियों की घरघराहट फिर से उसी दिशा से सुनाई दी। इस बार वे रुक गए। कुछ देर का इंतज़ार हुआ, फिर कार का दरवाज़ा खुलने की धीमी सी आवाज़ आई। फिर बरामदे से किसी के दबे पांव चलने की आहट सुनाई दी। ताले में चाबी घूमी।

आवाज सुनकर कैसमेंट ने मन ही मन सिर हिलाया। "जाहिर है, हैमिल्टन की चाबी चुराई। डुप्लीकेट बनाने के लिए मोम की छाप ली, और फिर किसी तरह उसे वापस हैमिल्टन को दे दी। इसी तरह वह उन्हें यहाँ से बाहर ले गया।"

दरवाजा खुला और सड़क से आती हल्की धुंधली रोशनी अंधेरे हॉल में छनकर अंदर आई। सीढ़ियों के पीछे दरवाजे की एक पतली सी दरार से कैसमेंट को एक मंडराती हुई आकृति दिखाई दी जो वहाँ खड़ी होकर सुन रही थी। उसके हाथ खाली थे, लेकिन कोई बात नहीं। वह बस हर सावधानी बरत रहा था।

परछाई ने दरवाजे का खुला हिस्सा चौड़ा कर दिया। फिर वह नीचे झुकी और तीन दिनों से जमा किए गए नकली पत्रों के ढेर को देखने लगी, जिन्हें कैसमेंट ने हैमिल्टन के पत्र रखने वाले स्लॉट के ठीक नीचे दरवाजे के अंदर बड़ी सावधानी से रखा था। बाहर एक डेयरी से खरीदी गई दूध की एक बोतल भी रखी थी। स्याही से रंगी हुई आकृति सीधी हुई, मुड़ी और बरामदे से नीचे उतर गई, दरवाजा वैसे ही खुला छोड़ दिया। कैसमेंट को कोई चिंता नहीं हुई, वह हिला तक नहीं।

फिर से इंतज़ार करना पड़ा। बरामदे से एक बार फिर चरमराहट की आवाज़ आई। वही साया फिर से दिखाई दिया, इस बार उसके एक हाथ में छोटे सूटकेस जैसी कोई चौकोर चीज़ थी। उसके बाद दरवाज़ा बंद हो गया और चारों ओर फिर से अंधेरा छा गया।

कालीन बिछे गलियारे में सावधानी भरे कदमों की आहट सीढ़ियों की ओर सुनाई दी। वे ऊपर नहीं गए बल्कि पीछे की ओर बढ़ गए। वह रास्ता टटोलते हुए चल रहा था, इतना समझदार था कि उसने कथित तौर पर खाली पड़े घर में न तो बत्ती जलाई और न ही टॉर्च या माचिस का इस्तेमाल किया।

सीढ़ियों के नीचे बने उस स्टोररूम का दरवाज़ा, जिससे कैसमेंट गुज़रा था, धीरे से खुला। फिर भी कुछ नहीं हुआ। ज़मीन पर कुछ रखे जाने की आवाज़ आई। फिर दो छोटे सूटकेस के कुंडी एक के बाद एक खुलने की आवाज़ आई। उसके बाद कागज़ों के खुलने की तेज़ खड़खड़ाहट हुई, और फिर कागज़ों में से कुछ खुरदुरा सा बाहर निकाला गया।

वहाँ दीवार पर हुक लगे हुए थे, जिन पर कई ऐसी चीजें लटकी हुई थीं जिनका इस्तेमाल बहुत कम होता था। गोल्फ बैग, टेनिस रैकेट के कवर—और गैस मास्क जो हैमिल्टन यूरोप से स्मृति चिन्ह के रूप में लाए थे।

एक हाथ दीवार के सहारे ऊपर की ओर बढ़ा, खाली हुक की तलाश में। कैसमेंट ने ठीक इसी स्थिति के लिए दो हुक खाली छोड़ रखे थे।

दूसरे ने उसे केवल स्पर्श के माध्यम से खोज निकाला। बांह फिर से फर्श की ओर झुकी, उसमें कुछ सरसराहट की आवाज आई—और फिर अचानक उस छोटे से बंद स्थान की खामोशी में एक तीखी धातुई क्लिक की आवाज गूंजी।

भयानक दहशत की एक चीख सुनाई दी, कोई चीज धड़ाम से फर्श पर गिरी, और ऊपर एक बल्ब जल उठा, जिससे जगह हल्की रोशनी से जगमगा उठी।

हैगार्ड और कैसमैन घर के मालिक के उलटे पड़े एक संदूक के पार आमने-सामने खड़े थे। हैगार्ड संदूक के बाहर था, जासूस अंदर, लेकिन वे दोनों संदूक के ऊपर एक हथकड़ी से अटूट रूप से जुड़े हुए थे, जिसके लोहे के जबड़े अंधेरे में हर समय हैगार्ड के उस खाली हुक की ओर हाथ बढ़ाने का इंतज़ार कर रहे थे, जैसे किसी जाल में रखा चारा।

हैगार्ड के पैरों के पास जैतून के रंग का एक गैस मास्क पड़ा था। दूसरा मास्क अभी भी स्टोररूम के दरवाजे के पास रखे छोटे सूटकेस में रखा था, जिसे स्थानांतरित किया जाना बाकी था।

“बहुत सुंदर,” कैसमेट ने बस इतना ही कहा। “इसमें बहुत समय और मेहनत लगी, लेकिन सब कुछ सार्थक हो गया!” उसने सूटकेस के हैंडल से चिपके हुए गत्ते के टैग के फटे हुए आधे टुकड़े पर नज़र डाली। “तो तुमने उन्हें तब तक यहीं छिपा रखा था जब तक मैं उन्हें ढूंढता रहा। किसी पार्सल रूम में किसी फर्जी नाम से चेक इन किया था, हैमिल्टन के जाने और सब कुछ शांत होने का इंतज़ार कर रहे थे ताकि तुम उन्हें चुपके से वापस ला सको। बुरा विचार नहीं था—काश यह काम कर जाता।”

आसमान नीला था, सूरज चमक रहा था, और जेनेट मिलर बरामदे में अपनी कुर्सी पर बैठी थी। उसने अपने सामने खड़े उस आदमी और औरत को देखा, दोनों के हाथों में एक जासूस के साथ हथकड़ी लगी हुई थी, और उसके भीतर की लौ विजय की आग की तरह आसमान की ओर भड़क उठी।

“इस महिला को देखो, जिसके बेटे की तुमने हत्या की है,” कैसमेंट ने गंभीर स्वर में कहा। “अगर हो सके तो इन आँखों का सामना करो—और इस अपराध से इनकार करो।”

वे ऐसा नहीं कर सके। हैगार्ड का सिर उसकी निगाहों के सामने झुक गया। वेरा ने अपनी नज़रें फेर लीं। दोनों असहज होकर एक-दूसरे के शरीर से हिलने-डुलने लगे।

“तुम उसे फिर देखोगे। वो तुम्हारे खिलाफ मुख्य गवाह होगी—हैमिल्टन और उसके दो गैस मास्क के साथ। इन्हें ले जाओ, लड़कों।” उसने उसकी कुर्सी घुमा दी ताकि वो उन्हें जाते हुए देख सके।

“मुझे लगता है कि आप सोच रही होंगी कि मुझे कैसे पता चला कि वह हैमिल्टन के घर किस रात आएगा,” उसने उससे कहा। “मैंने यह सुनिश्चित किया कि वह पिछली रात ही आए। मैं हैमिल्टन के पास गया, उसे पूरी कहानी बताई, और वह मेरी मदद करने के लिए तैयार हो गया। वह बोस्टन गया, और परसों वहाँ से हैगार्ड को एक पोस्टकार्ड भेजा। उसने कहा कि वह आज तक वहीं रहेगा। इस तरह पिछली रात ही एकमात्र ऐसी रात थी जब हैगार्ड को बिना किसी को पता चले उन मास्क को वापस घर लाने का मौका मिल सकता था। मैंने कुछ नकली चिट्ठियाँ डालीं और लेटर बॉक्स में भर दीं, और दरवाजे पर दूध की एक बोतल रख दी। वह मेरे झांसे में आ गया।”

एक गंभीर दिखने वाला, सफ़ेद बालों वाला आदमी घर से बाहर आया, कैसमेंट के पास गया और उसके कंधे पर हाथ रखकर बोला, “बहुत बढ़िया काम किया! तुमने तो कमाल कर दिया—और वो भी अकेले ही!”

कैसमेंट ने जेनेट मिलर की ओर इशारा करते हुए कहा, "मैं तो बस एक सहायक कर्मचारी था। धन्यवाद और श्रेय तो इन्हें ही जाता है।"

“मुकदमे की सुनवाई होने तक उसकी देखभाल कौन करेगा?” कप्तान ने पूछा।

"क्यों, मुझे लगता है कि हमारे घर में काफी जगह है," कैसमेंट ने कहा।

आकाश नीला था, सूरज की गर्माहट थी, और उसकी आँखें उस पर टिकी हुई कोमल चमक बिखेर रही थीं। उसके पास फिर से जीने के लिए तीन कारण थे।

जिस रात मेरी मृत्यु हुई

मेरे बारे में मुख्य बात यह है कि मुझे इतने वर्षों तक सही पक्ष में रहना चाहिए था, और फिर जब मैंने उस पक्ष को पार किया, तो पूरे दिल से पार किया, जैसा कि मैंने किया—सब कुछ एक ही रात में। आप कह सकते हैं कि एक घंटे में।

ज़्यादातर लोग ऐसी चीज़ों के लिए धीरे-धीरे तैयार होते हैं। लेकिन मैं नहीं; मैंने तो इससे पहले कभी चेक उठाया तक नहीं था, फ़ोन में सिक्का भी नहीं डाला था। मैं उस तरह का सुस्त इंसान था कि अगर मुझे कम पैसे मिलते तो मैं चुप रहता, लेकिन अगर मुझे ज़्यादा पैसे वापस मिल जाते तो मैं वहीं खड़ा होकर सबका ध्यान इस ओर दिलाता।

और जहाँ तक किसी साथी इंसान के खिलाफ हाथ उठाने की बात है—आपने गलत व्यक्ति को निशाना बनाया था, बेन कुक को नहीं। फिर भी, मेरे अंदर कहीं न कहीं यह प्रवृत्ति दबी हुई थी, बस बाहर आने का इंतज़ार कर रही थी। शायद इतने सालों तक बिना किसी सहारे के दबी रहने के कारण यह और भी बुरी हो गई, जैसे किसी बॉयलर में भाप।

मैं पिछले दस-बारह सालों से के सिटी में तीस रुपये प्रति माह की तनख्वाह पर काम कर रहा था, एक डिपार्टमेंटल स्टोर के पुरुषों के कपड़ों के सेक्शन में (दूसरे लोगों के) सूट आज़माता था। अंदर आने वाले हर व्यक्ति को "सर" कहता, उनके कोट के कॉलर ठीक करता और उनकी पीठ थपथपाता। एक रात मैं उसी तरह का आदमी बनकर घर लौटा, ईमानदार, महत्वाकांक्षी नहीं, ढुलमुल, यहाँ तक कि मेरे ज़मीर पर एक पार्किंग-टिकट का भी बोझ नहीं था, और पाँच मिनट बाद ही मेरे हाथ में एक हत्या का मामला आ गया।

मुझे लगता है कि थेल्मा ही वह शख्स थी जिसने मेरे अंदर छिपी इस प्रवृत्ति को उजागर किया; अगर वह वैसी महिला न होती तो शायद यह प्रवृत्ति छिपी ही रहती। आगे पढ़ने पर आपको पता चलेगा कि बाद में उसे ऐसा करने पर पछतावा करने के कई कारण मिले। जैसे शैतान को बुला लेना और फिर उससे छुटकारा न पा पाना।

थेल्मा मेरी लिव-इन पार्टनर थी। मेरी पहली पत्नी, फ्लोरेंस, ने मुझे पाँच साल पहले ही बेकार समझकर छोड़ दिया था और इंग्लैंड चली गई थी। हम दोस्त बनकर अलग हुए। मुझे याद है उसने कहा था कि वह मुझे ठीक-ठाक पसंद करती थी, मुझमें संभावनाएं थीं, लेकिन उन्हें विकसित करने में बहुत समय लगेगा; उसे बना

बनाया पति चाहिए था। बाद में उसने मुझे बताया कि उसका तलाक हो गया है और वह वहाँ किसी बड़े शराब बनाने वाले से शादी कर रही है।

उसके बाद मैं थेल्मा से शादी कर सकता था, लेकिन किसी न किसी तरह हम ऐसा कर ही नहीं पाए, बस लिव-इन रिलेशनशिप में ही रहे, जो किसी भी तरह से ठीक ही है। आप जानते ही हैं कि विपरीत स्वभाव वाले लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं, और शायद इसी वजह से मेरा थेल्मा से रिश्ता बना; वह हर तरह से मुझसे बिल्कुल विपरीत थी। महत्वाकांक्षी, दृढ़ निश्चयी, और जो चाहती थी उसे पाने में उसे कोई संकोच नहीं होता था। उसका पसंदीदा वाक्य हमेशा यही होता था, "अगर आप किसी काम से बच सकते हैं, तो उसे करना ही बेहतर है!"

उदाहरण के लिए, जब मैंने उसे बताया कि मुझे एक नए सूट की ज़रूरत है और मेरे पास पैसे नहीं हैं, तो वह कहती थी: "अच्छा, तुम तो पुरुषों के कपड़ों के विभाग में काम करते हो! स्टॉक में से एक निकाल लो—उन्हें कभी पता ही नहीं चलेगा कि कौन सा सूट है।" मुझे लगता था कि वह मज़ाक कर रही है।

जब उसने मुझे हमारे मैनेजर से वेतन बढ़ाने के लिए उकसाया और मेरी बात बुरी तरह से ठुकरा दी गई, तो उसने कहा: "मुझे लगता है कि बीस साल बाद भी तुम तीस-तीस रुपये प्रति सप्ताह कमाते रहोगे, जब तुम्हें व्हीलचेयर पर काम पर ले जाना पड़ेगा! मेरा क्या? अगर कल कोई टक्कर मारकर भाग जाने वाला ड्राइवर तुम्हें सड़क पर बिखेर दे तो मेरा क्या काम होगा? कम से कम बीमा तो करवा लो?"

तो मैंने वही किया। पहले तो मैं सिर्फ पाँच हज़ार डॉलर की पॉलिसी लेने वाला था, जो उस समय मेरे लिए काफी ज़्यादा थी, लेकिन थेल्मा ने कहा, “क्यों न इसे हमारे लिए फ़ायदेमंद बनाया जाए? प्रीमियम की चिंता मत करो, कुकी। मैंने तुम्हारे मिलने से पहले से ही कुछ पैसे बचा रखे हैं। मैं शुरुआत करती हूँ। पहला प्रीमियम मैं खुद भर दूँगी—उसके बाद देखेंगे।” तो मैंने दस हज़ार डॉलर की पॉलिसी ली और थेल्मा को लाभार्थी बनाया, ज़ाहिर है, क्योंकि मेरे परिवार का कोई और सदस्य या कोई और नहीं था जिसकी देखभाल करनी हो।

दो साल पहले की बात है; तब से वो मेरे लिए एक मेमने की तरह सारे खर्च उठाती आ रही थी। इन सब बातों से मुझे एहसास हुआ कि उसके सख्त बाहरी रूप के पीछे असल में बहुत बड़ा दिल था, और उस रात जब मैं रोज़ से थोड़ा जल्दी घर के लिए निकला, तो मैं चिड़िया की तरह चहचहा रहा था और "मेरी प्यारी पत्नी" (जैसा कि मैं उसे प्यार से बुलाता था) के बारे में सुखद विचारों से भरा हुआ था, और सोच रहा था कि आज रात के खाने में क्या बनेगा।

दुकान पर मेरा रोज़ का छुट्टी का समय छह बजे था, लेकिन पिछली रात हमने सामान का हिसाब-किताब पूरा कर लिया था, और मैं पूरे हफ़्ते बिना वेतन के ओवरटाइम कर रहा था, इसलिए मैनेजर ने मुझे एक घंटा पहले छुट्टी दे दी। मैंने सोचा कि थेल्मा को सरप्राइज़ देना अच्छा रहेगा, क्योंकि मुझे पता था कि उसे अगले दो-तीन घंटों तक मेरी उम्मीद नहीं थी, उसे लग रहा था कि हम अभी भी बाकी रातों की तरह सामान का हिसाब-किताब कर रहे होंगे। इसलिए मैंने आने से पहले फ़ोन नहीं किया।

शेरिल, जिसकी टाई की दुकान सामने वाली गली में थी, ने मुझे एक गिलास बीयर पीने के लिए मनाने की कोशिश की। अगर मैं मान जाता, तो मेरा एक घंटे का अतिरिक्त समय खत्म हो जाता। मैं अपने तय समय पर घर पहुँचता—और यह इस दुनिया में मेरी आखिरी बीयर भी होती। मुझे यह पता नहीं था; मैंने मना इसलिए किया क्योंकि मैंने बचे हुए पैसे से उसके लिए एक डिब्बा मिठाई खरीदने का फैसला किया। मीठे को मीठा!

कोपलैंड ड्राइव पर हमारा बंगला आखिरी घर था। सड़क एक ब्लॉक आगे जाकर खत्म हो जाती थी। हमारे घर के दूसरी तरफ जंगल शुरू हो जाता था, जिसमें बिल्कुल पतले-पतले पेड़ थे। मुझे वैसे भी दो ब्लॉक आगे दवा की दुकान पर उतरना था, क्योंकि बसें वहीं से मुड़कर वापस आती थीं। इसलिए मैंने नीले रिबन से बंधी एक पौंड कैरेमल खरीदी और घर की ओर चल दी।

जब मैं गलियारे में मुड़ी तो मैंने सीटी बजाना बंद कर दिया, ताकि उसे पता न चले कि मैं वापस आ गई हूँ और मैं चुपके से उसके पीछे जाकर उसकी आँखों पर हाथ रख सकूँ। मैं उस समय बहुत खुश थी! फिर जब मैंने चाबी निकाल ली, तो मैंने अपना इरादा बदल दिया और दबे पांव घर के पीछे चली गई। वह शायद इस समय रसोई में ही होगी, तो मैं वहीं जाकर उसे चौंका दूँगी।

वह वहीं थी। मैंने चुपचाप जाली का दरवाजा पीछे खींचते हुए उसकी धीमी आवाज सुनी। उसके पीछे लकड़ी का दरवाजा खुला था, और एक गलियारा था जिसके एक तरफ रसोईघर खुलता था।

जैसे ही मैंने पर्दा बंद किया, बिना उसे ज़ोर से बंद किए, मुझे एक आदमी की आवाज़ सुनाई दी। इससे मुझे एक पल के लिए निराशा हुई क्योंकि मैं जानता था कि उसके साथ कोई डिलीवरीमैन या कलेक्टर ज़रूर होगा, और मैं किसी किराने की दुकान के क्लर्क या पेट्रोल पंप इंस्पेक्टर के सामने उसकी आँखों पर हाथ रखकर खुद को बेवकूफ नहीं बनाना चाहता था।

लेकिन मुझे अपना यह छोटा-सा सीधा-सादा प्लान छोड़ना अच्छा नहीं लग रहा था, इसलिए मैंने वहीं थोड़ी देर इंतज़ार करने का फैसला किया जब तक वह चला न जाए, और जाते समय उसे इशारा कर दिया कि वह मुझे किसी को न बता दे। फिर अंदर जाकर उसे सरप्राइज दे दूं। मैं सचमुच अविकसित था!

वह बहुत धीमी आवाज़ में कह रही थी, "नहीं, मैं तुम्हें अभी सब कुछ नहीं देने वाली। तुम्हारे पास पचहत्तर हैं, बाकी तुम्हें बाद में मिलेंगे।"

मैंने मन ही मन सीटी बजाई और चिंता करने लगी। "हे भगवान! उसने हमारे किराने के बिलों को एक साल से भी ज़्यादा समय तक टाला होगा, तभी तो इतना पैसा जमा हुआ है!" फिर मैंने सोचा कि वह शायद पैसों की बात कर रही होगी, डॉलर की नहीं।

“अगर मैं तुम्हें तय समय से पहले पूरे ढाई सौ रुपये दे दूं, तो मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम अपना माल शहर से बाहर नहीं ले जाओगे—और ऐसा नहीं करोगे? मेरे पास क्या जवाब होगा? हम इसमें कोई उधार का लेन-देन नहीं कर रहे हैं, दोस्त, यह मत भूलो!”

उसकी आवाज़ पहले से कहीं ज़्यादा सख्त लग रही थी, हालाँकि वो कभी दब्बू भी नहीं थी। लेकिन उसकी अगली बात सुनकर मैं लगभग वहीं गिर पड़ा। "ठीक है, जैसा तुम चाहो। मुझे एक और कप कॉफ़ी

पिला दो—" और तभी एक कुर्सी आगे खिसक गई। अरे, ये तो कोई डिलीवरी वाला नहीं था; वो तो वहीं बैठा था और वो उसे खाना खिला रही थी!

"इसे जल्दी से अंदर ले लो," उसने तीखे स्वर में कहा, "वह आधे घंटे में आ जाएगा।"

मेरा पहला ख्याल तो वही था जो किसी और का भी होता—कि ये कोई धोखेबाज़ी है। लेकिन जब मैंने दरवाज़े के चारों ओर सावधानी से गर्दन घुमाकर उसकी पीठ को अपनी आँखों के सामने लाया, तो मुझे समझ आ गया कि ये भी मुमकिन नहीं था। वो जो भी था और मेरे घर में जो भी कर रहा था, वो कोई धोखेबाज़ नहीं था!

उसकी ठुड्डी पर तीन दिन बढ़ी हुई दाढ़ी थी और उसके बाल गर्दन के चारों ओर छोटे-छोटे पंखों की तरह बिखरे हुए थे, और अगर आप उसके कपड़ों पर सीटी बजाते तो वे शायद अपने आप उससे अलग होकर आपकी ओर आ जाते।

वह किसी आवारा या बेघर व्यक्ति की तरह दिख रहा था जिसे वह जंगल से उठाकर लाई हो।

उसके मुंह से निकले अगले शब्द सुनते ही मेरे चारों ओर बिजली सी कौंध गई और ऐसा लगा जैसे मेरा दिमाग तीन हिस्सों में बंट गया हो। “यहीं घर में ही कर लो। मैं उसे जंगल में नहीं भेज सकती—वह अपनी परछाई से भी डरता है, और अंधेरे में तुम उसे ढूंढ भी नहीं पाओगे। बाहर से रसोई के इस पर्दे पर नज़र रखना। यह रात साढ़े आठ बजे तक खुला रहेगा।”

जब आप इसे नीचे जाते हुए देखें, तो समझ लीजिए कि मैं फिल्म देखने के लिए घर से निकल रही हूँ। मैं इस पिछले दरवाजे को ठीक कर दूँगी ताकि मेरे जाने पर आप भी अंदर आ सकें। अब, मैंने आपको दिखा दिया है कि फोन कहाँ है—ठीक उस लंबे गलियारे के पार। कुछ भी करने से पहले घंटी बजने का इंतज़ार कीजिए; मैं फिल्म हॉल से उसे फोन कर रही हूँ, बहाना बना रही हूँ कि मैं कुछ भूल गई हूँ, और इससे आपको उसकी लोकेशन पता चल जाएगी। आपको पता चल जाएगा कि वह कहाँ है, और अंदर आते समय अचानक उससे सामना नहीं होगा।

“उसकी पीठ तुम्हारी तरफ होगी और मैं तार के ऊपर से उसका ध्यान भटकाऊंगा। ध्यान रखना कि जब तुम निकलो तब तक उसकी टिक-टिक बंद न हो रही हो, इसलिए ट्रिगर दबाने में जरा भी देर मत करना; इतनी दूर इतनी रात को कोई नहीं सुनेगा!”

“मैं तार पर गोली चलने की आवाज़ सुनूँगी और फ़ोन काट दूँगी, लेकिन बाकी का शो मैं नहीं देखूँगी। मैं आखिर में अपना रुमाल या कुछ और खोना चाहती हूँ और पूरे थिएटर को उलट-पुलट कर देना चाहती हूँ, ताकि मैं खुद को सही जगह पर महसूस कर सकूँ। इससे आपको दो घंटे का समय भी मिल जाता है ताकि आप शांत हो सकें, इसलिए मैं चीखने-चिल्लाने का नाटक तब तक शुरू नहीं करूँगी जब तक मैं ग्यारह बजे वापस आकर उसे ढूंढ नहीं लेती—”

उन्होंने कहा, “बाकी एक सौ पचहत्तर का क्या? आप मुझसे यह उम्मीद तो नहीं कर रहे कि मैं बाद में यहाँ आकर पैसे वसूलूंगा?”

मैंने उसकी हल्की-सी हंसी सुनी। “यह ऐसी जगह पर होगा जहाँ तुम इसे बिना अपना काम किए नहीं निकाल पाओगे! इस तरह मैं पक्का कर लूंगी कि तुम मुझे धोखा न दो! यह उसकी अपनी कोट की अंदरूनी जेब में होगा, बिना उसे पता चले! मैं उसे अलविदा कहते हुए चुपके से इसमें डाल दूंगी, और मैं उसे जानती हूँ, उसे यह कभी नहीं मिलेगा। बस उसके साथ काम खत्म होने के बाद हाथ डाल लेना, और यह तुम्हें वहाँ मिलेगा!”

“लेडी,” उसने फुसफुसाते हुए कहा। “मुझे आपकी तारीफ करनी ही पड़ेगी!”

“चलो चलें,” उसने आदेश दिया।

मुझे लगता है कि उस घटना के आखिरी हिस्से ने ही मुझे इतना क्रोधित कर दिया और मेरा दिमाग खराब कर दिया, वह बात कि मैंने खून का पैसा जिंदा रहते हुए चुपके से अपनी जेब में डाल लिया, ताकि वह मेरे मरने के बाद उसे ले ले। क्योंकि मैंने उस समय जो किया, वह मेरे स्वभाव के बिल्कुल विपरीत था। बेन कुक, उस पल तक का बेन कुक, अगर उसके घुटने जवाब न दे देते तो वह उस घर से चुपके से निकल जाता और अपनी जान बचाकर भागता और फिर कभी उस जगह के आसपास नहीं आता। लेकिन मैं अब बेन कुक नहीं था—मेरे अंदर कुछ फट पड़ा। मैंने कैंडी का पैकेट अपने बगल में ज़मीन पर गिरने की आवाज़ सुनी, और फिर मैं उन पर टूट पड़ा, एक उत्तेजित बैल की तरह दहाड़ता हुआ। सिर्फ़ गड़गड़ाहट की आवाज़ें, शब्द कम। "तू हत्यारिन! तूने—अपने—पति—को!" नहीं, यह मैं नहीं था; यह एक ऐसा आदमी था जिसके अस्तित्व के बारे में हम दोनों को अब तक पता ही नहीं था। बुराई बेकाबू, एक तरह का जीता-जागता दुश्मन जो उनकी अपनी घिनौनी साजिशों से पैदा हुआ था, जैसे कोई जैक-इन-द-बॉक्स।

रसोई की मेज पर लाल और सफेद चेक वाला एक कपड़ा बिछा था। उस पर एक कप और तश्तरी रखी थी, और एक बंदूक भी। मैंने इनमें से कुछ भी नहीं देखा। बल्कि पूरा कमरा ही लाल रंग का था, मानो कोई धुंधली सी तस्वीर हो।

बंदूक तभी साफ दिखाई दी, जब उसने अपना हाथ उस पर कसकर पकड़ लिया, मानो किसी संकेत के तौर पर उसे दिखा रहा हो। मेरा हाथ भी सहज रूप से ऐसा ही करने लगा, लेकिन एक पल देर से; मेरा हाथ बंदूक की बजाय उसकी कलाई पर पड़ा। पृष्ठभूमि में दो कुर्सियों के गिरने की आवाज का कोई महत्व नहीं था, और न ही उसकी देर से निकली गुस्से से भरी चीख का: “अभी उसे दे दो, तुम! जल्दी दे दो—वरना हम डूब जाएंगे!” उस भयानक चीख में चाहे जो भी भावनाएँ थीं, डर बिल्कुल नहीं था। कोई और औरत होती तो बेहोश हो जाती; थेल्मा को आप नहीं जानते।

लेकिन वो चीख कारण और परिणाम की तरह थी; उसे बताने की ज़रूरत नहीं थी। बंदूक पहले से ही हमारे बीच ऊपर उठ रही थी, दो दबावों के एक-दूसरे को बेअसर करने से—मेरा दबाव उसे मुझसे दूर धकेल रहा था, उसका दबाव उसे मेरी ओर धकेल रहा था। हम दोनों में से कोई भी उसे ऊपर धकेलने की कोशिश नहीं कर रहा था, लेकिन वह एक चाप में ऊपर चली गई, पहले हमारे सिर के ऊपर, फिर वापस

शरीर के स्तर तक। हमारे बाएँ हाथ, जो एक-दूसरे से जकड़े हुए थे, उनके अलावा मुझे याद नहीं कि हमारे पैर या शरीर का बाकी हिस्सा ज़्यादा हिला हो।

वह पीछे से मुझ पर हमला करके स्थिति को अपने पक्ष में कर सकती थी। यही एक काम उसने नहीं किया—क्यों, मुझे नहीं पता। शायद अंत तक अवचेतन रूप से वह मुझ पर हाथ उठाने से हिचकिचा रही थी।

लगभग तीस सेकंड बाद, इससे ज़्यादा नहीं—लेकिन ऐसा लगा जैसे सदियाँ बीत गईं—आखिरकार वह फट गया। मेरे चेहरे के ठीक सामने से, मेरे कंधे के ऊपर से, और हमारे पीछे गलियारे में कहीं जा गिरा। फिर वह हमारे बीच धीरे-धीरे, बेहद धीमी गति से, चौथाई इंच के अंतर से घूमने लगा, और दूसरी बार फटने पर वह पहले ही एक चौथाई चक्कर लगा चुका था। इस बार वह बगल की दीवार से टकराया, हम दोनों के ठीक सामने। वह उस बिंदु से आगे बढ़ता गया, अपनी दोहरी पकड़ में बड़ी मुश्किल से घूमता रहा, और तीसरी बार फटने पर वह सीधे उसके मुंह में जा लगा।

वह उसे अपने साथ नीचे ले गया—उसका हाथ उसके पास था, मेरा नहीं—और मैं बस दोनों बाहें फैलाए वहीं खड़ी रही—और खाली।

मुझे लगता है कि अगर वो मेरे हाथ में ही रहता तो मैं उसे ही दे देता। उसे मुझसे यही उम्मीद थी; उसने दया की भीख नहीं मांगी। "ठीक है, अब मेरी बारी है!" उसने धीमी आवाज़ में कहा। "जल्दी से जल्दी खत्म करो!" और अपनी दोनों कोहनियों को आँखों के सामने क्षैतिज रूप से फैला दिया।

मैं एक मिनट के लिए इतना थक गया था कि झुककर उसे उठा नहीं पाया। उसी ने उसकी जान बचाई। उसके बाद के कुछ मिनट मुझे याद नहीं। मैं एक कुर्सी पर धंसा हुआ बैठा था। मैंने उसे फिर से सीधा किया होगा, और वह कह रही थी: "कुकी, अगर तुम दिमाग का इस्तेमाल करो तो दस हज़ार अब तुम्हारे हैं।"

उसकी बातों से ऐसा लग रहा था कि वह कई मिनट से बोल रही थी, मानो खुद को उस बात से बचा रही हो जो उसके लिए स्वाभाविक रूप से होनी चाहिए थी। उसने अब तक जो कहा था वह मुझे समझ नहीं आया था, लेकिन यह बात समझ आ गई।

“बाहर निकलो,” मैंने उदास स्वर में कहा। “मेरे आस-पास मत रहो। शायद मैं अपना मन बदल लूँ।” लेकिन अब समय बीत चुका था, और शायद वह भी यह बात मुझसे बेहतर जानती थी। कमरा अब अपने सामान्य रंगों में लौट आया था। केवल मेज़पोश ही लाल था; और उसके खुले मुँह से निकला थोड़ा सा छींटा भी लिनोलियम पर गिरा था।

उसने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, “वो तुम हो, नीचे। समझ नहीं आ रहा? रेडीमेड।” वह थोड़ा और करीब आई और हाथों की एड़ियों पर झुकते हुए मेज के उस पार मेरी ओर मुड़ी। “कुकी, ऐसे मौके को क्यों छोड़ रहे हो? एकदम खास। दस हज़ार। मेरे साथ खेलो, कुकी।” उसकी आवाज़ मीठी और मधुर थी।

“निकल जाओ—” मैंने बुदबुदाना शुरू किया, लेकिन अब मेरी आवाज़ भी धीमी हो गई थी। वह मेरे दिल में उतरती जा रही थी और हर मिनट और गहरी होती जा रही थी। वैसे भी, जो कुछ हुआ था उसके बाद मैं किसी भी बात के लिए तैयार था।

उसने झट से अपना हाथ ऊपर उठाया और मेरे आधे-अधूरे विरोध को अनसुना कर दिया। “ठीक है, तुमने मुझे रंगे हाथों पकड़ लिया। तुम मुझे इनकार करते हुए तो नहीं सुन रहे हो, है ना? तुम मुझे बहाना बनाते हुए तो नहीं देख रहे हो, है ना? गड़बड़ हो गई, और जो सबसे अच्छा था वही जीता। मैं तुम्हें साफ-साफ बता रही हूँ। लेकिन जो नियम मैंने तुम पर लागू किया था, वह अभी भी लागू है, दस ज़ी तुम्हारे हैं—” उसने फिर नीचे की ओर इशारा किया। “और ये रही तुम्हारी लाश।”

मैंने अपना सिर घुमाकर उसकी ओर देखा, बिना कुछ बोले सोच-विचार करते हुए उसे देखती रही। वह अपनी जीभ से जितनी तेज़ी से बोल सकती थी, बोलती रही।

“यह तुम पर निर्भर है। तुम फोन पर जाकर मेरी शिकायत कर सकती हो, मुझे दस साल की जेल भेज सकती हो—और अपनी बाकी जिंदगी तीस रुपये प्रति सप्ताह के हिसाब से लोगों की पैंट ठीक करने में बिता सकती हो। अगर चाहो तो ऐसे ही रहो। या फिर थोड़ी सी समझदारी दिखाकर दस हजार डॉलर कमा सकती हो। वैसे भी वो आदमी मर चुका है, कूकी। अब चाहकर भी उसे वापस नहीं ला सकती। क्या फर्क पड़ता है कि वो किस नाम से दफन होता है? उसे तो और भी अच्छा अंजाम मिलता है; पॉटर फील्ड में सिर के बल गिरने के बजाय उसे बग्गी की सवारी और ढेर सारे फूल मिलते हैं!”

मैंने उससे अपनी नज़रें नहीं हटाई थीं, लेकिन मैं और सुनना चाहती थी। "ये तो अजीब है; तुम तो दिमागी तौर पर परेशान हो," मैंने उम्मीद से कहा। "तुम ये सब कैसे छिपाओगे? इस शहर में मुझे जानने वाले सारे लोगों का क्या? उस आदमी का क्या जिसने मुझे बीमा बेचा? उस दुकान में बेंच पर बैठे उस आदमी का क्या जहाँ मैं काम करती हूँ? मैं उससे ज़रा भी मिलती-जुलती नहीं हूँ—"

“अगर उसका चेहरा देखकर तुम रुक गए हो, तो हम इसे आसानी से सुलझा सकते हैं। और चेहरे के अलावा, एक आदमी और दूसरे में क्या फर्क है? एक मिनट आराम से लेट जाओ, उसके बगल में लेट जाओ—मैं कुछ देखना चाहता हूँ।”

मैं इतना पाखंडी नहीं था कि और हिचकिचाऊं। उसे पहले से ही पता था कि मैं उसके साथ हूं—उसे पता चल गया था। मैं उसके बगल में, कंधे से कंधा मिलाकर, ज़मीन पर बैठ गया। वह बिल्कुल सीधा नहीं लेटा था, लेकिन उसने कुछ फुर्ती से उसे भी संभाल लिया। वह पीछे हटी और हमें अपनी आंखों से नापा। "तुम मुझसे करीब एक इंच लंबे हो, लेकिन छोड़ो ये सब।" मैं फिर से उठ खड़ा हुआ।

वह गई और पर्दा नीचे तक खींच दिया, फिर सिगरेट के धुएं से भरी नाक के साथ वापस आई। “यह आत्महत्या ही है, वरना पुलिस इसमें बहुत ज्यादा दखल देगी। तुम्हारी तरफ से मेरे लिए एक विदाई पत्र उन्हें रोके रखेगा। ऊपर जाओ और अपना दूसरा सूट और सारा सामान ले आओ—शॉर्ट्स और मोजे तक।”

लेकिन हम उसके नक्शे का क्या करेंगे?

“उबलते हुए कास्टिक सोडा से भरी एक बाल्टी से काम बन जाएगा। तहखाने में थोड़ा सा तो रखा है ना? चलो, उसे नीचे उतारने में मेरी मदद करो।”

“लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है? आप चाहते हैं कि लोग यह मान लें कि उसमें इतना साहस था कि उसने अपना चेहरा उसमें घुसा दिया?”

“तुम नीचे गए और बंदूक से अपने सामने के दांतों पर चोट मार ली, देखा? तुम पीछे की ओर गिर पड़े और गिरने से बाल्टी तुम्हारे चेहरे पर गिर गई। कुछ घंटों तक उसके नीचे रहने से उसका शरीर कंधों के ऊपर तक बिल्कुल सपाट हो जाएगा; उनके पास जांच के लिए कुछ खास नहीं बचेगा। उसके बाल लगभग तुम्हारे जैसे ही रंग के हैं, और तुम सालों से किसी दंत चिकित्सक के पास नहीं गए हो, इसलिए वे तुम्हारी उस तरह से जांच नहीं कर सकते।”

मैंने कहा, "इसमें अभी भी बहुत सारे छेद हैं।"

“हाँ, बिल्कुल,” थेल्मा सहमत हुई, “लेकिन जब मैं वहाँ चिल्ला-चिल्लाकर सबको बताऊँगी कि तुम मेरे पति थे, और तुम्हारा विदाई पत्र उनके सामने लहराऊँगी, तो उन्हें ढूंढने की क्या ज़रूरत होगी? इस कस्बे से कोई गायब नहीं होगा। वह एक राहगीर था। जंगल से निकलने के बाद भीख मांगने के लिए वह सबसे पहले इसी घर में रुका था। उसने मुझे खुद बताया था, और वह इससे आगे कभी नहीं जा पाया। जब बात पुलिस की आएगी, तो वह हमारी सबसे छोटी चिंता होगी, और जहाँ तक बीमा जांचकर्ता की बात है, एक बार जब मैं पहली बाधा पार कर लूँगी, तो मुझे पता है कि क्या करना है ताकि मामला उल्टा न पड़े: उसे कब्रिस्तान में दफनाने के बजाय कुछ दिनों में श्मशान घाट भेज दूँगी। उसके बाद तो शव निकालने का आदेश भी उनके किसी काम का नहीं रहेगा!”

मैंने भी वही बात कही जो उस मरे हुए आदमी ने कुछ देर पहले कही थी। "तुम कमाल हो—तुम्हारी आत्मा भाड़ में जाए! मुझे लगता है हम उसे खींच सकते हैं!"

“सोचो? मुझे पता है हम कर सकते हैं!” उसने सिगरेट का टुकड़ा उसके चेहरे पर मारा और सही जगह पर लगा! “हमेशा याद रखना—अगर तुम किसी भी काम से बच सकते हो, तो उसे करना ही बेहतर है। अब चलो—हमारे पास ज्यादा समय नहीं है।”

मैंने उसे कंधों से उठाया और उसने उसके पैरों से, और हम उसे रसोई से बाहर ले जाकर तहखाने की सीढ़ियों से नीचे ले गए और उसे वहाँ फर्श पर जैसे-तैसे लिटा दिया। बंदूक उसके लटकते हुए हाथ के सिरे पर, पूरे रास्ते उसके साथ ही रही।

नीचे कपड़े धोने की मशीन थी, तेल का चूल्हा था, कपड़े टांगने के लिए रस्सियाँ थीं, और भी बहुत कुछ। कपड़े उबालने के लिए गैस हीटर भी था। उसने उसे जलाया, फिर एक बाल्टी में आधा पानी भरकर उसे गर्म होने के लिए रख दिया। फिर उसने उसमें जितना हो सके उतना कास्टिक सोडा डाल दिया, जब तक कि वह खत्म न हो जाए। "बस उसके चेहरे की खाल उतर जाए," उसने कहा। "अभी ऊपर जाओ और कपड़े ले आओ, जैसा मैंने तुम्हें बताया था, और एक सुसाइड नोट लिख लो। कुछ लेकर रसोई की दीवार से उन कीड़ों को निकाल दो; घंटी बजने से पहले दो बार धमाका हुआ था, है ना? दरारों में राख मल दो, ताकि वे नई न दिखें। मुझे बता देना जब तुम तैयार हो जाओ।"

लेकिन मैं अब बेन कुक नहीं था। "और तुम्हें उस बंदूक के साथ यहाँ अकेला छोड़ दूँ? उसमें अभी भी तीन गोलियाँ हैं। तुम इतने अच्छे विचारों से भरे हो, मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम आखिरकार अपनी पुरानी योजना पर वापस नहीं लौटोगे?"

उसने अधीरता से हाथ ऊपर उठा दिए। "छोड़ो इसे! यह उसके हाथ में ही रहना चाहिए; तुम इसे अपने साथ नहीं ले जा सकते। हम दोनों इसमें साथ हैं, है ना? या तो हम एक-दूसरे पर पूरा भरोसा रखें, या फिर अभी के अभी रिश्ता खत्म कर दें!"

वह एक अजीब से उत्साह से भरी हुई थी। उसे देखकर ही मुझे समझ आ गया कि अब मुझे उसकी तरफ से चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। यह उत्साह संक्रामक भी था; यही तो सबसे बुरी बात थी—लालच का बुखार। मैं मुड़कर तुरंत ऊपर की मंज़िल पर चला गया। मेरी आँखों के सामने दस-दस धब्बे थे।

मैंने उसके लिए हर चीज़ का पूरा सेट निकाल लिया। एक कलात्मक अंतिम स्पर्श देने के लिए मैंने अपने जैसे एक अतिरिक्त स्ट्रैप भी दे दिया। बीमा के लिए मेरी जाँच में इसकी ज़रूरत पड़ी थी। मैं अपने साथ एक रेज़र और एक क्लिपर ले गया, जिसका इस्तेमाल मैं बाल कटवाने के पैसे बचाने के लिए अक्सर करता था। मैं लिविंग रूम में डेस्क तक भागा, कागज़ निकाला और लिखा:

मेरी प्यारी थेल्मा:

मैंने इस बारे में सोच लिया है और मुझे लगता है कि तुम सही हो। मैं कभी कुछ नहीं बन पाऊँगा। अभी तक तुम्हें बताने की हिम्मत नहीं हुई, लेकिन पिछले महीने जब मैंने ग्रियर्सन से वेतन बढ़ाने के लिए कहा तो उसने मना कर दिया। मैं तुम्हारे गले का फंदा हूँ, बस एक बोझ; मेरे बिना तुम्हारा भला होगा। जब तुम आज रात घर आओगी और इसे पढ़कर मुझे ढूँढोगी, तब तुम्हें समझ आ जाएगा कि मैं क्या कहना चाह रहा हूँ। तहखाने के पास मत जाना, प्रिये; मैं वहीं मिलूँगा। अलविदा और भगवान तुम्हारा भला करे।

बेन

मुझे तो यह काफी अच्छा लगा। जब मैंने नीचे जाकर उसे दिखाया तो उसे भी ऐसा ही लगा। उसने मुझे घूरकर देखा और कहा, "मुझे लगता है कि मैं इतने सालों से तुम्हें कम आंकती रही हूँ।"

कास्टिक सोडा से भरी बाल्टी से भाप के बादल निकल रहे थे। मैंने कहा, "इसे अच्छी तरह से पीट लो और गोलियों के निशान और रसोई के फर्श पर फैले खून को साफ कर दो, तब तक मैं उस पर काम करने जाता हूँ —"

जब मैं नीचे व्यस्त था, तब मुझे उसके कदमों की आहट अपने सिर के ऊपर चहलकदमी से इधर-उधर सुनाई दे रही थी।

मैंने रेजर और पीले कपड़े धोने के साबुन की एक टिकिया से उसके चेहरे पर जल्दी से एक बार निशान बना दिए, उसकी गर्दन को थोड़ा सा काट दिया, ताकि हमें कास्टिक सोडा पर ज्यादा निर्भर न रहना पड़े।

मैंने उसके कीड़े लगे कपड़ों को एक गठरी में इकट्ठा किया और उसे बांध दिया, फिर उसे सिर से पैर तक कपड़ों से सजा दिया।

अपने हाथ से बंदूक को गिराए बिना, कमीज और जैकेट की आस्तीनों के बीच से अपना हाथ निकालने के लिए उसे काफी मशक्कत करनी पड़ी।

मैंने उसके नौकर की तरह उसकी टाई और जूतों के फीते बांधे और अपनी जेबों में मौजूद सारा सामान, यहाँ तक कि सिगरेट का फटा हुआ पैकेट भी, उसकी जेबों में भर दिया। मैंने उसकी कलाई पर अपनी घड़ी बाँधी और फिर सीधा खड़ा होकर उसे ऊपर से नीचे तक देखा। अब वह पहले से कहीं ज़्यादा मेरे जैसा दिख रहा था।

वो फिर से नीचे आई, सिर पर फिल्म देखने वाली टोपी पहने हुए। “वाह! सब कुछ ऊपर तैयार है। ये रही दो बेकार गोलियां। तुम उसके सामान का क्या कर रहे हो, उसे भट्टी में क्यों डाल रहे हो?”

“बिल्कुल नहीं,” मैंने कहा। “यह बहुत बार गड़बड़ हो चुका है। बस एक बटन या बाल का एक टुकड़ा अंदर रह जाए तो धमाका हो जाएगा! मैं इसे अपने साथ ले जा रहा हूँ और कहीं और फेंक दूँगा।”

“यही तो चाहिए!” वह मान गई। उसने मुझे एक जोड़ी स्मोक्ड चश्मा और एक पुरानी गोल्फ टोपी पकड़ा दी। “ये लो, मैंने तुम्हारे लिए ढूंढे हैं, जब तुम भागोगे तब काम आएंगे। जो भी तुम्हें जानता है, वह तुम्हें पहचान ही लेगा—लेकिन अगर भागते समय कोई तुम्हें देख ले, तो ये ठीक रहेंगे।”

“जो भी हो, शहर के बीचोंबीच से दूर रहना। मेरे निकलने के लगभग दस मिनट बाद निकल जाना; पीछे के रास्ते से जाना, जंगल से होते हुए निकलना; फेरंडेल पहुँचने तक हाईवे से दूर रहना—कोई तुम्हें गुजरती हुई कार से देख सकता है। वहाँ से आधी रात को बस पकड़ लेना—जहाँ भी तुम छिपने का फैसला करो, वहाँ तक जाना, और बेहतर होगा कि राज्य की सीमा के दूसरी तरफ पहुँच जाओ। अब हमें जल्दी से काम खत्म करना होगा। मैंने दवा की दुकान पर फोन करके एस्पिरिन मंगवाई है, उन्हें बताया है कि तुम्हें थोड़ी कमजोरी महसूस हो रही है—”

“क्या विचार है?”

“क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा? मैं ठीक उसी समय निकल रही हूँ जब वो लड़का आएगा; उसने तुम्हें मुझे दरवाजे पर अलविदा कहते हुए भी देखा है। उसे एक मिनट के लिए छुट्टे ढूंढने में रोक लो, ताकि वो मुझे शो की तरफ सड़क पर अपने आगे चलने को कहे। मैं उस चीज़ के लिए सज़ा नहीं पाना चाहती जो मैंने नहीं की, कुकी! अब, तुम कौन सा नाम इस्तेमाल करोगी और जब पैसे आ जाएँगे तो मैं तुमसे कहाँ संपर्क करूँगी?”

मैं जोर से हँस पड़ा। "तुम तो बड़े उत्सुक हो कि मुझे मेरा हिस्सा मिल जाए।"

“मुझे खुशी है कि तुमने वो शब्द इस्तेमाल किया,” उसने रूखेपन से कहा। “ये मेरा पसंदीदा शब्द है। पागल! तुम यहाँ वापस नहीं आ सकते; तुम्हें पता है! मुझे ये तुम्हें देना ही है। तुम किस बात की चिंता कर रहे

हो? हम दोनों ने एक-दूसरे को रोक रखा है, है ना? अगर मैं सारा पैसा हड़पने की कोशिश करूँ, तो तुम बस आ जाओगे, पैसा वापस वहीं चला जाएगा जहाँ से आया था, और हम दोनों जेल पहुँच जाएँगे। दूसरी तरफ, छोटी थेल्मा के बिना तो तुम इसे पा ही नहीं सकते—"

मैंने गुर्राते हुए कहा, "हमने इसे पचहत्तर, पच्चीस में बाँट लिया, और छोटी थेल्मा को इतना होशियार होने के बावजूद नुकसान उठाना पड़ा।"

उसके होंठों का एक कोना थोड़ा ऊपर उठ गया। "हो गया," उसने कहा। "अब जल्दी करो, उसे उसका फेशियल दो। दूरी नाप लो।"

हमने उसे सीधा खड़ा किया, फिर उसे पीछे की ओर सीधा उस हीटर की तरफ नीचे उतारा जिस पर कास्टिक सोडा से भरी बाल्टी चटक रही थी। उसका सिर हीटर से दो-तीन इंच की दूरी से निकल गया।

"उसे थोड़ा और पास ले आओ," उसने कहा। "उसकी चोंच से ही वह नीचे गिर जाएगा।"

"ठीक है, पीछे हट जाओ," मैंने कहा, "और अपने पैरों पर ध्यान रखो।"

मैंने बाल्टी को चूल्हे से उतारा, उसे उल्टा किया और जितना हो सके छींटों से बचते हुए उस पर डाल दिया। पानी उसके सिर पर सांचे की तरह गिरा; कंधों के नीचे उसके शरीर पर बस थोड़ा सा ही छींटा पड़ा। जैसे ही बाल्टी उसके सिर पर विज़र की तरह गिरी, सामने की घंटी बज उठी।

तेजी से ऊपर जाते हुए उसने आखिरी बात यही कही, "ध्यान से कदम रखना—कोई निशान मत छोड़ना!"

मैं सामने वाले गलियारे के आधे रास्ते में उससे मिली। "अरे! मेरे जेब में डालने वाली वो एक सौ पचहत्तर रुपये मुझे मत दो। मैं अगले कुछ हफ्तों तक हवा के सहारे नहीं जी सकती!"

उसने अनिच्छा से अपने पर्स से उसे निकाला। "यह तुम्हारे हिस्से में से कटेगा, याद रखना," उसने मुझे बताया।

"ठीक है, और ये एक बात याद रखने के लिए," मैंने धीरे से कहा। "मैं मिडलबर्ग के मार्केट होटल में नेड बेकर हूँ। इसे कागज़ पर मत लिखना, लेकिन याद रखना। ये बहुत आसान है—कुक, बेकर, समझे?"

घंटी दूसरी बार बजी।

"लगभग तीन हफ्ते, जैसे ही मैं चेक जमा करूँगी," उसने वादा किया। "सब तैयार है? चलो शुरू करते हैं! अपनी टाई ढीली कर लो—तुम घर पर ही रहोगी और तुम्हारा मन मौज-मस्ती करने का कर रहा है। खूब मजे करो!"

मैं वहीं रुका रहा। वह चिल्लाते हुए दरवाजे तक गई, "गुडबाय, हनी! क्या तुम अपना इरादा नहीं बदलोगे और मेरे साथ नहीं आओगे?" उसने दरवाजा खोला और लैरी नाम का अठारह साल का एक लड़का, जिसे हम दोनों जानते थे, बोला, "मेडिकल स्टोर से एक पैकेट है, मिसेज कुक। पैंतीस सेंट।"

उसने फिर से पूरे घर को हिलाकर रख दिया। "ये लो तुम्हारी एस्पिरिन, प्यारी!"

मैं बीमार बछड़े की तरह लंगड़ाते हुए खड़ी हुई। उसने मुझे जो दस-दस डॉलर के नोट दिए थे, उनमें से एक मैंने अलग किया और उसे दे दिया। उसने कहा कि उसके पास इतने खुले पैसे नहीं हैं। "एक मिनट रुको, मुझे लगता है मेरे पास हैं," मैंने कहा। इसी बीच, वह अपनी नाक मेरी तरफ उठाकर बोली, "अलविदा, प्यारे। अब तुम अकेले नहीं रहोगे, है ना?"

वह मेरी तरफ मुंह करके खड़ी थी, इसलिए मैंने दुखी दिखने की कोशिश की। "अपना शो देखो," मैंने हिम्मत जुटाते हुए धीरे से कहा और उसे हल्के से चूमा। मैं उसके साथ सीढ़ियों से नीचे उतरी और फुटपाथ की तरफ कुछ दूर तक गई, मेरा हाथ उसकी कमर में था। उसने पीछे मुड़कर दो-तीन बार हाथ हिलाया, और मैंने भी उसे हाथ हिलाकर जवाब दिया। वह बच्ची दरवाजे से सब कुछ देख रही थी।

जब मैं वापस आया तो उन्होंने कहा, "आज रात गार्बो का नाटक फिर से मंच पर आ रहा है। क्या आपको गार्बो पसंद नहीं है, मिस्टर कुक?"

मैंने आह भरी। “आज रात मेरे दिमाग में बहुत कुछ चल रहा है, लैरी,” मैंने उससे कहा। मैंने उसे पहले चौराहे तक जाने दिया, फिर मैंने पैंतीस सेंट निकाले और उसे भी एक दस सेंट का सिक्का दे दिया। उसने मुझे धन्यवाद दिया और उसके पीछे चल पड़ा।

मैंने दरवाजा बंद कर दिया (उसके पास अपनी चाबी थी) और फिर मैं तेजी से तहखाने की सीढ़ियों की ओर भागा और उनके सबसे ऊपरी सिरे से आखिरी बार नीचे देखा। उसके चेहरे के ऊपर उलटी रखी हुई कास्टिक सोडा की बाल्टी के किनारे से अभी भी भाप की हल्की-हल्की लकीरें निकल रही थीं।

मैंने उसके कपड़ों का बंडल उठाया, जिसे मैंने सीढ़ियों के ऊपर छोड़ दिया था, और उसे अच्छे मज़बूत भूरे कागज़ में लपेट दिया। दोनों गोलियां भी उसी में थीं, और उसके जबड़े और गर्दन से निकले खून के टुकड़े भी कागज़ के टुकड़ों पर थे। साथ ही वह भूरा कपड़ा भी था जिससे उसने लिनोलियम से थोड़ा सा खून साफ किया था।

बाद वाले पर नंगी आंखों से देखने पर कोई निशान नहीं था—और उन्हें बेंजिडीन परीक्षण करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। गोली के छेद भी ठीक थे; उसने उन्हें लकड़ी में गांठों की तरह दिखाने के लिए फैला दिया था और राख से गंदा कर दिया था। उसने इस्तेमाल किया हुआ कॉफी का कप भी धोकर रख दिया था, और नोट मेज पर अपनी जगह पर था।

मैंने अपनी टोपी रैक पर ही छोड़ दी और टोपी पहनकर उसे अपनी आंखों पर अच्छी तरह से नीचे तक खींच लिया।

मैंने सभी कमरों की बत्तियाँ वैसे ही रहने दीं, फिर मैं दूसरी मंजिल पर पीछे वाले कमरे में गया, जो अँधेरा था, और काफी देर तक देखता रहा। हमारे पीछे कोई घर नहीं था, बस एक बड़ा खुला मैदान था और दाईं ओर जंगल फैला हुआ था।

दिन के समय, खेत पार करके उन तक पहुँचने पर, दूर स्थित किसी घर से मुझे देखा जा सकता था, लेकिन इस समय नहीं। रात साफ थी, लेकिन चाँद नहीं निकला था।

मैं नीचे गया, जाली वाला दरवाज़ा खोला, लकड़ी का दरवाज़ा अपने पीछे बंद किया, जाली वाले दरवाज़े को वापस अपनी जगह पर फड़फड़ाने दिया और लकड़ी के आयताकार शीशे से आती हुई हल्की रोशनी से बचने के लिए जल्दी से दूर हट गया। अगर हम दोनों साथ घर से निकले होते तो हम उसे अंदर से बंद कर देते, लेकिन आज रात अकेले घर पर रहने के कारण, इसे बिना किसी शक के खुला छोड़ा जा सकता था।

मैं घर से तिरछे रास्ते से निकल गया, ताकि सामने से गुजरने वाली और फर्न्डेल तक जंगल को दो हिस्सों में बांटने वाली सड़क से नज़रें हट जाएं। हालांकि, दोनों बिंदुओं के बीच में सड़क मुड़ जाती थी, इसलिए जंगल से होकर जाना वास्तव में एक शॉर्टकट था।

मेरे रसोई के दरवाजे से बाहर निकलने के पांच मिनट के भीतर, और थेल्मा के घर से निकलने के कुल मिलाकर पंद्रह मिनट से भी कम समय में, पहले पतले पौधे मेरे चारों ओर घिर आए और मुझे नजरों से छिपा लिया।

पौने बारह बजे तक पेड़ फिर से कम होने लगे थे, इस बार मेरे सामने, और फर्न्डेल की रोशनी उनके बीच से टिमटिमा रही थी। मैं आधा घायल था और मेरे पैर जल रहे थे, लेकिन यह सब सहना सार्थक था; मैंने किसी को नहीं देखा था—और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि किसी ने मुझे नहीं देखा था। मैं खो जाने और गोल-गोल घूमने से बच गया, जो उन जंगलों में मेरे साथ आसानी से हो सकता था, क्योंकि मैंने फर्न्डेल जाने वाले राजमार्ग को हमेशा अपने दाहिनी ओर समानांतर रखा था। यहां तक कि जब राजमार्ग मेरी नज़र से ओझल हो जाता था, तब भी कभी-कभार कोई कार तेज़ी से गुज़रकर मुझे राजमार्ग का पता दे देती थी। अन्यथा, मैं शायद जंगल में भटक जाता और वहीं वापस आ जाता जहां से शुरू किया था। मैंने पार्सल खोला और रास्ते में उसे फिर से बांध दिया। दो गोलियां और खून से सना कपड़ा निकाला और उन्हें तीन अलग-अलग जगहों पर दफना दिया।

कपड़े इतने भारी थे कि उन्हें नंगे नाखूनों से दफनाना नामुमकिन था, और न ही मैं उन्हें किसी पत्थर के नीचे छोड़ने वाला था। न ही मैं उन्हें माचिस से जलाकर नुकसान पहुँचाने का जोखिम उठा सकता था—रोशनी से मेरी पहचान उजागर हो सकती थी। सबसे सुरक्षित यही था कि मैं उन्हें अपने पास रखूँ और बाद में आराम से उनका निपटान करूँ।

फर्नडेल महज एक चौराहा था, लेकिन अंतरराज्यीय बसें वहाँ रुकती थीं। मैं एक मिनट के लिए रुका और बाहर निकलने से पहले जितना हो सके खुद को झाड़ा। मैं देखने में ठीक-ठाक लग रहा था, लेकिन यह अपने आप में एक तरह की कमी थी।

आधी रात को अचानक कहीं से आकर बिना टिकट के बस में चढ़ते हुए एक सलीके से कपड़े पहने हुए आदमी को देखना कोई मामूली बात नहीं थी। लेकिन मेरे पास कोई चारा नहीं था। और फैसला करने के लिए ज़्यादा समय भी नहीं था। आखिरी बस बारह से एक बजे के बीच थी। मैंने यहीं से मिडलबर्ग का टिकट न खरीदने का फैसला किया, बल्कि सीधे बस के आखिरी स्टेशन तक जाने का सोचा, और फिर कुछ दिनों बाद

उसी स्टेशन से वापस मिडलबर्ग आ जाऊँगा। इससे मेरा पीछा करना थोड़ा मुश्किल हो जाएगा—बस एहतियात के तौर पर।

जहां तक मेरी जेब में रखे धूप के चश्मे की बात है, मैंने उन्हें न पहनने का फैसला किया। मुझे लगा कि यही एक बात थी जिस पर थेल्मा ने समझदारी नहीं दिखाई थी। वैसे भी फर्न्डेल में मुझे कोई जानता नहीं था, और उन्हें पहनने से ध्यान कम होने के बजाय और बढ़ जाता। लोग आधी रात को ऐसे चश्मे नहीं पहनते, चाहे उनकी आंखें कितनी भी कमजोर क्यों न हों।

मैंने अपने कंधे सीधे किए और पेड़ों से निकलकर खुले में बेफिक्री से टहलते हुए, एक-दो दूर-दराज की झोपड़ियों के पास से गुजरा, जो उस समय बिल्कुल सुनसान थीं, और फिर फर्न्डेल की इकलौती पक्की सड़क पर आ गया। एक जल्दी से खाना खाने की दुकान खुली थी और रोशनी से जगमगा रही थी, और बस डिपो बिल्कुल आखिरी छोर पर था। वहाँ एक छोटा लेकिन आधुनिक प्रतीक्षाकक्ष था, शौचालय, एक पत्रिका स्टैंड आदि। वहाँ सिर्फ एक अश्वेत कुली और एक बुजुर्ग व्यक्ति थे, जो आने वाली बस से किसी के उतरने का इंतजार कर रहे थे।

मैं जितना हो सके सहज भाव से टिकट काउंटर तक गया और काउंटर पर दो-तीन बार खटखटाया। आखिरकार कुली ने आवाज़ लगाई, “जॉनसन! कोई काउंटर पर है!” और टिकट बेचने वाला कहीं पीछे से बाहर आया।

मैंने कहा, "मुझे जेफरसन के लिए एक सीधी टिकट दे दो।" वह पड़ोसी राज्य की राजधानी थी, जो इस लाइन का अंतिम स्टेशन था।

उन्होंने कहा, “मुझे नहीं पता कि इस समय आपको सीट मिल पाएगी या नहीं; आमतौर पर यह पूरी तरह भरी रहती है। आपको पहले से आरक्षण करा लेना चाहिए था— वैसे, छह बजे एक बस है।”

मैंने उसकी आँखों में देखते हुए कहा, "सुनो, मुझे घर जाना है। मैं क्या करूँगी, क्या मैं पूरी रात यहाँ बैठकर सुबह की बस का इंतज़ार करूँगी?"

उन्होंने मेरे कंधे के ऊपर से अखबार पढ़ रहे बुजुर्ग सज्जन को पुकारा, "क्या आप अगली बस में किसी से मिल रहे हैं, महोदय?"

उस बूढ़े आदमी ने कहा, "हाँ, मेरी नसें इस पर टूट पड़ेंगी—"

“बस, बात यहीं खत्म,” उसने मुझसे बेपरवाही से कहा। “ग्यारह अस्सी।”

मैंने अपनी जेब में रखे खुले पैसे रखते हुए पूछा, "यह कब तक आएगा?"

“दस मिनट,” उसने कहा और वापस अंदर चला गया।

मैं नीचे एक सस्ते लंच काउंटर पर हॉट डॉग खा रहा था, तभी बस धीरे से अंदर आई। मैंने अपना सामान उठाया और उसकी तरफ बढ़ा। हाई स्कूल की उम्र का एक युवक बस से उतर रहा था और एक बुजुर्ग सज्जन उसका अभिवादन कर रहे थे। मैंने अपना टिकट दिखाया और बस में चढ़ गया।

गाड़ी की बत्तियाँ बंद थीं और ज़्यादातर यात्री सो रहे थे। टिकट बेचने वाले की बात सही निकली: पूरी गाड़ी में सिर्फ़ एक ही खाली सीट थी, वो भी वो सीट जिससे वो बच्चा अभी-अभी उतरा था! और वो भी गलियारे वाली एक घटिया सीट थी।

खिड़की के पास बैठे मेरे सहयात्री ने अपनी टोपी नाक पर झुका रखी थी और मुंह से सांस ले रहा था। मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया, अपना सामान ऊपर रैक पर रखा, आराम से बैठ गया। ड्राइवर फिर से बैठ गया, दरवाजा बंद हो गया और गाड़ी झटके से चलने लगी।

अंधेरे में मेरा हल्का-फुल्का सामान बस में ठीक से नहीं रखा गया था: बस की गति से वह तुरंत हिल गया और मेरे बगल में बैठे आदमी की जांघों पर गिर पड़ा। वह घबराकर अचानक होश में आया और अपनी टोपी के नीचे से कराह उठा।

मैंने कहा, "माफ़ कीजिए, मेरा इरादा आपको जगाने का नहीं था—"

उसने अपनी टोपी पीछे सरकाई और मेरी तरफ देखा। "अरे, कुक!" उसने कहा। "रात के इस समय कहाँ जा रहे हो?" और अपना हाथ मेरी तरफ फैला दिया।

कुछ साल बीत गए, मेरा चेहरा एकदम सीधा था और मेरी नसों में बर्फ़ जमी हुई थी। मेरे पास इस बारे में कुछ करने का कोई विकल्प नहीं था। भले ही बस अभी भी दरवाज़ा खुला रखकर खड़ी होती, जो कि अब नहीं था, उससे कूदने का कोई फ़ायदा नहीं होता। वह मुझे पहले ही देख चुका था।

और अगर मैं सारा दोष उस पर डाल देता और उसके सामने ही कह देता कि वह गलत व्यक्ति को समझ रहा है, तो भला मैं कैसे बच पाता, जबकि हमारे कंधे एक-दूसरे से छू रहे थे, भले ही बस के अंदर अंधेरा था? कुछ ही घंटों में उजाला होने वाला था, और बस में कोई दूसरी सीट भी नहीं थी। मैं बस उसे अपमानित कर देता, उसे नाराज कर देता और उसे यह सोचने पर मजबूर कर देता कि कुछ गड़बड़ है; दूसरे शब्दों में, यह घटना उसकी याददाश्त में हमेशा के लिए बस जाती।

अगर मैं इसे सहजता से, हल्के में ले लेती, तो शायद मैं इसे उसके मन पर ज़्यादा हावी होने से रोक पाती; शायद मैं समय को थोड़ा सा बदलकर इसे धुंधला कर देती, ताकि बाद में उसे लगे कि यह पिछली रात की बात है, न कि आज रात की। यह पिछली रात ही होनी चाहिए थी; यह वही रात नहीं हो सकती थी जब मुझे कॉपलैंड ड्राइव पर तहखाने में आत्महत्या करनी थी!

“अरे वाह, शेरिल!” मैंने कांपती हुई विनम्रता से कहा। “तुम खुद रात के इस समय कहाँ जा रहे हो?” मैंने उसका हाथ हिलाया, लेकिन अब उसकी तरफ से मेरे मुकाबले कम दबाव था।

“तुमने एक मिनट के लिए ऐसा बर्ताव किया जैसे तुम मुझे जानते ही नहीं हो,” उसने शिकायत की, लेकिन फिर तुरंत ही शांत हो गया। “फर्नडेल में तुम्हें किस बात की सजा मिली थी?” उसने कहा।

लेकिन उस बात को हर हाल में दबाना ही था, चाहे वह कितनी भी बेतुकी क्यों न लगे। आखिर, जब वे फर्न्डेल पहुंचे थे तब वह ज़रूर सो रहा था, वह देख ही नहीं सकता था कि कौन उसमें चढ़ा था।

“मैंने नहीं किया। तुम्हें क्या हुआ है?” मैंने हैरानी से कहा। “मैंने सीट बदली थी, आगे से वापस यहाँ आ गई थी, बस इतना ही।” एक छोटी बच्ची आगे की एक सीट पर बैठी थी, लेकिन वो अपनी माँ की गोद में सिर रखकर सो रही थी; जहाँ हम थे वहाँ से देखने पर सीट खाली लग रही थी। “उम्मीद है, सुबह तक वो इस बारे में भूल जाएगा,” मैंने सोचा।

वह मानो सब कुछ भूल गया। "अरे, जब मैं चढ़ा तो तुमसे मिलना भूल गया," उसने बस इतना ही कहा। "मैं सबसे आखिर में पहुँचा था; मेरे लिए एक मिनट तक बस रोकी भी रखी थी—" उसने मुझे सिगरेट दी, खुद भी एक पी ली, मानो उसे अब नींद की कोई ज़रूरत ही न हो। "वैसे तुम कहाँ जा रहे हो?" उसने पूछा।

मैंने कहा, "जेफरसन।"

“ये तो मजेदार है,” उसने कहा, “मैं भी!”

अगर वो उस पल मेरे मन में उसके बारे में चल रही बातें सुन पाता, तो शायद चीख निकल जाती और खिड़की से कूद पड़ता, शीशे समेत। "ऐसा क्यों?" मैंने अनसुनी गालियों के बीच कहा।

मुझे पता था कि उसके बाद मेरी बारी आएगी, और मैं अपनी बात समझाने में इतना व्यस्त था कि मैंने उसकी बात आधी-अधूरी ही सुनी। उसने बताया कि मैनेजर ने उसे आखिरी समय में फोन किया था, जबकि वह उस दोपहर पहले ही घर जा चुका था, ताकि वह हमारे स्टोर के खरीदार की जगह काम कर सके, जो फ्लू से बीमार था, और वहाँ पड़े कुछ टाई के खेपों की देखभाल कर सके जिनकी स्टॉक में सख्त ज़रूरत थी। "वहाँ क्यों जा रहे हो?" उसने पूछा, जैसा कि मुझे पता था कि वह पूछेगा।

मैंने उसे बताया कि मुझे एक विशेषज्ञ से मिलना होगा, कि मैं कुछ समय से अस्वस्थ महसूस कर रहा हूं और घर पर कोई भी डॉक्टर मेरे लिए कुछ भी करने में सक्षम नहीं लग रहा था।

“तुम कब वापस जा रहे हो?” वह जानना चाहता था।

“कल दोपहर,” मैंने कहा। “रात के खाने तक घर आ जाना—” मुझे तब तक “वापस” आना ही था; मैं उसे समय के बारे में चौबीस घंटे से ज़्यादा का धोखा नहीं दे सकता था। इतना भी कर पाना बहुत मुश्किल था, लेकिन शायद मैं कामयाब हो जाऊं।

“मैं भी लगभग उसी समय वापस जाऊंगा,” उसने दोस्ताना लहजे में कहा। “शुक्रवार सुबह काम पर लौट आऊंगा।”

मैंने सावधानीपूर्वक जोर देकर उत्तर दिया: "शुक्रवार से तुम्हारा क्या मतलब है? परसों गुरुवार होगा। आज रात मंगलवार है।"

“नहीं,” उसने मासूमियत से कहा, “आपने तारीखें गलत समझ ली हैं। आज बुधवार है।”

हम दोनों के बीच करीब पांच मिनट तक बहस चलती रही, ज़ाहिर है, बिना किसी गरमागरमी के। आखिरकार मैंने तब अपना आपा खो दिया जब उसने कहा: "रुको, मैं ड्राइवर से पूछता हूँ, शायद वो हमारी समस्या सुलझा सके—"

“कोई बात नहीं, लगता है तुम सही हो,” मैंने हार मान ली। मैं किसी भी तरह से ड्राइवर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित नहीं करना चाहती थी। लेकिन मैंने वही किया जो मैं चाहती थी: मैं शेरिल के दिमाग को प्रभावित करने में सफल हो गई थी। बाद में जब वह आज रात के बारे में सोचेगा, तो उसे यह भी याद नहीं रहेगा कि आज बुधवार था या नहीं।

ठीक उसी समय एक प्रेमी आया। उसने पूछा, "क्या कहते हो, हम वहाँ रहते हुए खर्चे बाँट लें? एक ही होटल के कमरे में ठहरें?"

मैंने संक्षिप्त लहजे में कहा, "मुझे होटल के कमरे की क्या ज़रूरत है? मैंने तुम्हें बताया था कि मैं दोपहर की बस से वापस जा रहा हूँ!"

“अरे बाप रे,” उसने कहा, “अगर तुम सच में इतने थके हुए हो, तो ये अजीब बात है कि तुम पूरी रात बिना सोए रहने को तैयार हो! हम जेफरसन सात बजे तक नहीं पहुँचेंगे। क्या नाश्ते से पहले तुम्हारा डॉक्टर से अपॉइंटमेंट है?”

मुझे समझ आ रहा था कि उसकी आवाज़ में जो शंका थी, उसे बढ़ने से पहले ही दबाना ज़रूरी था; एकमात्र उपाय यही लग रहा था कि मैं उसकी बात मान लूँ। मैं उसे अकेले वापस जाने दे सकती थी, और बहाना बना सकती थी कि मेरी अपॉइंटमेंट दोपहर तक के लिए टाल दी गई है और मुझे बाद वाली बस लेनी है। तकनीकी रूप से, इनमें से कोई भी बस मुझे आत्महत्या के लिए समय पर घर पहुँचा सकती थी।

हमने बस डिपो पर साथ में नाश्ता किया और फिर पास ही में जेफरसन नाम के होटल में चेक-इन किया। मैंने उसे पहले हस्ताक्षर करने दिए और पेन से खून का थक्का झाड़ने में तब तक देरी की जब तक वह लिफ्ट की ओर नहीं बढ़ गया। फिर मैंने उसके नाम "फ्रिस्को" के नीचे "नेड बेकर" लिख दिया। यह इतनी दूर था कि पहचान गुप्त रहे। मैं उससे रास्ते में मिला था; बस इतना ही। मैं वैसे भी इस होटल में उसके साथ ऐसा नहीं करने वाला था, और चेक-आउट करते समय उसके लिए रजिस्टर पर दोबारा नज़र डालने का कोई कारण नहीं था, न ही क्लर्क के लिए उसकी मौजूदगी में मेरा नाम लेने का; हमने सामान कम होने के कारण अग्रिम भुगतान कर दिया था।

उसने साढ़े दस बजे फोन करने को कहा और जब हम कमरे में पहुँचे तो उसने दरवाजे पर "परेशान न करें" का बोर्ड लगा दिया। फिर हम सब बिस्तर पर लेट गए। "मैं मर गया," ये आखिरी शब्द थे जो उसने जम्हाई लेते हुए कहे।

“हाँ, बिल्कुल, भाई!” मैंने मन ही मन सोचा। वह गहरी, स्वप्नहीन नींद में सो गया—उसकी आखिरी नींद। मुझे पता था कि जब तक वह मेरे साथ है, मैं सुरक्षित हूँ, और जब तक वह वापस जाने के लिए तैयार नहीं हो जाता; वैसे भी मैं इस होटल के कमरे में ऐसा नहीं करने वाला था। इसलिए मैं बस पीठ के बल लेटा रहा, छत को घूरता रहा, इंतज़ार करता रहा। उस कमरे में मृत्यु के दूत के पंख हम पर फैले हुए थे; वहाँ कब्र जैसी खामोशी छाई हुई थी।

जब फोन की घंटी बजी, तो ऐसा लगा जैसे बम फट गया हो। मुझे अच्छा लगा, क्योंकि अब समय कम होता जा रहा था। मेरा यह नया रूप मुझसे सहमत होता दिख रहा था। मैंने कहा, "तुम्हें शावर में फेंक दूं।"

“ठीक है,” उसने अंगड़ाई लेते हुए कहा, “मुझे अपना समय लेना पसंद है।”

बस एक छोटी सी बात ने मेरी सारी योजनाएँ बदल दीं और उसे और भी जल्दी फंसा दिया। पानी चालू करने से ठीक पहले मैंने उसे दरवाजा खोलते और बंद करते सुना। उसने अंदर से आवाज़ लगाई, "वाह, बड़े उदार हो! यहाँ तो मैनेजमेंट की तरफ से सुबह का अखबार मुफ्त में मिलता है!"

जब मैं बाहर आया तो वह बिस्तर पर बैठा था और तकिया उसके बगल में बिछी हुई थी। वह तकिए को नहीं देख रहा था, बल्कि मुझे देख रहा था; उसने अपना सिर ऐसे पकड़ रखा था मानो वह बाथरूम के दरवाजे पर मेरे आने का इंतज़ार कर रहा हो। बिस्तर पर तीन सफेद चीज़ें पड़ी थीं, लेकिन उसका चेहरा तकियों या कागज़ से भी ज़्यादा सफेद था।

मैंने रूखेपन से कहा, "तुम मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो?" और फिर मेरा चेहरा भी सफेद पड़ गया।

वह बिस्तर के किनारे मुझसे दूर हटते हुए धीरे-धीरे खड़ा होने लगा। उसने कहा: “कल रात ग्यारह बजे तुम्हारे घर के तहखाने में तुम्हारा शव मिला— तुमने आत्महत्या कर ली। यह जेफरसन के इस अखबार के पहले पन्ने पर लिखा है—”

मैंने तौलिया गिरा दिया और कागज़ उठा लिया, लेकिन मैंने उस पर ध्यान नहीं दिया; मैं उसके ऊपर से उसे देख रहा था। वह बुरी तरह कांप रहा था। उसने कहा, "कौन था? तुमने किसके साथ ऐसा किया?"

“यह एक गलती है,” मैंने गुस्से से कहा। “उन्होंने मुझे किसी और के साथ मिला दिया है। शायद किसी ऐसे व्यक्ति के साथ जिसका नाम मेरे जैसा ही हो—”

अब तक उसकी पीठ बिस्तर के सिरहाने से टिकी हुई थी, मानो वह मुझसे और दूर नहीं जा पा रहा हो। उसने कहा, “लेकिन वह तुम्हारा पता है—25 कोपलैंड ड्राइव—मैं तुम्हारा पता जानता हूँ! उसमें तो दुकान में तुम्हारे काम करने के बारे में भी लिखा है—तुम्हारी पत्नी का नाम भी लिखा है, थेल्मा—उसमें यह भी लिखा है कि उसने तुम्हारा शव कैसे पाया, तुम्हारा चेहरा कास्टिक सोडा से पूरी तरह गल चुका था—” मैं उसके माथे पर पसीने की बूँदें सीधी रेखा में उभरती देख सकता था। “वह कौन था, कुक? ज़रूर कोई न कोई रहा होगा! हे भगवान, क्या तुमने—?”

मैंने कहा, “देखो तो ज़रा! तुम मुझे अपने साथ यहाँ देख रहे हो, है ना? तुम्हें साफ़ दिख रहा है कि मैं नहीं हूँ, है ना?” लेकिन उसका मतलब ये नहीं था, और मैं ये बात उतनी ही अच्छी तरह जानती थी जितनी वो। उसे पता था कि मैं ज़िंदा हूँ; वो तो ये जानना चाहता था कि कौन मरा है।

मुझे नहीं पता कि नतीजा क्या होता, अगर उसने डर के मारे कपड़े पहनना शुरू न किया होता—अपने कपड़ों को ऐसे झटक रहा था जैसे मुझसे डरा हुआ हो, और कपड़े पहनते समय मुझसे जितना हो सके दूर रहने की कोशिश कर रहा था। मुझे लगता है कि ऐसा फिर भी हो जाता, इससे पहले कि मैं उसे अपने शहर वापस जाने देती, यह जानते हुए कि अब वह क्या जानता है। लेकिन उस समय नहीं, उस जगह नहीं।

मैंने ठंडे स्वर में खुद से कहा, जब मैंने उसे हांफते, पसीना बहाते और हड़बड़ी में अपना सामान समेटने की कोशिश करते देखा, “ये सीधे यहाँ से निकलकर मुझे पकड़वा देगा! ये तो उसके हाव-भाव से साफ है। ये आज रात वापस आने तक भी इंतजार नहीं करेगा—ये यहीं से उन्हें लंबी दूरी का फोन करेगा, या फिर जेफरसन में ही पुलिस को सूचना दे देगा। खैर—ये दरवाजे से बाहर नहीं निकल पाएगा!”

फोन दोनों पलंगों के बीच में था। वह अपने पलंग के बाहरी किनारे पर झुका हुआ था, जो दरवाजे के पास था, और अपने जूतों के फीतों को सुलझाने में लगा हुआ था। उसे सहारा इसलिए नहीं मिल रहा था क्योंकि जल्दबाजी में उसने फीतों को बुरी तरह उलझा दिया था। मुझे दरवाजे से ज्यादा फोन की चिंता थी। मैं नग्न अवस्था में घूमकर दोनों पलंगों के बीच के गलियारे में चला गया, और उसे उस गलियारे से अलग कर दिया।

मैंने पूछा, "इतनी जल्दी क्यों है?"

“मुझे मेहनत करनी होगी और उन संबंधों को हासिल करना होगा,” उसने दबी हुई आवाज़ में कहा। वह मेरी तरफ देखने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था, उसने सख्ती से अपना सिर दूसरी तरफ घुमा रखा था।

मैं उसके पीछे और करीब चला गया। मेरी परछाई उस पर इस तरह पड़ी कि खिड़की से आने वाली रोशनी रुक गई। "और तुमने अखबार में जो पढ़ा है, उसके बारे में तुम क्या करने वाले हो?"

“अरे, कुछ नहीं,” वह लड़खड़ाते हुए बोला। “मैं—मुझे लगता है, जैसा आपने कहा, यह बस एक तरह की गलती है—” उसकी आवाज़ में एक हल्की सी हंसी घुल गई; हालाँकि, उसकी हंसी सुनकर आप समझ नहीं पाते कि यह क्या था। और अंत में उसने यही दोहराया, “कुछ नहीं—सचमुच कुछ भी नहीं।”

“तुम्हारे ऊपर इल्ज़ाम है, पर नहीं,” मैंने कर्कश स्वर में कहा। पता नहीं उसने मेरी बात सुनी भी या नहीं। मैंने अचानक उसे पीछे से कंधों से पकड़कर पीठ के बल ज़मीन पर गिरा दिया। मुझे आखिरी बार उसके चेहरे की झलक दिखी, भयभीत, आँखें घुमाते हुए, मेरी ओर घूरता हुआ। फिर दो तकिए उसके ऊपर रखे गए, नरम, लचीले, और मैंने अपना पूरा वज़न उन पर डाल दिया।

असल में, सबसे ज्यादा परेशानी उसके पैरों को हो रही थी, जो बिस्तर के किनारे से लटके हुए थे। पहले तो वे झटके से अविश्वसनीय ऊंचाई तक ऊपर उठे, उसके सिर से भी काफी ऊपर, फिर वापस फर्श पर आ गिरे, और उसके बाद बिस्तर और फर्श के बीच एक झूले की तरह ऊपर-नीचे डगमगाते रहे।

उनकी ढीली पट्टियाँ ही थीं, जिसकी वजह से वो मुझे अपने ऊपर से नहीं गिरा पाए। उनका संतुलन बिगड़ गया था, बिस्तर उनके कूल्हों के ठीक नीचे खत्म हो रहा था, और वो अपनी एड़ियों से ज़मीन पर पकड़ नहीं बना पा रहे थे। जहाँ तक उनकी बाहों की बात है, बड़े तकियों के दबाव से वो पट्टी की तरह सिकुड़ गई थीं। वो सिर्फ़ कोहनियों के नीचे तक ही उनका इस्तेमाल कर पा रहे थे, उन्हें इतना पीछे नहीं मोड़ पा रहे थे कि मेरे चेहरे तक पहुँच सकें, चाहे वो कितनी भी कोशिश कर लें। मैंने अपना चेहरा और गर्दन उनकी पहुँच से थोड़ा दूर पीछे की ओर झुकाए रखा, बीच में पेट से और दोनों तरफ कंधों और फैली हुई बाहों के दबाव से तकियों को दबाए रखा।

पलंग के स्प्रिंग एक-दो बार चेतावनी भरी आवाज में चरमराए। इसके अलावा कमरे में मेरी सांसों की आवाज के अलावा कोई और आवाज नहीं थी।

पैरों की हरकत ही सबसे सटीक संकेत थी। घुटन शुरू होते ही उनकी हरकतें लगभग बेकाबू होकर झटकने लगीं, फिर धीरे-धीरे रुक-रुक कर होने लगीं और अंततः पूरी तरह से गतिहीन हो गईं। ठीक उस स्थिति तक पहुँचने से पहले, मैं अचानक पीछे की ओर झुका और तकिए एक-एक करके दोनों तरफ फेंक दिए। उनका चेहरा बुरी तरह से विकृत हो चुका था, आँखें बेजान और दृष्टिहीन थीं, लेकिन उनके ऊपर उठे हाथों की उंगलियाँ अभी भी बेतरतीब ढंग से खुल और बंद हो रही थीं, मानो कुछ पकड़ रही हों; वह निस्संदेह अभी भी जीवित थे, लेकिन क्या वह फिर से जीवित हो पाएंगे या एक-दो मिनट में वैसे भी दम तोड़ देंगे, यही सवाल था। मेरे लिए यह महत्वपूर्ण था कि मैं उनके दिल की धड़कन को आखिरी धड़कन तक महसूस करूँ।

मैंने उसे बिस्तर से घसीटकर दूसरे बिस्तर के चारों ओर घुमाया और खिड़की तक ले गया। मैंने उसे उठाया, खिड़की की ओर घुमाया और एक हाथ से उसे हल्के से सहारा दिया, मानो उसे होश में लाने की कोशिश कर रहा हो। मैंने देखा, और मैं देखने में अच्छा लग रहा था। कमरा चौदहवीं मंजिल पर था, और हमने सस्ते कमरों में से एक लिया था; यह सड़क की ओर नहीं, बल्कि एक हवादार शाफ्ट की ओर खुलता था। शायद इस कमरे के नीचे तक खिड़कियाँ थीं—लेकिन बात यह थी कि सामने कोई खिड़की नहीं थी; वह तरफ खाली थी। कोई भी अंदर नहीं देख सकता था।

मुझे लगता है कि वह बच जाता; जैसे-जैसे उसके फेफड़ों में हवा पहुँच रही थी, वह होश में आने लगा था। उसके चेहरे से जमा हुआ खून धीरे-धीरे कम होने लगा, उसकी आँखें खुली रहने के बजाय बंद हो गईं, लेकिन उसकी साँसें फिर से सुनाई देने लगीं, हालाँकि वो साँस लेने में थोड़ी भारी थीं। इसलिए मैंने उसे थोड़ा और पास किया, खिड़की का निचला हिस्सा पूरी तरह ऊपर उठा दिया—और उससे थोड़ा पीछे हट गया। मैंने उसे छुआ नहीं, बस अपना सहारा हटा लिया और कमरे में और पीछे हट गया। वह खुली खिड़की के पास सीधा खड़ा रहा। जैसे-जैसे उसके फेफड़े काम करने लगे और दिल की धड़कन सामान्य हुई, उसे चक्कर आने लगे थे। यह कहना मुश्किल था कि वह पीछे गिरेगा, आगे गिरेगा या करवट बदलेगा; बस इतना ही पक्का था कि वह उस समय अपने पैरों पर खड़ा नहीं रह पा रहा था और बेहोश होने वाला था।

शायद बाहर उस लंबी, गहरी सुरंग से कोई ठंडी हवा उसे अपनी ओर खींच रही थी; मुझे नहीं पता। वह आगे बढ़ा—जैसे हवा का कोई झोंका उसे खिड़की से खींच रहा हो। खिड़की काफी ऊंची थी। उसका सिर खिड़की के बीचोंबीच लगे चबूतरे से बस थोड़ा सा चूक गया। वह कमर से चबूतरे पर सिमट गया, आधा अंदर, आधा बाहर, जैसे कोई आलसी आदमी धीरे-धीरे बहुत ज्यादा झुक रहा हो—और गुरुत्वाकर्षण ने बाकी काम कर दिया। मौत ने उसकी बची-खुची इंद्रियों पर ही वार कर दिया—वह अपने हाथ ऊपर उठाकर कुछ पकड़ने से पहले ही चला गया। उसके पैर पतंग की पूंछ की तरह उसके पीछे लहराए—और खिड़की का खाली हिस्सा गायब हो गया।

टक्कर की आवाज़ काफी देर बाद, दूर से, दबी हुई, धीमी और अस्पष्ट सुनाई दी, और यहाँ तक कि मुझ जैसे नए व्यक्ति को भी वह आवाज़ अच्छी नहीं लगी। मैंने पास जाकर नीचे देखने की गलती नहीं की। लगभग तुरंत ही, कहीं दूर से एक और खिड़की के टूटने की आवाज़ आई, थोड़ी देर का सन्नाटा छा गया, और फिर एक महिला की चीख शाफ्ट में गूंज उठी।

जब मैं उसे कमरे में घसीट रहा था, तो मैंने देखा कि उसका एक जूता, जिसके फीते खुले हुए थे, निकल गया था। मैंने उसे वापस उसके बिस्तर के नीचे रख दिया, और बिस्तर को, खासकर तकियों को, इस हालत में समेट दिया कि वह सोने के बाद एकदम शांत हो जाए। मैंने अपने जूते के तलवे से कालीन पर बनी उस धुंधली रेखा को मिटा दिया, जो उसके घिसटते हुए जूते के कारण बनी थी।

फिर मैंने अपना पहले से गीला तौलिया उठाया, बाथरूम में वापस गई, शावर को पूरी रफ्तार से चालू किया और दोबारा उसके नीचे लेट गई। उसकी तेज़ आवाज़ ने सब कुछ सुन्न कर दिया, लेकिन मेरे गीले कंधे पर अचानक हवा का झोंका लगा, जिससे मुझे पता चला कि उन्होंने कमरे के दरवाजे की चाबी का इस्तेमाल कर लिया है। "हे शेरिल!" जैसे ही वे अंदर आए, मैंने ज़ोर से कहा, "क्या मैं तुम्हारी शेविंग क्रीम उधार ले सकती हूँ?" मैंने अपना सिर थोड़ा और बाहर निकाला और चिल्लाकर कहा, "क्या हुआ तुम्हें, क्या तुम अंदर जाकर सो गई? यह तीसरी बार है जब मैंने तुमसे यही सवाल पूछा है—"

फिर मैंने देखा कि वे सब खड़े होकर मेरी तरफ देख रहे थे। मैंने चिल्लाकर पूछा, "क्या बात है?" और हाथ बढ़ाकर पानी बंद कर दिया।

अचानक छाई खामोशी चौंकाने वाली थी।

होटल के जासूस ने कहा, "आपका रूममेट अभी-अभी खिड़की से बाहर गिर गया है।"

“हे भगवान!” मैं हांफते हुए बोली, और खुद को गिरने से बचाने के लिए एक मिनट तक रबर के पर्दे को कसकर पकड़ना पड़ा। मेरी आंखों में साबुन चला गया और वे पानी से भर गईं। इसके बावजूद मैं देख सकती थी कि घंटी बजाने वाले से लेकर ऊपर तक सभी मुझे देख रहे थे, मानो उन्हें पता हो कि मैं कितनी बुरी हालत में हूं और उन्हें मुझ पर तरस आ रहा हो।

जेफरसन के होटल में उस सुबह की घटना के ठीक तीन सप्ताह बाद, मिडलबर्ग के मार्केट होटल में मेरे मेलबॉक्स में थेल्मा का संदेश मेरा इंतज़ार कर रहा था। जेफरसन छोड़ने के बाद से मैं पिछले दो हफ्तों से वहीं छिपा हुआ था। ऐसा नहीं था कि मुझे कभी गिरफ्तार किया गया था या मुझ पर शक भी किया गया था, लेकिन वहाँ के जासूसों ने स्वाभाविक रूप से मुझसे शेरिल के बारे में मेरी जानकारी और क्या उसने आत्महत्या करने के इरादे से जुड़ी कोई बात कही थी, इस बारे में पूछताछ की थी। ऐसा लग रहा था कि मैं उनके सभी सवालों का संतोषजनक जवाब दे चुका था।

उन्होंने मुझे चौबीस घंटे और इंतज़ार करवाया—और मेरी बेचैनी दूर कर दी। फिर उन्होंने संदेश भेजा कि मैं जब चाहूँ तब जा सकती हूँ। यह सुनते ही मैंने समय बर्बाद नहीं किया! मुझे याद आया कि मुझे किसी भी

कोरोनर की जाँच में बयान देने के लिए नहीं बुलाया गया था, लेकिन मैं इस बात पर उनसे बहस नहीं करना चाहती थी। न ही मैंने यह जानने की कोशिश की कि शेरिल के अवशेषों का क्या हुआ। मैं बस चली गई—जब जाने का समय था!

हालांकि मैं उस मामले में बाल-बाल बच गया था, लेकिन मिडलबर्ग में अगले कुछ हफ्तों तक उससे संपर्क का इंतजार करते हुए मुझे और भी कई बातों की चिंता सता रही थी। मैं लगातार सोचता रहता था कि कहीं वह मुझे धोखा तो नहीं देगी, और यह बेचैनी दिन-ब-दिन और घंटे-दर-घंटे बढ़ती जा रही थी। अगर उसने ऐसा किया, तो मेरे पास कोई जवाब नहीं होगा।

उसने मुझे बहला-फुसलाकर कहा था कि अगर वो आनाकानी करे तो मुझे बस घर आकर उसे किसी और को सौंप देना है। बात कुछ हद तक सही भी थी, लेकिन उस समय मैंने एक बात नज़रअंदाज़ कर दी थी: बीमा का पैसा हाथ लगने के बाद उसे यहाँ रोके रखने का क्या तरीका था? उसे बस किसी और दिशा में भाग जाना था और—दस हज़ार डॉलर गए!

यही बात मुझे सबसे ज़्यादा परेशान कर रही थी, यह जानकर कि हमारे इस छोटे से खेल में, जहाँ मैं उसे झांसा देने की कोशिश कर रहा था, वह शुरू से ही तुरुप का पत्ता अपने हाथ में लिए बैठी थी। और जहाँ तक मैं उसे जानता था, वह आसानी से झांसा नहीं देती थी। मैंने तो मन ही मन एक समय सीमा भी तय कर ली थी: अड़तालीस घंटे और, और अगर उसकी तरफ से कोई खबर नहीं आई, तो मैं चाहे जितना भी जोखिम उठाऊँ, खुद घर वापस चला जाऊँगा और उसके भागने से पहले ही उस पर टूट पड़ूँगा।

मुझे पक्का पता था कि उसकी तरफ से कोई गड़बड़ी नहीं हुई थी; इसलिए वह यह बहाना नहीं बना सकती थी कि उसे पैसे नहीं मिलने थे। मैं मिडलबर्ग में आने के बाद से ही अपने शहर का अखबार रोज़ खरीद रहा था, यह देखने के लिए कि कहीं अखबार फट न जाए या उसमें से बदबू न आने लगे, और ऐसा कुछ नहीं हुआ था।

अगर ऐसा होता तो मिनटों में सुर्खियां बन जातीं, लेकिन मेरे पास इससे जुड़ी कुछ ही खबरें थीं जिन्हें मैंने काटकर अपने बटुए में रख लिया था। मैं उन्हें हर रात निकालता और पढ़ता था, ताकि खुद को तसल्ली दे सकूं, और यह किसी टीवी प्रसारण से कम नहीं था। सबसे पहले, वह समाचार जिसने शेरिल की जान ले ली (हालांकि उसने इसे जेफरसन अखबार में देखा था, न कि अपने शहर के अखबार में)।

फिर अगले दिन एक मामूली सी शोक सूचना छपी, जिसमें अंतिम संस्कार की तारीख का ज़िक्र था। फिर अंतिम संस्कार को चौबीस घंटे के लिए टाल दिया गया, बिना कोई कारण बताए (इसकी वजह से मेरी रात खराब गुज़री!)। और अंत में, दो दिन बाद, बस इतना ही बताया गया कि अंतिम संस्कार एक दिन पहले ही हो चुका था। बस इतना ही, लेकिन इतना ही काफी था। मामला सुलझ गया, मुहर लग गई और सब कुछ तय हो गया—हम बच निकले!

इन सब बातों के अलावा भी, मेरी जगह कोई भी होता तो स्वाभाविक रूप से घबरा जाता। बस हर दिन पैसे मिलने का इंतज़ार करना ही काफ़ी था। उससे जो एक सौ पचहत्तर डॉलर मैंने निकाले थे, वो कम पड़ने

लगे थे; मैं असली पैसा पाना चाहता था और इस इलाके से निकल जाना चाहता था। वैसे भी, मिडलबर्ग मेरे गृहनगर से ज़्यादा दूर नहीं था। कोई जानने वाला वहाँ से आ सकता था और मुझे तब देख लेता जब मुझे इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं होती; मेरी नई-नई मूंछें भी पहचान से बचने की कोई गारंटी नहीं थीं।

मैं ज़्यादातर समय अपने कमरे में ही रहता था, उन्हें वही सोचने देता था जो मैंने शेरिल को बताया था, कि मेरी सेहत ठीक नहीं है। मेरा रूप-रंग भी वैसा ही होने लगा था, इसलिए यह बात मनवाना मुश्किल नहीं था। मैं नीचे वाले कमरे में लगे अपने लेटरबॉक्स के पास ही खड़ा रहता था, और दिन में सिर्फ़ एक बार कोने वाली दुकान से अपने शहर का अख़बार, के सिटी स्टार, लेने जाता था। मैं हमेशा इस बात को हल्के में लेता था कि साथ में जेफरसन और मिडलबर्ग का एक-एक अख़बार भी खरीद लेता था, और फिर उन्हें पास के कूड़ेदान में फेंक देता था।

और अपने कमरे में मैं हमेशा हर प्रति के हर पृष्ठ के ऊपर से प्रकाशन का नाम और स्थान फाड़ देता था, और उन पट्टियों को एक ऐशट्रे में सावधानीपूर्वक जला देता था, ताकि सफाईकर्मी या कोई और उसे ढूंढकर यह न जान सके कि यह कहाँ प्रकाशित हुआ था।

एक शाम मुझे थोड़ी परेशानी हुई जब अखबार बेचने वाले को मेरे शहर का अखबार नहीं मिला। उसने माफी मांगते हुए कहा, "वे आमतौर पर मुझे दो प्रतियां भेजते हैं, लेकिन आज एक कम थी, और एक और सज्जन आपकी तरह ही लगातार प्रतियां खरीद रहे थे, और शायद वे आपसे पहले यहां आ गए और मेरे पास जो इकलौती प्रति थी, वह ले गए।"

मैं एकदम शांत हो गया, फिर आखिरकार मैंने यूं ही कहा, "क्या वह आपका नियमित ग्राहक है? वह कब से ऐसा कर रहा है?"

“ओह, दो-तीन हफ्ते हो गए हैं—लगभग उतना ही समय जितना आपको है। मुझे लगता है कि वह उसी होटल में रहता है जहाँ आप रहते हैं; मैं उसे अक्सर वहाँ आते-जाते देखता हूँ। अच्छा आदमी है, अपने काम से काम रखता है—”

मैंने पहले से भी अधिक लापरवाही से कहा, "क्या तुमने उसे यह बताया कि मैं तुमसे के सिटी स्टार भी ले रहा हूँ?"

“नहीं!” उसने जोर देकर कहा, “मैंने उसे कभी ‘बू’ नहीं कहा।”

मुझे इसी से संतुष्ट होना पड़ा, और एक-दो दिन में मेरी आशंका फिर से कम हो गई, क्योंकि अब और कुछ जानने को नहीं था। मार्केट कोई गगनचुंबी इमारत नहीं थी; तब तक मैं उसमें सभी चेहरों को देख चुका था, और निश्चित रूप से वहाँ कोई ऐसा नहीं था जो मुझे जानता हो या जिसे मैं जानता हो, या जिसे मैंने पहले कभी देखा हो। और न ही रजिस्टर में, जिसे मैंने बिना किसी परेशानी के देखा, के सिटी का कोई नाम दर्ज था।

यह सब महज़ एक हानिरहित संयोग था, बस इतना ही; शायद उस आदमी ने स्टार अखबार सिर्फ़ व्यापारिक कारणों से लिया था। मेरे कमरे के सामने वाले कमरे में एक मोटा-सा रियल एस्टेट एजेंट रहता था; मैं उससे लिफ़्ट में एक-दो बार मिला था, और शायद वही अलग-अलग कस्बों में रियल एस्टेट के अवसरों पर

नज़र रखता था। इससे मुझे पूरी तरह तसल्ली हो गई; वह पत्रकार के हुलिए से हूबहू मिलता था, और जब भी हमारी मुलाक़ात हुई, उसने मेरी तरफ़ देखा तक नहीं।

एक रात मैं अपने घर का दरवाज़ा खोलते समय छुपकर उनकी बातें सुन रहा था। उन्होंने फोन पर किसी से लंबी बहस की। वे कह रहे थे, "यह एक आदर्श जगह है। उनसे कहो कि वे इसे इस कीमत पर नहीं ले सकते। अगर हम इसे पेट्रोल पंप के लिए लीज़ पर दे दें तो यह सोने की खान बन जाएगी।"

शेरिल की मृत्यु के इक्कीसवें दिन सुबह, मैं होटल के डेस्क पर पहुँचा—और पहली बार मेरे लेटरबॉक्स में सफ़ेद रंग का पत्र दिखा! मेरी घबराहट और बेचैनी चरमरा गई, जैसे बिजली के तार कड़क रहे हों। उस पर के सिटी का डाक टिकट लगा था। उत्साह में मुझसे पत्र गिर गया और तभी एक रियल एस्टेट एजेंट, जो अपना पत्र लेने डेस्क पर आया था, ने उसे उठाया और बिना कुछ कहे मुझे वापस दे दिया।

मैं लॉबी के एक कोने में गया और उसे फाड़कर खोला। उस पर कोई हस्ताक्षर नहीं थे—शायद वह मुझे कोई ऐसा सबूत नहीं देना चाहती थी जिसका इस्तेमाल उसके खिलाफ किया जा सके—लेकिन यह उसी का था। मैंने लिखावट पहचान ली, हालाँकि उसने उसे थोड़ा बिगाड़ने की कोशिश की थी, या शायद उसकी उत्तेजना ने ऐसा कर दिया था।

जैकी की हालत बहुत अच्छी है। अगर आप उससे मिलना चाहते हैं, तो आपको पता है कि क्या करना है। यात्रा आपको करनी होगी, मुझे नहीं। मैं अब उस पुराने घर में नहीं रहता, इसलिए कोई दिक्कत नहीं होगी। आप मुझे 10 स्टेट स्ट्रीट पर पाएंगे।

जिस तरह से मैं जल रहा था, हैरानी की बात है कि मेरे कानों से धुआं नहीं निकला। तो सफर करना मेरी ही जिम्मेदारी थी, है ना? उसे पता था कि घर जाकर मैं कितना बड़ा जोखिम उठा रहा हूँ, भले ही उसने अपना पता बदल लिया हो!

मैंने अचानक फैसला किया। "ठीक है, इतनी चालाक होने के कारण, अब वो पूरे दस हज़ार रुपये देगी ही! मैं नीचे जाकर उसे लूट लूँगा! और अगर उसने अपना मुँह खोला, तो वो अचानक मर जाएगी!"

मैंने उसे मोड़कर अपनी जेब में रखा और बाहर निकल गया। मैं रेलवे ट्रैक के उस पार, जेफरसन के सुनसान इलाके में पहुँचा और एक गिरवी की दुकान से बिना ज़्यादा सवाल पूछे, खासकर लाइसेंस के बारे में पूछे बिना, एक .32 पिस्तौल और कुछ कारतूस खरीद लिए। मैं वापस आया और तीन बजे वाली बस में सीट बुक करवाई, जो मुझे अंधेरा होने के ठीक बाद के सिटी पहुँचा देगी। मैंने सस्ते चश्मे और जूतों की पॉलिश का एक छोटा डिब्बा खरीदा। मैं अपने कमरे में वापस गया, चश्मे के फ्रेम से लेंस निकाले और अपनी मूंछों पर थोड़ी सी पॉलिश लगाई।

दोपहर ढाई बजे मैं नीचे गया, बिल चुकाया और चाबी लौटा दी। क्लर्क ने एक शब्द भी नहीं कहा, लेकिन मैंने देखा कि उसने मेरे लेटरबॉक्स में एक चमकीले लाल रंग की गत्ते की पट्टी बुकमार्क की तरह चिपका दी। मैंने यूं ही पूछा, "यह किसलिए है?"

"यह दिखाने के लिए है कि यह उपलब्ध है।"

“उसके ठीक बगल वाले में भी एक है।” मैंने आंखें सिकोड़कर देखा।

"हां, 919, जो आपके ठीक सामने वाले कमरे में है, उसने भी लगभग आधे घंटे पहले चेक आउट कर लिया था।"

मुझे घबराहट से बचाने वाली एकमात्र बात यह थी कि उसका बिल मेरे बाद नहीं, बल्कि पहले आया था; वरना मुझे कुछ गड़बड़ लग जाती। लेकिन इस तरह, उसे कैसे पता चलता कि मैं खुद जाने का इरादा रखती हूँ, जबकि मैंने उसे पहली चेतावनी इसी वक्त दी थी?

मैंने मन ही मन कहा, “बिल्कुल, वो रोज़ाना के सिटी स्टार अखबार ले रहा है। मैं उस बस में अच्छे से देख लूँगा, और अगर वो उसमें हुआ तो मैं नहीं चढ़ूँगा। मैं कोई जोखिम नहीं लेना चाहता, शेरिल से टकराने की तरह खुद को खतरे में नहीं डालना चाहता!”

मैंने समय का ध्यान रखते हुए डिपो पर निर्धारित समय से ठीक पाँच मिनट पहले पहुँचने का प्रयास किया। बस वहाँ खड़ी थी, चलने के लिए तैयार। मैं बस के एक किनारे से दूसरे किनारे तक गया, हर खिड़की से अंदर झाँका, और फिर दूसरी तरफ़ से वापस आकर वही सब किया, उसके बाद मैं बस में चढ़ा। उसका कोई अता-पता नहीं था।

मैंने अपनी सीट ढूंढी और उसके किनारे पर बैठ गया, इस इरादे से कि अगर वह आखिरी क्षण में आ जाए तो मैं तुरंत उठ जाऊंगा। लेकिन वह नहीं आया।

कुछ देर बाद मैंने उन सबको गौर से देखा, और उनमें से किसी में भी ऐसा कुछ नहीं था जिस पर दोबारा नज़र डालने की ज़रूरत हो। किसी ने भी मुझे पहली नज़र में भी नहीं देखा। जब हम फर्न्डेल पहुँचे तब तक अंधेरा हो चुका था, और जब हम डाउनटाउन टर्मिनस पर के सिटी में पहुँचे तब लगभग साढ़े नौ बज रहे थे। दरवाज़े खुलने से ठीक पहले मैंने बिना लेंस वाले चश्मे पहन लिए, और जगमगाते डिपो में समय बर्बाद नहीं किया। बाहर सड़क पर हल्की रोशनी में मैं ठीक-ठाक दिख रहा था, बशर्ते मैं किसी भी चमकती दुकान की खिड़कियों में न देखूँ।

स्टेट स्ट्रीट एक शांत आवासीय सड़क थी जिसके किनारे समृद्ध मकान थे; हालाँकि, यह हमारे पुराने घर की तुलना में शहर के केंद्र के ज़्यादा करीब थी। मैंने सड़क के दूसरी तरफ से मकान नंबर 10 का जायज़ा लिया, पहले उसके आगे से गुज़रा और फिर वापस मुड़ा। यह बस एक मज़बूत ईंटों का दो मंज़िला मकान था, जिसमें कुछ भी ऐसा नहीं था जिससे मुझे शक हो। केवल भूतल पर एक खिड़की से रोशनी आ रही थी। मैंने सोचा, "वह ऐसी जगह पर क्या कर रही है?" मैंने अंदाज़ा लगाया कि उसने मकान मालिक परिवार से कोई फ़र्निश्ड कमरा किराए पर लिया होगा।

मैं थोड़ा और आगे बढ़ा और फिर एक बार फिर उसी ओर वापस चलने लगा। उस समय सड़क पर कोई भी नहीं था। दरवाजे तक सीधे जाने के बजाय, मैं धीरे-धीरे उस खिड़की के पास गया जहाँ रोशनी आ रही थी और अंदर झाँका।

थेल्मा उस कमरे में थी और ऐसा लग रहा था कि वह अकेली है। वह खिड़की के ठीक सामने एक बड़ी कुर्सी पर अकेली बैठी थी, सिगरेट पकड़े हुए और एक कोने में टकटकी लगाए देख रही थी, जिसे मैं अपनी जगह से नहीं देख पा रहा था। मैं समझ गया था कि वह तनाव में है—सिगरेट पकड़े हुए उसका हाथ हर बार उठाते ही कांप रहा था। मैंने थोड़ी देर इंतजार किया, फिर खिड़की के शीशे पर हल्के से थपथपाया।

उसने सीधे मेरी तरफ देखा, ज़रा भी हैरानी नहीं दिखाई। उसने अपना सिर सामने वाले दरवाज़े की तरफ झटका, लेकिन उठी नहीं। मैं उसके पास गया और सावधानी से उसे खोलने की कोशिश की। उसने दरवाज़ा खुला छोड़ रखा था ताकि मैं बिना घंटी बजाए अंदर जा सकूँ। मैंने धीरे से दरवाज़ा बंद किया, अपनी जेब में रखी .32 पिस्तौल को थपथपाया और कुछ कदम चलकर गलियारे में आगे बढ़ा, ध्यान से सुनता रहा। घर में सन्नाटा पसरा था; लोग बाहर जा चुके थे, चाहे वे कोई भी हों।

मैंने उस कमरे के बगल वाले दरवाजे पर हाथ रखा जहाँ वह थी और उसे धक्का देकर खोल दिया। वह अभी भी वहीं बैठी थी, कांपते हाथों से सिगरेट पकड़े हुए। "हेलो, कुकी," उसने एक अजीब सी आवाज़ में कहा।

“हेलो, तुम भी!” मैंने गुर्राते हुए कहा और कमरे में चारों ओर देखा। ज़ाहिर है, कमरा खाली था। एक और कमरा था, जो पीछे की ओर कहीं खुलता था, उसका दरवाज़ा खुला हुआ था, लेकिन उसके आर-पार कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

“क्या तुम्हें मेरा संदेश मिला?” उसने कहा। फिर बोली: “तुम मुझे मारने ही तो वापस आए हो, बिल्कुल। मुझे पहले से ही आभास था कि ऐसा ही होगा। क्या वही संदेश तुम्हारी जेब में है?” और उसकी आँखें अचानक इधर-उधर घूमने लगीं, जो उसकी शांत और नीरस आवाज़ से बिलकुल मेल नहीं खा रही थीं।

मैंने कहा, “क्या हुआ तुम्हें, तुम लकवाग्रस्त हो गए हो या कुछ और? तुम वहाँ ऐसे क्यों बैठे हो? मुझे पैसे दो, सारे के सारे!”

उसने कहा, "हमारी क्या व्यवस्था थी, फिर से बताओ?"

“पच्चीस, पचहत्तर, जिसमें तुम्हें नुकसान होगा। लेकिन अब ये बात खत्म; मैं सब कुछ ले रहा हूँ—और ये रहा असली सबूत—” मैंने धीरे से बंदूक निकाली।

सिगरेट गिर गई, लेकिन वह फिर भी नहीं हिली।

“उठो!” मेरे कान में एक आवाज़ आई, और मुझे ऐसा लगा जैसे कपड़ों के ऊपर से कोई नुकीली सी स्टील की बंदूक मेरी रीढ़ की हड्डी में चुभ रही हो। फिर मानो आधी के सिटी एक साथ कमरे में आ गई, मेरे पीछे वाले दरवाज़े से और सामने वाले दूसरे दरवाज़े से भी। एक आदमी तो उस बड़ी आरामकुर्सी के पीछे से भी खड़ा हो गया जिस पर वो अब तक बैठी थी, उसके कंधे पर बंदूक तनी हुई थी।

मैंने .32 पिस्टल नीचे गिरा दी और हथेलियाँ दिखाईं। मैंने के सिटी के पुलिस प्रमुख को उनकी एक तस्वीर से पहचाना था जो मैंने पहले देखी थी। “वाह,” उन्होंने बड़ी नरमी से कहा, “इस तरह मेरे घर आने के लिए आपका धन्यवाद! कृपया अपनी कलाई बाहर निकालें!”

मैंने उससे कहा, "तुम गंदी, धोखेबाज़ हो—"

“मैंने तुम्हें नाराज़ नहीं किया, कुकी,” उसने थकी हुई आवाज़ में कहा। “वे अगले ही दिन गिर पड़े—”

“चुप रहो!” मैंने गुस्से में उससे कहा।

"कोई बात नहीं, कुक," पुलिस प्रमुख ने दिलासा देते हुए कहा।

“उस आदमी का अंतिम संस्कार हुआ ही नहीं—हमने यह सुनिश्चित किया। हमने खुद अखबार में वह फर्जी खबर छपवाई। वह तब से हिरासत में है—बस हम सबूत के तौर पर इस्तेमाल करने के लिए बीमा का पैसा आने का इंतजार कर रहे थे। तुम्हें लगा था कि तुम ठीक हो, है ना? क्या मैं तुम्हें बताऊं कि तुमने मंगलवार को नाश्ते में क्या खाया था? या एक हफ्ते पहले रविवार की रात को सोने से पहले कौन सी धुन गुनगुना रहे थे? कोई दिक्कत नहीं!”

उन्हें मुझे अपने बीच में थामे रखना पड़ा। "मैंने उसे नहीं मारा," मैंने हांफते हुए कहा, "यह आत्मरक्षा थी —"

मार्केट का मोटा रियल एस्टेट एजेंट मेरे सामने आकर बोला, "शायद जेफरसन में शेरिल को खिड़की से धक्का देना आत्मरक्षा में किया गया था?"

मैं नहा रहा था; मेरा इससे कोई लेना-देना नहीं था—”

“शेरिल मरा नहीं,” उसने कहा। “उस शाफ़्ट के तल पर लटकी दो रस्सियाँ तुम्हारी तुलना में उसके लिए ज़्यादा दयालु साबित हुईं। पिछले तीन हफ़्तों से वह नीचे अस्पताल में भर्ती है और उसकी पीठ पर प्लास्टर चढ़ा है। शायद तुम्हारी वजह से वह ज़िंदगी भर के लिए अपाहिज हो गया है—लेकिन बात कर सकता है। उसने हमें सब कुछ बताया, इसी वजह से यहाँ धमाका हुआ।”

मेरे अंदर भी कुछ ऐसा फूट पड़ा, जैसा उस रात हुआ था। मैं फिर से बेन कुक बन गया था, जिसने अपनी जिंदगी में कभी कुछ गलत नहीं किया था। ऐसा लग रहा था मानो बुराई का सिलसिला अपने आप ही खत्म हो गया हो।

मैं सिहर उठा और हथकड़ी लगे हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। "मैं—मैं क्षमा चाहता हूँ। खैर, आपने मुझे पकड़ लिया है, और शायद यही सब अच्छा है—मैं अपने अंजाम भुगतने के लिए तैयार हूँ—"

“चिंता मत करो, तुम करोगे,” पुलिस प्रमुख ने कहा। “उसे मुख्यालय ले जाओ और उसका मामला दर्ज करो। उसे वापस जेल में डाल दो।”

जब हम जा रहे थे, तो एक जासूस ने कहा: “सिर्फ दस हज़ार डॉलर के लिए! अगर आप थोड़ी देर और रुक जाते, तो आपको बिना कुछ किए ही मिल जाता—बस ऐसे ही!” उसने अपनी जेब से एक टेलीग्राम निकाला।

यह पत्र मेरे पुराने पते पर भेजा गया था। यह कुछ दिन पहले ही आया था। यह लंदन से आया था, किसी ऐसे वकील का पत्र था जिसका नाम मैंने पहले कभी नहीं सुना था। इसमें मुझे बताया गया था कि मेरी पहली पत्नी, फ्लोरेंस, का दो महीने पहले निधन हो गया था और वह मेरे लिए तीन हजार पाउंड से अधिक की विरासत छोड़ गई थीं।

दस हजार डॉलर!

मैंने कोई भावना नहीं दिखाई। बस उनकी तरफ मुड़ा और उनसे पूछा कि क्या वे मेरा एक काम कर देंगे।

"शायद तुम्हें एक जोरदार लात मारूंगा," जासूसों में से एक ने ताना मारा।

“ये पैसा मेरा है, मैं इससे जो चाहूँ कर सकती हूँ, है ना? इसे शेरिल को दे दो, प्लीज़? शायद इससे उसे ठीक होने में मदद मिल जाए ताकि वो फिर से चल सके।”

वे सब मुझे हैरानी से देखने लगे, मानो मुझसे ऐसी बात सुनना उनके स्वभाव के विपरीत हो। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं था। हममें से कोई भी सौ प्रतिशत बुरा या सौ प्रतिशत अच्छा नहीं है—शायद हम सब कुछ न कुछ मिला-जुला सा हैं। शायद इसीलिए परमपिता, न्यायाधीश, हम पर दया करते हैं। काले निशानों की एक पूरी पंक्ति और फिर अंत में एक सफेद निशान। कौन सा निशान किसे रद्द करता है? मुझे जल्द ही इसका पता चल जाएगा...

तुम मुझे फिर कभी नहीं देख पाओगे

बिस्कुट से ही सब शुरू हुआ था। बाद में उसे कितना अफ़सोस हुआ कि उसने वो बिस्कुट बनाए ही क्यों! लेकिन उसने बनाए थे, और उसे उन पर गर्व भी था। उसकी पहली कोशिश। दूल्हा-दुल्हन की आम बातें। वो मज़ाक जो सालों से सब सुनते आ रहे हैं, इतना पुराना कि घिस-पिट कर खा गया है। इतना पुराना कि अब मज़ाक नहीं रहा। नहीं, मज़ाक नहीं है; ध्यान से सुनो।

उसका घर-गृहस्थी संभालने का मन नहीं था। वह दिन भर अपने ड्राइंग बोर्ड पर मेहनत करता रहा था। अगर वे अच्छे भी होते तो शायद वह बस इतना कहकर बात खत्म कर देता, "बुरा नहीं है।" लेकिन वे अच्छे नहीं थे; वे बेहद खराब थे। वे कंकड़ जैसे सख्त थे; उनका स्वाद कास्टिक सोडा जैसा था। उसने किसी चीज़ की मात्रा ज़्यादा डाल दी थी और किसी चीज़ की मात्रा कम, और उनके साथ खिलवाड़ करने के लिए ज़िंदगी बहुत छोटी थी।

"खैर, मुझे तो उनके बारे में आपकी कोई बात सुनाई नहीं दे रही है," उसने मुंह बनाते हुए कहा।

उसने बस इतना ही कहा: "मेरी सलाह मानो, स्माइल्स, और इसके बाद कोने वाली बेकरी से उन्हें ले आना।"

“यह तो प्रशंसा का भाव नहीं है,” उसने कहा। “अगर आपको लगता है कि उस गर्म ओवन के ऊपर झुकना बहुत मज़ेदार था—”

"अगर आपको इन्हें खाने में मज़ा आता है तो ठीक है—मुझे कल एक काम करना है; मैं इस तरह की सज़ा बर्दाश्त नहीं कर सकता!"

एक बात से दूसरी बात निकली। खाना खत्म होते-होते उसका सुनहरा, मुलायम सिर मेज पर उसकी मुड़ी हुई बाहों के अंदर था और वह टूटे दिल से छोटी-छोटी आवाजें निकाल रही थी।

एक थके हुए आदमी के लिए रोना कष्टदायक होता है। वह ऐसी बातें कहता रहा जो वह कहना नहीं चाहता था। “मैं किसी भी रेस्तरां में आराम से खाना खा सकता था, बिना ये सब देखे। मैं थक गया हूँ। मैं घर आराम करने आया था, न कि सामने बैठी कैमिला की मौत का मंजर देखने।”

यह सुनकर उसने अपना सिर उठाया। अब वह गंभीर थी। “अगर मैं आपको परेशान कर रही हूँ, तो इसका आसानी से समाधान हो जाएगा! आप शांति चाहते हैं, तो हम सुनिश्चित करेंगे कि शांति बनी रहे। इसमें कोई परेशानी नहीं है।”

वह गुस्से में बेडरूम में घुस गई और उसे दराजों के खुलने-बंद होने की आवाज़ सुनाई दी। तो क्या वह उसे छोड़कर जाने वाली थी? एक पल के लिए उसका मन हुआ कि वह उठकर उसके पीछे जाए और उसे गले लगाकर कहे: "मुझे माफ़ कर दो, स्माइल्स; मैंने जो कहा उसका मेरा मतलब नहीं था।" और शायद इससे मामला वहीं खत्म हो जाता।

लेकिन उसने खुद को संभाला। उसे अपने एक अविवाहित मित्र की शादी से पहले दी गई एक नेक सलाह याद आई। और अविवाहित लोग शादी के नियमों के बारे में बहुत कुछ जानते हैं! उस ज्ञानी मित्र ने उसे सलाह दी थी, “अगर वह कभी तुम्हें छोड़कर जाने की धमकी दे, और वे सभी कभी न कभी ऐसा करती हैं, तो उससे निपटने का सिर्फ एक ही तरीका है। ऐसा दिखावा करो जैसे तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता; उसे जाने दो। वह जल्दी ही वापस आ जाएगी, चिंता मत करो। नहीं तो, अगर तुम उससे मिन्नतें करोगे कि वह वापस न आए, तो उसके बाद से उसका पलड़ा तुम पर भारी हो जाएगा।”

उसने अपने एक कान के पीछे खुजली की। "पता नहीं वह सही था या नहीं?" उसने बुदबुदाया। "खैर, इसका पता लगाने का एकमात्र तरीका इसे आजमाना ही है।"

तो वह मेज से उठा, बैठक में गया, एक रीडिंग लैंप जलाया, कुर्सी पर आराम से लेट गया और शाम का अखबार खोला, मानो देखने में बिल्कुल बेपरवाह हो। लेकिन आपको बस यही पता चल सकता था कि वह बेपरवाह नहीं है, कि वह बार-बार अखबार के ऊपर से अखबार की ओर देख रहा था कि क्या वह सचमुच अपनी धमकी को अंजाम देने वाली है।

उसने ऐसा दिखाया मानो वो सच में ऐसा कर रही हो। शायद वो इंतज़ार कर रही थी कि वो उसके पीछे दौड़कर आए और माफ़ी मांगे, और जब उसने ऐसा नहीं किया, तो उसने खुद को मजबूर करके उससे माफ़ी मांग ली। दोनों में ही ज़बरदस्ती का घमंड था। और दोनों ही बहुत जवान थे, और ये सब उनके लिए बिल्कुल नया था। परसों छह हफ्ते पूरे हो जाएंगे।

वह हड़बड़ी में अंदर आई, कमरे के बीचोंबीच एक छोटा सा काला सूटकेस रखा और दस्ताने पहन लिए। अब भी वह उसके सुलह की पहल का इंतज़ार कर रही थी। लेकिन हर बार जब वह मुंह खोलता, तो दरार और गहरी हो जाती, सब कुछ उस मूर्ख की कही बात की वजह से। "क्या सच में तुम्हारे पास सब कुछ है?" उसने धीरे से कहा।

वह गुस्से में भी बहुत खूबसूरत लगती थी। "मुझे खुशी है कि तुम अपना असली रूप दिखा रही हो; मुझे अभी पता चल जाए तो बेहतर है, बाद में नहीं।"

शायद किसी को उनके सिर आपस में टकरा देने चाहिए थे। लेकिन वहाँ उनके अलावा कोई और नहीं था। "तुम तिल का ताड़ बना रहे हो। अच्छा, तो साथ ही कोई अच्छा सा आरामदायक होटल भी चुन लो।"

मुझे होटल जाने की जरूरत नहीं है। मैं बेसहारा नहीं हूँ। मेरी एक बहुत अच्छी माँ है जो मुझे खुले दिल से अपनाएगी।

"आधी रात को यह सफर काफी लंबा है, है ना?" और स्थिति को और भी बदतर बनाने के लिए, उसने अपना बटुआ खोला मानो उसे किराए के पैसे देने जा रहा हो।

इससे उसकी झुंझलाहट चरम पर पहुँच गई। “मैं तुम्हारी मदद के बिना ही ऊपर पहुँच जाऊँगी, मिस्टर एड ब्लिस! और मुझे तुम्हारी दी हुई कोई भी चीज़ नहीं चाहिए! अपना पुराना चांदी का लोमड़ा ले लो!” फुफकार। “और अपनी पुरानी हीरे की अंगूठी ले लो!” प्लिंक। “और अपने पुराने जेब खर्चे ले लो!” स्कफ-स्कफ-थप्पड़। “और मेरे नाम पर ली गई वह बीमा पॉलिसी भी वापस ले लो! साइमन लेग्री! इवान द टेरिबल!”

उसने कागज़ को वापस उस तरफ़ पलट दिया जहाँ स्कोर लिखे थे। उसे बस यही उम्मीद थी कि वह कुंवारा लड़का सही हो। "परसों मिलते हैं, या जब भी लुका-छिपी खेलते-खेलते थक जाओ," उसने शांत भाव से कहा।

"तुम अपनी पूरी जिंदगी में मुझे फिर कभी नहीं देख पाओगे!" यह बात कई दिनों तक उसके कानों में गूंजती रही।

उसने सूटकेस उठाया, सामने का दरवाजा धमाके के साथ बंद हो गया! और वह फिर से अकेला हो गया।

अब एकमात्र उपाय यही था कि वह दिखावा करे कि उसे कोई फर्क नहीं पड़ता, और फिर वह दोबारा कभी ऐसा करने की कोशिश नहीं करेगी। अन्यथा, उसका जीवन नरक बन जाएगा। हर बार जब भी उनके बीच ज़रा सी भी कहा-सुनी होती, वह अपनी माँ के पास वापस जाने की धमकी देती।

उस पहली रात उसने वो सब कुछ किया जो वो हमेशा से करना चाहता था, लेकिन आखिरकार वो सब कुछ उतना खास नहीं था। उसने अपने मोज़े उतार दिए और नंगे पैर इधर-उधर घूमा, राख को जहाँ भी गिरी वहीं रहने दिया, छह बोतल ठंडी बीयर मुँह से पी गया और उसे पूरे कमरे में बिखेर दिया, और बिना दाढ़ी बनाए ही सो गया।

वह सुबह करीब चार बजे उठा, और यह जानकर अजीब लगा कि वह उसके साथ घर में नहीं है। उसने उम्मीद की कि वह जहाँ भी हो, ठीक होगी, और आखिरकार उसने खुद को वापस सोने के लिए मजबूर किया। सुबह उसे जगाने वाला कोई नहीं था। उसके आसपास न होने का एहसास तब उतना अजीब नहीं लगा, क्योंकि उसे ध्यान देने का समय ही नहीं मिला; वह काम पर पूरे एक घंटा बाईस मिनट लेट हो चुका था।

लेकिन जब वह उस रात लौटा, तो उसे वाकई अजीब लगा, क्योंकि वहाँ उसका इंतज़ार करने वाला कोई नहीं था, घर अँधेरा और खाली था, और बैठक में चारों ओर बीयर की बोतलें बिखरी पड़ी थीं। पिछली रात का

खाना, जो उनका आखिरी साथ में था, चौबीस घंटे बाद भी मेज पर बिखरा पड़ा था। उसने एक बिस्कुट को उंगली से कुरेदा और पछतावे से सोचा, "मुझे चुप रहना चाहिए था। मैं दिखावा कर सकता था कि वे अच्छे थे, भले ही वे अच्छे न होते।" लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी; नुकसान हो चुका था।

उसे अकेले ही एक काउंटर पर खाना खाना पड़ा, और यह बहुत निराशाजनक था। उस शाम उसने दो बार फोन उठाया, 10:30 बजे और फिर 11:22 बजे, ताकि उसकी माँ के घर फोन करके उससे सुलह कर ले, या कम से कम उसका हालचाल जान ले। लेकिन हर बार उसने मानो अपने ही हाथ पर एक थप्पड़ मारा, जैसे कोई लाक्षणिक वाक्य हो, और फोन लगाए बिना ही काट दिया। उसने मन ही मन कहा, "मैं कल तक इंतज़ार करूँगा। अगर मैं अभी मान गया, तो मैं उसकी दया पर निर्भर हो जाऊँगा।"

दूसरी रात मुश्किल भरी रही। बिस्तर ठीक नहीं था; उसे पहली बार पता चला कि उसे लगभग हर चौबीस घंटे में ठीक करना पड़ता था। सुबह करीब तीन बजे एक पुलिसवाले ने लाठी से उसके कंधे पर धक्का मारा और गुर्राते हुए बोला, "क्या परेशानी है, दोस्त?"

“इसका तुम्हारे नियमों की किताब में लिखी बातों से कोई लेना-देना नहीं है,” ब्लिस ने गुस्से से जवाब दिया। वह फुटपाथ से उठा और वापस अपने घर के अंदर चला गया।

वह सुबह उठते ही उसे फोन कर देता, लेकिन उसे फिर से देर हो गई थी—हालांकि इस बार सिर्फ बारह मिनट की देरी हुई थी—और वह ऑफिस से ऐसा नहीं कर सकता था क्योंकि इससे उसके साथी ड्राफ्ट्समैन को पता चल जाता कि वह उसे छोड़कर चली गई है।

आखिरकार उसने ऐसा तब किया जब वह उस शाम खाना खाने के बाद दूसरी बार लौटा। यह ठीक गुरुवार की रात 8:17 बजे का समय था, उसके जाने के दो रात बाद।

उन्होंने कहा, “मैं इस राज्य के डेनबी में रहने वाली श्रीमती बेले एल्डन से बात करना चाहता हूँ। मुझे उनका नंबर नहीं पता। कृपया उनका नंबर ढूंढकर मुझे दे दीजिए।” संयोगवश, वे स्माइल्स की माँ से कभी नहीं मिले थे।

ऑपरेटर के वापस कॉल करने का इंतज़ार करते हुए, वह अभी भी इस स्थिति से निकलने का तरीका सोच रहा था; बिना हार माने यह पता लगाना कि वह कैसी है। युवा अभिमान! शायद मैं उसकी माँ को मना लूँ कि वह यह न बताए कि मैंने उसके बारे में पूछने के लिए फोन किया था, ताकि उसे पता न चले कि मैं कमज़ोर पड़ रहा हूँ। ऐसा लगे कि सबसे पहले वही खुलकर सामने आई है।

फोन की घंटी बजी और उसने तुरंत फोन उठा लिया, चाहे उसे स्वाभिमान हो या न हो।

ये रही आपकी पार्टी।

एक महिला की आवाज सुनाई दी और उसने कहा, "हेलो, क्या आप श्रीमती एल्डन हैं?"

आवाज ने कहा कि ऐसा ही है।

“ये एड हैं, स्माइल्स के पति।”

“ओह, वो कैसी है?” उसने उत्साह से कहा।

वह फोन के पास बैठ गया। उसे सांस लेने में एक मिनट लगा। आखिरकार उसने कहा, "क्या वह वहां नहीं है?"

आवाज में हैरानी थी। “यहाँ? नहीं। क्या वह वहाँ नहीं है?”

एक मिनट के लिए उसका पेट एकदम खाली-खाली सा हो गया था। अब वो ठीक हो गया था। उसे समझ आने लगा था। या उसे लग रहा था कि समझ आ रहा है। उसने सामने की दीवार को परावर्तक बनाकर खुद को आँख मारी। तो अब माँ उसका बचाव करने वाली थी। उन्होंने मिलकर ये छोटा सा झूठ रचा था, उसे सज़ा देने के लिए। वे उसे थोड़ा डराने वाली थीं। उसने सोचा था कि वो उसे सबक सिखा रहा है, और अब वो उस पर ही पलटवार करने वाली थी और उसे सबक सिखाने वाली थी। उसे बाल नोचते और मुँह से झाग निकालते हुए दौड़कर ऊपर जाना था। “स्माइल्स कहाँ है? वो चली गई! मुझे मिल नहीं रही!” फिर वो दरवाज़े के पीछे से निकलकर उसके सिर पर चाबुक मारेगी और धमकी देगी: “क्या तुम ठीक से बर्ताव करोगे? क्या तुमने फिर कभी ऐसा किया?” और उसके बाद से वो उसे नाक में नथनी डालकर घुमाएगी।

“आप मुझे बेवकूफ नहीं बना सकतीं, श्रीमती एल्डन,” उसने आत्मविश्वास से कहा। “मुझे पता है कि वह वहाँ है। मुझे पता है कि उसने ही आपको ऐसा कहने के लिए कहा था।”

उसकी आवाज़ में घबराहट नहीं थी; वह अभी भी शांत और संयमित थी, लेकिन उसमें गंभीरता साफ झलक रही थी। या तो वह बहुत अच्छी अभिनेत्री थी, या यह कोई नाटक नहीं था। "अब सुनो, एड। तुम्हें पता होना चाहिए कि मैं ऐसी बात पर मज़ाक नहीं करती। दरअसल, मैंने कल दोपहर ही उसे एक लंबा पत्र लिखा था। अब तक वह तुम्हारे मेलबॉक्स में पहुँच जाना चाहिए था। अगर वह तुम्हारे साथ नहीं है, तो अगर मैं तुम्हारी जगह होती, तो मैं पता लगाती कि वह कहाँ है। और मैं इसे टालती भी नहीं!"

वह अब भी सोचता रहा: "क्या वह मेरा मजाक उड़ा रही है या नहीं?" उसने अनिश्चितता से कहा, "खैर, यह तो बहुत ही अजीब है।"

“मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ,” उसने फुर्ती से कहा। वह बस अपने गाल की अंदरूनी नली चबा रहा था।

“अच्छा, जैसे ही आपको पता चले कि वह कहाँ है, मुझे बता देना?” उसने बात समाप्त करते हुए कहा। “मैं चिंता नहीं करना चाहती, और स्वाभाविक रूप से जब तक मुझे यह खबर नहीं मिल जाती कि वह ठीक है, तब तक मैं चिंता करने से खुद को रोक नहीं पाऊंगी।”

उसने फोन काट दिया, और पहली बार में उसे पहले से कहीं ज़्यादा यकीन हो गया कि वह वहाँ नहीं थी। एक तो, माँ इतनी चिंतित नहीं लग रही थी कि उसकी चिंता पर यकीन हो सके। उसने सोचा, "मैं दोबारा फोन क्यों करूँ, ताकि तुम और वह मुझ पर हँस सको? वह अभी तुम्हारे साथ ऊपर है।"

लेकिन फिर वह बाहर गया और मेलबॉक्स खोला, और उसमें स्माइल्स के लिए एक पत्र था, जिसके लिफाफे पर उसकी मां का नाम लिखा था, और उस पर पिछली शाम 6:30 बजे की डाक की मुहर लगी थी।

उसने चिट्ठी खोली और पूरी पढ़ी। वाकई, यह असली थी; आराम से लिखी गई, बातचीत भरी, इसमें बनावटीपन का कोई नामोनिशान नहीं था। उन चिट्ठियों में से एक जो कई दिनों में, थोड़ा-थोड़ा करके लिखी

जाती हैं। इसमें कोई शक नहीं था; चिट्ठी भेजे जाने से पहले तक उसने अपनी बेटी को महीनों से नहीं देखा था। और स्माइल्स उसे पिछली रात छोड़कर गई थी; अगर वह वहाँ गई भी होती, तो बहुत पहले ही पहुँच गई होती।

उसके बाद उसका मूड पहले जैसा खुश नहीं रहा। अगर वह शहर में होती, जहाँ से वह पैदल या टैक्सी से घर वापस जा सकती थी, तो वह इतने लंबे समय तक दूर नहीं रहती। इतना नाराज़ होने की कोई बात नहीं थी। और उसका इरादा वहाँ जाने का था। उसे इस बात का पूरा यकीन इसलिए था क्योंकि उसके साथ यह कोई मामूली फैसला नहीं था, जो आसानी से लिया और भुला दिया गया हो। जब उसने उससे शादी की थी, तब वह अपनी माँ के साथ घर पर नहीं रहती थी। उससे पहले वह कई सालों से यहाँ अकेली रह रही थी। वे नियमित रूप से चिट्ठियाँ लिखते थे, उनके संबंध अच्छे थे, लेकिन माँ की दूसरी शादी ने फर्क पैदा कर दिया था। दूसरे शब्दों में, ऐसा नहीं था कि पहली बार कुछ पंख खोने पर वह तुरंत घोंसले में वापस चली गई हो। वहाँ तक का सफर काफी लंबा था, और वे कई सालों से एक-दूसरे से मिले भी नहीं थे। इसलिए अगर उसने कहा था कि वह वहां जा रही है, तो यह कोई क्षणिक आवेग नहीं था, बल्कि एक तर्कसंगत, स्पष्ट निर्णय था, और वह उस तरह की लड़की थी जो एक बार निर्णय लेने के बाद उसे पूरा कर देती।

उसने अपनी टोपी पहनी, टाई ठीक की, घर से निकला और शहर की ओर चल पड़ा। डेनबी के आसपास कहीं भी जाने का उसके पास केवल एक ही रास्ता था, और वह था बस। वहाँ ट्रेन सेवा उपलब्ध नहीं थी।

दो मुख्य बस प्रणालियों में से एक एक्सप्रेस लाइन चलाती थी जो वहाँ आस-पास कहीं नहीं रुकती थी; आपको कनाडा की सीमा तक जाना पड़ता था और फिर लगभग आधा रास्ता लोकल ट्रेन से वापस आना पड़ता था, तब जाकर आप वहाँ तक पहुँच पाते थे जहाँ बस रुक सके। दूसरी छोटी लाइन दिन में कई बार दोनों दिशाओं में वहाँ से आगे निकटतम बड़े शहर तक जाती थी; वे वहाँ अनुरोध पर रुकती थीं। यह स्पष्ट था कि उसने दोनों में से कौन सी प्रणाली ली थी।

इससे उसका काम काफी आसान हो जाना चाहिए था; लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वह टर्मिनल पर गया और टिकट विक्रेता के पास पहुंचा।

"क्या आप मंगलवार रात को यहां ड्यूटी पर थे?"

"हां, शाम छह बजे से। हर रात मेरी यही शिफ्ट होती है।"

“मैं किसी को ढूंढने की कोशिश कर रहा हूँ। देखो। मुझे पता है कि तुम रात भर टिकट बेच रहे हो, लेकिन शायद तुम्हें वो याद हो।” उसने गले में अटकी बात को किसी तरह निगला। “वो जवान है, सिर्फ़ बीस साल की, सुनहरे बालों वाली। इतनी सुंदर कि अगर पहली बार देखोगे तो दोबारा देखोगे; मुझे पता है तुम देखोगे। उसकी आँखें थोड़ी झुर्रीदार और मुस्कुराती हुई हैं। यहाँ तक कि जब उसका मुँह नहीं मुस्कुरा रहा होता, तब भी उसकी आँखें मुस्कुरा रही होती हैं। उसने—उसने डेनबी का टिकट खरीदा था।”

वह आदमी मुड़ा और एक खाने से टिकटों का एक पैकेट निकाला और उन पर जमी धूल झाड़ दी। “मैंने एक महीने से ज़्यादा समय से डेनबी का एक भी टिकट नहीं बेचा है।” उन सभी टिकटों पर रबर बैंड लगा हुआ था। सबसे ऊपर वाले को छोड़कर। वह उसकी साँस से उड़ गया।

इससे उसकी याददाश्त पर कुछ असर पड़ा। वह छिप गया और ज़मीन से उसे उठा लिया। "एक मिनट रुको," उसने अपने अंगूठे के नाखून को दो दांतों के बीच दबाते हुए कहा। "मुझे उसकी आंखें या मुस्कान तो ठीक से याद नहीं आ रही, लेकिन एक युवती आई और उसने डेनबी का किराया पूछा। शायद परसों की रात की बात है। टिकटों के ढेर में से यह एक टिकट अलग होते देख मुझे याद आ गया। मैंने उसे किराया बताया और एक टिकट निकाल लिया—यह अलग हुआ टिकट। लेकिन फिर वह नहीं जा सकी; पता नहीं, उसके पास पैसे कम पड़ गए या कुछ और। उसने अपनी घड़ी देखी और मुझसे पूछा कि गिरवी की दुकानें कितनी देर तक खुली रहती हैं। मैंने उसे बताया कि तब तक तो सब बंद हो चुकी थीं। फिर उसने अपने सारे पैसे काउंटर पर मेरी तरफ फेंक दिए और पूछा कि इससे वह कितनी दूर जा पाएगी। तो मैंने गिनकर उसे बताया, और उसने मुझसे कहा कि उसे उतनी दूर का टिकट दे दो।"

ब्लिस उसकी बातों पर गौर कर रहा था, काउंटर को इतनी मजबूती से पकड़े हुए था कि उसकी उंगलियों के जोड़ सफेद पड़ गए थे। "हाँ, लेकिन कहाँ?"

टिकट बेचने वाले की पलकें निराशा से झुक गईं। "यही तो परेशानी है," उसने अपने कॉलर को ठीक करते हुए कहा। "मुझे वह हिस्सा याद नहीं है। मुझे तो अब यह भी याद नहीं कि कुल रकम कितनी थी। अगर मुझे याद होता, तो मैं अनुमान लगाकर मंज़िल बता सकता था।"

“काश मुझे पता होता कि घर से निकलते समय उसके हैंडबैग में कितने पैसे थे,” ब्लिस ने उदास मन से सोचा, “तो हम दोनों मिलकर हिसाब-किताब कर लेते।” उसने पूछा, “तीन डॉलर? चार? पाँच?”

टिकट विक्रेता ने अचंभित होकर सिर हिलाया। "कोई फायदा नहीं, यह वापस नहीं आएगा। मैं पूरी रात, सप्ताह की हर रात इतने सारे हिसाब-किताब में उलझा रहता हूँ—"

ब्लिस दहलीज के सामने और नीचे झुक गई। "लेकिन क्या आप इस बात का रिकॉर्ड नहीं रखते कि आप किन-किन जगहों के टिकट बेचते हैं?"

"नहीं, बस रात भर की कुल कमाई, उसका अलग-अलग विवरण नहीं।"

उसकी हालत पहले जैसी ही खराब थी। "तो फिर आप मुझे निश्चित रूप से नहीं बता सकते कि वह उस रात बस में चढ़ी थी या नहीं?"

इसी बीच ब्लिस के पीछे अधीर लोगों की एक लंबी कतार लग गई थी और टिकट बेचने वाला बेचैन होने लगा था।

“नहीं। ड्राइवर को शायद वो याद हो। ज़रा सोचिए: वो ज़्यादा से ज़्यादा एक-दो मिनट के लिए ही मेरे सामने खड़ी हुई थी। अगर वो बस में चढ़ी भी थी, तो वो उसके पीछे एक-एक घंटे से लेकर चार घंटे तक बैठी

रही होगी। याद रखिए, मैं ये भी गारंटी नहीं दे सकता कि जिस पार्टी के बारे में मैंने अभी आपको बताया, आप उसी की बात कर रहे हैं। मेरे लिए तो ये बस एक धुंधली सी घटना है।"

"क्या मंगलवार रात को दौड़ लगाने वाला वही व्यक्ति अब तक वापस आ गया होगा?"

"हाँ, वो आज रात फिर बाहर जा रहा है।" टिकट बेचने वाले ने एक चार्ट देखा। "वहाँ जाओ और 27 नंबर का टिकट मांगो। अगला!"

नंबर 27 ने अपना कॉफी मग नीचे रखा, काउंटर स्टूल पर घूम गया और अपने प्रश्नकर्ता की ओर देखा।

"यारे, मैंने मंगलवार रात को अपस्टेट की यात्रा की।"

"क्या तुम एक खूबसूरत गोरी लड़की को, जिसने ग्रे जैकेट और स्कर्ट पहनी हुई थी, डेनबी तक ले गए थे?"

नंबर 27 ने उसकी तरफ देखना बंद कर दिया। उसका चेहरा उसी दिशा में था, लेकिन वह दूसरी चीजों को देख रहा था। "नहीं, मैंने नहीं देखा।"

"क्या वह सच में बस में थी?"

नंबर 27 की निगाहें उस व्यक्ति से हटकर दूसरी ओर टिकी हुई थीं, जिसे वह जवाब दे रहा था। "नहीं, वह नहीं थी।"

"तुम इतना टालमटोल क्यों कर रहे हो? तुम्हें देखकर ही मुझे पता चल रहा है कि तुम कुछ छुपा रहे हो।"

मैंने कहा, 'नहीं, मैंने नहीं किया।'

"सुनो। मैं उसका पति हूँ। मुझे जानना ही होगा। ये लो, बस मुझे बता दो, क्या तुम बताओगे? मुझे जानना ही है। ये बहुत भयानक एहसास है!"

ड्राइवर ने अकड़कर अपनी बेल्ट कसी। "मुझे अच्छी तनख्वाह मिलती है। दस डॉलर का नोट मुझे यह कहने पर मजबूर नहीं करेगा कि मैंने किसी को देखा, जबकि मैंने नहीं देखा। न ही बीस डॉलर, न ही सौ डॉलर। वह तो बहुत पुराना मामला है। इससे तो बस कंपनी में मेरी रेटिंग ही गिरेगी।" वह अपनी कुर्सी पर घूमा और फिर से अपना कॉफी मग उठाया। "मैं तो बस सड़क देखता हूँ," उसने अकड़कर कहा। "मुझे यह देखने की ज़रूरत नहीं है कि मेरे पीछे कौन बैठा है।"

"लेकिन जब भी आप गाड़ी रोकते हैं, तो आप यह देखे बिना नहीं रह सकते कि कौन उतरता है।"

इस बार 27 वें नंबर वाले ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके लिए इंटरव्यू खत्म हो चुका था। उसने एक सिक्का फेंका, अपनी टोपी का विज़र झटके से नीचे किया और अकड़ते हुए चला गया।

ब्लिस उदास होकर टर्मिनल से बाहर निकली, उसकी हालत पहले से भी बदतर थी। अब मामला पूरी तरह से उलझ गया था। टिकट बेचने वाले को हल्का-फुल्का अंदाज़ा था कि किसी लड़की ने रात में उसके पास मौजूद पैसों से टिकट खरीदा होगा, लेकिन उसे इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि वह स्माइल्स के हुलिए से मिलती-जुलती थी या नहीं। दूसरी तरफ, ड्राइवर ने साफ इनकार किया कि उसके साथ डेनबी या कहीं और तक भी उसके जैसी कोई लड़की नहीं गई थी। वह क्या सोचता? क्या वह चली गई थी, या नहीं गई थी?

चाहे वह आई हो या नहीं, यह स्पष्ट था कि वह कभी नहीं आई थी। उसके पास उसकी माँ की गवाही और उत्तर राज्य से आया उसका पत्र था, जो इस बात की पुष्टि करते थे। और उसकी अपनी माँ से बेहतर किसकी बात पर विश्वास किया जा सकता था?

क्या वो तब शहर में ही रुकी थी? पर उसने ऐसा भी नहीं किया था। वो स्माइल्स को बहुत अच्छी तरह जानता था। अगर वो मंगलवार की रात किसी होटल में रुक भी जाती, तो भी वो बुधवार सुबह तक उसके पास घर वापस आ जाती। उसकी चिड़चिड़ाहट तो उससे बहुत पहले ही गायब हो जाती। दूसरी बात, उसके पास एक सामान्य होटल में भी एक रात से ज़्यादा रुकने के लिए पैसे नहीं होते। घर से निकलने से पहले उसने अपने घर के खर्चे के ज़्यादातर पैसे ज़मीन पर फेंक दिए थे।

"मैं बस इतना ही कर सकता हूँ," उसने आशंका से सोचा, "कि मैं सभी होटलों का चक्कर लगाऊँ और पता लगाऊँ कि क्या मंगलवार रात को उनमें से किसी होटल में उसके जैसी कोई थी, भले ही वह अभी वहाँ न हो।"

उसने शहर के सारे होटल तो नहीं जाँचे, लेकिन उसने उन सभी होटलों की जाँच की जहाँ वह जाती, अगर वह कभी जाती। वह इतनी भोली तो नहीं होती कि माल ढुलाई कारखाने के पास किसी खस्ताहाल लॉज में या बंदरगाह के किनारे बने मजदूरों के किसी छोटे से होटल में चली जाती। इससे विकल्पों की संख्या कुछ हद तक कम हो गई।

उसने तीन तरीकों से उसकी जानकारी ली: पहले मंगलवार रात के होटल रजिस्टर में उसका नाम देखकर; फिर डेस्क क्लर्कों को दिए गए उसके विवरण से; और अंत में रजिस्टर में दर्ज सभी प्रविष्टियों से, चाहे उसमें कोई भी नाम लिखा हो। वह उसकी लिखावट पहचानता था, भले ही उसने किसी फर्जी नाम से पंजीकरण कराया हो।

उसे कुछ भी याद नहीं आया। मंगलवार की रात या उसके बाद से किसी भी समय, उसके जैसी दिखने वाली कोई भी महिला किसी भी होटल में नहीं आई थी। किसी ने भी उसका नाम नहीं बताया। किसी ने भी ऐसा नाम नहीं बताया जो उसके जैसा लिखता हो। अब क्या बचा था? वह और कहाँ जा सकती थी? दोस्त? उसके कोई दोस्त नहीं थे। न तो कोई करीबी, न ही कोई ऐसा दोस्त जिसे वह इतना जानती हो कि बिना बताए उनके घर जाकर रात बिता सके।

वह कहाँ थी? वह शहर में नहीं थी। वह गाँव में, डेनबी में भी नहीं थी। ऐसा लग रहा था मानो वह धरती से पूरी तरह गायब हो गई हो।

होटलों की जाँच पूरी करते-करते सुबह के दो बज चुके थे। उस रात बस मिलना अब मुमकिन नहीं था, वरना वो उसी वक्त खुद डेनबी चला जाता। उसने रात के कोहरे से बचने के लिए अपने कोट का कॉलर ऊपर किया और उदास मन से घर की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसने खुद को दिलासा देने की कोशिश की और कहा: "उसे कुछ नहीं हुआ है। वो कहीं छिपकर मुझे डराने की कोशिश कर रही है। वो ज़रूर आएगी, कतई नहीं।" लेकिन इससे कोई खास फ़ायदा नहीं हुआ। अब दो पूरे दिन और तीन रातें बीत चुकी थीं। शादी का

मतलब है दूसरे इंसान को जानना, ये समझना कि वो किसी भी स्थिति में क्या करेगा। उनकी शादी को सिर्फ़ छह हफ़्ते हुए थे, लेकिन आखिर उससे पहले वे करीब एक साल से साथ थे; अब तक वो उसे अच्छी तरह जान चुका था।

वह प्रतिशोधी नहीं थी। वह मन में कोई शिकायत नहीं पालती थी, चाहे वो काल्पनिक ही क्यों न हो। उसके द्वारा किए जाने वाले केवल दो ही संभावित काम थे। या तो वह गुस्से में उस बस में चढ़ जाती, उतरने से पहले ही उसका गुस्सा शांत हो जाता, लेकिन वह वहाँ दो दिन और रुक जाती। या अगर वह बस में नहीं चढ़ती, तो उसी रात बारह बजे तक नाराज़गी भरे लहजे में वापस आ जाती और कुछ इस तरह कहती: "तुम्हें शर्म आनी चाहिए कि तुमने अपनी पत्नी को आवारा की तरह सड़कों पर घूमने दिया!" या इसी तरह की कोई बात। उसने ऐसा नहीं किया था, इसलिए वह ज़रूर वहाँ गई होगी। तभी उसे उसकी माँ का पत्र याद आया, और उसे अच्छा भी लगा और डर भी लगा।

जब वह लौटा तो फोन बज रहा था। सामने का दरवाजा खोलने से पहले ही उसे आवाज सुनाई दे रही थी। जल्दी में उसने दरवाजा तोड़ने की कोशिश की। एक पल के लिए उसने सोचा—

लेकिन यह श्रीमती एल्डन थीं। उन्होंने कहा, “मैं सुबह दस बजे से ही आपसे संपर्क करने की कोशिश कर रही हूँ। आपकी कोई खबर नहीं मिली और मेरी चिंता बढ़ती जा रही है।” यह सुनकर उनका दिल बैठ गया। “क्या आपने उसे ढूंढ लिया? क्या सब ठीक है?”

“मुझे वह नहीं मिल रही,” उसने इतनी धीमी आवाज़ में कहा कि उसे दोबारा कहना पड़ा ताकि वह सुन सके।

अब तक वह तेज़ी से बोल रही थी। अब वह कुछ मिनटों तक चुप रही; तार पर बस एक खाली सी गूंज सुनाई दी। उनके बीच कुछ दूरियां आ गईं। उन्होंने कभी एक-दूसरे को आमने-सामने नहीं देखा था, लेकिन अगली बार जब उसने उसकी आवाज़ सुनी तो उसे उसकी आवाज़ में एक बदलाव महसूस हुआ, एक अलग ही स्वर। ऐसा लग रहा था जैसे वह उससे दूर जा रही हो। बेशक, वह जहां खड़ी थी वहीं खड़ी रही, लेकिन जैसे उसका आत्मविश्वास कम हो रहा हो। कहीं न कहीं उसमें शक की झलक ज़रूर थी।

“क्या आपको नहीं लगता कि अब पुलिस से संपर्क करने का सही समय आ गया है?” उसने उसे कहते सुना। और फिर, इतनी धीमी आवाज़ में कि वह मुश्किल से सुन पाया: “अगर आप नहीं करेंगी, तो मैं करूँगी।” क्लिक, और वह चली गई।

उन्होंने इसे उस तरह से नहीं लिया, जैसा शायद उन्हें लेना चाहिए था।

फोन रखते ही उसने सोचा, "हाँ, वह सही कह रही है, मुझे करना ही पड़ेगा। अब करने को कुछ बचा ही नहीं है। पूरे दो दिन हो गए हैं; अब खुद को बहलाने का कोई फायदा नहीं।"

उसने दोबारा टोपी और कोट पहना और घर से निकल पड़ा। तब तक लगभग तीन बज चुके थे। उसे उनके पास जाना बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था। ऐसा लग रहा था मानो वह सब कुछ खत्म कर रहा हो। ऐसा लग रहा था मानो सब कुछ अंतिम, दुखद हो गया हो। जैसे, एक बार उसने उन्हें सूचित कर दिया, तो

उसके अपनी मर्जी से, सुरक्षित वापस आने की सारी उम्मीदें खत्म हो गईं। जैसे, यह अब सिर्फ एक निजी, घरेलू मामला नहीं रहा, बल्कि पुलिस का मामला बन गया, उसके हाथ से बाहर। वह जानता था कि यह हास्यास्पद है, लेकिन उसे ऐसा ही महसूस हो रहा था। पर यह करना जरूरी था। सिर्फ बैठकर उसके बारे में चिंता करने से वह वापस नहीं आने वाली थी।

वह दो हरी दरवाज़ों की बत्तियों के बीच गया और एक डेस्क सार्जेंट से बात की। "मैं अपनी पत्नी के लापता होने की रिपोर्ट दर्ज कराना चाहता हूँ।" उन्होंने एक जासूस को उससे बात करने के लिए भेजा। फिर उसे शहर के मुर्दाघर जाना पड़ा, यह देखने के लिए कि क्या वह वहाँ अज्ञात शवों में शामिल है, और यह अब तक का उसका सबसे भयानक अनुभव था। यह एक-एक करके मृत चेहरों को देखना नहीं था; यह हर बार इस बात का डर था कि अगला चेहरा उसका होगा। हर बार जब वह अपना सिर हिलाता और किसी ऐसे व्यक्ति को देखता जिसे उसने कभी प्यार किया था, तो वह दबी आवाज़ में कहता, "नहीं, भगवान का शुक्र है।" वह वहाँ नहीं थी।

हालांकि वह उसे ढूंढ नहीं पाया था, लेकिन जब वह मृतकों के स्थान से निकला तो उसके मुंह से असीम राहत की एक गहरी आह निकली। वह मृत लोगों में नहीं थी; यही उसकी राहत का एकमात्र प्रतीक था। लेकिन वह जानता था, हालांकि उसने इस भयावह विचार को मन से निकालने की पूरी कोशिश की, कि ऐसे कई मृत लोग हैं जो कभी नहीं मिलते। कभी-कभी तुरंत नहीं, कभी-कभी कभी नहीं।

फिर वे उसे अस्पतालों के अलग-अलग वार्डों में ले गए, और हालाँकि यह जगह दूसरी जगह जितनी बुरी तो नहीं थी, लेकिन उससे कुछ बेहतर भी नहीं थी। उसने स्मृतिभ्रंश से पीड़ित लोगों, आत्महत्या का प्रयास करने वाले लेकिन अभी तक होश में न आए लोगों, चेहरे की सारी त्वचा जल जाने वाले लोगों, जिन्हें दयापूर्वक जालीदार पट्टियों और चाय की पत्तियों से लपेटा गया था, के बीच उसे ढूँढा। उन्होंने उसे शराबियों के वार्डों में भी देखने को कहा, हालाँकि उसने ज़ोरदार विरोध किया कि वह वहाँ नहीं होगी, और मनोरोगियों के वार्डों में भी।

इस दौरे के खत्म होने पर उसने जो राहत की सांस ली, वह मुर्दाघर से निकलने के बाद ली गई राहत से कहीं कम भावुक थी। वह मरी नहीं थी। उसे कोई चोट नहीं आई थी, न ही वह किसी भी तरह से मानसिक रूप से विक्षिप्त थी। और फिर भी उसका कोई पता नहीं चल पाया था।

फिर उन्होंने इसे गुमशुदा व्यक्तियों के विभाग को सौंप दिया, उसका विवरण प्रसारित करवाया और उसे बताया कि फिलहाल वह कुछ नहीं कर सकता सिवाय घर जाने के।

दूसरी बार लौटने पर उसने सोने की कोशिश तक नहीं की। बस वहीं बैठा इंतज़ार करता रहा—उस कॉल का जो नहीं आया और जिसके बारे में वह किसी तरह जानता था कि वह नहीं आएगा, चाहे वह एक हफ़्ता या एक महीना इंतज़ार कर ले।

तब तक उजाला होने लगा था। उसके शरीर को निगल लिए जाने के बाद तीसरा दिन शुरू हो रहा था। वह शहर में नहीं थी, न ज़िंदा और न ही मुर्दा, उसे पूरा यकीन था। जब उसे यकीन था कि वह यहाँ नहीं है, तो

यहाँ बैठकर उसके मिलने का इंतज़ार क्यों करे? उसने अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर ली थी। दूसरी तरफ उसने अभी तक कुछ नहीं किया था। मामला अब बहुत गंभीर हो गया था; सिर्फ़ टेलीफ़ोन पर किसी की आवाज़ पर भरोसा करना काफ़ी नहीं था कि वह ऊपर नहीं है। चाहे आवाज़ उसकी अपनी माँ की ही क्यों न हो, जिस पर सबसे ज़्यादा भरोसा किया जा सकता था, जो उसे उतना ही प्यार करती थी जितना वह खुद करता था। उसने फैसला किया कि वह खुद ऊपर जाएगा। यहाँ असहाय होकर बैठे रहने से तो कुछ भी बेहतर था।

वह सुबह की बस नहीं पकड़ सका, जैसा वह चाहता था। जिन बिल्डिंग प्लान को वह अंतिम रूप दे रहा था, उन्हें आज ही जमा करना था; एक महत्वपूर्ण ठेकेदार उनका इंतजार कर रहा था। वह चिंता और नींद की कमी के कारण लगभग बेजान सा उन ब्लूप्रिंट्स को ध्यान से देखता रहा, और जब आखिरकार वे पूरे हो गए, जमा कर दिए गए और मंजूरी मिल गई, तो वह सीधे ऑफिस से टर्मिनल गया और उस बस में बैठ गया जो अंधेरा होने तक वहाँ पहुँच जाएगी।

जब बस एक घंटा देरी से वहाँ पहुँची, तब उसे पता चला कि डेनबी एक निगमित गाँव भी नहीं था। यह बस एक ऐसी जगह थी जहाँ एक मुख्य सड़क दूसरी सड़क को काटती थी, और चौराहे की चारों भुजाओं पर घर दूर-दूर बने हुए थे। कुछ घर एक चौथाई मील की दूरी पर थे, और पेड़ों, सड़कों के मोड़ों, और ज़मीन के उतार-चढ़ाव के कारण कुछ ही घर एक-दूसरे से साफ़ दिखाई देते थे। चौराहे के एक तरफ़ सबसे नज़दीक एक पेट्रोल पंप था। दूसरी तरफ़ एक दुकान थी, जिसके ऊपर रहने के कमरे बने हुए थे। यह अब तक का सबसे बिखरा हुआ समुदाय था जो उसने देखा था।

उसने यूं ही एक दुकान चुन ली, वहां रुका और पूछा, "एल्डन का घर किधर है?"

दुकानदार उन लोगों में से एक लग रहा था जो चश्मा जानबूझकर इसलिए पहनते हैं ताकि उसके आर-पार देख सकें, न कि उसके आर-पार। या शायद उसका चश्मा नाक पर फिसल गया था। "दाहिनी ओर वाला दूसरा रास्ता लो," उसने हिदायत दी। "बस तब तक चलते रहो जब तक तुम्हें लगे कि अब कोई घर नहीं दिख रहा और तुम्हें यकीन हो जाए कि मैंने तुम्हें गलत रास्ता दिखाया है। फिर भी चलते रहो। जब तुम्हें बिल्कुल उम्मीद न हो, तभी मोड़ पर एक आखिरी घर दिख जाएगा। वही है उनका घर। उसे पहचानना मुश्किल नहीं है। उसके सामने बनी ईंटों की छोटी सी दीवार से। मुझे लगता है उसने हाल ही में अभ्यास के लिए बनवाई है।"

ब्लिस को समझ नहीं आया कि उसका मतलब क्या था, लेकिन उसने पूछने की ज़हमत नहीं उठाई। दुकानदार ज़ाहिर तौर पर उन बातूनी लोगों में से एक था जो ज़रा सी भी गुज़ारिश मिलने पर घंटों बोलता रहता, और ब्लिस थका हुआ था और अपनी मंज़िल पर पहुँचने के लिए बेचैन था। उसने उसे धन्यवाद दिया और चला गया।

बाहर निकलने का रास्ता कोई मामूली शहर के दो ब्लॉक की दूरी नहीं थी; यह एक अच्छी-खासी कठिन चढ़ाई थी। मखमली रात के आसमान के नीचे सड़क उसके सामने एक सफेद टेप की तरह फैली हुई थी,

आसमान का रंग काला नहीं बल्कि गहरा नीला था, और सड़क किनारे पेड़ों की शाखाओं के बीच से तारे टिमटिमा रहे थे। उसे अपने आसपास ग्रामीण इलाकों की रात की आवाजें सुनाई दे रही थीं, झींगुरों की आवाज या कुछ और, और एक बार दूर कहीं से एक कुत्ते के भौंकने की आवाज आई—ऐसा लगा जैसे मीलों दूर से आ रही हो। यह एकांत था, लेकिन विशेष रूप से डरावना नहीं था। प्रकृति शायद ही कभी डरावनी होती है; खतरा तो इंसान से ही पैदा होता है।

फिर भी, अगर वह यहाँ आई होती—और ज़ाहिर है कि वह नहीं आई थी—तो उसके जैसी अकेली युवती के लिए रात के उस समय इतनी दूरी पैदल चलना समझदारी भरा कदम नहीं होता। वह शायद दुकान या पेट्रोल पंप से फ़ोन करके चौराहे पर मिलने के लिए बुला लेती। और अगर तब तक दोनों बंद हो चुके होते—उसकी बस सुबह एक-दो बजे तक यहाँ से नहीं गुज़रती—तो उसे अकेले ही पैदल चलना पड़ता। लेकिन वह आई ही नहीं थी, तो फिर अतिरिक्त खतरे क्यों मोल लेना?

यही सोचते हुए वह सड़क के धीमे मोड़ पर मुड़ा और उसके बगल में एक नीची, कोहनी जितनी ऊँची चारदीवारी दिखाई दी जो सड़क के किनारे एक सुंदर, सफ़ेद रंग से रंगे दो मंजिला मकान के पास से गुज़रती थी, जिसके छज्जे गहरे रंग के थे, शायद हरे रंग के। ऐसा लगता था कि उन्होंने मकान को अच्छी हालत में रखा था। जहाँ तक दीवार की बात है, उसे देखकर उसे दुकानदार की टिप्पणी का असली मतलब समझ आ गया। ऐसा लग रहा था मानो एल्डन ने इसे महज़ समय बिताने, खुद को व्यस्त रखने और अपनी संपत्ति को एक शान देने के लिए बनवाया हो। क्योंकि इसका कोई उपयोगी उद्देश्य नहीं था। यह इतनी ऊँची नहीं थी कि नज़ारा रोक सके, इसलिए इसे निजता के लिए नहीं बनाया गया था। यह केवल भूखंड के सामने तक ही सीमित थी, किनारों या पीछे तक नहीं फैली थी, इसलिए यह मुर्गी या मवेशियों से बचाव के लिए भी कारगर नहीं थी, न ही सीमा चिन्ह के रूप में उपयोगी थी। यह पूरी तरह से सजावटी लग रही थी। वैसे, यह एक साफ-सुथरा, कारीगरी वाला काम था; देखकर पता चलता था कि एल्डन शादी से पहले राजमिस्त्री रहा होगा। यह ईंटों की बनी थी, जिस पर बड़े ही चिकने और मेहनत से प्लास्टर किया गया था।

वहाँ कोई फाटक नहीं था, बस एक खाली जगह थी, जिसके ऊपर एक सजावटी विलो की मेहराब बनी हुई थी। वह वहीं से अंदर मुड़ा। वे अभी तक जागे नहीं थे, हालाँकि शायद सोने की तैयारी में थे। ऊपरी मंजिल की एक खिड़की में रोशनी थी, लेकिन उस पर एक पर्दा बड़े सलीके से गिरा हुआ था।

उसने घंटी बजाई, फिर दरवाजे से पीछे हटकर ऊपर देखा, उसे उम्मीद थी कि इस समय खिड़की से ही उससे पूछताछ की जाएगी। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ; जाहिर है, उनमें साफ ज़मीर वाला भरोसा था। उसे अंदर की सीढ़ियों से नीचे उतरते कदमों की आहट सुनाई दी। एक महिला के कदमों की आहट थी, और एक आवाज़ जो आश्चर्यजनक रूप से स्पष्ट रूप से उस तक पहुंची, उसने कहा, "लगता है कोई रास्ता भटक गया है।"

दरवाजे के ऊपर लगी एक छोटी सी लालटेन अंदर से जल उठी, और कुछ ही पलों में उसकी नज़र एक सौम्य चेहरे वाली, अधेड़ उम्र की महिला पर पड़ी, जिसकी आँखें कोमल भूरी थीं। उसका चेहरा लंबा और

पतला था, लेकिन उसमें वो तीखेपन नहीं था जो अक्सर ऐसे चेहरे की बनावट में देखने को मिलता है। उसके बाल सुनहरे रंग के थे, लेकिन मुलायम और लहरदार थे, बिखरे हुए नहीं। उसे जानते हुए, उसे लगभग लगा कि उसके चेहरे में स्माइल्स की झलक है: भौंहों की बनावट और होंठों की गोलाई, लेकिन शायद यह सिर्फ उसका वहम था।

“हम्म-हम्म?” उसने शांत भाव से कहा।

“मैं एड हूँ, श्रीमती एल्डन।”

उसने दो बार पलकें झपकाईं, मानो उसे एक मिनट के लिए बात समझ ही नहीं आई हो। या शायद उसे इसकी उम्मीद ही नहीं थी।

“स्माइल्स के पति,” उसने थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा। अपने ससुराल वालों को तो जानना ही चाहिए। बेशक, इसमें उनकी कोई गलती नहीं थी कि वे उन्हें नहीं जानते थे। न ही इसमें उसकी कोई गलती थी। वह और स्माइल्स जल्द से जल्द यहाँ आने की सोच रहे थे, लेकिन अपने घर को व्यवस्थित करने में इतने व्यस्त थे कि छह सप्ताह का समय बहुत कम होता है। उनकी शादी के समय स्माइल्स की माँ एक लंबी बीमारी से उबर रही थीं, इसलिए आने-जाने की यात्रा के लिए उनकी सेहत ठीक नहीं थी।

उस क्षणिक सन्नाटे के बाद, उसके दोनों हाथ उसकी ओर बढ़े। "अरे, अंदर आओ, एड," उसने गर्मजोशी से कहा। "मैं तुमसे मिलने के लिए बेताब थी, लेकिन काश हालात कुछ और होते।" उसने उसके कंधे के पीछे देखा। "लगता है वो तुम्हारे साथ नहीं है। अभी तक कोई खबर नहीं मिली, एड?" उसने चिंता से पूछा।

उसने नीचे देखा और उदास होकर अपना सिर हिलाया।

वह अनैच्छिक रूप से निराशा में अपना हाथ मुंह पर रख बैठी, फिर जल्दी से खुद को संभाल लिया, मानो वह उसकी परेशानी को और बढ़ाना नहीं चाहती थी। "समझ नहीं आ रहा कि क्या सोचूं," उसने धीमी आवाज़ में कहा। "उसकी ऐसी हरकत करने की आदत नहीं है। क्या तुमने पुलिस को सूचना दी है, एड?"

“मैंने आज सुबह सूरज निकलने से पहले ही उन्हें इसकी सूचना दे दी थी। मुझे अलग-अलग अस्पतालों और जगहों पर जाना पड़ा।” यह याद करके उन्होंने गहरी सांस ली। “उफ़, यह बहुत भयानक था।”

“अभी हार मत मानो, एड। तुम्हें पता ही है ना, ‘कोई खबर न होना ही अच्छी खबर है’।” फिर: “मैं तुम्हें यहाँ बाहर खड़ा नहीं रखूँगा। जो ऊपर है; मैं उसे नीचे बुला लेता हूँ।”

जैसे ही वह उसके पीछे-पीछे अंदर गया, स्माइल्स की माँ के बारे में उसकी पहली ही धारणा यह थी कि वह उतनी ही अच्छी, नेक और स्वाभाविक महिला थीं जितनी कहीं भी मिल सकती हैं। और पहली छाप हमेशा आधी लड़ाई जीत लेती है।

वह उसे एक साफ-सुथरे, लकड़ी के फर्श वाले हॉल में ले गई, जिस पर शीशे की तरह चमकती हुई पॉलिश की गई थी। हॉल के पीछे एक उतनी ही बेदाग सफेद सीढ़ी ऊपर की मंजिल तक जाती थी।

“मुझे आपकी टोपी लेने दीजिए,” उसने सोच-विचार करते हुए कहा और उसे एक खूंटी पर टांग दिया। “आप थके हुए लग रहे हैं, एड; मैं समझ सकती हूँ कि आप पर इसका बहुत बुरा असर पड़ रहा है। ऊपर की

यात्रा भी बहुत कठिन थी। यह बहुत भयानक था; आप जानते हैं कि आप अखबारों में लगभग हर दिन ऐसी खबरें पढ़ते हैं, लेकिन जब यह आपके साथ होता है तभी आपको एहसास होता है—"

इस तरह बेतरतीब बातें करते-करते वह बैठक के प्रवेश द्वार तक पहुँच गई। उसने अपना हाथ दरवाजे के फ्रेम के अंदर डाला और बत्तियाँ जला दीं। जैसे ही उसने ऐसा किया, वह ठीक दरवाजे के बीचोंबीच खड़ा था। बत्तियाँ जिस तरह से जलीं, उसमें कुछ अप्रत्याशित सा था, पर वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या था; शायद यह उसके अवचेतन मन का ही प्रभाव था। हो सकता है कि बत्तियाँ उसकी उम्मीद से थोड़ी ज़्यादा तेज़ थीं, और अंधेरे से अंदर आने के बाद— कमरा ऐसा लग रहा था जैसे हाल ही में रंगा गया हो, और उसने शायद यही सोचा होगा: दीवारें और लकड़ी का काम अप्रत्याशित चमक बिखेर रहे थे। यह इतनी छोटी सी बात थी कि इस पर समय बर्बाद करने की ज़रूरत ही नहीं थी। या क्या कोई भी बात कभी इतनी छोटी होती है कि उसे नज़रअंदाज़ किया जा सके?

वह एक पल के लिए उससे अलग होकर सीढ़ियों के नीचे तक गई थी। "जो, स्माइल्स का पति यहाँ है," उसने उसे पुकारते हुए सुना।

एक गहरी, गड़गड़ाती आवाज ने जवाब दिया, "क्या वह उसके साथ है?"

उसने बड़ी चतुराई से इसका जवाब नहीं दिया, शायद ब्लिस की भावनाओं को ठेस न पहुँचाने के लिए; वह बहुत ही समझदार महिला लग रही थी। उसने बस इतना ही कहा, "नीचे आ जाओ, प्रिये।"

वह गठीला और मजबूत शरीर वाला आदमी था, जिसकी गर्दन चौड़ी थी और सिर के चारों ओर भूरे-सुनहरे बालों की एक छोटी सी गोलाकार लट थी, सिर का ऊपरी हिस्सा गंजा था। ब्लिस को लगा कि वह सीधे-सादे और आक्रामक स्वभाव का होगा। उसकी आँखें उसके स्वभाव के अनुरूप छोटी थीं। ऐसी आँखें जो कह रही थीं, "कोशिश करो और हमसे पार पाओ।"

"तो तुम हो ब्लिस।" उसने हाथ बढ़ाकर उससे हाथ मिलाया। हाथ मिलाते समय उसने ज़ोर से हाथ मिलाया, पर उसमें कोई दोस्ताना भाव नहीं था। उसके हाथ मगरमच्छ की खाल की तरह खुरदुरे हो गए थे। "लगता है तुम इसे काफी शांति से ले रहे हो।"

ब्लिस ने उसकी ओर देखा। "तुम यह कैसे कह सकते हो?"

"जो!" मां ने विरोध जताया, लेकिन इतनी धीमी आवाज में कि उन दोनों में से किसी ने भी उस पर ध्यान नहीं दिया।

"इस तरह यहाँ आना। क्या आपको नहीं लगता कि आपको वहीं नीचे रहकर कुछ अच्छा काम करना चाहिए, जहाँ आप कर सकते हैं?"

श्रीमती एल्डन ने ब्लिस के हाथ पर दिलासा भरा हाथ रखा। "चिंता मत करो, जो। तुम उसे देखकर ही समझ सकते हो कि वह कैसा महसूस कर रहा है। मैं स्माइल्स की माँ हूँ और मैं जानती हूँ कि कैसा लगता है; अगर उसने कहा कि वह यहाँ आ रही है, तो ज़ाहिर है—"

"मुझे पता है कि तुम टेरेसा की मां हो," उसने जोर देकर कहा, मानो उसे चुप कराना चाहता हो।

उनके सिर के ऊपर एक पल के लिए अजीब सी खामोशी छा गई। ब्लिस को एक मिनट के लिए अजीब सा "खो जाने" का एहसास हुआ, मानो कुछ उससे छूट गया हो, कुछ गड़बड़ हो गई हो। यह वैसा ही था जैसे कोई शब्द जिसे आप याद करने की बेताब कोशिश कर रहे हों; वह आपकी ज़बान पर हो, लेकिन आप उसे बोल न पा रहे हों। हालाँकि, यह बहुत छोटी सी बात थी—

“मैं तुम्हारे लिए कुछ खाने को लाती हूँ, एड,” उसने कहा, और जैसे ही वह कमरे से बाहर जाने के लिए मुड़ी, ब्लिस ने अनजाने में उसे अपने पति से दबी आवाज़ में कहते हुए सुना: “उससे बात करो। पता लगाओ कि असल में क्या हुआ था।”

एल्डन में उतनी ही कुशलता थी जितनी किसी प्रशिक्षित हाथी में, जो नौपिन के बीच गवोट नृत्य कर रहा हो। उसने संयम से गला साफ किया। "क्या तुमने कुछ ऐसा किया जो तुम्हें नहीं करना चाहिए था? और इसी वजह से ऐसा हुआ?"

"आपका क्या मतलब है?"

“वुल, हमें यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि तुम्हारा स्वभाव कैसा है। क्या तुम्हें बहुत जल्दी गुस्सा आता है, या तुम अपने हाथ की हथेली से कुछ ज्यादा ही जल्दी प्रतिक्रिया देते हो?”

ब्लिस ने अविश्वास भरी निगाहों से उसकी ओर देखा। फिर उसे बात समझ में आई। “मुझे इस तरह के आरोप का सामना करने की उम्मीद नहीं थी। लेकिन अगर यह मुझसे अपेक्षित है—तो मैं अपनी पत्नी की बहुत इज्जत करता हूँ। मैं अपनी दाहिनी भुजा को सूख जाने को प्राथमिकता दूँगा, लेकिन—”

“माफ़ करना,” एल्डन ने बेजान लहजे में कहा। “ऐसा पहले भी हो चुका है, बस इतना ही।”

"मेरे घर में नहीं," ब्लिस ने कहा और उसे एक कठोर नज़र से देखा।

इसी समय स्माइल्स की माँ एक ट्रे में कुछ लेकर फिर अंदर आईं। ब्लिस ने ऊपर देखने की ज़हमत भी नहीं उठाई कि उसमें क्या है। उसने उसे एक तरफ़ कर दिया और वहीं घुटनों पर हाथ लटकाए, सिर झुकाए, सीधे नीचे की ओर देखता हुआ बैठा रहा।

वह कमरा उसे अजीब सी झुंझलाहट दे रहा था। उसे यह झुंझलाहट हर पल महसूस होती थी, कम से कम जब भी वह सिर उठाकर इधर-उधर देखता, लेकिन वह समझ नहीं पा रहा था कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है। उसे सिर्फ एक बात का पूरा यकीन था: यह कमरे में मौजूद लोगों की वजह से नहीं था। तो शायद यही वजह थी कि यह सब उस कमरे की वजह से था। स्माइल्स की माँ शांत और सौम्य स्वभाव की थीं, जिनके आसपास रहना सुखद लगता था। और यहाँ तक कि पति भी, अपने रूखेपन के बावजूद, गंभीर और भावनाहीन स्वभाव के थे, जो किसी को परेशान नहीं करते थे।

तो फिर बात क्या थी? क्या कमरे का फर्नीचर भद्दा था? नहीं; वह आरामदायक और घर जैसा लग रहा था। और अगर ऐसा नहीं भी होता, तो भी बात नहीं बनती। वह कोई इंटीरियर डेकोरेटर नहीं था, उसे ऐसी चीजों से एलर्जी थी। क्या यह हाल ही में हुए पेंट की चमक थी? नहीं, वह भी नहीं; अब जब उसने ध्यान से

देखा, तो कोई चमक नहीं थी। वह चमकदार पेंट भी नहीं था; वह बिना हाइलाइट्स वाला फीका पेंट था। रोशनी जलने पर वह बस एक भ्रम था।

उसने अपना सिर थोड़ा हिलाकर उस विचार को मन से निकाल दिया और सोचा, "मुझे यहाँ क्या परेशान कर रहा है?" और वह इसका कारण नहीं बता सका।

वह अपनी लटकती उंगलियों के बीच एक जलती हुई सिगरेट पकड़े हुए था, और उस पर धीरे-धीरे राख जमा हो रही थी।

“जो, उसे एक ऐशट्रे दे दो,” उसने नम आवाज़ में कहा। वह बिना किसी शोर-शराबे के, चुपचाप रोने लगी थी, लेकिन फिर भी उसके पास अपने मेहमान के आराम के बारे में सोचने का समय था। कुछ औरतें ऐसी ही होती हैं।

उसने देखा तो राख का एक पूरा सिलेंडर कालीन पर गिर गया था। कालीन देखने में अच्छा लग रहा था। "मुझे खेद है," उसने कहा और अपने जूते से उसे साफ कर दिया। कालीन भी उसे किसी न किसी तरह से परेशान कर रहा था।

क्या पैटर्न बहुत भड़कीला था? नहीं, यह शांत, गहरे रंग का और सुरुचिपूर्ण था। उसे इसमें कोई खामी नहीं दिख रही थी। लेकिन फिर भी यह बात उसे परेशान कर रही थी।

किसी चीज से खनखनाहट की आवाज आई। यह उसी कमरे में नहीं थी जहां वे थे; घर के किसी दूसरे हिस्से में, हल्की और दबी हुई सी आवाज, जैसे किसी खराब पाइप का जोड़ बैठ रहा हो या फूल रहा हो।

उसने कहा, “जो, तुम उस पानी के पाइप को ठीक करने के लिए प्लंबर को कब बुलाओगे? वह फिर से अपनी जगह से हट गया है। तुम तब तक इंतज़ार करोगे जब तक हमारे यहाँ एक बड़ा सा रिसाव न हो जाए।”

“हाँ, बिल्कुल सही,” उसने कहा। यह किसी अनदेखी बात की याद दिलाने से ज़्यादा एक मौलिक खोज जैसा लग रहा था। ब्लिस इसका कारण नहीं बता सकता था, बस उसे ऐसा ही लगा। शायद यह उसके रहस्यवाद का ही एक हिस्सा था।

"मुझे एक नया रूमाल लाना पड़ेगा," उसने माफी मांगते हुए कहा, उठी और उन दोनों के बीच से वह रूमाल पास कर दिया जिसे वह अब तक इस्तेमाल कर रही थी, जो उसके ऊपरी होंठ पर एक छोटी सी गेंद की तरह सिकुड़ा हुआ था।

“आराम से रहो,” एल्डन ने दिलासा देते हुए कहा।

उसकी निगाहें ब्लिस पर पड़ीं, फिर वापस उसी पर, मानो कह रही हों: “क्या तुम देख रही हो कि वह भी मेरी तरह रो रही है?” तो ब्लिस ने गुजरते हुए उसके चेहरे पर एक नजर डाली, और वह सच में रो रही थी। उसे रोना ही चाहिए था; आखिर वह उस लड़की की माँ थी।

जब वह नया रूमाल लेकर वापस आई, तो वह उठ खड़ा हुआ।

“इससे वो वापस नहीं आएगी। मुझे फिर से शहर जाना चाहिए। शायद अब तक उन्हें मेरे बारे में खबर मिल गई हो।”

एल्डन ने कहा, "ब्लिस, क्या जाने से पहले मैं तुमसे एक मिनट अकेले बात कर सकता हूँ?"

वे तीनों हॉल में चले गए थे। श्रीमती एल्डन धीरे-धीरे सीढ़ियों पर चढ़ीं। जैसे-जैसे वह ऊपर जाती गईं, उनकी सिसकियाँ तेज़ होती गईं। अंत में, एक लंबी चीख फूट पड़ी, और एक दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ से वह चीख रुक गई। एक मिनट बाद, पलंग के स्प्रिंग ऐसे चटकने लगे मानो कोई उन पर पूरी लंबाई में गिर पड़ा हो।

“क्या तुमने सुना?” एल्डन ने उससे कहा। ब्लिस को उन अंतहीन बारीकियों में से एक और बात समझ में आई; उसने यह बात ऐसे कही थी मानो उसे इस पर गर्व हो।

ब्लिस दरवाजे पर खड़ा कमरे की ओर देख रहा था। उसे ऐसा लग रहा था मानो वह कमरे से बाहर निकलकर खुश हो। और उसे अभी भी समझ नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों, बाकी सब बातों की तरह ही।

"तुम मुझसे अकेले में क्या कहना चाहते थे?"

हमेशा की तरह बेबाक होकर एल्डन ने पूछा, "क्या आपने हमें सब कुछ बता दिया है, या आपने कुछ हिस्सा छोड़ दिया है? आखिर आपके और टेरेसा के बीच क्या हुआ था?"

"ऐसी ही एक कहासुनी।"

एल्डन की छोटी-छोटी आँखें और भी छोटी हो गईं; मानो वे उसके चेहरे पर सिकुड़ गईं। "ज़रूर कोई बड़ी कहासुनी हुई होगी, तभी तो वह अपना हाथ थामे तुम्हें छोड़कर चली गई। वह उस तरह की नहीं थी—"

“तुम्हें कैसे पता चला कि वह अपना हथियार अपने साथ ले गई थी? मैंने तुम्हें यह नहीं बताया था।”

“आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं थी। वह यहाँ आ ही रही थी, है ना? जब वे आपको छोड़कर जाते हैं तो हमेशा अपने साथ कुछ सामान ले जाते हैं।”

उनके दो वाक्यों के बीच इतना विराम नहीं था कि एक अल्पविराम भी लगाया जा सके। एक वाक्य दूसरे से सहजता से जुड़ा हुआ लग रहा था, बस बोलने वाले का अंतर था। एल्डन की आवाज़ थोड़ी तेज़ हो गई थी, बस इतना ही। उसने सामान्य गति से थोड़ा तेज़ बोला था। छोटी-छोटी बातें। धिक्कार है उन छोटी-छोटी बातों पर, जो उसे मच्छरों की तरह सता रही थीं, उन मच्छरों की तरह जिन्हें आप गिन भी नहीं सकते!

ब्लिस की आँखों के ठीक नीचे, एल्डन के माथे के किनारे पर लाल बालों के दो गुच्छों के बीच पसीने की एक बूँद बन रही थी। वह उसे रोमछिद्र से रिसते हुए देख सकता था। यह किस बात का असर था? क्या यह सिर्फ़ इस बात पर चर्चा करने का असर था कि उसकी बस उसे शहर वापस ले जाने के लिए किस समय आएगी, जैसा कि वे अभी कर रहे थे? नहीं, यह ज़रूर थोड़ी देर पहले उस वाक्य को जल्दी-जल्दी बोलने का असर होगा—वह वाक्य जिसमें पकड़ की बात थी। इसका असर अब दिखने लगा था।

“अच्छा,” ब्लिस ने कहा, “मुझे अब जल्दी करनी चाहिए, ताकि मैं वापस जाने वाली बस पकड़ सकूँ।”

ऊपर वाले कमरे का दरवाजा फिर से खुल गया था। यह महज एक संयोग हो सकता था, लेकिन ऐसा लग रहा था मानो वह सुन रही हो।

“जो,” उसने सीढ़ियों से नीचे आवाज़ लगाई। “एड को आज रात फिर से नीचे मत जाने देना। एक दिन में दो चक्कर बहुत ज़्यादा हैं; वो बहुत परेशान हो जाएगा। क्यों न उसे आज रात हमारे साथ ही रुकने दें, और वो सुबह जल्दी वाली यात्रा कर ले?”

ब्लिस ठीक उसके बगल में खड़ी थी। वह भी उतनी ही आसानी से उससे सीधे बात कर सकती थी। उसे अपने पति के माध्यम से ही यह बात बताने की क्या ज़रूरत थी?

“हाँ,” एल्डन ने उसकी ओर देखते हुए कहा, “मैं भी यही सोच रहा था।” लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उसने कहा हो: “मैं तुम्हारी बात समझता हूँ।”

ब्लिस को एक अजीब सी अनुभूति हुई कि वे दोनों उसकी आंखों के सामने ही एक-दूसरे से कुछ कह रहे थे, और उसे पता भी नहीं चल रहा था कि वे क्या कह रहे थे।

“नहीं,” उसने उदास स्वर में कहा, “मुझे उसकी चिंता है। जितनी जल्दी मैं वहाँ पहुँचकर मामले की तह तक पहुँच जाऊँगा, उतना ही अच्छा होगा—”

वह दरवाजे से बाहर चला गया, और एल्डन उसके पीछे-पीछे गया।

“मैं आपको बस स्टॉप तक छोड़ दूंगा,” उसने कहा।

“ज़रूरत नहीं,” ब्लिस ने उसे रूखेपन से कहा। आख़िरकार, इस दूसरे आदमी ने दो बार यह आरोप लगाने की कोशिश की थी कि उसने अपनी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार या बुरा बर्ताव किया है; उसे इस बात पर गुस्सा आना लाज़मी था। “मैं बिना किसी परेशानी के वापस आ जाऊँगा। आप शायद थक गए होंगे और सोना चाहते होंगे।”

“जैसा आप कहें,” एल्डन ने सहमति जताई।

विदाई के समय उन्होंने हाथ नहीं मिलाया। ब्लिस ने गौर किया कि दूसरे व्यक्ति ने हाथ मिलाने की पेशकश तक नहीं की। ब्लिस को इससे कोई आपत्ति नहीं थी।

सड़क पर कुछ कदम आगे बढ़ने के बाद, एल्डन ने उसे पीछे से आवाज़ दी, "जैसे ही तुम्हें कोई अच्छी खबर मिले, हमें तुरंत बताना; मैं नहीं चाहता कि मेरी पत्नी बेवजह परेशान हो। वह इस सदमे से उबर नहीं पा रही है।"

ब्लिस ने गौर किया कि उसने खुद को इसमें शामिल नहीं किया। हालाँकि, उसने इस बात को लेकर उसे दोषी नहीं ठहराया; आखिरकार, उनके बीच कोई खून का रिश्ता नहीं था।

एल्डन घर के अंदर वापस जाने के लिए मुड़ा, लेकिन जब ब्लिस ने कुछ मिनट बाद, घर को नज़र से ओझल करने वाले सड़क के मोड़ पर मुड़ने से ठीक पहले, पीछे मुड़कर देखा, तो उसे अभी भी दरवाजे से निकलती हुई रोशनी की एक पतली, ऊपर-नीचे जाती हुई पट्टी दिखाई दी, जिसमें एक जगह पर ऐसा अंतराल था मानो कोई उभरी हुई आकृति उसे ढक रही हो।

“यह पक्का करना चाहता है कि मैं सचमुच उस बस से जा रहा हूँ,” उसने मन ही मन कहा। लेकिन संदेह एक दोधारी तलवार है जो चलाने वाले के ही खिलाफ उतनी ही आसानी से पलट जाती है जितनी कि जिसके

खिलाफ चलाई जाती है। उसे केवल वही धार महसूस हुई जो उसकी ओर मुड़ी हुई थी, और वह भी बहुत अस्पष्ट रूप से।

वह चौराहे पर पहुँचा और अपनी जगह पर खड़ा हो गया। उसे अभी भी लगभग पाँच मिनट इंतज़ार करना था, लेकिन उसके पहुँचते ही दो पीले मटर के दाने जैसे दिखने वाले आकार, जो धीरे-धीरे बड़े-बड़े धुंधले गुब्बारों में बदल गए, उसकी ओर सड़क पर आते हुए दिखाई दिए। पहले तो उसे लगा कि यह बस है, जो अपने तय समय से आगे चल रही है, लेकिन बाद में पता चला कि यह क्यूबेक लाइसेंस वाली एक कूप कार थी। कार थोड़ी देर के लिए रुकी, जिससे उसमें बैठे व्यक्ति को बाहर झुककर पूछने का मौका मिला:

"क्या मैं शहर के लिए सही रास्ते पर हूँ?"

“हाँ, सीधे चलते रहो, तुम चूकोगे नहीं,” ब्लिस ने नीरस स्वर में कहा। फिर अचानक, एक आवेग में आकर, जिसका कारण वह बाद में समझ नहीं पाया, उसने अपनी आवाज़ ऊँची की और उसके पीछे से पुकारा, “अरे! क्या तुम मुझे अपने साथ लिफ्ट देना चाहोगे?”

"क्यों नहीं?" कैनेडियन ने सौहार्दपूर्वक कहा और ब्लिस को अपने पास आने का मौका देने के लिए अपनी गति धीमी कर दी।

ब्लिस ने दरवाजा खोला और अंदर चला गया। उसे अभी भी नहीं पता था कि किस बात ने उसका मन बदल दिया, शायद यह एक अस्पष्ट विचार था कि इस तरह की निजी कार से वह बस की तुलना में बेहतर समय में पहुंच सकता है।

ड्राइवर ने रास्ते में किसी से बात करने की खुशी जाहिर की, और ब्लिस ने संक्षेप में बताया कि वह बस का इंतजार कर रहा था, लेकिन इन कुछ शुरुआती बातों के अलावा उन्होंने ज्यादा बातचीत नहीं की। ब्लिस सोचना चाहता था। वह अपनी अभी-अभी समाप्त हुई यात्रा के बारे में अपने विचारों का विश्लेषण करना चाहता था।

किसी अजनबी के बगल में बैठे होने पर गहन चिंतन करना लगभग असंभव था, क्योंकि वह हर थोड़ी देर में किसी न किसी महत्वहीन टिप्पणी से उसके विचारों की श्रृंखला को बाधित कर सकता था, जिसका जवाब शिष्टाचार के नाम पर देना आवश्यक था। इसलिए वह बस इतना ही कर सकता था कि अपने विचारों को संकलित करे, उन्हें भविष्य में संदर्भ के लिए दस्तावेज़ के रूप में रख ले जब वह वास्तव में अकेला हो।

1. जब उसने पहली बार स्विच दबाया, तो बत्तियाँ अप्रत्याशित तरीके से जल उठीं।

2. वह कमरा उसे परेशान कर रहा था। वह उस तरह का कमरा नहीं था जिसमें आप सहज महसूस करते हैं। वह आरामदायक नहीं था।

3. जब उसने कहा, "मैं स्माइल्स की माँ हूँ," और उसने कहा, "मुझे पता है कि तुम टेरेसा की माँ हो," तो उस समय स्वर समन्वय में कुछ गड़बड़ी हुई थी।

4. निम्नलिखित स्थानों पर भी सूक्ष्म अंतर थे: जब एल्डन की निगाहें उसकी ओर गईं, मानो वह खुद को आश्वस्त करना चाहता हो कि ब्लिस ने देख लिया है कि वह कमरे में उनके साथ लगभग अनसुनी सी रो रही

थी। जब वह सिसकते हुए सीढ़ियों से ऊपर भागी और बिस्तर पर गिर पड़ी, और उसने कहा, "सुना तुमने?" और अंत में जब उसने नीचे से पुकारा और अपना रात्रिकालीन निमंत्रण ब्लिस के बजाय एल्डन को संबोधित किया, मानो शब्दों के सूखे छिलके को ब्लिस तक पहुँचाने से पहले उसमें कोई अमूर्त सार छिपा हो जिसे पहले निकालना आवश्यक हो।

इस समय, इससे पहले कि वह कुछ और सोच पाता, एक ज़ोरदार धमाका हुआ, एक लंबी, रेंगती हुई सरीसृप जैसी फुफकार सुनाई दी और एक टायर फट गया। वे लड़खड़ाते हुए सड़क के किनारे रुक गए।

"लगता है मैंने तुम्हारे लिए बदकिस्मती ला दी है," ब्लिस ने टिप्पणी की।

“नहीं,” उसके मेज़बान ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा, “यह चीज़ तो हफ़्तों से नौवीं ज़िंदगी जी रही है; मुझे तो बस इस बात पर हैरानी है कि यह इतने लंबे समय तक कैसे टिकी रही। मैंने आज सुबह थ्री रिवर्स से निकलने से पहले इसकी मरम्मत करवाई थी, सोचा था कि शायद इससे शहर तक पहुँच जाऊँ, लेकिन लगता है कुछ नहीं हुआ। खैर, मेरे पास एक अतिरिक्त गाड़ी है, और अब मुझे खुशी है कि मैंने तुम्हें भी साथ ले लिया; चार हाथ दो से बेहतर होते हैं।”

जिस सड़क पर यह हादसा हुआ था, वह बहुत ही खराब हालत में थी, ब्लिस ने अपना कोट उतारकर मदद के लिए नीचे झुकते हुए गौर किया; वह सड़क ध्यान देने की गुहार लगा रही थी, उस पर छोटे-छोटे नुकीले पत्थरों के टुकड़े बिखरे पड़े थे, जो या तो ठीक से कुचले नहीं गए थे या फिर हाल ही में हुई बारिश से अपनी जगह से हट गए थे। उसने सोचा कि शायद उस सड़क को इसलिए बंद नहीं किया गया था क्योंकि आस-पास कोई दूसरी सड़क नहीं थी जो वैकल्पिक मार्ग के रूप में काम कर सके।

उन्होंने अभी जैक निकाला भी नहीं था कि बस ने उन्हें ओवरटेक किया और उनसे आगे निकल गई, जिससे उनका सारा समय बर्बाद हो गया। फिर, काफी देर बाद, जब वे अपना काम खत्म करके हाथ धो चुके थे, तभी कोई दूसरी अनजान कार तेज़ी से गुज़री, इस बार इतनी तेज़ कि बस मानो अपनी जगह पर रुकी हुई थी। रुकी हुई कार के पास केवल कनाडाई ही नज़र आ रहा था, जब उसकी धूमकेतु जैसी तेज़ हेडलाइट्स चमकती हुई गुज़रीं। उस समय ब्लिस सड़क से थोड़ा दूर था। उसने अपना सिर घुमाकर उस कार को देखा, जो बवंडर की तरह उसके पीछे चल रही थी, और उसे आँखों से ओझल होने से ठीक पहले एक झलक मिली।

"वह आदमी इतनी तेज गति से इस तरह के भरे हुए हिस्से को पार करते हुए टायर पंचर होने की कगार पर है," कनाडाई व्यक्ति ने कहा।

"उसके पास कोई अतिरिक्त हथियार भी नहीं था," ब्लिस ने टिप्पणी की।

"ऐसा लग रहा था जैसे वह बस से आगे निकलने की कोशिश कर रहा हो।" यह महज़ तुलना के लिए कहा गया एक वाक्य था। हालाँकि, बाद में जब ब्लिस को यह बात याद आई, तो इसका अर्थ बदल गया।

वे गाड़ी में चढ़े और फिर से चल पड़े। बाकी का सफर बिना किसी घटना के बीत गया। आखिरी घंटे में, ब्लिस ने अपने साथी को गाड़ी चलाने की जिम्मेदारी सौंप दी और उसे थोड़ी देर झपकी लेने दी। उसने ब्लिस को बताया था कि वह सुबह से लगातार सफर कर रहा था।

शहर की सीमा पर पहुँचते ही ब्लिस ने उसे जगाया और कार वापस सौंप दी। कनाडाई नागरिक शहर के बीचोंबीच स्थित एक होटल की ओर जा रहा था, इसलिए ब्लिस ने उसे अपने रास्ते से भटकने नहीं दिया; इसके बजाय, वह होटल के सबसे नज़दीकी समानांतर बिंदु पर कार से उतर गया, उसे धन्यवाद दिया और पैदल ही आगे बढ़ गया।

उसके सामने एक अच्छी-खासी कठिन पैदल यात्रा थी, लेकिन उसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था—वह इतने लंबे समय से एक ही जगह पर सिकुड़कर बैठा था। वह अब भी पहले की तरह ही चीजों पर गहराई से विचार करना चाहता था, और उसने अनुभव से जान लिया था कि अकेले चलने से उसे बेहतर सोचने में मदद मिलती है।

लेकिन इस मामले में ऐसा नहीं हुआ। या तो वह पिछले कुछ दिनों की घटनाओं से बहुत थका हुआ था, या फिर उसके पास मौजूद चीज़ें इतनी अस्पष्ट और अनिश्चित थीं कि वह उन्हें ठीक से समझ नहीं पा रहा था। वह खुद से बार-बार पूछ रहा था, "ऊपर क्या गड़बड़ थी? मैं असंतुष्ट क्यों हूँ?" और लाख कोशिश करने पर भी उसे इसका जवाब नहीं मिल रहा था। अंत में वह सोचने लगा, "क्या सच में कुछ गड़बड़ थी, या यह सब मेरी कल्पना मात्र थी?" यह मानो परछाइयों से कुश्ती लड़ने जैसा था।

उसके चारों ओर की रात गहरे नीले मखमली रंग की थी, और जैसे ही वह अपने एकांत अर्ध-उपनगरीय इलाके के पास पहुँचा, वहाँ का सन्नाटा कम से कम डेनबी के सन्नाटे के बराबर था। कोई हलचल नहीं थी, यहाँ तक कि दूधवाला भी नहीं। वह फुटपाथ पर लगे पेड़ों की घनी पत्तियों वाली सुरंग के नीचे से धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा, जिसने उसे लगभग अदृश्य कर दिया था।

अपनी कार को वहीं छोड़कर, सीधे इस तरफ आने से वह अपने घर के पीछे से, उसके ठीक सामने वाली सड़क के बजाय, उसके पीछे वाली गली से होकर पहुँच गया। यह रास्ता वह आम तौर पर कभी नहीं अपनाता था, जैसे कि शहर से घर लौटते समय। उसके पीछे केवल खाली ज़मीनें थीं, इसलिए बगल वाले घर के पीछे से तिरछे होकर जाना, बाहर से पूरा चक्कर लगाने की बजाय, एक शॉर्टकट था। उसने आज भी यही किया, बिना कुछ सोचे-समझे, बस कुछ कदम बचाने के लिए।

जैसे ही वह बगल वाले घर के पीछे से, करीने से सँवारी हुई घास पर चुपचाप चलते हुए निकला, उसने अपनी ही खिड़की से एक पल के लिए चमकती हुई रोशनी देखी जो निश्चित रूप से एक टॉर्च की ही हो सकती थी। वह एकदम रुक गया। उसके मन में सबसे पहला ख्याल आया, चोर!

वह संभलकर एक-दो कदम आगे बढ़ा। फिर से एक चमक दिखाई दी, लेकिन इस बार दूसरी खिड़की से, जो सामने की ओर थी। वे स्पष्ट रूप से बाहर जा रहे थे, और बीच-बीच में रास्ता खोजने के लिए ही उस खिड़की का इस्तेमाल कर रहे थे। जैसे ही वे चुपके से बाहर निकलेंगे, वह उन्हें मुख्य द्वार पर रोक सकेगा।

दोनों घरों के बीच एक बाड़ थी, जो आगे से पीछे तक फैली हुई थी। वह अपने पड़ोसी के घर की तरफ, सिर और कंधे झुकाए, उस बाड़ के सहारे सरपट भागा, जब तक कि वह अपने घर के सामने वाले दरवाजे के ठीक सामने नहीं आ गया। वहाँ वह झुककर, बाड़ के आर-पार झाँकने लगा।

उन्होंने उसके दरवाजे के ठीक बाहर एक चौकीदार को तैनात कर रखा था। वह स्थिर आकृति को देख सकता था। और फिर, जैसे ही उसकी उंगलियां झाड़ियों को हटाने वाली थीं, ताकि वह उनमें से होकर अंदर घुस सके, स्थिर आकृति थोड़ी सी हिली, और धुंधली रोशनी उसकी छाती पर बने एक छोटे से उभार से टकराकर चमक उठी। उसी क्षण ब्लिस ने उसके चेहरे के ऊपर एक विज़र की रूपरेखा देखी। एक पुलिसवाला!

एक हाथ पीछे करके, ब्लिस अप्रत्याशित खुलासे से पूरी तरह से असंतुलित होकर अपनी एड़ियों पर पीछे की ओर झुक गया।

तभी उसका अपना दरवाज़ा खुला और दो आदमी एक के पीछे एक बाहर आए। उनके पास न तो विज़र थे और न ही उनकी छाती पर धातु की चमक। लेकिन पुलिसवाले ने मुड़कर अपनी लाठी उनकी ओर अर्ध-सलाम के अंदाज़ में उठाई; इसलिए, वे जो भी थे, चोर तो नहीं थे, हालाँकि उनमें से एक निश्चित रूप से घर से कुछ ले जा रहा था।

उन्होंने सावधानीपूर्वक अपने पीछे सामने का दरवाजा बंद कर दिया, यहाँ तक कि यह सुनिश्चित करने के लिए एक बार फिर कोशिश की कि वह अच्छी तरह से बंद हो गया है। जब वे सामने के छोटे से रास्ते से फुटपाथ की ओर बढ़ रहे थे, तब दबी हुई बातचीत की कुछ आवाज़ें उनकी ओर सुनाई दीं। वर्दीधारी व्यक्ति ने इसमें कोई हिस्सा नहीं लिया, केवल वे दो लोग शामिल थे जो अंदर थे।

"वो वाकई आकर्षक है," ब्लिस ने किसी को कहते सुना।

“हाँ, वो वाकई आकर्षक है, और उसे ये बात पता भी है। तुमने गौर किया होगा कि बस के आने पर वो उसमें नहीं था। मैं उसे पकड़ लूँगा और टेलीटाइप मशीन चालू कर दूँगा। तुम इस जगह पर केस दर्ज कर लो। फिर भी, हो सकता है वो बाद में फिर से चुपके से अंदर आने की कोशिश करे।”

ब्लिस वहाँ एड़ियों के बल बैठा हुआ था। अब वह आगे की ओर गिरा और हाथों के बल ज़मीन पर आ गया, मानो उसे गर्दन के पीछे किसी ने ज़ोरदार घूंसा मार दिया हो।

वहाँ बेसुध पड़ा, लगभग अचेत, वह अपना सिर बार-बार हिला रहा था, मानो उसे होश में लाने की कोशिश कर रहा हो। वे उसके पीछे पड़े थे; उन्हें लगा कि वह— इतना ही नहीं, उन्हें यह भी पता चल गया था कि वह किस बस से आने वाला है। इसका मतलब सिर्फ एक ही व्यक्ति हो सकता है, जो एल्डन।

उसे हैरानी नहीं हुई। वह तो उसके ऐसा करने की बात समझ भी सकता था; ऊपर बैठे लोगों को उसके गायब होने का तरीका ज़रूर संदिग्ध लगा होगा, और ब्लिस के पास भी इसका कोई ठोस स्पष्टीकरण नहीं था। अगर वह उनकी जगह होता, तो शायद उसे भी ऐसा ही लगता। लेकिन उसे एल्डन का चालाकी भरा तरीका बहुत बुरा लगा, उसके जाने का इंतज़ार करना और फिर जैसे ही उसने पीठ मोड़ी, उसे पकड़वा देना। जब वह वहीं ऊपर था, तो उसने उसे स्थानीय लोगों के हवाले क्यों नहीं करवाया? अब उसे लगा कि शायद यही उसके वहाँ रुकने के निमंत्रण का छिपा हुआ अर्थ था; ताकि एल्डन बाहर जाकर पुलिस को बुला ले, जब वह उनके घर में सो रहा हो। लेकिन यह योजना नाकाम रही क्योंकि उसने जाने की ज़िद कर दी थी।

इसी बीच, वह अपने सामने खड़े उन आदमियों को देखता रहा जो अब, बिना उसकी किसी गलती के, उसके कट्टर दुश्मन बन चुके थे। वे अलग हो गए। उनमें से एक, जिसके पीछे वर्दीधारी पुलिसकर्मी चल रहा था, घर से दूर गली में चलने लगा। दूसरा तिरछे दूसरी तरफ चला गया। वहाँ एक ऊँचे पेड़ की घनी छाया ने उसे निगल लिया, और वह उस पेड़ के दूसरी तरफ, जहाँ थोड़ी रोशनी थी, फिर कभी दिखाई नहीं दिया।

पूरी घटना में न के बराबर शोर था, मानो किसी के कदमों की आहट भी सुनाई दे रही हो। वे मानो किसी स्वप्नलोक में परछाइयों की तरह चल रहे थे। थोड़ी दूर गली में एक कार के इंजन की धीमी, अस्पष्ट सी आवाज़ सुनाई दी, जो दूर चली गई। यह आवाज़ उन तीनों में से दो के प्रस्थान का संकेत थी। ब्लिस की गर्दन के पिछले हिस्से से पसीने की एक बूंद धीरे-धीरे नीचे गिरी और उसके कॉलर पर रिस गई।

वह कुछ मिनट और वहीं झाड़ी के पीछे, चारों हाथों-पैरों के बल बैठा रहा। उसके पास बस एक ही रास्ता था - बाहर जाकर खुद को बेगुनाह साबित करने की कोशिश करना। उसके पास पीछे मुड़कर चुपके से भागने का कोई विकल्प नहीं था - हालाँकि उसके पीछे रास्ता खुला हुआ था। लेकिन साथ ही उसे एक भयानक पूर्वाभास भी हो रहा था कि खुद को बेगुनाह साबित करना इतना आसान नहीं होगा; कि एक बार जब वे उसे पकड़ लेंगे -

“पर मुझे करना ही होगा,” वह बार-बार खुद से कहता रहा। “उन्हें मेरी मदद करनी होगी, मेरे पीछे नहीं पड़ना होगा। वे यह नहीं कह सकते कि मैंने स्माइल्स के साथ ऐसा कुछ किया! शायद मैं उनमें से किसी एक को सबक सिखा सकूँ जो समझदार हो और मेरी बात सुने।”

इस बीच, वह दौड़ शुरू करने के संकेत का इंतज़ार करते हुए, ट्रैक रनर की तरह झुकी हुई मुद्रा में बैठा रहा। उसने धीरे-धीरे खुद को उठाया और झाड़ी के पीछे सीधा खड़ा हो गया। बिना एक कदम भी आगे बढ़े, सिर्फ़ इतना करने के लिए ही हिम्मत चाहिए थी। "चलो, शुरू करते हैं," उसने बुदबुदाया, अपनी बेल्ट कसी और मुँह में सिगरेट दबा ली। यह एक अजीब सी बेचैनी थी। वह जानता था कि नौ में से एक संभावना यह थी कि जैसे ही वह इस झाड़ी के पीछे से निकलकर सड़क के उस पार उस घने काले पेड़ की छाया की ओर बढ़ेगा, जो बीच में थोड़ा सा उभरा हुआ था, उसकी आज़ादी खत्म हो जाएगी। उसे खुद आज़ादी की कोई परवाह नहीं थी, लेकिन उसका पूरा मकसद, अब से उसका एकमात्र लक्ष्य, स्माइल्स को ढूँढना और पाना था। उसे डर था कि उसे खोने से उसका यह लक्ष्य अधूरा रह जाएगा। वह उसकी पत्नी थी; वह उसे खुद ढूँढना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि कोई और उसके लिए यह काम करे, चाहे वे पेशेवर हों या नहीं।

सड़क के आधे रास्ते में पहुँचकर उसने सिगरेट जलाई, लेकिन पेड़ की छाया टस से मस नहीं हुई। जासूस ने जाहिर तौर पर उसे अभी तक पहचाना नहीं था और घर की ओर जाते हुए दूसरी दिशा से आने वाले किसी व्यक्ति पर नजर रख रहा था।

ब्लिस ठीक उसके सामने रुक गया और बोला, "क्या आप मुझे ढूंढ रहे हैं? मैं एड ब्लिस हूं और मैं उधर रहता हूं।"

पेड़ के तने पर ऊपर-नीचे मंडराती परछाई अचानक अलग हो गई और एक आदमी में बदल गई। "तुम्हें कैसे पता चला कि कोई तुम्हें ढूंढ रहा है?" यह एक चुनौती थी, मानो यह अपने आप में अपराध स्वीकार करने जैसा हो।

ब्लिस ने कहा, "अंदर आओगे क्या? मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ।"

वे एक बार फिर सीमा पार कर गए। ब्लिस ने इस बार अपनी चाबी से उसके लिए दरवाजा खोला और बत्ती जला दी। वे बैठक कक्ष में चले गए। कई दिनों से सफाई न होने के कारण उसमें पहले से ही धूल जम रही थी।

उसने ब्लिस को अच्छी तरह से परखा। ब्लिस ने भी उसे उतनी ही अच्छी तरह से परखा। उसे इस काम में एक आदमी चाहिए था, जासूस नहीं।

जासूस ने पहले बात की और वही सवाल दोहराया जो उसने सड़क पर उससे पूछा था। "तुम्हें कैसे पता चला कि जब वह बस अंदर आएगी तो हम तुम्हारी तलाश कर रहे होंगे?"

“मैंने ऐसा नहीं किया। मैं बस संयोगवश लिफ्ट लेकर नीचे चला गया।”

"तुम्हारी पत्नी, ब्लिस, का क्या हुआ?"

"मुझें नहीं पता।"

"हमें लगता है कि आप ऐसा करते हैं।"

"काश तुम सही होते। लेकिन उस तरह से नहीं जिस तरह से तुम सोच रहे हो।"

"आप जो चाहें, उसकी परवाह मत कीजिए। क्या आप इसके लिए कोई दूसरा अच्छा शब्द जानते हैं? पश्चाताप।"

ब्लिस के चेहरे का लालिमा थोड़ी कम हो गई। "मुझे मुसीबत में डालने से पहले, बस मुझे कुछ मिनट शांति से आपसे बात करने दीजिए। मैं बस इतना ही चाहती हूँ।"

"मंगलवार रात जब वह यहां से निकली तो उसने क्या पहना हुआ था?"

ब्लिस एक मिनट के लिए झिझका। इसलिए नहीं कि वह नहीं जानता था—उसने उसके लापता होने की सूचना देते समय उसके पहनावे का वर्णन पहले ही कर दिया था—बल्कि इसलिए कि वह प्रश्न के पीछे छिपे एक गहरे अर्थ को महसूस कर सकता था।

जासूस ने हिचकिचाहट को टालमटोल का प्रयास समझा और आगे बोला, “अब, हर आदमी अपनी पत्नी के कपड़ों को अच्छी तरह जानता है। आपने उन सभी कपड़ों के लिए पैसे दिए हैं; आप जानते हैं कि उसके पास क्या-क्या था। बस मुझे बता दीजिए कि उसने क्या पहना था।”

इसमें कहीं न कहीं खतरा छिपा था। “उसने ग्रे रंग का सूट पहना हुआ था—जैकेट और स्कर्ट, आप जानते ही हैं। फिर एक गुलाबी रेशमी कमीज़। उसने अपना फर का टुकड़ा मेरी तरफ फेंक दिया, तो बस इतना ही पहनकर वह बाहर गई थी। एक टोपी, बेशक। उन अजीबोगरीब टोपियों में से एक।”

"सामान?"

“एक काला सूटकेस, जिस पर हल्के भूरे रंग की किनारी लगी है। ओह, लगभग टाइपराइटर के केस के आकार का।”

"क्या आप इस बात को लेकर आश्वस्त हैं?"

“बिल्कुल।”

जासूस ने अपने दांतों के बीच से एक तरह की बिना आवाज वाली सीटी बजाई।

“उफ़!” उसने कहा और ब्लिस की तरफ ऐसे देखा मानो उसे उस पर तरस आ रहा हो। “इस बार तो तुमने अपने लिए मुसीबत खड़ी कर ली है! मुझे तुमसे ये पूछने की ज़रूरत ही नहीं थी, क्योंकि हम भी तुम्हारी तरह जानते हैं कि उसने क्या पहना था।”

"कैसे?"

“क्योंकि आपने जिन चीज़ों का ज़िक्र किया, वे सभी हमें बीस मिनट से भी कम समय पहले इसी घर के नीचे वाले हिस्से में भट्टी में मिलीं। मेरा साथी उन्हें लेकर मुख्यालय गया है। और कोई आदमी अपनी पत्नी के कपड़ों के साथ ऐसा तब तक नहीं करता जब तक उसने अपनी पत्नी के साथ भी कुछ न किया हो। तुमने उसके साथ क्या किया है, ब्लिस?”

ब्लिस के लिए, वह दूसरा आदमी अब उसके साथ कमरे में था ही नहीं। उसके चारों ओर धुंधले डर का पर्दा छा गया था। "हे भगवान!" उसने धीमी, कर्कश आवाज़ में कहा। "उसके साथ कुछ हुआ है, किसी ने उसके साथ कुछ किया है!" और वह उछलकर कमरे से इतनी तेज़ी से भागा कि अगर उसका मकसद भागना होता, तो वह लगभग उस दूसरे आदमी से बच ही जाता। लेकिन इसके बजाय, वह तहखाने के दरवाजे की ओर बढ़ा और सीढ़ियों से नीचे उतर गया। जासूस उसके पीछे-पीछे उठा और जब तक वह नीचे पहुँचा, तब तक वह उसके ठीक पीछे था। ब्लिस ने बत्ती जलाई और भट्टी की जाली को देखा, जो खाली खुली हुई थी —मानो उससे उसे कुछ और पता चल सकता हो।

उसने हताशा से जासूस की ओर मुड़कर पूछा, "क्या उन पर खून के निशान थे?"

"क्या ऐसा होना चाहिए था?"

“नहीं! रहम करो,” ब्लिस ने रुंधे हुए स्वर में विनती की और अपनी आँखों पर हाथ रख लिया। “इन्हें वहाँ किसने रखा? इन्हें वापस यहाँ क्यों लाए? जब मैं बाहर था तो ये अंदर कैसे आ गए?”

मुख्यालय के आदमी ने रूखेपन से कहा, "बस करो। मान लो अगर हमने शुरू कर दिया, तो हमारे लोग तुम्हें हर जगह ढूंढेंगे, और इससे उन्हें बहुत सारी परेशानी से छुटकारा मिल जाएगा।"

तहखाने की सीढ़ियों से वापस ऊपर आते समय, हर कुछ कदम पर ब्लिस रुक जाता था, मानो वह दौड़कर नीचे आया हो और उसे फिर से ऊर्जा की ज़रूरत हो। जासूस उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता, सख्ती से नहीं, बस एक तरह से याद दिलाने के लिए कि वह चलता रहे।

“उन्होंने उन्हें वहाँ क्यों रखा?” उसने पूछा। “वहाँ जो चीज़ें डाली जाती हैं, वे ईंधन के लिए होती हैं। आप इसीलिए तो वापस आए हैं, ताकि उन्हें पूरी तरह जला सकें, है ना? साल के इस समय दिन में आग जलाना बिना ध्यान आकर्षित किए संभव नहीं है।”

“सुनो। हमारी शादी को सिर्फ छह हफ्ते ही हुए थे।”

इससे क्या साबित होता है? क्या आपको लगता है कि ऐसे लोग नहीं रहे हैं जिन्होंने शादी के छह दिन बाद या छह घंटे बाद ही अपनी पत्नियों को छोड़ दिया हो?

लेकिन वे तो दुष्ट आत्माएं हैं—राक्षस हैं। मैं उनमें से एक नहीं हो सकता!

और निर्मम जवाब था: “हमें कैसे पता चलेगा? हम बाहर से देखकर यह नहीं बता सकते कि आप अंदर से कैसे हैं। हम एक्स-रे मशीन नहीं हैं।”

अब तक वे वापस मुख्य मंजिल पर आ चुके थे।

“क्या उसका बीमा था?” जासूस ने सवाल किया।

"हाँ।"

तुम तो सब कुछ बता देते हो, है ना?

“क्योंकि छिपाने जैसा कुछ नहीं था। मैंने सिर्फ उसका ही नहीं, हम दोनों का बीमा कराया था। मैंने हम दोनों के लिए एक-एक पॉलिसी ली थी। हम दोनों एक-दूसरे के लाभार्थी थे। वह यही चाहती थी।”

"लेकिन तुम यहाँ हो और वह नहीं है," जासूस ने निर्दयता से कहा।

वे भोजन कक्ष के प्रवेश द्वार से गुज़रे। शायद उस रात के बचे हुए बर्तनों ने उसे विचलित कर दिया था। वह फिर उसके सामने आई, उसकी मुस्कुराती हुई झुर्रीदार आँखें थीं। उसने देखा कि वह एक नैपकिन से ढकी हुई प्लेट लेकर आ रही है। "यहाँ बैठ जाइए, महोदय, और इधर-उधर मत देखिए। आपके लिए एक सरप्राइज है।"

बस, यही उसके लिए बहुत बुरा था। यह उसके लिए बहुत बड़ा झटका था। उसने कहा, "मुझे थोड़ी देर के लिए अकेला छोड़ दो।" और वह अपना हाथ चेहरे पर रखकर दीवार से टिक गया।

जब आखिरकार वह इससे उबर पाया, और इसमें उसे काफी समय लगा, तो जासूस में एक तरह का बदलाव आ गया था। उसने भावहीनता से कहा, "एक मिनट बैठ जाओ। गहरी सांस लो और खुद को संभालो।" उसकी आवाज़ में ऐसा नहीं लग रहा था कि वह सच में ऐसा कह रहा हो, यह तो बस एक बहाना था।

उसने सिगरेट जलाई और फिर उसका पैकेट ब्लिस की ओर फेंक दिया। ब्लिस ने उसे बिना ध्यान दिए अपनी जांघ से फिसलने दिया।

जासूस ने कहा, “मैं पिछले आठ सालों से एक जासूस की तरह व्यवहार कर रहा हूँ, और मैंने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देखा जो तुम्हारे जैसे जादू का नाटक कर सके और उसे इतना विश्वसनीय बना सके।” वह रुका, फिर बोला, “मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि आज रात घर में जो कुछ मिला है, उसके बाद एक बार

अंदर जाने पर तुम वहीं रहोगे। और हाँ, तुम अपनी मर्जी से मेरे पास बाहर आए थे, लेकिन बेशक यह आत्मरक्षा के लिए भी हो सकता था। इसलिए मैं तब तक सुन रहा हूँ जब तक मैं यह सिगरेट खत्म नहीं कर लेता। जब तक मैं सिगरेट खत्म करूँ, अगर तुम मुझे कुछ ऐसा नहीं बता पाए जिससे हालात बदल जाएँ, तो हम चले जाएँगे।" और उसने एक कश लिया और इंतज़ार करने लगा।

"मैं आपको कुछ भी ऐसा नहीं बता सकता जो मैंने आपको पहले न बताया हो। वह मंगलवार रात खाने के समय यहाँ से चली गई। उसने कहा कि वह अपनी माँ के घर जा रही है। वह वहाँ कभी नहीं पहुँची। मैंने उसे तब से नहीं देखा है। अब आप लोग वो चीजें ढूँढ़िए जो मैंने उसे छोड़ते हुए देखी थीं, तहखाने में भट्टी में ठूँसी हुई।" उसने अपनी नाक के ऊपरी हिस्से को दबाया और दबाए रखा।

जासूस ने सिगरेट का एक और कश लिया। "आप मुर्दाघर और अस्पतालों में जा चुके हैं। तो उसका कोई हादसा नहीं हुआ था। उसका सामान वापस यहीं है। इसलिए यह महज़ गुमशुदगी, स्मृतिभ्रंश या ऐसा कुछ नहीं है। इसका मतलब है कि उसके साथ जो कुछ भी हुआ, वह उसकी मर्ज़ी के खिलाफ हुआ। चूंकि हमने हादसे, आत्महत्या, स्वेच्छा से या अनैच्छिक रूप से गुमशुदगी की संभावना को खारिज कर दिया है, तो इससे हत्या की आशंका बनती है।"

"नहीं!" ब्लिस ने कहा।

"यह करना ही होगा।" जासूस ने एक और कश लिया। "चलिए मकसद की बात करते हैं। आपके पास पहले से ही एक मकसद है, और वह भी बहुत बढ़िया। अगर आप इसे बेअसर करना चाहते हैं, तो आपको किसी और की तरफ से ऐसा मकसद ढूंढना होगा जो आपके मकसद से ज़्यादा मज़बूत हो।"

"कौन उसे चोट पहुँचाना चाहेगा? वह इतनी प्यारी थी, इतनी खूबसूरत थी—"

"कभी-कभी किसी लड़की का बहुत सुंदर या आकर्षक होना खतरनाक हो सकता है। यह किसी पुरुष को पागल कर देता है; उस पुरुष को जो उसे पा नहीं सकता। क्या ऐसी कोई लड़की थी?"

"अब तुम स्माइल्स के बारे में बात कर रहे हो," ब्लिस ने गुस्से से गुर्राते हुए अपनी मुट्ठी कस ली।

"मैं एक मामले की बात कर रहा हूँ। हत्या के संदेह का मामला। और हमारे लिए मामले न तो सुंदर होते हैं, न ही बदसूरत, वे बस दंडनीय होते हैं।" उसने फिर से गहरी साँस ली। "क्या उसने तुमसे शादी करने के लिए किसी और को ठुकराया था?"

ब्लिस ने सिर हिलाया। "उसने एक बार मुझसे कहा था कि मैं वह पहला लड़का था जिसके साथ वह कभी संबंध बनाने गई थी।"

जासूस ने अपनी सिगरेट का एक और कश लिया। उसने सिगरेट को देखा, अपनी उंगलियों को थोड़ा पीछे किया, फिर ब्लिस की ओर देखा। "मैं इतनी देर तक सिगरेट नहीं पीता," उसने उसे चेतावनी देते हुए कहा। "मैं तुम्हें छूट दे रहा हूँ। इसमें एक कश और बचा है। क्या तुम्हारे अलावा, उसकी मौत से किसी और को आर्थिक रूप से कोई फायदा होने वाला है?"

"मैं किसी को नहीं जानता।"

जासूस ने आखिरी कश लिया, सिगरेट का प्याला गिराया और ज़ोर से साँस छोड़ी। "चलो चलते हैं," उसने कहा। उसने अपने कोट के नीचे हाथ डाला और हथकड़ी निकाली। "वैसे, उसका असली नाम क्या था? मुझे तुम्हें लाने से पहले यह जानना ज़रूरी है।"

टेरेसा।

"स्माइल्स तो बस तुम्हारा उसे प्यार से बुलाने वाला नाम था, है ना?" जासूस मानो यूं ही बेमतलब बातें कर रहा था, ताकि स्थिति को थोड़ा हल्का कर सके और ब्लिस का ध्यान हथकड़ियों से हटा सके।

“हां,” ब्लिस ने बिना कहे अपनी कलाई आगे बढ़ाते हुए कहा। “मैंने ही सबसे पहले उसे इस नाम से पुकारा था। उसे टेरेसा कहलाना कभी पसंद नहीं था। उसकी मां ही हमेशा उसे इसी नाम से पुकारती थी।”

उसने झटके से अपनी कलाई वापस अंदर खींच ली।

"अरे, ज्यादा नखरे मत दिखाओ," जासूस गुर्राया और उसकी तरफ हाथ बढ़ाया।

“एक मिनट रुको,” ब्लिस ने उत्तेजित होकर कहा और अपना हाथ पीठ पीछे कर लिया। “कुछ बातें मुझे परेशान कर रही हैं। अभी-अभी तुम उनमें से एक वापस लाए। मैं उसे लगभग पा ही चुका था। मुझे देखने दो, इससे पहले कि मैं उसे फिर से खो दूं। मुझे वह पत्र देखने दो जो उसकी माँ ने उसे कल भेजा था। वह मेरी जेब में ही है।”

उसने उसे लिफाफे से बाहर निकाला। "मुस्कुराओ, प्रिय," यह वाक्य शुरू हुआ।

उसने मुंह खोला और दूसरे आदमी की तरफ देखा। “यह तो अजीब बात है। उसकी माँ उसे टेरेसा के अलावा किसी और नाम से नहीं बुलाती थी। मुझे पता है मैं सही कह रहा हूँ। भला वो ऐसा कैसे कर सकती थी? यह तो मेरा उपनाम था। और मैंने उसे कल रात तक देखा ही नहीं था और—और स्माइल्स तो हमारी शादी के बाद से घर ही नहीं आई थी।”

इस बीच, जासूस लगातार उसके दूसरे हाथ को पकड़ने की कोशिश कर रहा था—वह अपने बाएं हाथ में पत्र पकड़े हुए था—और उसे अपने सामने लाने की कोशिश कर रहा था।

“एक मिनट रुकिए, एक मिनट रुकिए,” ब्लिस ने विनती की। “मुझे अभी-अभी कुछ अजीब सा महसूस हो रहा है। बातचीत में जैसे कोई रुकावट आ गई, जैसे कोई खालीपन छा गया हो। उसने कहा, ‘मैं स्माइल्स की माँ हूँ,’ और उसने कहा, ‘आप टेरेसा की माँ हैं,’ मानो वह उसे याद दिला रहा हो कि वह हमेशा स्माइल्स को क्या कहकर बुलाती थी। उसे उसे यह याद दिलाने की क्या ज़रूरत थी कि वह खुद स्माइल्स को क्या कहकर बुलाती थी?”

“और इससे आप शक से मुक्त हो जाते हैं, सिर्फ इसलिए कि उसकी माँ ने लगातार दो-तीन दिन फोन पर आपसे बात करने के बाद आपकी पत्नी के लिए आपका उपनाम इस्तेमाल करना शुरू कर दिया? ऐसा तो कोई भी कर सकता है। उसने ऐसा सिर्फ आपको खुश करने के लिए किया। क्या आपने पहले कभी लोगों को ऐसा करते नहीं सुना? उपनाम इसी तरह फैलते हैं।”

लेकिन उसने समय से पहले ही इसे जान लिया था, इससे पहले कि वह मुझे पुकारती। इस पत्र के शीर्षक से यह स्पष्ट है। जब उसने यह पत्र भेजा था, तब उसे पता नहीं था कि स्माइल्स गायब हो चुकी है। इसलिए उसने मुझसे अभी तक बात नहीं की थी।

"तो फिर, उसे यह जानकारी पति से मिली होगी, या फिर आपकी पत्नी द्वारा घर भेजे गए पत्रों से।"

“लेकिन उसने पहले कभी इसका इस्तेमाल नहीं किया था; उसे अब तक यह नाम नापसंद था। उसने 'स्माइल्स' लिखा और खुलकर कहा कि यह किसी गायन मंडली की लड़की के उपनाम जैसा लगता है। मैं तुम्हें साबित कर सकता हूँ। मैं तुम्हें दिखा सकता हूँ। एक मिनट रुको, तुम्हारा जो भी नाम हो। क्या तुम मुझे उसकी कोई और चिट्ठी ढूंढने दोगी, ताकि मैं खुद को यकीन दिला सकूँ?”

मेरा नाम स्टिलमैन है, और इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। अब, चलो ब्लिस; मैंने अब तक तुम्हारे साथ निष्पक्ष रहने की कोशिश की है—"

“कोई भी बात इतनी छोटी नहीं होती कि महत्वपूर्ण न हो। तुम एक जासूस हो; क्या मुझे तुम्हें यह बताने की ज़रूरत है? जीवन में छोटी-छोटी बातें ही मायने रखती हैं, बड़ी बातें नहीं। छोटी बातें ही बड़ी बातों को पूरा करती हैं। वह अचानक उसे उस उपनाम से क्यों बुला रही है जिसका उसने पहले कभी इस्तेमाल नहीं किया और जिसे वह नापसंद करती है? रुको, मैं तुम्हें दिखाती हूँ। ऊपर कहीं उसका कोई पुराना पत्र ज़रूर होगा, किसी दराज में पड़ा होगा। मुझे ऊपर जाकर उसे ढूंढने दो। बस एक मिनट लगेगा।”

स्टिलमैन उसके साथ ऊपर गया, लेकिन ब्लिस समझ गया था कि स्टिलमैन धीरे-धीरे उससे चिढ़ रहा है। उसका रवैया पूरी तरह से नहीं बदला था, लेकिन बदल रहा था। "तुम्हारे सारे टालमटोल अब खत्म हो चुके हैं," उसने दबी आवाज़ में कहा। "अगर तुम्हें यहाँ से ले जाने के लिए मुझे तुम पर सख्ती करनी पड़ी, तो मैं वो भी कर सकता हूँ।"

इस बीच, ब्लिस तनाव में सिर झुकाए अपनी पत्नी की दराजों में सामान ढूंढ रहा था, यह जानते हुए कि उसे अपने अपहरणकर्ता के बदलते मिजाज से पहले ही कुछ करना होगा, क्योंकि तीस सेकंड के भीतर ही वह शांत स्वभाव का जासूस उसे कॉलर से पकड़कर फर्श पर पटक देगा और उसे घसीटते हुए कमरे से बाहर ले जाएगा।

आखिरकार, जब उसने लगभग सारी उम्मीदें छोड़ दी थीं, तब उसे एक पत्र मिल ही गया। वही हल्के नीले रंग की स्याही, वही कागज़। वे बहुत नियमित रूप से पत्र-व्यवहार नहीं करते थे, लेकिन नियमित रूप से, लगभग हर महीने एक बार, पत्र-व्यवहार करते थे।

“लो,” उसने राहत भरी आवाज़ में कहा, “लो, देखो?” और उसने उसे अलमारी के ऊपर फैला दिया। फिर उसने अपनी जेब से एक और पर्ची निकालकर उसके बगल में रख दी, तुलना करने के लिए। “देखो? ‘प्रिय टेरेसा।’ मैंने क्या कहा था—”

उसने इसे कभी पूरा नहीं किया। दोनों ने इसे एक साथ देख लिया। जिस तरह से उसने दोनों पत्रों को एक साथ सटाकर रखा था, उसे नज़रअंदाज़ करना मुश्किल था। ब्लिस ने जासूस की तरफ देखा, फिर वापस ड्रेसर की तरफ।

स्टिलमैन ने सबसे पहले इसे शब्दों में व्यक्त किया। उनके चेहरे पर अचानक एकाग्रता का भाव आ गया। उन्होंने ब्लिस को थोड़ा सा धक्का देकर एक तरफ कर दिया ताकि वे उसे बेहतर ढंग से देख सकें। उन्होंने धीरे से कहा, "देखो, क्या तुम उसके लेखन के कुछ और नमूने ढूंढ सकते हो? मैं विशेषज्ञ तो नहीं हूँ, लेकिन अगर मेरा अनुमान गलत नहीं है, तो ये दोनों पत्र एक ही व्यक्ति द्वारा नहीं लिखे गए हैं।"

ब्लिस को दोबारा कहने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वह स्माइल्स की हर चीज़ को, जो उसके हाथ लग रही थी, बेतहाशा खंगाल रहा था - उसकी सारी यादगार चीज़ें, स्मृति चिन्ह, जमा की हुई सारी वस्तुएँ - और उन्हें इधर-उधर बिखेर रहा था। वह जितनी अचानक शुरू हुआ था, उतनी ही अचानक रुक भी गया, और स्टिलमैन ने उसे वहाँ खड़े होकर उन छोटी-छोटी चीज़ों के बक्सों में से एक में रखी किसी चीज़ को टकटकी लगाकर देखते हुए देखा, जिन्हें वह खंगाल रहा था।

“क्या बात है? क्या तुम्हें कुछ और मिला?”

ब्लिस डरा हुआ लग रहा था। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। "नहीं, लिखना नहीं," उसने दबी हुई आवाज़ में कहा। "कुछ और भी— देखो।"

जासूस ने अपनी ठुड्डी कंधे पर टिकाते हुए पूछा, "ये कौन हैं?"

“यह स्पष्ट रूप से उसकी और उसकी माँ की एक तस्वीर है, जो तब ली गई थी जब वह एक लड़की थी और समुद्र तट पर ली गई थी। मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा, लेकिन—”

“आपको कैसे पता कि यह उसकी माँ है? यह कोई और महिला भी हो सकती है, परिवार की कोई दोस्त।”

ब्लिस ने बोलते-बोलते ही उसे पलट दिया था। पीछे की तरफ, स्कूली छात्रा जैसी लिखावट में लिखा था: माँ और मैं, सी क्रेस्ट में, 19—

ब्लिस ने इसे फिर से पलट दिया, दाहिनी ओर आगे की तरफ।

“तो फिर तुम इतना डर क्यों रहे हो?” स्टिलमैन ने अधीरता से पूछा। “ऐसा लग रहा है जैसे तुमने कोई भूत देख लिया हो।”

"क्योंकि तस्वीर में दिख रही यह महिला वह महिला नहीं है जिससे मैंने आज रात डेनबी में उसकी मां के रूप में बात की थी!"

“अब ज़रा रुकिए; ज़रा सब्र रखिए। आप खुद मानते हैं कि आपने आज रात से पहले उसे कभी नहीं देखा था; आठ साल तो आठ साल ही होते हैं। इस तस्वीर में वह स्विमिंग सूट पहने हुए है। हो सकता है उसने तब से अपने बाल रंगवा लिए हों या ब्लीच करवा लिए हों, या हो सकता है उसके बाल सफ़ेद हो गए हों।”

“इसका इससे कोई लेना-देना नहीं है! मैं उसके बालों या कपड़ों को नहीं देख रहा हूँ। उसके चेहरे की बनावट ही अलग है। हड्डियों की संरचना अलग है। चेहरे के हाव-भाव अलग हैं। इस महिला का चेहरा चौड़ा और गोल है। डेनबी वाली महिला का चेहरा लंबा और अंडाकार है। मैं आपको बता दूँ, ये बिल्कुल भी एक ही महिला नहीं है!”

“मुझे वो दो, और मुझे वो भी दो।” स्टिलमैन ने चिट्ठियाँ और एक तस्वीर जेब में रख ली। “चलो नीचे चलते हैं। मुझे लगता है मैं एक और सिगरेट पी लूँगा।” उनका कहने का मतलब था: “तुम्हें थोड़ी राहत मिल गई है।”

जब वे नीचे आ गए, तो वह आराम का दिखावा करते हुए बैठ गया। "मुझे अपनी पत्नी के पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में बताओ, जितना हो सके, उतना ही जितना उसने तुम्हें बताया है।"

“जब मैं स्माइल्स से मिली, तब वह यहाँ अकेली थी। उसके पिता का निधन तब हो गया था जब वह बच्ची थी, और वे अपने लिए एक अच्छी खासी संपत्ति छोड़ गए थे, उनके पास ऊपर एक घर भी था—”

“डेनबी?”

“नहीं, कोई और जगह थी; मुझे अभी याद नहीं आ रहा। जब स्माइल्स छोटी थी, तो उसकी माँ उसे अपना पूरा समय और ध्यान देती थी। लेकिन जब स्माइल्स ने लगभग दो साल पहले अपनी पढ़ाई पूरी की, तब भी उसकी माँ आकर्षक, जवान, ज़िंदादिल और नेक दिल थी। यह स्वाभाविक ही था कि उसकी दोबारा शादी हो जाए। स्माइल्स को इस बात का बुरा नहीं लगा; उसे तो यही उम्मीद थी। जब माँ को राजमिस्त्री जो एल्डन से प्यार हो गया, जिससे उनकी पहली मुलाकात घर की मरम्मत के दौरान हुई थी, तो स्माइल्स ने उसे पसंद करने की कोशिश की। वह अपने काम में अच्छा आदमी था, लेकिन उसने गौर किया कि उसकी माँ से शादी करने के बाद वह एकदम काम करना बंद कर दिया, उसके बाद उसने कभी काम नहीं किया; वह बहाना बनाता था कि उसे कोई काम नहीं मिल रहा—जबकि वह जानती थी कि काम तो था ही। यही पहली बात थी जो उसे पसंद नहीं आई। शायद उसे आहतता था कि स्माइल्स को उस पर शक हो गया था, लेकिन फिर भी उन दोनों के बीच बनती नहीं थी। अपनी माँ की खातिर, उससे बचने के लिए परेशानी से बचने के लिए, उसने घर छोड़ने का फैसला किया ताकि उसकी माँ को उन दोनों में से किसी एक को चुनने की मजबूरी न हो। हालाँकि, उसने इतनी कूटनीति से काम लिया कि उसकी माँ को कभी भी असली वजह का अंदाज़ा नहीं हुआ।

“वह यहाँ आई और कुछ समय पहले ही एल्डन और उसकी माँ ने अपना घर बेचकर डेनबी में एक नए घर में रहने चले गए। स्माइल्स ने कहा कि शायद उसने ऐसा चुगली करने वाले पड़ोसियों से बचने के लिए किया होगा; वे शायद शादी के बाद नौकरी पाने की कोशिश न करने के लिए उसकी आलोचना करने लगे थे।”

"क्या वे तब आए थे जब आपने स्माइल्स से शादी की थी?"

“नहीं। स्माइल्स ने उन्हें पहले से सूचित नहीं किया था; बस हमारी शादी वाले दिन एक तार भेजकर घोषणा कर दी थी। उनकी मां की तबीयत खराब थी और उन्हें डर था कि नीचे का सफर उनके लिए असहनीय होगा। खैर, ये तो पृष्ठभूमि है।”

"पहली नजर में तो इसमें गहराई से जानने लायक कुछ खास नहीं है।"

“पहली नज़र में तो ऐसा कभी नहीं लगता, कहीं भी नहीं,” ब्लिस ने उसे बताया। “सुनो, स्टिलमैन। मैं फिर से ऊपर जा रहा हूँ। जो भी गड़बड़ है, वो उस तरफ है, यहाँ नहीं।”

“मुझे यहाँ आपको पूछताछ के लिए लाने का आदेश दिया गया था, आप जानते ही हैं।” लेकिन वह हिला तक नहीं।

“मान लो कि मैं अभी सड़क पर तुम्हारे पास नहीं आया होता। मान लो कि मैं यहाँ आठ-दस घंटे और नहीं आया होता। क्या तुम मुझे वो अतिरिक्त घंटे नहीं दे सकते? मेरे साथ ऊपर आओ, मुझे अपनी नज़रों से ओझल मत होने दो, मुझे कंगन पहना दो, जो चाहो करो, लेकिन कम से कम मुझे एक बार फिर ऊपर जाकर उन लोगों का सामना करने दो। अगर तुमने मुझे यहाँ बंद कर दिया, तो मैंने उसे निश्चित रूप से खो दिया है। मुझे कभी पता नहीं चलेगा कि उसका क्या हुआ—और तुम्हें भी नहीं। ऊपर कुछ मुझे परेशान कर रहा था। ऊपर बहुत सी बातें मुझे परेशान कर रही थीं, लेकिन अभी तक मैंने उनमें से सिर्फ एक को सुलझाया है। मुझे बाकी को भी सुलझाने का मौका दो।”

“तुम्हें ज्यादा कुछ नहीं चाहिए,” स्टिलमैन ने अनिच्छा से कहा। “क्या तुम्हें पता है कि इस तरह की गलती करने पर मेरा क्या हाल हो सकता है? क्या तुम्हें पता है कि ऐसी किसी भी बात पर मुझे तोड़ दिया जा सकता है?”

"क्या आपका मतलब यह है कि आप उन दो पत्रों में लिखावट की विसंगति को नज़रअंदाज़ करने के लिए तैयार हैं, और मेरे इस आश्वासन को भी कि ऊपर कोई ऐसा व्यक्ति है जो उस तस्वीर में दिख रही महिला से मेल नहीं खाता?"

"नहीं, बिलकुल नहीं; मैं अपने लेफ्टिनेंट को इन दोनों बातों के बारे में बता दूंगा।"

और तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। उसे गए हुए तीन दिन हो चुके हैं।

“सुनो,” स्टिलमैन ने कहा। “मैं तुमसे एक सौदा करता हूँ। हम अभी मुख्यालय के लिए निकलेंगे और रास्ते में उस बस टर्मिनल पर रुकेंगे। अगर मुझे ज़रा सा भी सबूत मिल जाए कि वह उस रात डेनबी के लिए निकली थी, तो मैं तुम्हारे साथ वहाँ चलूँगा। अगर नहीं, तो हम सीधे मुख्यालय चले जाएँगे।”

ब्लिस ने बस इतना ही कहा: "मुझे पता है कि तुम्हें पता चल जाएगा कि वह चली गई है।"

स्टिलमैन ने उसे हथकड़ी लगाए बिना ही ले लिया और बस इतना कहा, "अगर तुमने कुछ भी करने की कोशिश की, तो हारने वाले तुम होगे, मैं नहीं।"

टिकट बेचने वाला फिर से उतनी ही दूर तक गया जितना वह पिछली बार ब्लिस के साथ गया था, लेकिन उससे आगे नहीं जा सका। "हाँ, उसने उतने पैसों में टिकट खरीद लिया था जितने में वह जा सकती थी, लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा कि वह कहाँ तक का टिकट था।"

"इससे यह साबित नहीं होता कि उसने कभी डेनबी को मारा था," स्टिलमैन ने गुस्से में कहा।

“बस ड्राइवर को पकड़ो,” ब्लिस ने विनती की। “बस नंबर 27। मुझे पता है कि वह मुझसे कुछ छुपा रहा था। उसके हाव-भाव से ही मुझे पता चल गया था। वह उसके साथ सफर कर रही थी, ठीक है, लेकिन किसी कारणवश वह यह बात बताने से कतरा रहा था।”

लेकिन उनकी किस्मत खराब थी। 27 नंबर की बस दूसरे छोर पर थी, जिसे अगली दोपहर शहर की ओर जाने वाली बस लानी थी।

स्टिलमैन पहले से ही अपने साथी को उस जगह से निकालकर मुख्यालय ले जाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन ब्लिस ने हार नहीं मानी। "यहाँ आस-पास कोई न कोई तो होगा जिसने उसे उस रात ट्रेन में चढ़ते देखा होगा। कोई अटेंडेंट, कोई दुकानदार जो हर रात यहाँ रहता है। हो सकता है उसने अपना बैग चेक करवाया हो, हो सकता है उसने काउंटर पर एक कप कॉफी पी हो।"

उसने अपना बैग चेक नहीं कराया था; चेक रूम अटेंडेंट को उसके जैसी कोई याद नहीं थी। वह लंच काउंटर पर भी नहीं रुकी थी; काउंटर पर मौजूद कर्मचारी को भी वह याद नहीं थी। न ही जूते पॉलिश करने वाले उस अश्वेत व्यक्ति को। यहाँ तक कि उन्होंने शौचालय की मेट्रन से भी पूछताछ की, जब वह कुछ देर के लिए दरवाजे के बाहर दिखाई दी। नहीं, उसने भी उसके जैसी किसी को नहीं देखा था।

"ठीक है, चलो," स्टिलमैन ने कहा और ब्लिस के कंधे पर हाथ रख दिया।

“एक और चक्कर। मैगज़ीन स्टैंड के पीछे, वो कौन है?”

स्टिलमैन ने केवल इसलिए सहमति दी क्योंकि यह निकास द्वार के पास था; बाहर निकलते समय उन्हें वहां से गुजरना ही था।

और वो टूट गया! पिछले मंगलवार की रात के बाद पहली बार, कुछ पल के लिए ही सही, कोहरा छटा। "हाँ, ज़रूर," दुकानदार ने तुरंत कहा। "मैं कैसे भूल सकता था? वो मेरे पास बड़े अजीब तरीके से आई थी। उसने कहा, 'मेरे पास सिर्फ़ एक दस सेंट का सिक्का बचा है, जो टिकट खरीदते समय मुझसे छूट गया क्योंकि वो मेरे पर्स के नीचे चला गया। मुझे एक पत्रिका दे दो।' स्वाभाविक रूप से, मैंने उससे पूछा कि उसे कौन सी पत्रिका चाहिए। 'मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता,' उसने कहा, 'बस जब तक मैं बस से उतर न जाऊँ, तब तक मेरा मन लगा रहे। मैं चाहती हूँ कि मेरा मन लगा रहे।' खैर, मैं यहाँ सालों से काम कर रहा हूँ, और अब तो मुझे अलग-अलग स्टॉप्स का हिसाब भी रहता है। मतलब, अगर वो लंबी दूरी तय कर रही हैं, तो मैं उन्हें मोटी पत्रिका देता हूँ; अगर छोटी दूरी तय कर रही हैं, तो पतली पत्रिका देता हूँ। मैंने उसे मध्यम दूरी के लिए एक पत्रिका दी - डेनबी; उसने मुझे बताया था कि वो वहीं जा रही है।"

स्टिलमैन ने बस इतना ही कहा: "जब तक मैं हमारे टिकट ले आता हूँ, तब तक आप खिड़की के पास आ जाइए।"

ब्लिस ने "धन्यवाद" नहीं कहा। उसने कुछ नहीं कहा। उसे कहने की ज़रूरत भी नहीं थी। उसने जासूस को जो कृतज्ञता भरी नज़र से देखा, वह अपने आप में सब कुछ बयां कर रही थी।

“डेनबी के लिए दो बसें, आना-जाना पड़ेगा,” स्टिलमैन ने टिकट बेचने वाले से कहा। सुबह की बस के लिए बहुत देर हो चुकी थी; अगली बस दोपहर के आसपास ही छूटने वाली थी।

जैसे ही वे खिड़की से मुड़े, ब्लिस ने ज़ोर से सोचा:

फिर भी, वह ड्राइवर यह मानने से इतना कतरा क्यों रहा था कि वह उस रात उसके साथ बस में सफर कर रही थी? और टिकट काउंटर पर मौजूद व्यक्ति का दावा है कि उसने डेनबी के लिए टिकट नहीं खरीदा था, बल्कि उससे पहले के किसी स्थान के लिए टिकट खरीदा था।

“यह समझना आसान है कि इसका क्या मतलब निकलता है,” स्टिलमैन ने उससे कहा। “उसके पास केवल आधी दूरी का टिकट था। उसने ड्राइवर को मना लिया कि वह उसे बाकी का रास्ता डेनबी तक ले जाए। शायद उसने ड्राइवर को अपनी परेशानी बताई होगी, और ड्राइवर को उस पर दया आ गई होगी। इसी वजह से वह आपको यह मानने से हिचकिचा रहा था कि वह बस में थी। उसने सोचा होगा कि आप कंपनी के स्पॉटटर हैं और स्वाभाविक रूप से उसने जो किया वह नियमों के खिलाफ होगा।”

टिकटों को अपने कोट की अंदरूनी जेब में रखते हुए, जासूस कुछ पल असमंजस में खड़ा रहा। फिर उसने कहा, "चलिए आपके घर ही चलते हैं। इंतज़ार करते-करते शायद मुझे कुछ और जानकारी मिल जाए, और आप भी थोड़ी देर सो लीजिए। साथ ही, मैं फ़ोन करके पता कर लूँगा कि क्या यह आना-जाना वैध हो सकता है या नहीं।"

जब वे उसके घर वापस लौटे तो थका हुआ ब्लिस बेडरूम में सो गया। वह तब तक बेखबर रहा जब तक कि जासूस ने उसे बस के समय से आधा घंटा पहले जगा नहीं दिया।

"कुछ मिला?" ब्लिस ने अपना कोट पहनते हुए उससे पूछा।

“नहीं, और कुछ नहीं,” स्टिलमैन ने कहा। फिर उसने ऐलान किया, “मैंने अपने लेफ्टिनेंट को वचन दिया है कि मैं कल सुबह नौ बजे तक मुख्यालय पहुँच जाऊँगा और तुम मेरे साथ होगी। उसे नहीं पता कि तुम अभी मेरे साथ हो; मैंने उसे यही सोचने दिया है कि मुझे एक सूचना मिली है जहाँ से मैं तुम्हें ढूँढ सकता हूँ। अभी निकलकर हम सूर्यास्त के आसपास वहाँ पहुँचेंगे और फिर हमें रात की बस से वापस आना होगा। इससे हमें वहाँ कुछ ही घंटे मिलेंगे यह देखने के लिए कि क्या हम उसका कोई सुराग ढूँढ सकते हैं। अगर मुझसे पूछो तो, बहुत ही कम समय है।”

वे दोनों एक साथ बस में चढ़े और पीछे की सीटों में से एक पर बैठ गए। लंबी और उबाऊ यात्रा के दौरान उन्होंने ज्यादा बात नहीं की।

"मौका मिलते ही एक और झपकी ले लो," स्टिलमैन ने कहा।

ब्लिस को लगा कि वह दोबारा ऐसा नहीं कर पाएगा, लेकिन धीरे-धीरे, शारीरिक थकावट और बस की धीमी गति के कारण वह बेहोश हो गया और उसे नींद आ गई।

ऐसा लगा मानो पाँच मिनट बाद ही स्टिलमैन ने उसे कंधे से हिलाकर जगाया। सूरज पश्चिम में ढल रहा था; वह लगभग पूरी यात्रा सोता रहा था। "जाग जाओ, ब्लिस; हम कुछ ही मिनटों में, बिल्कुल समय पर, रवाना हो जाएँगे।"

“मैंने उसके बारे में सपना देखा,” ब्लिस ने उदास स्वर में कहा। “मैंने सपना देखा कि वह किसी खतरे में थी, उसे मेरी बहुत ज़रूरत थी। वह मुझे बार-बार पुकार रही थी, ‘एड! जल्दी करो, एड!’”

स्टिलमैन ने अपनी निगाहें झुका लीं। "मैंने तुम्हें नींद में दो बार उसका नाम लेते सुना: 'स्माइल्स, स्माइल्स'," उसने धीमी आवाज़ में कहा। "धिक्कार है तुम पर, तुम पहले कभी मेरी हिरासत में रहे किसी भी दोषी व्यक्ति की तरह व्यवहार नहीं करते। नींद में भी तुम्हारी आवाज़ निर्दोष लगती है।"

“डेनबी!” ड्राइवर ने पुकारा।

जैसे ही बस उन्हें चौराहे पर छोड़कर चली गई, स्टिलमैन ने कहा, "अब जब हम यहाँ आ ही गए हैं, तो आइए एक-दूसरे को समझें। मैं तुम्हें हथकड़ी लगाकर अपने साथ घसीटना नहीं चाहता, लेकिन मेरी नौकरी दांव पर लगी है; मुझे यह सुनिश्चित करना होगा कि जब मैं वापस जाऊं तो तुम मेरे साथ रहो।"

"क्या मेरा यह वचन कि मैं यहाँ रहते हुए आपको चकमा देने की कोशिश नहीं करूँगा, आपके लिए कुछ मायने रखेगा?"

स्टिलमैन ने उसकी आँखों में सीधे देखते हुए पूछा, "क्या यह तुम्हारे लिए कुछ मायने रखता है?"

“मेरे पास बस यही एक चीज है। मुझे पता है कि मैंने इसे कभी तोड़ा नहीं है।”

स्टिलमैन ने धीरे से सिर हिलाया। "मुझे लगता है कि शायद इस पर जोखिम लेना उचित होगा। ठीक है, मुझे बता दो।"

उन्होंने पूरी गंभीरता से हाथ मिलाया।

अब शाम तेजी से ढल रही थी; सूरज आंखों से ओझल हो चुका था और उसकी हल्की रोशनी फीकी पड़ रही थी।

"चलो, उनके घर चलते हैं," ब्लिस ने बेसब्री से कहा।

“चलिए पहले थोड़ी छानबीन कर लेते हैं। याद रखिए, अभी तक हमारे पास इस बात का कोई सबूत नहीं है कि वह सचमुच यहाँ बस से उतरी थी, घर पहुँचने की बात तो दूर की है। सिर्फ़ उसका पत्रिका खरीदना और यहाँ आने की बात कहना अपने आप में कोई सबूत नहीं है। अब देखते हैं, अगर वह आधी रात को इस सुनसान गाँव में उतरती है। क्या उसे घर का रास्ता पता होगा, या उसे किसी से पूछना पड़ेगा?”

“उसे पूछना ही पड़ेगा। याद है, मैंने तुम्हें बताया था कि स्माइल्स के घर छोड़ने के बाद वे यहाँ आए थे। यह उसकी यहाँ की पहली यात्रा होती।”

“अच्छा, अगर वो बिना रास्ता पूछे वहाँ नहीं जा सकी, तो अब तो हमारा काम बन गया। चलो पहले उस पेट्रोल पंप पर किस्मत आजमाते हैं; शायद उस समय उसके आने के समय वही एक खुला हुआ होता।”

ड्यूटी पर मौजूद इकलौता कर्मचारी बाहर आया और बोला, "जी हां, सज्जनों?"

“देखो,” स्टिलमैन ने कहना शुरू किया। “यहाँ आने-जाने वाला ट्रैफिक ज़्यादा नहीं होता, इसलिए यह ज़्यादा मुश्किल नहीं होना चाहिए। मंगलवार रात को याद करो, उत्तर की ओर जाने वाली आखिरी बस। क्या तुमने उसमें से किसी को उतरते देखा था?”

मुझे उन्हें छूटते हुए देखने की जरूरत नहीं है; मेरे पास यह जानने का एक अचूक तरीका है कि कोई छूटता है या नहीं।

“यह क्या है?”

“जो भी उतरता है, कम से कम जो भी यहाँ अजनबी होता है, वह मुझसे ज़रूर मिलता है और रास्ता पूछता है। बस यही बात है, आखिरी बस के लिए। दुकान उससे पहले ही बंद हो जाती है। और मंगलवार रात को भी किसी ने मुझसे रास्ता नहीं पूछा, इसलिए मुझे लगता है कि कोई अजनबी नहीं उतरा।”

“यह ठीक नहीं लग रहा,” स्टिलमैन ने धीरे से ब्लिस से कहा। फिर उसने अटेंडेंट से पूछा, “क्या तुमने इसे गुजरते हुए सुना? ज़रूर सुना होगा, यहाँ तो बहुत शांति है।”

“हां, बिल्कुल, मैंने किया। और वो भी एकदम सही समय पर।”

"तब तो आप बता सकते थे कि यह किसी को उतारने के लिए रुकी थी या बिना रुके सीधे चली गई थी, है ना?"

“हाँ, आमतौर पर मैं कर सकता हूँ,” निराशाजनक जवाब मिला। “लेकिन उस रात, उस खास समय पर, मैं एक आदमी की कार की मरम्मत कर रहा था, उसके मुड़े हुए फेंडर को हथौड़े से सीधा करने की कोशिश कर रहा था, और मेरी अपनी आवाज़ ने उसे दबा दिया। हालाँकि, जब तक कोई वहाँ से नहीं गुज़रा, मुझे पूरा यकीन है कि आवाज़ बंद नहीं हुई।”

“धिक्कार है!” स्टिलमैन गुर्राया, जैसे ही वे मुड़े, “अगर वह भूत होती तो भी इतनी अदृश्य नहीं हो सकती थी!”

जब वे पेट्रोल पंप के कर्मचारी की सुनने की सीमा से बाहर निकल गए, तो ब्लिस ने कहा, "उदाहरण के लिए, अगर एल्डन को पता होता कि वह आ रही है और बस स्टॉप पर उससे मिलने का इंतजार करती, तो उसे किसी से रास्ता पूछने की जरूरत ही नहीं पड़ती। वह पहले से फोन कर सकती थी या तार भेज सकती थी।"

“अगर उसके पास पूरे रास्ते का टिकट खरीदने के लिए भी पैसे नहीं थे, तो वह टोल कॉल कैसे कर सकती थी? खैर, अगर हम इस थ्योरी को मान लें, तो इसका मतलब है कि हम उन्हें उसके गायब होने में सीधे तौर पर फंसा रहे हैं, और हमारे पास अभी तक इसका कोई सबूत नहीं है। याद रखिए, हो सकता है कि

उसके साथ डेनबी में ही, उनके घर जाने वाली सड़क पर, कोई दुर्घटना हो गई हो, और वह कभी वहां पहुंची भी न हो।"

जब वे सड़क के मोड़ से मुड़े और सामने की नीची ईंट की दीवार वाले उस आखिरी घर के सामने पहुँचे, तब तक पूरी तरह अंधेरा हो चुका था। इस बार ऊपर या नीचे, किसी भी खिड़की से रोशनी की एक किरण भी नहीं दिख रही थी, और फिर भी शाम का समय ब्लिस के आने के समय से पहले ही बीत चुका था।

"हेलो?" जासूस ने कहा। "लगता है घर पर कोई नहीं है।"

वे विलो की मेहराब के नीचे मुड़े, घंटी बजाई और इंतज़ार करने लगे। स्टिलमैन ने दरवाज़े पर ज़ोर से दस्तक दी और वे कुछ और देर तक इंतज़ार करते रहे। हालाँकि, यह महज़ औपचारिकता थी; जब उन्होंने पहली बार उस जगह को देखा था, तभी से उन दोनों को यह स्पष्ट हो गया था कि वहाँ कोई नहीं है।

"चलो, जल्दी करो। किस बात का इंतज़ार कर रहे हैं?" ब्लिस ने कहा। "मैं बिना किसी परेशानी के किसी भी खिड़की से अंदर जा सकती हूँ।"

स्टिलमैन ने उसके हाथ पर हाथ रखकर उसे रोका। "नहीं, तुम ऐसा नहीं कर सकते; यह जबरन घुसपैठ है। और वैसे भी, यहाँ मेरा अधिकार क्षेत्र नहीं है। हमें वापस जाकर स्थानीय कानून देखना होगा; शायद मैं उसे आधिकारिक मंजूरी की मुहर लगाने के लिए मना सकूँ। पहले देखते हैं कि बाहर से कुछ पता चलता है या नहीं। शायद मैं टॉर्च की रोशनी किसी खिड़की से अंदर डाल सकूँ।"

उसने उसे चालू किया, घर के सामने एक सफेद पोखर बना दिया, और उसके पीछे धीरे-धीरे चलता रहा जब तक कि वह काली खिड़की के एक छेद से अंदर नहीं घुस गया। वे दोनों किनारे से तब तक आगे बढ़े जब तक उनकी नाकें लगभग शीशे से चिपक नहीं गईं, और वे अंदर झाँकने की कोशिश करने लगे। लेकिन यह संभव नहीं था। पर्दे नीचे नहीं थे, लेकिन अंदर लटके हुए जालीदार पर्दे उसकी किरणों को प्रभावी ढंग से रोक रहे थे। वे धीरे-धीरे घर के किनारे-किनारे चलते रहे, एक के बाद एक खिड़की से कोशिश करते रहे, हर बार वही नतीजा निकला।

स्टिलमैन आखिरकार मुड़ गया, लेकिन अपनी टॉर्च चालू ही छोड़ दी। उसने घर के बगल से गुज़रने वाली छोटी सी कच्ची निजी सड़क पर, पीछे बने टीन के झोपड़े से, जो एल्डन के गैरेज के रूप में काम करता था, लेकर सामने के सार्वजनिक राजमार्ग तक, पानी उछाला। जैसे ही ब्लिस सड़क पर कदम रखने लगा, उसने उसे वापस आने का इशारा किया। "एक मिनट के लिए यहाँ रुको। मैं देखना चाहता हूँ कि क्या मैं उनकी कार के टायर के निशानों से कुछ पता लगा सकता हूँ। क्या तुम उन्हें देख रहे हो?"

ऐसा न करना मुश्किल होता। घर के आगे की सड़क पक्की थी, लेकिन उसके किनारे पर नरम, बारीक धूल की एक परत थी, जैसा कि ज्यादातर ग्रामीण सड़कों पर होता है। "मैं देखना चाहता हूँ कि वे किस तरफ मुड़े," स्टिलमैन ने अपनी रोशनी की किरण उन पर डालते हुए और किनारे से उनका पीछा करते हुए समझाया। "अगर वे शहर में गए, नीचे हमारी मदद करने के लिए, तो वे दाईं ओर मुड़ेंगे; यहाँ से उनके पास

मुड़ने का कोई और रास्ता नहीं है। अगर वे बाईं ओर, उस तरफ मुड़े, तो यह निश्चित रूप से एक भगोड़ा था, और इससे चारों ओर की स्थिति बदल जाती है।"

उसकी रोशनी की किरण, जलधारा में पारे की तरह, पदचिह्नों पर दौड़ती हुई, पक्की सड़क पर उनका पीछा करते हुए दाईं ओर मुड़ने लगी और आँखों से ओझल हो गई। यही उसका जवाब था।

वह बिना किसी उद्देश्य के उन्हीं रास्तों पर वापस मुड़ गया, टॉर्च अभी भी जल रही थी। वह घर के कोने के समानांतर रुका, टॉर्च को ज़मीन के करीब लाकर रोशनी को और तेज़ किया। "देखो, एक और बात है," ब्लिस ने उसे कहते सुना। "अजीब बात है कि इस बारीक धूल में भी हर छोटी चीज़ नज़र आ जाती है। उसके आगे के बाएं टायर पर एक पैच लगा था, और वो भी खराब हालत में। देखो? तुम समझ सकते हो कि उन्होंने क्या किया। एल्डन ज़ाहिर तौर पर अपनी पत्नी से पहले अकेले ही कार को शेड से बाहर ले गया। समय बचाने के लिए वह घर के किनारे से अंदर आई, सामने वाले रास्ते से नहीं; वैसे भी उन्हें सड़क के दूसरे रास्ते से जाना था। उसका पहिया उस पैच के ठीक नीचे आकर रुका। इसीलिए यह इस एक जगह पर इतना साफ़ दिख रहा है। फिर उसने ब्रेक छोड़ा और ज़मीन के झुकाव के कारण कार थोड़ा पीछे खिसक गई। जब वह फिर से आगे आया, तो उसके पहिये की स्थिति थोड़ी बदल गई, अपने पुराने निशान को मिटाने से चूक गई। शर्त लगाओ, रात खत्म होने से पहले उन्हें इसमें परेशानी होगी।"

उसने ऐसे बात की मानो यह कोई मामूली सी बात हो। लेकिन क्या सच में कोई भी बात मामूली होती है, ब्लिस ने बाद में खुद से पूछा?

“चलो,” स्टिलमैन ने अपनी सिगरेट की बत्ती जेब में रखते हुए कहा, “चलिए पुलिस को बुलाते हैं और देखते हैं कि अंदर क्या हाल है।”

कांस्टेबल का नाम कोचरन था, और आखिरकार उन्होंने उसे उसके घर पर ढूंढ लिया। "शुभ संध्या," स्टिलमैन ने अपना परिचय देते हुए कहा, "मैं शहर पुलिस का स्टिलमैन हूं। मैं जानना चाहता था कि क्या हम एल्डन के घर के अंदर देख सकते हैं। उनकी सौतेली बेटी शहर में लापता हो गई है; उसे यहां के लिए निकलना था, और यह सिर्फ एक नियमित जांच है। उनके खिलाफ कुछ नहीं है। वे बाहर गए हुए लगते हैं, और हमें अगली बस पकड़नी है।"

कोचरन ने बड़ी सावधानी से अपना गला खींचा। “ठीक है, अब मुझे लगता है कि मैं आपकी मदद कर सकता हूँ, बशर्ते यह मेरी उपस्थिति में हो। मैं यहाँ का कानून हूँ, और अगर उनके पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है, तो उन्हें आपत्ति करने का कोई कारण नहीं है। मैं आपको अपनी कार में वापस छोड़ दूँगा। यह आदमी, जो यहाँ है, शायद आपका अधीनस्थ है?”

स्टिलमैन ने अनिर्णय भाव से "उम" कहा और ब्लिस को हल्के से धक्का दिया। वे दोनों जानते थे कि कांस्टेबल शायद पुलिस द्वारा पहले से ही वांछित व्यक्ति को इन लोगों के घर में घुसने देने से हिचकिचाता, भले ही उसके साथ एक वास्तविक जासूस ही क्यों न हो।

वह पहले अपने कार्यालय में रुका और एक मास्टर चाबी लेकर लौटा, फिर बोला: "इससे काम बन जाएगा।" वे दस मिनट के भीतर ही एल्डन के घर वापस आ गए, कुल मिलाकर, जिस समय वे पहली बार वहां से निकले थे।

जब वे गाड़ी से उतरकर घर की ओर बढ़े तो कोचरन ने उन्हें एक शरारती मुस्कान के साथ देखा। “मुझे खुशी है कि आप लोगों ने मुझे यह काम करने के लिए कहा। दरअसल, हम सब यहाँ आस-पास के इन लोगों के बारे में काफी समय से उत्सुक थे। ये लोग थोड़े असामाजिक हैं; अपने आप में ही रहते हैं। यह पता लगाने का यही सही समय है कि कहीं इनके कोई राज़ तो नहीं छिपे हैं।”

उस भाव को देखकर ब्लिस अनायास ही सिहर उठी।

कांस्टेबल की मुख्य चाबी से दरवाजा बिना किसी खास कठिनाई के खुल गया, और वे तीनों अंदर चले गए।

उन्होंने घर के हर कमरे को ऊपर से नीचे तक, हर कमरे की हर कोठरी को अच्छी तरह से छान मारा, लेकिन कांस्टेबल द्वारा बताए गए "रहस्यों" में से एक भी नहीं मिला, चाहे वह प्रतीकात्मक हो या वास्तविक। इस घर में कुछ भी असामान्य नहीं था, और ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे यह पता चले कि कभी कुछ असामान्य हुआ भी था।

तहखाने में जब वे पहुँचे, तो एक कोने में सीमेंट के दो ढीले-ढाले, आधे खाली बोरे पड़े थे, और फर्श पर ईंट की धूल और ईंट के चूरे के गुलाबी निशान थे, लेकिन इसका कारण आसानी से समझ में आ गया। "शायद कुछ समय पहले सड़क किनारे दीवार बनाते समय बचा हुआ होगा," कोचरन ने धीरे से कहा।

वे मुड़े और फिर ऊपर चले गए। उन्हें जो एकमात्र और चीज़ मिली, वह किसी अपराध से संबंधित नहीं थी, बल्कि केवल इस बात का संकेत थी कि वहाँ रहने वाले लोग कितने समय पहले गए थे। स्टिलमैन की उंगली रसोई के चूल्हे पर रखी एक कॉफी पॉट से टकरा गई, और उसमें बचे हुए तरल के कारण वह अभी भी हल्की गर्म थी।

“हमारे यहाँ पहुँचने से ठीक पहले ही वे चले गए होंगे,” उसने ब्लिस से कहा। “बस कुछ ही मिनटों से हम उन्हें चूक गए।”

"अजीब बात है; उन्होंने इतनी लंबी यात्रा शुरू करने के लिए अंधेरा होने तक इंतजार क्यों किया? वे पहले क्यों नहीं निकले?"

“इससे उन्हें किसी भी बात का दोषी साबित नहीं किया जा सकता,” स्टिलमैन ने हठपूर्वक कहा। “हमें इस बात का एक भी सबूत नहीं मिला है कि आपकी पत्नी ने कभी इस घर के अंदर कदम रखा था। इस बात को झुठलाने की कोशिश मत करो।”

इसी बीच स्थानीय अधिकारी अपनी कार में पानी भरने के लिए बाहर गए थे। उन्होंने उन्हें आवाज़ देकर कहा, "बाहर आते समय दरवाज़ा अच्छे से बंद कर देना।"

वे पहले से ही दरवाजे पर थे, लेकिन ब्लिस अचानक मुड़ा और वापस अंदर चला गया। जब स्टिलमैन कुछ देर बाद उसके पीछे गया, तो वह बैठक में बैठा अपने बालों में उलझन भरी उंगलियां फेर रहा था।

“चलो,” जासूस ने यथासंभव विनम्रता से कहा, “चलते हैं। वह हमारा इंतजार कर रहा है।”

ब्लिस ने बेबसी से उसकी ओर देखा। "क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा? क्या यह कमरा तुम्हें परेशान नहीं करता?"

स्टिलमैन ने अस्पष्ट रूप से चारों ओर देखा। “नहीं। किस तरह से? इसमें क्या खराबी है? मुझे तो यह साफ-सुथरा, सुव्यवस्थित और आरामदायक लगता है। इससे बेहतर और क्या चाहिए?”

“इसमें कुछ ऐसा है जो मुझे परेशान करता है। मुझे इसमें असहजता महसूस होती है। पता नहीं क्यों, यह सुकून देने वाला नहीं है। और मुझे एक अजीब सी अनुभूति होती है कि अगर मैं यह पता लगा सकूँ कि यह सुकून देने वाला क्यों नहीं है, तो इससे स्माइल्स के बारे में इस रहस्य को कुछ हद तक सुलझाने में मदद मिलेगी।”

स्टिलमैन ने तिरस्कारपूर्वक उसकी ओर हाथ का किनारा हिलाया। “अब तो तुम बिल्कुल पागलपन वाली बातें करने लगे हो, ब्लिस। तुम कहते हो कि यह कमरा सुकून देने वाला नहीं है। कमरे का इससे कोई लेना-देना नहीं है। ये तुम्हारी वजह से है। तुम अपनी पत्नी को लेकर बहुत तनाव में हो, बेचैन हो। तुम्हारी नसें तनावग्रस्त हैं, टूटने की कगार पर हैं। इसीलिए तुम्हें यह कमरा सुकून देने वाला नहीं लगता। स्वाभाविक ही है। कोई भी कमरा ऐसा नहीं लगेगा।”

ब्लिस अचरज से अपना सिर हिलाता रहा। “नहीं। नहीं। यह सुनने में तो तर्कसंगत लग सकता है, लेकिन मुझे पता है कि यह कारण नहीं है। यह मेरी गलती नहीं है, यह कमरे की ही समस्या है। मैं मानता हूँ कि मैं बहुत तनाव में हूँ, लेकिन पिछली रात जब मैं इतना तनाव में नहीं था, तब भी मैंने इसे महसूस किया था। एक और बात: मुझे इस घर के किसी और कमरे में ऐसा नहीं होता; यह सिर्फ यहीं होता है।”

“मुझे तुम्हारा बात करने का तरीका पसंद नहीं आ रहा है; मुझे लगता है कि तुम तनाव के कारण टूट रहे हो,” स्टिलमैन ने उसे बताया, लेकिन वह कुछ मिनटों तक दरवाजे पर खड़ा रहा, उसे उत्सुकता से देखता रहा, जबकि ब्लिस वहाँ बिना हिले-डुले बैठा रहा, उसके जुड़े हुए हाथ अब उसकी गर्दन के पीछे लटक रहे थे।

"क्या आपको मिल गया?"

ब्लिस ने अपना सिर उठाया, चुपचाप हिलाया और अपने होंठों के कोने चबाने लगा। “यह उन चीजों में से एक है; जब आप इसके लिए बहुत कोशिश करते हैं, तो यह आपसे पूरी तरह से दूर हो जाता है। यह तभी प्रकट होता है जब आप इसके बारे में ज्यादा नहीं सोच रहे होते हैं। मैं इसे जितना ज्यादा पकड़ने की कोशिश करता हूं, यह उतना ही मायावी होता जाता है।”

“ज़रूर,” स्टिलमैन ने सहानुभूति भरी चिंता के साथ कहा, “और अगर तुम यहाँ बैठकर इसके बारे में और सोचते रहे, तो मैं तुम्हें सीधे जैकेट में बांधकर वापस ले जाऊँगा। चलो, हमारे पास उस बस को पकड़ने के लिए केवल दस मिनट और बचे हैं।”

ब्लिस अनिच्छा से उठा। उसने कहा, "बस हो गया! अब मुझे यह कभी नहीं मिलेगा।"

“अरे, तुम तो उन लोगों की तरह बातें करते हो जो ओइजा बोर्ड के ज़रिए आत्माओं से बात करने की कोशिश करते रहते हैं,” स्टिलमैन ने उन्हें कहा और उनके जाने के बाद सामने का दरवाज़ा बंद कर दिया। “यह सब एक बेकार की खोज थी।”

नहीं, ऐसा नहीं था।

"तो हमें इससे क्या मिला?"

“कुछ नहीं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह यहाँ कहीं मौजूद नहीं है, बस देखने से चूक गया है। बात सिर्फ इतनी है कि हम उसे देखने से चूक गए हैं, चाहे वह कुछ भी हो।”

“उस घर के आसपास उसका कोई निशान नहीं है। उसके वहां होने का कोई संकेत नहीं है। हिंसा का कोई संकेत नहीं है।”

“और मैं जानती हूँ कि यहाँ से जाने का मतलब है कि हम उसके बारे में जो कुछ भी जानना बाकी है, उससे मुंह मोड़ रहे हैं। शहर में जाकर हमें कभी पता नहीं चलेगा। जब मैं वहाँ बैठी थी, तब मुझे भी लगभग पता चल ही गया था। जैसे ही मुझे पता चलने वाला होता, वो मुझसे फिर फिसल जाता। सोचो, कितनी तकलीफ होती है!”

स्टिलमैन को गुस्सा आ गया। “उस कमरे को छोड़ो! अगर उसमें कुछ गड़बड़ होती, तो मुझे भी तुम्हारी तरह पता चल जाता। मेरी आँखें भी उतनी ही अच्छी हैं, मेरा दिमाग भी उतना ही तेज़ है। तुममें और मुझमें क्या फर्क है?” यह सवाल सिर्फ एक व्यंग्य था।

"आप एक जासूस हैं और मैं एक वास्तुकार हूं," ब्लिस ने बेपरवाही से कहा, जैसा पूछा गया था वैसा ही जवाब देते हुए।

“क्या तुम लोग पूरी रात यहीं खड़े होकर बहस करते रहोगे?” कांस्टेबल ने दीवार के दूसरी तरफ से आवाज लगाई।

वे बाहर निकले और खुली कार में बैठ गए, फिर चल पड़े। ब्लिस का मन कराहते हुए कहने का हुआ: "अलविदा, स्माइल्स।" जैसे ही वे सड़क के उस मोड़ पर पहुँचे जहाँ से मुड़ते ही घर नज़रों से ओझल हो जाता, स्टिलमैन ने बिना किसी खास वजह के पीछे मुड़कर देखा, ठीक उस आखिरी पल में जब घर उनके पीछे सीधी रेखा में दिखाई दे रहा था।

“रुको,” उसने अचानक कहा, परिप्रेक्ष्य के कारण संकुचित हो रही रोशनी की पतली पट्टी को अंगूठे से छूते हुए। “हम उस आखिरी कमरे में बत्तियाँ जलती हुई छोड़ गए थे।”

कांस्टेबल ने तुरंत ब्रेक लगाया। "मुझे वापस जाकर इन्हें बंद करना होगा, वरना ये..."

“हमारे पास अभी समय नहीं है, हमारी बस छूट जाएगी,” स्टिलमैन ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “बस छह मिनट में आने वाली है। पहले हमें चौराहे तक छोड़ दो, फिर तुम वापस आकर खुद उन्हें बाहर निकाल देना।”

“नहीं!” ब्लिस चीखते हुए बेतहाशा चिल्लाया और उछल पड़ा। “इसका कोई मतलब है! मैं इसे यूं ही नहीं छोड़ूंगा! मैं उन बत्तियों को फिर से देखना चाहता हूं; वे मुझे ऐसा करने के लिए कह रही हैं, वे मुझसे विनती कर रही हैं!” इससे पहले कि उनमें से कोई उसे रोक पाता, वह कार का दरवाज़ा खोले बिना ही नीचे कूद गया। वह स्टिलमैन की चीखों और गालियों को अनसुना करते हुए सड़क पर वापस दौड़ने लगा।

“वापस आओ यहाँ, तुम धोखेबाज़! तुमने मुझे वचन दिया था!”

कुछ ही देर में जासूस के पैर ज़मीन पर पड़े और वह अपने कैदी के पीछे दौड़ पड़ा। लेकिन ब्लिस दीवार में बने छेद से अंदर घुस चुका था और बिना किसी चाबी का इंतज़ार किए, ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़े पर टूट पड़ा था। गुस्से से भरे जासूस ने उसे कंधे से पकड़ा और पहुँचते ही उसे ज़ोर से घुमा दिया।

“मुझसे हाथ हटाओ!” ब्लिस ने कर्कश स्वर में कहा। “मैं अंदर जा रही हूँ!”

स्टिलमैन ने उस पर वार किया, लेकिन चूक गया। वार पलटने के बजाय, ब्लिस ने आखिरी बार अपना पूरा वजन दरवाजे पर डाल दिया। लकड़ी के टुकड़े-टुकड़े होकर अंदर की ओर धंस गए, जिससे ताला फ्रेम से चिपका रह गया। ब्लिस मुंह के बल दालान में जा गिरा। वह किसी तरह उठा, अंदर के दरवाजे तक पहुंचा, हाथ अंदर डाला और कमरे में देखे बिना ही बत्ती बुझा दी।

"असल बात तो तब होती है जब वे मैदान पर उतरते हैं," वह हांफते हुए बोला।

स्टिलमैन उससे इसलिए नहीं भिड़ रहा था क्योंकि अंधेरे में उसे एक मिनट के लिए भी वह दिखाई नहीं दिया था। स्विच दूसरी बार क्लिक हुआ। चकाचौंध कर देने वाली कैल्शियमयुक्त छत से रोशनी चमकी। ब्लिस ठीक उसी समय खुले स्थान के बीचोंबीच खड़ा था, जैसा कि वह पहली रात था।

स्टिलमैन गलियारे में कुछ कदम दूर था, एक मिनट तक उसका चेहरा दिखाई नहीं दिया। "तो?" उसने पूछा।

ब्लिस ने बिना कुछ कहे उसकी ओर देखा। उसके चेहरे के भावों ने सब कुछ बयां कर दिया। उसे वही मिला था जो वह चाहता था।

“अरे, ये तो छत के बीचोंबीच नहीं हैं! ये एक तरफ हैं। इसी वजह से ये मुझे अजीब और अप्रत्याशित लग रहे थे। इन्होंने मेरी आँखों को चौंका दिया। याद है, मेरी आँखें पेशेवर रूप से प्रशिक्षित हैं। ये वहाँ नहीं थे जहाँ मैंने उम्मीद की थी, बल्कि थोड़ा आगे थे। और अब जब मुझे इतना पता चल गया है, तो मुझे सब कुछ समझ आ गया है।” उसने उत्साह से स्टिलमैन की बाइसेप्स पकड़ लीं। “अब मुझे समझ आ गया कि कमरे में क्या गड़बड़ है। अब मुझे समझ आ गया कि मुझे यह इतना बेचैन क्यों लग रहा था। यह अपनी असलियत से परे है।”

"क्या?"

“अनुपात बिगड़ा हुआ है। देखो। उस खिड़की को देखो। वह दीवार के बीचोंबीच नहीं है। और क्या तुम देख रहे हो कि उन्होंने इस असमानता को कितनी चालाकी से छुपाने की कोशिश की है? छोटी तरफ एक पतली, टेढ़ी-मेढ़ी तस्वीर; लंबी तरफ एक बड़ी, चौड़ी, मोटी तस्वीर। इससे एक दृष्टिभ्रम पैदा होता है, जिससे दोनों तरफ बराबर लगते हैं। अब इधर आओ और इस तरफ देखो।” उसने जासूस को अपने पीछे खींच लिया, कंधे से पकड़कर उसे घुमा दिया। “हाँ, दरवाजे के फ्रेम के साथ भी यही बात है; वह भी बिल्कुल बीच में नहीं है। लेकिन दरवाजा कमरे के अंदर की ओर खुलता है, छोटी तरफ घूमता है और उसे आंशिक रूप से ढक लेता है, उस पर छाया डालता है, तो इससे समस्या हल हो जाती है। और क्या? और क्या?”

वह बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा था, अपनी नज़र चारों ओर घुमा रहा था। “ओह, हाँ, कालीन। मैं यहाँ बैठा था और मुझसे कुछ राख गिर गई और मैंने ज़मीन की तरफ देखा। देखो मुझे उसमें क्या खटक रहा है? फिर से असंतुलन है। देखो इसके तीन तरफ पॉलिश की हुई लकड़ी की पट्टी है? और चौथी तरफ यह दीवार के बेस बोर्ड से बिल्कुल सटी हुई है। आपकी नज़र अनुपात, समरूपता चाहती है; उसे हर चीज़ में यह चाहिए। अगर उसे यह नहीं मिलता, तो वह असहज हो जाती है। उसे चारों तरफ लकड़ी की वह काली पट्टी चाहिए, या फिर कालीन को चारों बेस बोर्ड को छूना चाहिए, जैसे कोई कालीन—”

वह धीरे-धीरे और धीमी गति से बोल रहा था, मानो कोई रिकॉर्ड बंद होने की कगार पर हो। उसके भीतर किसी प्रकार का तनाव बढ़ता जा रहा था, उसे जकड़ रहा था, स्टिलमैन उसे देखकर समझ गया था। उसने आखिरी कुछ शब्द हांफते हुए कहे, मानो उन्हें बोलने में उसे अपनी पूरी ताकत लगानी पड़ी हो, और फिर उसकी आवाज अचानक ही थम गई।

“तुम्हारा चेहरा इतना पीला क्यों पड़ रहा है?” जासूस ने पूछा। “मान लो कमरा टेढ़ा हो जाए, तो क्या होगा? तुम्हारा चेहरा तो पूरा हरा पड़ रहा है—”

ब्लिस को सहारा देने के लिए एक मिनट के लिए उसका कंधा पकड़ना पड़ा। उसकी आवाज़ में डर साफ झलक रहा था। “क्योंकि—क्योंकि—क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा कि इसका क्या मतलब है? क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा कि यह ऐसा क्यों है? इन दीवारों में से एक नकली दीवार है, जो असली दीवार के सामने बनाई गई है।” उसकी आँखें अविश्वास और डर से चौड़ी हो गई थीं। वह बेसुध होकर अपने बालों को नोच रहा था। “यह सब कितना अजीब है! उसकी माँ से शादी करने से पहले वह राजमिस्त्री था; मैंने तुम्हें बताया था। चौराहे पर दुकानदार ने कहा कि एल्डन ने घर के सामने एक नीची ईंट की दीवार बनवाई थी, ‘सिर्फ अभ्यास के लिए,’ उसने अंदाज़ा लगाया। इसका कोई कारण नहीं था। यह निजता के लिए काफी ऊँची नहीं थी, यह प्लॉट के चारों ओर भी नहीं बनी थी।”

“उसने इसे सिर्फ़ अभ्यास के लिए नहीं बनाया! उसने इसे ठेकेदार से ईंटें मंगवाने के लिए बनाया। ज़रूरत से ज़्यादा। उसने इसे सिर्फ़ ईंटें मंगवाने के बहाने के लिए खड़ा किया। कौन गिनेगा— वहाँ खड़े मत रहो! एक कुल्हाड़ी, एक लोहे की छड़ लाओ; इसे तोड़ने में मेरी मदद करो! क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा कि यह नकली दीवार किस लिए है? क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा कि हमें क्या मिलेगा—”

जासूस को इसे समझने में थोड़ा समय लगा, लेकिन आखिरकार उसे भी समझ आ गया। उसका चेहरा पीला पड़ गया। "यह कौन सा है?"

“यह इसी तरफ होना चाहिए, वह तरफ जो खिड़की, दरवाजे और लाइट से सबसे कम दूरी पर है।” ब्लिस दौड़कर उसके पास गया और मुट्ठी बांधकर उसे ऊपर-नीचे पीटने लगा, ताकि पता चल सके कि वह कहाँ है। उसके चेहरे से पसीना ऐसे उड़ रहा था जैसे तेज हवा में बारिश की बूँदें।

जासूस कमरे से बाहर भागा और खुले दरवाजे की ओर उत्तेजित होकर चिल्लाया:

“कोचरन! अंदर आओ, हमारी मदद करो, औजार ले आओ!”

उन दोनों ने मिलकर एक कुल्हाड़ी, एक लोहे की छड़, एक छेनी और एक ईंट तोड़ने का औजार निकाला। "वह दीवार," जासूस ने कांस्टेबल को समझाने के लिए संक्षेप में कहा, बिना विस्तार में जाए। कॉकरेन ने कोई बहस नहीं की; उन दोनों के चेहरों को देखकर ही उसे समझ आ गया होगा कि कोई भयानक रहस्य उजागर होने वाला है।

ब्लिस अब तक उस पर एक तरफ झुककर, एकदम स्थिर, सिर झुकाए बैठा था, मानो वह उसके आर-पार कुछ सुनने की कोशिश कर रहा हो। लेकिन ऐसा नहीं था। उसका सिर खोज की पीड़ा से झुका हुआ था। "मैंने इसे पा लिया है," उसने दबी हुई आवाज़ में कहा। "मैंने वह जगह पा ली है। सुनो।" उसने एक-दो बार ज़ोर से ठोका। ठोसपन की सपाट गूंज सुनाई दी। वह थोड़ा और आगे बढ़ा, फिर ठोका। इस बार एक अधूरी या अपूर्ण रूप से भरी हुई जगह की गहरी गूंज सुनाई दी। "आधी ईंटें, जिनके पीछे खोखलापन है। कहीं और, पूरी ईंटें, जिनके पीछे गारा है।"

स्टिलमैन ने अपना कोट उतारा और हाथों पर थूका। "कमरे से बाहर निकल जाओ—कहीं तुम सही न हो," उसने सुझाव दिया और कुल्हाड़ी से प्लास्टर तोड़ने के लिए उस पर झपटा। "दरवाजे के बाहर इंतज़ार करो; हम तुम्हें बुला लेंगे—"

“नहीं! मुझे जानना है, मुझे देखना है। हम तीन लोग दो से ज़्यादा तेज़ी से काम कर सकते हैं।” और उसने छेनी के धारदार किनारे से प्लास्टर की परत को खुरचना शुरू कर दिया। कोचरन ने बंग स्टार्टर से उसे तोड़ दिया। जैसे-जैसे वे काम करते रहे, उनके चारों ओर धूल का बादल मंडराता रहा। आखिरकार, उन्होंने दीवार के प्लास्टर में गुलाबी-सफेद ईंटों का एक सीधा, ताबूत के आकार का हिस्सा उजागर कर दिया।

उन्होंने ईंटों के सिरों के बीच की खाली जगह में छेनी घुसाना शुरू किया, स्टिलमैन उसे स्थिर रखे हुए था और कोचरन उसे अंदर तक ठोक रहा था। जब उन्होंने काफी बड़ी जगह में छेद कर लिया, तो उन्होंने लोहे की छड़ का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

"सावधान रहो। उनमें से एक कसरत कर रहा है।"

ईंट का एक टुकड़ा कमरे के आधे हिस्से तक उछलकर गिरा और ज़ोर से आवाज़ हुई। दूसरा भी गिरा। तीसरा भी। ब्लिस ने अपने नंगे नाखूनों से उस छेद को कुरेदना शुरू कर दिया, ताकि वह तेज़ी से बड़ा हो सके।

“तुम तो बस हमारा काम रोक रहे हो; इस तरह हम जल्दी काम कर सकते हैं,” स्टिलमैन ने उसे एक तरफ धकेलते हुए कहा। अधपके मिट्टी के गारे की एक धूसर परत दिखने लगी। यह सिर्फ एक खोल था; सूखे कीचड़ की तरह इसके टुकड़े गिरने लगे थे, कुछ अपने वजन से, कुछ चोटों के प्रभाव से, ईंटों की दीवार में एक छोटी सी खिड़की से ज्यादा कुछ खुलने से बहुत पहले ही।

“पीछे हटो,” स्टिलमैन ने आदेश दिया। उसका उद्देश्य ब्लिस को उस खुलासे के पूरे प्रभाव से बचाना था जो जल्द ही होने वाला था।

अंततः ब्लिस ने उसकी बात मान ली, लड़खड़ाते हुए कमरे के दूसरे छोर तक गया और वहाँ उनकी ओर पीठ करके खड़ा हो गया, मानो खिड़की से बाहर देख रहा हो। लेकिन खिड़की काफी दूर थी। उसकी पीठ में हर थोड़ी देर में एक सिहरन दौड़ जाती थी। उसे ईंटों के टुकड़े दीवार से लगातार गिरते हुए सुनाई दे रहे थे, और फिर अचानक सन्नाटा छा जाता था।

उसने जैसे ही समय मिला, अपना सिर घुमाया और देखा कि वे दीवार की आले से कुछ नीचे उतार रहे हैं। एक सीधी खड़ी चीज़। एक कठोर, ममी जैसी, स्तंभनुमा चीज़ जो देखने में किसी लकड़ी के लट्ठे जैसी लग रही थी जिस पर सीमेंट चढ़ा हो। ईंटों का जो थोड़ा-सा हिस्सा उसे नीचे, ज़मीन की ओर मजबूती से पकड़े हुए था, वह उसे खींचते ही चकनाचूर होकर नीचे बिखर गया। धूल की एक हल्की धुंध ने उन्हें उससे छिपा रखा था। एक-दो मिनट तक वे बस सफेद परछाइयाँ बनकर किसी चीज़ पर काम करते नज़र आए, और फिर वह चीज़ ज़मीन पर पड़ी थी। एक कटी-फटी चीज़ जिसमें इंसानी गुण बिल्कुल नहीं थे, जैसे किसी ढली हुई धातु की मूर्ति के चारों ओर का सांचा—लेकिन जिसका मूल तत्व कुछ और ही था।

“यहाँ से निकल जाओ, ब्लिस,” स्टिलमैन गुर्राया। “यह तुम्हारे लिए जगह नहीं है!”

जंगली घोड़े भी ब्लिस को घसीटकर नहीं ले जा सकते थे। वैसे भी, अब वह सुन्न पड़ चुका था। वह पूरा दृश्य ऐसा था जिसे एक बार जी चुका व्यक्ति कभी नहीं भूल सकता था।

“इससे नहीं,” उसने विरोध किया, जब उसने देखा कि झुके हुए स्टिलमैन ने एक पेननाइफ का बड़ा ब्लेड खोल दिया।

“यही एक चीज है जिसका मैं इस्तेमाल कर सकता हूँ! बाहर जाओ और हमारे लिए थोड़ा पानी ले आओ, देखते हैं कि क्या हम इसे थोड़ा नरम कर सकते हैं, घोल सकते हैं।”

जब ब्लिस बाल्टी भरकर मिट्टी लेकर लौटा, तो स्टिलमैन टीले के एक छोर पर सावधानीपूर्वक काम कर रहा था, चाकू की धार से थोड़ा-थोड़ा छील रहा था, और अपनी उंगलियों से टटोलकर जाँच कर रहा था। वह अचानक रुक गया, कांस्टेबल को एक खामोश भाव से भरी नज़र से देखा और दूसरे छोर पर चला गया। ब्लिस, धुंधली आँखों से घूरते हुए, जहाँ वह काम कर रहा था, वहाँ से एक छोटा सा नीले-काले रंग का टुकड़ा झाँक रहा था—एक महिला के जूते का अगला हिस्सा।

“वह भी उल्टा,” कोचरन ने धीरे से कहा, इस कोशिश में कि ब्लिस उसे सुन न ले। ब्लिस के दांत घबराहट से बज रहे थे।

“मैंने तुमसे कहा था कि यहाँ से चले जाओ!” स्टिलमैन तीसरी और आखिरी बार गुस्से से भड़क उठा। “तुम्हारा चेहरा मुझे पागल कर रहा है!” लेकिन इस बार भी पहले की तरह ही कोई असर नहीं हुआ।

चाकू से छीलने के बाद भी, ऐसा लग रहा था मानो पतले तार उसे कुछ हद तक आपस में बांधे हुए हों। उसने पानी से भरी बाल्टी में अपनी हथेलियाँ गीली कीं और उन जगहों पर हथेलियों के बीच उसे मसलकर मसल दिया। जो पहले सख्त तार जैसे लग रहे थे, वे असल में इंसानी बाल थे।

अंत में उसने उदास स्वर में कहा, "बस बहुत हो गया। वहाँ कोई है; मुझे बस इसी बात की पुष्टि करनी थी। बाकी का मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा; इसके लिए किसी विशेषज्ञ की ज़रूरत होगी।"

"वे शैतान," कोचरन ने अपने गले से निकली गहरी आवाज़ में कहा।

ब्लिस अचानक उन दोनों के बीच गिर पड़ा, इतनी तेज़ी से कि दोनों को लगा जैसे वो एक मिनट के लिए बेहोश हो गया हो। “स्टिलमैन!” उसने धीमी, कांपती हुई आवाज़ में कहा। वो लगभग उस पर झुक रहा था। “बालों की ये लटें— देखो! ये गहरे नीले-काले रंग में से दिख रही हैं! वो तो सुनहरे बालों वाली थी! किसी परी जैसी। ये कोई और है!”

स्टिलमैन ने सिर हिलाया और हैरानी से अपना माथा पकड़ लिया। “हाँ, ऐसा ही होना चाहिए। मुझे इस बात पर यकीन करने की ज़रूरत नहीं है; जानते हो मुझे शुरू से ही क्या समझ जाना चाहिए था? तुम्हारी पत्नी मंगलवार रात से ही लापता है, तीन दिन पहले से। सीमेंट की हालत देखकर साफ पता चलता है कि यह काम कई हफ़्तों से चल रहा है। अरे, दीवार के बाहरी हिस्से का पेंट अभी सूखा भी नहीं होगा, पीछे की भराई तो छोड़ ही दो। इसके अलावा, तीन दिनों में अकेले इतना बड़ा काम करना नामुमकिन था। हम दोनों का दिमाग खराब हो गया था; इससे पता चलता है कि ज़्यादा उत्साहित होना ठीक नहीं होता।”

“ये उसकी माँ है, बस यही है। दोनों नोटों पर लिखावट में अंतर, वो तस्वीर और उस उपनाम वाली बात जिसने तुम्हें उलझन में डाल दिया था, इन सब का जवाब तुम्हें मिल गया। चलो, खड़े हो जाओ और मेरा सहारा लो, हम पता लगाएंगे कि वो अपनी शराब कहाँ रखता है। अगर किसी आदमी को शराब की सबसे ज़्यादा ज़रूरत है, तो तुम्हें है!”

उन्हें रसोई के बाहर एक अलमारी में कुछ मिला, और वे एक मिनट के लिए बैठ गए। ब्लिस का चेहरा ऐसा लग रहा था मानो उसे किसी छेद से खींचकर लाया गया हो। कांस्टेबल लड़खड़ाते पैरों से ताजी हवा लेने बाहर गया था।

ब्लिस ने बोतल नीचे रख दी और फिर से जीवंत दिखने लगी।

“मुझे लगता है मैं भी एक घूंट पी लूँगा,” स्टिलमैन ने कहा। “मैं शराब पीने वाला आदमी नहीं हूँ, लेकिन अभी-अभी मुझे वहाँ जितने भी काम करने को मिले हैं, उनमें से यह सबसे घिनौना काम था।”

कांस्टेबल उनके पास वापस आ गया, उसका चेहरा अभी भी थोड़ा हरा था। उसने भी एक घूंट पिया।

"जब वे पहली बार यहां आए थे तब उनमें से कितने लोग थे?" स्टिलमैन ने उनसे पूछा।

“सिर्फ दो। शुरू से अंत तक सिर्फ वह और उसकी पत्नी।”

"तो फिर तुमने उसे कभी नहीं देखा; उन्होंने उसे नजरों से छिपा दिया, बस इतना ही।"

"वे लोग कुछ हद तक अलग-थलग रहे हैं; आज रात से पहले तक कोई भी उस जगह के अंदर नहीं गया था।"

“हाँ, वही है, असली माँ,” ब्लिस ने जैसे ही अपना मानसिक संतुलन वापस पाया, कहा। “मुझे चेहरा देखने की ज़रूरत नहीं है; मुझे पता है मैं सही हूँ। नहीं, बस। मैं अब ठीक हूँ, और मैं साफ़-साफ़ सोचना चाहता हूँ। स्टिल, तुम भी अब इसे मत छूना। वही होनी चाहिए। क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा कि यह सब कैसे जुड़ा हुआ है? स्माइल्स मंगलवार रात को, या यूँ कहें कि बुधवार की सुबह तड़के यहाँ आई थी; अब मुझे पहले से कहीं ज़्यादा यकीन है। तुमने मेरे घर पर मुझसे एक ऐसा मकसद पूछा था जो मेरे उस संभावित बीमा वाले मकसद को छुपा सके। तो, ये रहा; यही है। मुझसे शादी के तुरंत बाद, उन्हें उससे मिलने की बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। वह यहाँ आई और अपनी माँ की जगह एक धोखेबाज़ को पाया, एक अजनबी जो उसका रूप धारण किए हुए थी। उन्हें उसे जल्दी से चुप कराना पड़ा, ताकि वह शोर न मचा दे। स्माइल्स के मामले में यही तुम्हारा मकसद है।”

“और ये तो वाकई चौंकाने वाली बात है,” स्टिलमैन ने पूरे उत्साह से सहमति जताई। “असल बात ये है कि उन्होंने उसके साथ क्या किया है, वो कहाँ है? हमारी हालत पहले से बेहतर नहीं हुई है। वो यहाँ कहीं नहीं है; हमने तहखाने से लेकर अटारी तक हर जगह छानबीन कर ली है। कहीं कोई और ऐसी रहस्यमयी दीवार तो नहीं है जिसे हम देख नहीं पाए हों।”

"आप यह भूल रहे हैं कि आपने पहले वाले के बारे में जो कहा था, वह अभी भी लागू होता है। इतना विस्तृत इंतजाम करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिला है।"

"मुझे वह पेय नहीं पीना चाहिए था," स्टिलमैन ने स्वीकार किया।

“मुझे पूरा यकीन है कि वह गुरुवार रात तक यहीं थी और ज़िंदा थी। एक और रहस्यमयी बात अचानक मेरे दिमाग में आई। कहीं पानी के पाइप पर दस्तक हुई थी; मुझे समझ नहीं आया कि ऊपर से हुई या नीचे से। मुझे लगता है कि जब तक मैं यहाँ बैठा था, वह कहीं बंधी हुई थी।”

"क्या आपने एक या एक से अधिक आवाजें सुनीं?"

“सिर्फ एक। मैंने देखा कि वह महिला तुरंत उठी और बाहर चली गई, बहाना बनाते हुए कि वह एक नया रुमाल ले आई है। शायद उन्होंने उसे कोई नशीली दवा दी थी, या कोई बेहोशी की दवा दी थी।”

“वो तो तब की बात थी, लेकिन अब क्या?”

"बाहर चारों ओर बहुत सारी जमीन है, एकड़ में फैली हुई, मीलों तक फैली हुई," कोचरन ने निराशावादी लहजे में कहा।

“नहीं, ज़रा रुकिए,” स्टिलमैन ने बीच में टोकते हुए कहा। “चलिए, पहले इसे स्पष्ट कर लेते हैं। अगर उनका मकसद सिर्फ़ उसे गायब करना था, पूरी तरह से मिटा देना, जैसा कि माँ के मामले में हुआ था, तो बात अलग होती। लेकिन मुझे डर है कि हो सकता है कि वह हमें उसी ज़मीन में कहीं दबी हुई मिले जिसकी आप

बात कर रहे हैं। लेकिन आप यह भूल रहे हैं कि उसके कपड़े आपके घर की भट्टी में मिले थे, ब्लिस—यह दर्शाता है कि वे उसे गायब नहीं करना चाहते थे; वे उसकी मौत का दोष पूरी तरह से आप पर डालना चाहते थे।"

"क्यों?"

"सिर्फ़ आत्मरक्षा। सीधे-सीधे गायब हो जाने पर जांच कभी बंद नहीं होती। अंत में, जांच इस दिशा में मुड़ सकती थी, जिससे पहले हत्याकांड का खुलासा हो सकता था, जैसा कि हमने आज रात किया। आप पर इल्ज़ाम लगाने से न केवल यह जोखिम टल जाता, बल्कि आप भी बेनकाब हो जाते—उनके लिए सब कुछ साफ़ हो जाता। पहले हत्याकांड की रक्षा के लिए दूसरा हत्याकांड, दूसरे को पक्का करने के लिए कानूनी फांसी। लेकिन—आप पर पूरी तरह से इल्ज़ाम लगाने के लिए, शव आपके आस-पास ही मिलना चाहिए, यहाँ बिल्कुल नहीं। कपड़े इसका संकेत थे।"

लेकिन क्या वे उसे मेरे घर वापस लाने का जोखिम उठाएंगे, यह जानते हुए कि आप लोग उस पर नज़र रख रहे होंगे, जबकि उन्होंने खुद ही मेरी शिकायत आप लोगों से कर दी है? यह तो अपने ही सिर को फंदे में डालने जैसा होगा। उन्हें पता होगा कि उन पर कड़ी निगरानी रखी जाएगी।

"नहीं, ऐसा नहीं होता। देखिए, बस से लिफ्ट लेने के आपके अचानक फैसले की वजह से दो गड़बड़ें हुईं। जब आप टर्मिनल पर नहीं पहुँचे, तो हम न सिर्फ आपको ढूंढने के लिए आपके घर गए, बल्कि वहाँ जाने की वजह से हमें भट्टी में रखे कपड़े उम्मीद से पहले ही मिल गए। मुझे नहीं लगता कि उन्हें तब तक मिलना चाहिए था जब तक कि शव भी वहाँ न पहुँच जाए।"

"तो फिर एक ही चक्कर लगाने के बजाय दो चक्कर क्यों लगाए गए? जब स्माइल्स के कपड़े ले गए, उसी समय उसे भी क्यों नहीं ले गए?"

"उसे पहली बार में जल्दी से अंदर जाना पड़ा ताकि वह उस बस से बच सके। शायद उन्हें लगा होगा कि उसे साथ ले जाना बहुत जोखिम भरा होगा। उसे आपके परिसर से भी परिचित होना था, अंदर जाने का कोई रास्ता खोजना था, और आगे बढ़ने से पहले यह पता लगाना था कि सब कुछ संभव है या नहीं। उन्हें लगा कि हमसे संपर्क करने से—वैसे यह कोई आरोप नहीं था, बल्कि केवल एक अनुरोध था कि हम जांच करें—आप रास्ते से हट जाएंगी, उनके लिए रास्ता साफ हो जाएगा। उन्हें उम्मीद थी कि आपको चौबीस-अड़तालीस घंटे तक लगातार हिरासत में रखा जाएगा और पूछताछ की जाएगी। उन्हें लगा था कि उन्होंने खुद को सुरक्षा का पर्याप्त मार्जिन दे दिया है। लेकिन बस न लेने की आपकी विफलता ने इसे और भी कम कर दिया।"

ब्लिस अचानक उत्तेजित हो गया। "क्या तुम्हें लगता है कि वह अभी तक...?" वह यह शब्द बोल ही नहीं पाया।

"यह तर्कसंगत है कि वे इसे अंतिम क्षण तक टालना मूर्खता होगी। इससे उसे ले जाने का जोखिम सौ गुना बढ़ जाएगा। और वे उसे उस जगह के अलावा कहीं और ले जाना पागलपन होगा जहाँ वे उसे अंततः पाए

जाने की उम्मीद करते हैं। अन्यथा, हमारे लिए यह अनुमान लगाना बहुत आसान हो जाएगा कि उसकी हत्या कहीं और की गई थी और बाद में उसे यहाँ लाया गया था।"

"तो फिर संभावना यही है कि जब वे उसे यहाँ से लेकर गए थे तब वह जीवित थी! अभी भी समय हो सकता है; वह अभी भी जीवित हो सकती है! हम यहाँ इस तरह क्यों बैठे हैं?"

वे दोनों एक साथ बाहर भागे, लेकिन ब्लिस सामने के दरवाजे की ओर बढ़ी, जबकि स्टिलमैन हॉल में रखे फोन की ओर चल पड़ा।

तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?

"नगर मुख्यालय को सूचना दीजिए। हम उसे बचाने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं? उनसे कहिए कि वे आपके घर के चारों ओर घेरा डाल दें—"

ब्लिस ने उसके हाथों से हथियार छीन लिया। "नहीं! ऐसा करने से तो तुम उसे और जल्दी मार डालोगे! अगर हम उन्हें डराकर भगा देंगे, तो हम उसे कभी बचा नहीं पाएंगे। वे आपा खो बैठेंगे, उसे कहीं भी मार डालेंगे और उससे छुटकारा पाने के लिए उसे कहीं छोड़ देंगे। इस तरह, कम से कम हमें पता रहेगा कि वह मेरे घर में या उसके आस-पास कहीं होगी।"

लेकिन यार, क्या तुम्हें पता है कि उन्हें कितनी बड़ी बढ़त मिली हुई है?

"हम उनसे बस पाँच या दस मिनट से चूक गए। चूल्हे पर रखी उस कॉफी पॉट को याद है?"

फिर भी, राज्य पुलिस के साथ भी, मुझे संदेह है कि हम दो घंटे से कम समय में अंदर पहुँच पाएंगे।

"और मैं कहता हूँ कि हमें जोखिम उठाना ही होगा! आपने पहले भी उनके टायरों के निशान देखे होंगे। उनके टायर में बहुत बड़ा नुकसान है, और वो उस खराब हिस्से को पार नहीं कर पाएंगे। मैंने कल रात उनकी कार को तेज़ी से गुज़रते देखा था, और उनके पास कोई स्पेयर टायर नहीं था। वहाँ मीलों तक कोई पेट्रोल पंप नहीं है। इन सब बातों से उनकी शुरुआती बढ़त कम हो जाएगी।"

"क्या आप अपनी पत्नी की जान को पंचर टायर के बदले दांव पर लगाने को तैयार हैं?"

"मैं और कुछ नहीं कर सकता। मुझे पूरा यकीन है कि अगर आप पहले से अलार्म बजा दें और मेरे घर के चारों ओर घेराबंदी कर दें, तो उन्हें गंध आ जाएगी और वे वहाँ से दूर भाग जाएँगे और उसे लेकर कहीं और चले जाएँगे जहाँ हम समय पर उस तक नहीं पहुँच पाएँगे, क्योंकि हमें पता ही नहीं होगा कि वह कहाँ है। अरे, बात करने में जितना समय हमने बर्बाद किया है, उतने में तो हम मीलों दूर पहुँच चुके होंगे।"

"ठीक है," जासूस ने झल्लाकर कहा, "हम तुम्हारी बात मानेंगे! क्या तुम्हारी यह कार ठीक-ठाक है?" उसने कोचरन से पूछा और कार में बैठ गया।

"इस इलाके में सबसे तेज़ गाड़ी," कांस्टेबल ने गंभीर स्वर में कहा और गाड़ी के पहिए के नीचे सरक गया।

"ठीक है, आप जानते हैं कि आपको इसके साथ क्या करना है: उनकी शुरुआती बढ़त को बिल्कुल खत्म कर देना है, नगण्य से भी कम; आपको हमें पांच मिनट पहले ही लक्ष्य तक पहुंचाना है।"

“अपनी सीटों पर नीचे झुक जाइए और अपने दांतों को कसकर पकड़ लीजिए,” कोचरन ने वादा किया। “जो कुछ हमने अभी-अभी वहाँ पाया है, वह मेरे अधिकार क्षेत्र में हुआ है, यह मत भूलिए—और देश का कानून आज रात हमें यह सड़क देता है!”

यह एक अविश्वसनीय सफर था; अविश्वसनीय इसलिए कि वे सड़क पर सीधे खड़े रहे। स्पीडोमीटर की सुई लगातार आसमान छूती रही। दोनों ओर का नजारा धुंधला सा दिख रहा था। हवा के दबाव से उनकी आंखों की पुतलियां इतनी चुभ रही थीं कि वे उन्हें मुश्किल से ही खोल पा रहे थे। सौभाग्य से, कांस्टेबल पढ़ने का चश्मा पहनते थे और संयोग से सफर शुरू होने के समय वह उनके पास ही था। उन्होंने सड़क पर बने रहने के लिए ही चश्मा पहन लिया।

उन्हें आत्मरक्षा के लिए उस खराब मोड़ को धीमी गति से पार करना पड़ा, ताकि उनके साथ भी वही न हो जो उन्हें एल्डन की कार के साथ होने की आशंका थी। एक सही टायर शायद बिना किसी नुकसान के उस मोड़ को पार कर लेता, लेकिन जो टायर पहले से ही खराब था, उसका फट जाना लगभग तय था।

"क्या आपको नहीं लगता कि पिछली रात यहाँ से गुजरते समय उसे इस बात का एहसास हो गया होगा और उसने एहतियात बरती होगी?" स्टिलमैन ने तेज हवा के बीच ब्लिस पर चिल्लाते हुए कहा।

“उसने भी ठीक वैसे ही जोखिम उठाया जैसे हम अभी उठा रहे हैं। यहाँ से आगे पहले पेट्रोल पंप पर एक मिनट रुककर देखते हैं कि वह बच निकलता है या नहीं।” वह जानता था कि अगर वह बच निकला, तो इसका मतलब था कि उन्हें वहीं से वापस लौट जाना चाहिए; स्माइल्स तो लगभग मर ही चुका था।

खराब सड़क पार करने के बाद भी, जिस रफ्तार से उन्होंने गाड़ी चलाना शुरू किया था, वह भी बीस मिनट तक दिखाई नहीं दी। अगर टायर पंचर हो जाता, या किसी को लाने के लिए टो कार भेजी जाती, तो वहाँ पहुँचने में एक घंटा या उससे भी ज़्यादा समय लग जाता।

"क्या आज रात हमारी तरफ से कोई टायर पंचर ठीक करने आया था?" स्टिलमैन ने अटेंडेंट पर चिल्लाते हुए कहा।

“और कैसे!” वह आदमी चिल्लाते हुए उनकी ओर दौड़ा। “वह पंचर नहीं था! वह पहिए के चारों ओर रिबन बांधकर लड़खड़ाते हुए यहाँ आया। इतने लंबे समय तक उस पर सवारी करने से रिम भी पूरी तरह से चपटा हो गया था।”

“वह?” स्टिलमैन ने दोहराया। “क्या उसके साथ दो महिलाएं या कम से कम एक महिला नहीं थी?”

"नहीं, बस एक अकेला आदमी।"

ब्लिस ने दबी आवाज़ में कहा, "शायद वह स्माइल्स के साथ सड़क पर कुछ दूर छिपकर उसका इंतज़ार कर रही थी, ताकि कोई उसे देख न सके; फिर काम खत्म होने पर उसने उन्हें वापस ले लिया। या अगर स्माइल्स चल सकती थी, तो शायद वे पैदल ही घूमकर आगे जाकर कार में बैठ गए होंगे।"

“मोटे शरीर वाला, बैल जैसी गर्दन वाला, छोटी-छोटी आँखों वाला और बिखरे हुए लाल बालों वाला आदमी?” कांस्टेबल ने स्टेशन ऑपरेटर से पूछा।

"हाँ।"

“ये वही है। उसने यहाँ से कब अपना सामान निकाला था?”

"मेरे ख्याल से एक घंटे से ज्यादा पहले की बात नहीं है।"

“देखा? हमने उनकी शुरुआती बढ़त को काफी हद तक कम कर दिया है,” ब्लिस ने खुशी जताते हुए कहा।

"यह अभी भी मेरे लिए बहुत ज्यादा है," जासूस ने जवाब दिया।

“अगले लैप के लिए तुममें से कोई एक स्टीयरिंग संभालो,” कोचरन ने कहा। “मुझ पर बहुत ज़ोर पड़ रहा है। बेहतर होगा कि मैं ये चश्मा पहन लूँ।” उन्होंने स्टिलमैन को अपना पढ़ने वाला चश्मा पकड़ा दिया।

पेट्रोल पंप और उसकी गोल रोशनी उनके पीछे से तेज़ी से निकल गई और वे एक बार फिर पूरी रफ्तार से दौड़ने लगे। अगले बीस मिनट के भीतर ही, अपनी तेज़ गति के कारण, उन्हें राज्य पुलिस की मोटरसाइकिल एस्कॉर्ट मिल गई; उन्होंने बस थोड़ी देर के लिए अपनी गति धीमी की ताकि वे अपने बैज दिखा सकें और अपनी बात समझा सकें। यह उनके लिए अच्छा ही हुआ; इससे उनके रास्ते में आने वाले कस्बों और प्रतिबंधित गति वाले इलाकों से निकलने का रास्ता साफ हो गया। उनकी गति का अंदाज़ा लगाने के लिए, सीधी सड़क पर कई बार उनके एस्कॉर्ट को उनके साथ चलने में मुश्किल हो रही थी। फिर भी, वे इतनी तेज़ी से नहीं चल रहे थे कि ब्लिस संतुष्ट हो जाए। वह कभी आशावादी हो जाता, कभी सीट के किनारे पर आगे की ओर झुककर, मुट्ठी भींचकर, दांत पीसते हुए कहता: "हम कर लेंगे; हम समय पर पहुँच जाएँगे; मुझे पता है!" और निराशा के दौरे पड़ते ही, वह अपने कंधों के बल गिर पड़ता और कराहते हुए कहता, "हम कभी नहीं पहुँच पाएँगे! मैं मूर्ख हूँ; मुझे तुम्हें पहले ही फ़ोन करने देना चाहिए था जैसा तुम चाहते थे! क्या तुम इस चीज़ को ज़रा भी हिला नहीं सकते?"

“उस स्पीडोमीटर को देखो,” गाड़ी चला रहे आदमी ने रूखेपन से कहा। “सुई अब डायल से बाहर ही गिरेगी! आराम से, ब्लिस। वे इस रफ्तार से भाग नहीं सकते; हम आधिकारिक तौर पर पकड़े गए हैं, याद है ना। एक और बात, वहाँ पहुँचने के बाद, वे पहले बहुत सावधानी से रेकी करेंगे। इससे उनकी शुरुआती बढ़त और कम हो जाएगी। और आखिर में, जब वे वहाँ पहुँच जाएँगे, तब भी वे धीरे-धीरे चलेंगे, पहले सारी तैयारियाँ करेंगे, ताकि सब ठीक लगे। यह मत भूलो, उन्हें लगता है कि उनके पास पूरी रात है; उन्हें नहीं पता कि हम उनका पीछा कर रहे हैं।”

"और यह अभी भी बाल-बाल बचने जैसा ही होगा," ब्लिस ने दांत भींचते हुए जोर देकर कहा।

शहर की सीमा पर पहुँचकर राज्य पुलिस के एस्कॉर्ट ने हाथ के इशारे से विदा ली, एक तीखा मोड़ लिया और उन्हें वहीं छोड़ दिया। अब उन्हें गति धीमी करनी ही थी, हालाँकि रात के इस समय यातायात हल्का था। ब्लिस ने स्टिलमैन को शॉर्टकट रास्ता दिखाया, जो उन्हें पीछे से उसके घर तक ले जाएगा। डेढ़ ब्लॉक दूर जाकर स्टिलमैन ने इंजन बंद कर दिया, घने पेड़ों के नीचे चुपके से गाड़ी रोक दी और समय के साथ लंबी, कठिन दौड़ समाप्त हो गई—हालाँकि उन्हें अभी तक पता नहीं था कि यह सफल हुई थी या नहीं।

“अब मेरे पीछे आओ,” ब्लिस ने नीचे उतरते हुए धीरे से कहा। “मुझे उम्मीद है कि हमने कार को ज्यादा पास नहीं लाया; इस समय आवाजें बहुत दूर तक जाती हैं।”

“वे हमारी उम्मीद नहीं कर रहे होंगे।” लंबे समय तक बिना हिले-डुले गाड़ी चलाने के कारण स्टिलमैन का एक पैर जवाब दे गया; उसे लंगड़ाते हुए चलना पड़ा और पैर पर थपथपाना पड़ा जब तक कि उसमें रक्त संचार वापस नहीं आ गया। कोचरन सबसे पीछे था।

जब वे ब्लिस के घर के बगल वाले घर के पिछले हिस्से से बाहर निकले और उस संकरी नहर के पार सामने वाली सड़क को देख सके, तो ब्लिस ने अपने साथियों के हाथ को छुआ और अर्थपूर्ण ढंग से इशारा किया। एक धुंधली सी कार दिखाई दी, जो उन्हीं घने पेड़ों के नीचे खड़ी थी जहाँ स्टिलमैन खुद ब्लिस का इंतज़ार करते हुए छिपा था। वे कार के अंदरूनी हिस्से को नहीं देख पाए।

“इसमें कोई है,” कोचरन ने हांफते हुए कहा। “मुझे लगता है कि यह एक महिला है। मुझे स्टीयरिंग व्हील पर एक नंगी बांह का सफेद घुमाव दिखाई दे रहा है।”

“तुम वो कार ले जाओ, हम घर ले लेंगे; इस समय तक तो वो उसके साथ बहुत पहले ही अंदर जा चुका होगा,” स्टिलमैन ने बुदबुदाते हुए कहा। “क्या तुम इतनी खामोशी से आ सकते हो कि उसे हॉर्न बजाने या किसी भी तरह से उसे इशारा करने का समय न मिले?”

“मैं यह सुनिश्चित करूँगा!” यह दृढ़ निश्चय वाला उत्तर था। कोचरन एक प्रेत की तरह मुड़ गया और उन दोनों को अकेला छोड़कर चला गया।

चौकीदार की वजह से वे घर के सामने नहीं जा सकते थे, और कोचरन के उसे काबू में करने का इंतज़ार करने का समय भी नहीं था। "बिल्कुल लेट जाओ और मेरी तरह करो," ब्लिस ने फुसफुसाते हुए कहा। "वह शायद घर के पीछे वाले हिस्से से ज़्यादा बाहर सड़क पर नज़र रख रही होगी।" वह घुटनों के बल बैठ गया, ठुड्डी को लगभग घुटनों तक झुकाकर, बीच की जगह को पार करते हुए अपने घर के पीछे वाले हिस्से में छिप गया।

"हम रसोई की खिड़की से अंदर जा सकते हैं," स्टिलमैन के उसके बाद अंदर जाने के बाद ब्लिस ने निर्देश दिया। "उसकी कुंडी कभी ठीक से काम नहीं करती थी। मुझे माचिस की एक थैली दो, और अपने हाथों से पैर रखने की जगह बना लो।"

जब ब्लिस एक पैर खिड़की की चौखट के बाहर रखकर खड़ा हुआ और उसका साथी दूसरे पैर को सहारा दे रहा था, तब उसने उस पर चिपके सैंडपेपर और माचिस को फाड़कर फेंक दिया। बचे हुए गत्ते के टुकड़े को उसने एक कामचलाऊ उपकरण की तरह इस्तेमाल किया और उसे खिड़की के दोनों हिस्सों के बीच की दरार में डालकर, उसके सहारे खिड़की के कुंडी को हटा दिया। कुछ ही देर में उसने नीचे का शीशा उठा लिया और कमरे में पहुँच गया। उसने स्टिलमैन की ओर हाथ बढ़ाकर उसे भी उठने में मदद मांगी।

वे दोनों एक मिनट तक अंधकार में बिल्कुल स्थिर खड़े रहे, पूरी ध्यान से सुनने की कोशिश करते रहे। उन तक कोई आवाज़ नहीं पहुँची, प्रकाश की एक किरण भी नहीं दिखी। ब्लिस के दिल में संदेह का एक ठंडा चाकू चुभ उठा।

“क्या वो यहाँ है भी?” उसने गहरी साँस ली। “हो सकता है सामने वाली गाड़ी किसी और की हो।”

ठीक उसी क्षण, मिट्टी के गिरने की धुंधली लेकिन स्पष्ट आवाज़ सुनाई दी, जो किसी गड्ढे या गुहा में वापस गिरती है। सड़कों पर नाली भरते समय ऐसी आवाज़ सुनाई देती है। कब्रिस्तान में कब्र को ढकते समय ऐसी आवाज़ सुनाई देती है। इस घर की खामोशी में, आधी रात के सन्नाटे में, यह आवाज़ किसी अंतिम क्षण की घंटी जैसी थी। अंतिम संस्कार।

ब्लिस ने दहशत से कराहते हुए एक गहरी सांस ली और अंधेरे में लड़खड़ाकर आगे बढ़ गई।

“वह तो पहले ही पार कर चुका है!”

आवाज मानो उनके नीचे से आ रही थी। ब्लिस तहखाने के दरवाजे की ओर बढ़ा। उसके पीछे स्टिलमैन के भारी कदमों की आहट सुनाई दी, छिपने का ख्याल उसके दिमाग से निकल चुका था।

ब्लिस ने तहखाने की ओर जाने वाला दरवाज़ा खोला और फिर उसे वापस बंद कर दिया। एक पल के लिए, और बस इतना ही, नीचे से हल्की पीली रोशनी चमकी। फिर वह इतनी जल्दी बुझ गई कि उन्हें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। ऊपर की तरह नीचे भी घोर अंधेरा था और एक भयावह सन्नाटा छाया हुआ था।

ब्लिस के कंधे के ठीक ऊपर कुछ चटकने की आवाज़ आई, और स्टिलमैन की मशाल की हल्की रोशनी तहखाने के फर्श से चमक उठी, और चारों ओर घूमने लगी, किसी चीज़ पर केंद्रित होने की तलाश में। पल भर में आग की एक भयंकर लपट मूल गोले, यानी परावर्तक की ओर बढ़ी, और कुछ ब्लिस के पास से गुज़रते हुए दीवार से टकरा गया, तभी नीचे एक ज़ोरदार धमाके की आवाज़ सुनाई दी।

ब्लिस को यह महसूस हो गया था, हालांकि वह बता नहीं सकता था, कि स्टिलमैन उसके पीछे बंदूक उठा रहा है। उसने हाथ बढ़ाकर जासूस की आस्तीन पकड़ी और उसे नीचे खींच लिया। "नहीं! वह नीचे कहीं गोलीबारी की चपेट में आ सकती है!"

उसके कंधे के ऊपर से कुछ निकला। न तो बंदूक, न गोली, बल्कि खुद मशाल। स्टिलमैन उसे जलती हुई ही नीचे फेंककर एक तरह का रेडीमेड स्टार शेल बनाने की कोशिश कर रहा था। फर्श पर रोशनी का घेरा धूमकेतु की तरह तेजी से फैला, छत पर चमका, दूसरी तरफ गिरा और दूर की दीवार से टिक गया—जिसमें एक पतलून का पैर घुटनों से नीचे तक रोशनी में सीधा चमक रहा था। वे चमकती रोशनी से बचने के लिए एक तरफ कूदने की कोशिश में लड़खड़ा गए, लेकिन इतनी जल्दी नहीं कर पाए। स्टिलमैन ने अपनी बंदूक घुटने पर तानी और गोली चला दी। पैर झटके से हिले, लड़खड़ाए, रोशनी की तरफ आगे की ओर मुड़ गए, जिससे धड़ और सिर फर्श पर दिखाई देने लगे। गिरने के बाद, मशाल की रोशनी अजीब तरह से लाल बालों की गोलाकार लटों से घिरे एक गंजे सिर के ठीक बीचोंबीच केंद्रित थी। वह एक विशाल शुतुरमुर्ग के अंडे की तरह इधर-उधर लुढ़का और दर्द से चीखता हुआ तहखाने के फर्श पर जा गिरा।

“मैं उसे ले जाऊंगा,” स्टिलमैन ने गुस्से में कहा। “तुम वो बत्ती जलाओ!”

ब्लिस ने लटकते हुए बिजली के तार को टटोला, जो अभी-अभी उनके लिए इतनी बड़ी बाधा बन गया था क्योंकि वह तहखाने के बीचोंबीच पड़ा था, दरवाजे के पास नहीं जहाँ से वे उसे आसानी से पकड़ सकते थे। उसने तार को पकड़ा, स्विच ढूंढा और उसे घुमा दिया। उसके छूते ही पूरे कमरे में खौफ छा गया, गहरे काले साये और हल्के पीले रंग के धब्बे छा गए। एल्डन ने अभी-अभी फावड़ा चलाना शुरू ही किया था कि उसने उनके आने की आवाज सुनी, वह ताजा खोदी गई मिट्टी के ढेर पर आधा पड़ा था। उसके पास ही वे सपाट पत्थर पड़े थे जो उस ढेर के ऊपर बिछे थे, तहखाने का फर्श थे, और वह कुल्हाड़ी भी थी जिससे उन्हें ढीला किया गया था। वह औजार कार में अपने साथ लाया होगा, क्योंकि वे ब्लिस के नहीं थे।

और उस टीले के दूसरी ओर—वह छोटा लेकिन गहरा गड्ढा था जहाँ से मिट्टी निकली थी। एल्डन ने अकेले ही इतना काम कर लिया था, तो लगता है वह काफी समय से यहाँ काम कर रहा होगा। फिर भी, हालाँकि वे उसके काम खत्म होने से पहले ही पहुँच गए थे, लेकिन फिर भी बहुत देर हो चुकी थी—क्योंकि गड्ढे में, ऊपर से एक-दो इंच तक भरा हुआ और किनारों को और भी कसकर बंद किया हुआ, एक पुराना, गहरा संदूक रखा था जो शायद स्माइल्स की माँ का रहा होगा और कार के ट्रंक कंपार्टमेंट में रखा हुआ आया होगा। और चौकोर होने के बावजूद, वह इतना छोटा लग रहा था कि उसमें कोई भी पूरी तरह से समा नहीं सकता था।

ब्लिस ने नीचे की ओर इशारा करते हुए, दर्द भरी आवाज़ में कहा, "वह—वह—"

वह सिमटकर अपने आप को सामने पड़े मिट्टी के टीले पर बेजान होकर गिरने देना चाहता था। स्टिलमैन के तीखे, चाबुक जैसे आदेश ने उसे सीधा खड़ा रखा। "रुको! आ रहा हूँ!"

जब उनकी पीठ मुड़ी हुई थी, तब उसने एल्डन की खोपड़ी के पिछले हिस्से पर अपनी बंदूक के बट से वार किया, ताकि वह घायल न हो सके। वह मिट्टी के टीले पर उछला और गड्ढे के पार दूसरी तरफ चला गया, फिर पेड़ के तने के पास नीचे उतरकर उसे खींचने लगा।

“यहाँ खून का कोई निशान नहीं है; हो सकता है उसने उसे ज़िंदा ही अंदर डाल दिया हो। जल्दी करो, ढक्कन उठाने में मेरी मदद करो! पूरा ढक्कन उठाने की कोशिश में समय बर्बाद मत करो; बस ढक्कन उठाओ। इसमें थोड़ी हवा आने दो—”

वह उन दोनों के बीच से अचानक ऊपर उठा, और उसके अंदर बोरी का एक ढेर पड़ा था, जो दयनीय रूप से मुड़ा हुआ था। वह अभी भी कमजोर रूप से हिल रहा था। संघर्ष करने के बजाय, वह रुक-रुक कर फड़फड़ा रहा था।

स्टिलमैन ने आज रात से पहले जिस पेननाइफ का इस्तेमाल किया था, उसका ब्लेड अचानक बाहर निकला और खुरदरी सतह पर ज़ोर से वार करने लगा। दरारों से एक विकृत चेहरा दिखाई दिया, लेकिन अब वह स्माइल्स का चेहरा नहीं था—घुटन से काला पड़ा हुआ चेहरा, जिसमें जीवन की आखिरी चिंगारी भी बुझने वाली थी। और अगर उसे जल्दी से वापस नहीं जगाया गया, तो शायद वह बुझ ही जाए।

उन्होंने उसे उठाकर ज़मीन पर सीधा लिटा दिया। स्टिलमैन ने उसकी गर्दन के चारों ओर बेरहमी से लिपटी रस्सी के छोटे टुकड़े को आरी से काटना शुरू किया, जो दम घुटने का कारण था। कुछ ही सेकंड में, जो सदियों जैसे लग रहे थे, उसने रस्सी को काटकर अलग कर दिया, फिर उसे खोलकर फेंक दिया। इस बीच, ब्लिस अपने फटे-पुराने बोरे के टुकड़े उतार रही थी। उसने सफेद रेशमी स्लिप पहनी हुई थी।

स्टिलमैन सीधा खड़ा हुआ और सीढ़ियों की ओर भागा। "जैसे दम घुटने वाले बच्चों के साथ करते हैं, वैसे ही उसके मुंह में सांस भरो। मैं पल्मोनरी सर्जन को बुलाता हूँ।"

लेकिन जब वह वापस नीचे आया, तब तक लड़ाई जीती जा चुकी थी; वे दोनों, भले ही आम लोग थे, यह बात समझ गए थे। उसके चेहरे से गहरा कालापन धीरे-धीरे छंट रहा था, उसकी छाती अपने आप ऊपर-नीचे हो रही थी, वह बुरी तरह खांस रही थी और होश में आने के संकेत देते हुए हल्की-हल्की सिसकियाँ भर रही थी। आपातकालीन उपकरण के आने पर भी, उन्होंने उसे ऊपर की मंजिल पर ले गए, ताकि पूरी तरह से आश्वस्त हो सकें। जब वे दोनों ऊपर थे और पल्मोटर मशीन को उस पर इस्तेमाल होते हुए देख रहे थे, तभी उनके नीचे तहखाने में एक गोली की आवाज गूंजी, जो भयावह अंत का संकेत दे रही थी।

स्टिलमैन ने कमर पर हाथ रखते हुए कहा, "उससे बंदूक लेना भूल गया। खैर, कोचरन के कैदियों में से एक गया!"

वे तहखाने की सीढ़ियों की ओर दौड़े, बीच में ही रुक गए, एक के पीछे एक, नीचे पड़े एल्डन के बेजान शरीर को देखने लगे। वह अभी भी औंधा पड़ा था, उसी स्थिति में जैसे पहले था। एक हाथ, जो छाती के स्तर पर शरीर के नीचे मुड़ा हुआ था, और पसलियों के चारों ओर उठता हुआ धुएं का एक हल्का सा गुच्छा, अंतर बता रहा था।

“मैं कैसा जासूस हूँ!” स्टिलमैन ने घृणा से कहा।

“यही बेहतर है,” ब्लिस ने चुपचाप जवाब दिया। “मुझे लगता है कि आज रात उसने उसके साथ जो करने की कोशिश की, उसके बाद तो मैं उसे यहाँ से ले जाने से पहले ही अपने हाथों से मार डालती!”

जब वे वापस ऊपर लौटे, तब तक कोचरन उस महिला के साथ अंदर आ चुका था। एक इंटर्न उन दोनों को आयोडीन लगाकर पट्टियाँ बाँध रहा था।

“क्या हुआ?” स्टिलमैन ने रूखेपन से पूछा। “लगता है उसने तुम्हें उससे ज़्यादा परेशान किया है जितना उसने हमें किया।”

“क्या आपने कभी किसी बेकाबू कार के बाहर लटकने की कोशिश की है, जब ड्राइवर आपको झटक कर गिराने की कोशिश कर रहा हो? मैं उसके बिल्कुल पास पहुँच गया था, तभी तहखाने से गोलियों की आवाज़ आई और उसे पता चल गया कि एल्डन अब मुसीबत में पड़ने वाला है। उसके एक मिनट में एक मील की रफ्तार से भागने से पहले मेरे पास सामान रखने की रैक पर छलांग लगाने का ही समय था। मुझे रनिंग बोर्ड के सहारे आगे बढ़ना पड़ा, जबकि वह दो पहियों पर इधर-उधर घूम रही थी। आखिर में वह एक कचरा ढोने वाले ट्रक से टकरा गई; पता नहीं कैसे हम दोनों बच गए।”

“ठीक है, कोचरन, अब वो तुम्हारी है,” स्टिलमैन ने कहा। “लेकिन पहले मुझे तुमसे इजाज़त लेनी होगी कि मैं उसे अपने साथ मुख्यालय ले जाऊं। ब्लिस, तुम भी।” उसने अपनी घड़ी देखी। “मैंने अपने लेफ्टिनेंट से वादा किया था कि मैं ज़्यादा से ज़्यादा नौ बजे तक तुम्हारे साथ पहुंच जाऊंगा, और मैं वादा निभाने में बहुत पक्का हूं। थोड़ी देर हो जाएगी, लेकिन कुछ अप्रत्याशित परिस्थितियां आ गईं।”

मुख्यालय में, ब्लिस, स्टिलमैन, कोचरन, जासूसों के लेफ्टिनेंट और आवश्यक पुलिस स्टेनोग्राफर की उपस्थिति में, एल्डन के साथी को बात करने के लिए राजी किया गया।

“मेरा नाम इरमा गिलमैन है,” उसने बोलना शुरू किया, “और मेरी उम्र उनतालीस साल है। मैं पहले एक बड़े महानगरीय अस्पताल में प्रशिक्षित नर्स थी। मेरी लापरवाही के कारण मेरे दो मरीजों की जान चली गई, और मुझे नौकरी से निकाल दिया गया।”

“मैं जो एल्डन से छह महीने पहले मिला था। उनकी पत्नी बीमार थीं, इसलिए मैं उनकी देखभाल करने के लिए उनके साथ रहने चला गया। उनके पहले पति ने उन्हें काफी संपत्ति विरासत में दी थी, जिसमें कई लेन-देन योग्य बॉन्ड शामिल थे। मेरे आने से पहले ही एल्डन उनमें से कुछ बॉन्ड अपने नाम कर चुके थे, लेकिन अब जब मैं वहाँ था, तो वह उन्हें पूरी तरह से हटाना चाहते थे, ताकि हम बाकी बॉन्ड पर कब्ज़ा कर सकें। मैंने उनसे कहा कि वह वहाँ कुछ भी नहीं कर पाएंगे, जहाँ हर कोई उन्हें जानता है; उन्हें पहले उन्हें कहीं और ले जाना होगा। वह घर की तलाश में निकल पड़े, और जब उन्हें डेनबी में एक घर पसंद आया, तो वह मुझे बिना उनकी पत्नी के उसे दिखाने ले गए, और एजेंट के सामने मुझे अपनी पत्नी बताकर पेश कर दिया।”

“हमने सारी व्यवस्था कर ली थी, और जब जाने का दिन आया, तो वह सामान ढोने वाली वैन लेकर आगे बढ़ गया। मैं अंधेरा होने के बाद कार से उसके पीछे-पीछे गई। इस तरह हम देर रात वहाँ पहुँचे; उसे अंदर जाते देखने के लिए वहाँ कोई नहीं था। और तब से, डेनबी में जहाँ तक किसी को पता था, घर में हम दोनों ही रहते थे, तीन नहीं। हमने उसे बंद करके नहीं रखा, लेकिन हमने उसे पीछे वाले कमरे में रखा, जहाँ से वह सड़क से दिखाई नहीं देती थी, और खिड़की पर बारीक जाली लगा दी। वैसे भी वह ज़्यादातर समय बिस्तर पर ही रहती थी, और इससे उसकी मौजूदगी को छिपाना आसान हो गया।”

"हमारे घर में आते ही उसने अपनी तैयारियां शुरू कर दीं। उसने सामने एक छोटी सी दीवार बनाना शुरू कर दिया, ताकि बाद में असली काम के लिए ज़रूरी ईंटें और अन्य सामग्री मंगवाने का बहाना मिल सके। ज़ाहिर है, उसने ठेकेदार से ज़रूरत से ज़्यादा सामान मंगवा लिया।"

“आखिरकार ऐसा हो ही गया। एक दिन उसकी तबीयत थोड़ी बेहतर हुई, वह नीचे आई और अपने बॉन्डों की सूची देखने लगी। शादी के शुरुआती दिनों में ही उसने उसे समझाया था कि बॉन्डों को बैंक में जमा न कराए; उसने उन्हें एक साधारण तिजोरी में रखा था। उसे पता चला कि उनमें से कुछ गायब हैं। वह उसके पास गया और मैं दरवाजे के बाहर से सुनता रहा। उसने ज्यादा कुछ नहीं कहा, बस इतना कहा: ‘मुझे लगा था कि मेरे पास ये हज़ार डॉलर वाले बॉन्ड और भी हैं।’ लेकिन इतना ही हमारे लिए यह समझने के लिए काफी था कि उसे सच्चाई पता चल गई है। फिर वह चुपचाप उठी और बिना कुछ कहे कमरे से बाहर चली गई।”

“इससे पहले कि हम कुछ समझ पाते, वह हॉल में टेलीफोन पर थी—शायद मदद मांगने की कोशिश कर रही थी। उसे एक शब्द भी बोलने का मौका नहीं मिला; वह उससे कहीं ज़्यादा तेज़ था। वह उसके पीछे कूद पड़ा और उससे फोन छीन लिया। वह उसके और सामने के दरवाजे के बीच में था, और वह मुड़ी और ऊपर चली गई, बिना कोई आवाज़ किए, चीखे भी नहीं। शायद उसे अभी भी एहसास नहीं था कि वह शारीरिक खतरे में है, उसने सोचा कि वह अपने कपड़े पहनकर घर से निकल जाएगी।”

“उसने मुझसे कहा, ‘बाहर जाओ और आगे इंतज़ार करो। यह सुनिश्चित कर लो कि सड़क पर या खेतों में कहीं भी कोई नज़र न आए।’ मैं बाहर गई, देखा, अपना हाथ उठाया और फिर नीचे कर दिया, जैसे उसे आगे बढ़ने का इशारा कर रही हो। वह उसके पीछे सीढ़ियों से ऊपर चला गया।”

अंदर से कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। चीखने की भी नहीं, कुर्सी गिरने की भी नहीं। उसने बहुत चुपचाप किया होगा। थोड़ी देर बाद वह फिर दरवाजे पर आया। उसकी सांसें थोड़ी तेज़ चल रही थीं और चेहरा थोड़ा पीला पड़ गया था, बस इतना ही। उसने कहा, 'सब खत्म हो गया। मैंने उसे तकिए से दबाकर मार डाला। उसमें ज़्यादा ताकत नहीं बची थी।' फिर वह अंदर गया और उसके शरीर को तहखाने में ले गया। हमने उसे वहीं रखा जबकि वह दूसरी दीवार पर काम करने चला गया; जैसे ही दीवार काफी ऊंची हो गई, उसने उसे उसके पीछे रख दिया और काम पूरा कर दिया। उसने पूरे कमरे को दोबारा रंग दिया ताकि एक तरफ का हिस्सा बहुत नया न लगे।

फिर, बिना किसी चेतावनी के, वो लड़की पिछली रात अचानक आ गई। किस्मत से, उसी रात जो होटल में देर तक रुका हुआ था और कुछ बीयर पी रहा था। उसने उसे बस से उतरते ही पहचान लिया और उसे कार में बिठाकर बाहर ले आया। इससे उसे किसी से रास्ता पूछने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। हमने कुछ मिनटों के लिए ये बहाना बनाया कि उसकी माँ गहरी नींद में सो रही है, ताकि मैं उसे पीने के लिए दी गई चाय में नींद की गोली मिला सकूँ। उसके बाद उसे संभालना आसान हो गया; हमने उसे तहखाने में ले जाकर वहीं बेहोश रखा।

जो को उसके एक पत्र से याद आया कि उसने कहा था कि उसके पति ने उसका बीमा कराया था, तो इससे हमें अपना मौका मिल गया। अगले दिन मैंने उसके लिए एक लंबा-सा पत्र लिखा और उसे शहर भेज दिया, मानो वह कभी यहाँ आई ही न हो। फिर जब ब्लिस उसे ढूंढते हुए आया, तो मैंने उसे भी बेहोश करने की कोशिश की, ताकि हमें उसकी गैरमौजूदगी में उसे उसके घर ले जाने, वहाँ उसे खत्म करने और सारा इल्जाम उस पर लगाने का मौका मिल जाए। उसने खाना न लाकर और हमें छोड़कर हमारी योजना बिगाड़ दी। उसके बाद हमारे पास बस यही बचा था कि जो बस से पहले पहुँच जाए, उसके कपड़े पहले से ही वहाँ रख दे और पुलिस को परेशान कर दे। यह सिर्फ ब्लिस को रास्ते से हटाने के लिए था, ताकि उसे वहाँ ले जाना आसान हो जाए।

“आज रात जब हम उसे लेकर यहाँ पहुँचे, तो हमने शहर की सीमा के ठीक अंदर से उसके घर फोन किया। किसी ने जवाब नहीं दिया, इसलिए लगा कि हमारा प्रयास सफल रहा। लेकिन उस टायर फटने की

वजह से हमारा बहुत समय बर्बाद हो गया। मैं बाहर कार में बैठा रहा, वह बेहोशी की हालत में ज़मीन पर पड़ी थी। जब जो ने गड्ढा खोद लिया, तो वह बाहर आया और उसे अपने साथ अंदर ले गया।"

"हमें लगा कि सारा खतरा इसी छोर पर है। हमें पूरा यकीन था कि हम दूसरे छोर पर पूरी तरह सुरक्षित हैं; जो ने उस दीवार पर बहुत बढ़िया काम किया था। मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा कि आपको इतनी जल्दी इसका पता कैसे चल गया।"

"मैं एक आर्किटेक्ट हूँ, इसीलिए," ब्लिस ने गंभीर स्वर में कहा। "उस कमरे में कुछ ऐसा था जो मुझे परेशान कर रहा था। वह चौक पर नहीं था।"

जब ब्लिस अपने घर लौटा तो स्माइल्स बिस्तर पर लेटी हुई थी और वह फिर से सुंदर लग रही थी। जब उसने अपनी आँखें खोलीं और उसकी ओर देखा, तो उसकी आँखें पहले की तरह ही झुर्रीदार और मुस्कुराती हुई थीं।

"प्रिय," उसने कहा, "तुम्हारा मेरे पास होना कितना अच्छा लगता है। मैंने सबक सीख लिया है। मैं तुम्हें फिर कभी छोड़कर नहीं जाऊंगी।"

"बिल्कुल सही, तुम वहीं रहो जहाँ तुम्हें होना चाहिए, एड के साथ," उसने दिलासा देते हुए कहा, "और तुम्हारे साथ फिर कभी ऐसा कुछ नहीं होगा।"

हत्या हमेशा गति पकड़ती है

पेन घर के बाहर इंतज़ार कर रहा था कि बूढ़े बेन बरोज़ का मेहमान चला जाए, क्योंकि वह उससे अकेले में मिलना चाहता था। किसी की मौजूदगी में 250 डॉलर का कर्ज मांगना तो दूर की बात है, खासकर तब जब आपको पक्का यकीन हो कि आपका कर्ज ठुकरा दिया जाएगा और आपको खरी-खोटी सुनाई जाएगी।

लेकिन उस कंजूस बूढ़े के साथ हुई बातचीत के गवाह न बनाने के पीछे उसका एक और भी मजबूत कारण था। उसकी पिछली जेब में त्रिकोणीय आकार में मोड़ा हुआ बड़ा रुमाल एक खास मकसद के लिए था, और दूसरी जेब में रखा वह छोटा सा औजार—क्या उसका इस्तेमाल खिड़की खोलने के लिए नहीं किया जाना था?

झाड़ियों में छिपकर, रोशन खिड़की और उसके अंदर बैठे बरोज के चेहरे को देखते हुए, वह अपनी रची हुई विनती का बार-बार अभ्यास करता रहा, मानो वह अभी भी उसका इस्तेमाल करने वाला हो।

“श्री बरोज़, मुझे पता है देर हो चुकी है, और मुझे यह भी पता है कि आप मेरी मौजूदगी को याद नहीं करना चाहेंगे, लेकिन मजबूरी इंतज़ार नहीं कर सकती; और मैं बेहद मजबूर हूँ।” यह बात सुनने में अच्छी लगी। “श्री बरोज़, मैंने आपकी कंपनी के लिए दस साल तक ईमानदारी से काम किया, और इसके अस्तित्व के आखिरी छह महीनों में, इसे चलाने में मदद करने के लिए, मैंने स्वेच्छा से आधी तनख्वाह पर काम किया, इस भरोसे पर कि हालात सुधरते ही मेरी बकाया तनख्वाह पूरी कर दी जाएगी। इसके बजाय, आपने अपने दायित्वों को रद्द करने के लिए फर्जी दिवालियापन का सहारा लिया।”

फिर थोड़ी मीठी-मीठी बातें करके मामले को थोड़ा नरम किया। “मैं इतने सालों से आपके पास नहीं आया, और न ही अब कोई परेशानी खड़ी करने आया हूँ। अगर मुझे सच में लगता कि आपके पास पैसे नहीं हैं, तो भी मैं नहीं आता। लेकिन अब तो सबको पता चल ही गया है कि दिवालियापन का नाटक किया गया था; आपके रहन-सहन से साफ है कि आपने अपना निवेश बचा लिया; और मैंने हाल ही में सुना है कि आपने एक फर्जी कंपनी को दूसरे नाम से समर्थन दिया है ताकि वह आपके अधूरे काम को आगे बढ़ा सके। श्री बरोज़, मुझे छह महीने की आधी तनख्वाह के तौर पर जो रकम मिलनी है, वह ठीक ढाई सौ डॉलर है।”

इस बिंदु पर पॉलीन ने टिप्पणी की थी, "बिल्कुल सही मात्रा में गरिमा और आत्मसम्मान; न तो ढुलमुल या भावुक, बल्कि शांत और प्रभावी।"

और फिर एक धमाकेदार अंत के लिए, और हर शब्द सच था। “मिस्टर बरोज़, मुझे आज रात मदद चाहिए; यह और चौबीस घंटे इंतज़ार नहीं कर सकता। मेरे हर जूते के तलवे में पचास सेंट के सिक्के के आकार का छेद है; मैंने हर जूते के नीचे गत्ते का एक टुकड़ा फंसा रखा है। एक हफ्ते से हमारे यहाँ बिजली

और गैस नहीं है। कल सुबह एक अधिकारी आएगा जो हमारे बचे-खुचे फर्नीचर को बाहर निकाल देगा और दरवाज़ा सील कर देगा।"

"अगर मैं इस मामले में अकेला होता, तो भी मैं किसी से मदद मांगे बिना ही इससे लड़ता रहता। लेकिन, श्रीमान बरोज़, मुझे घर पर अपनी पत्नी का भरण-पोषण करना है। शायद आपको वह याद न हो, एक प्यारी सी काली बालों वाली लड़की जिसने कभी आपके दफ्तर में एक-दो महीने के लिए स्टेनोग्राफर का काम किया था। आप उसे अब तो बिल्कुल नहीं पहचान पाएंगे—पिछले दो सालों में उसकी उम्र बीस साल बढ़ गई है।"

बस इतना ही। इससे ज्यादा कोई कुछ कह नहीं सकता था। फिर भी पेन को पता था कि वह हार चुका है, इससे पहले कि वह इस बारे में एक शब्द भी बोले।

वह बूढ़े आदमी के आगंतुक को नहीं देख सका। आगंतुक खिड़की की पहुँच से बाहर था। बरोज़ खिड़की के ठीक सामने बैठा था, उसका चेहरा पेन की ओर था। पेन उसके पतले होंठों वाले छोटे मुंह को हिलते हुए देख सकता था। उसने एक-दो बार लापरवाही से हाथ उठाया। फिर वह सुनने का नाटक करता हुआ प्रतीत हुआ और अंत में धीरे से सिर हिलाया। उसने अपनी तर्जनी उंगली ऊपर उठाई और हिलाई, मानो अपने श्रोता को कुछ समझाना चाहता हो। उसके बाद वह उठा और कमरे में और अंदर चला गया, लेकिन खिड़की के सामने से हटा नहीं।

वह दूर वाली दीवार के सहारे खड़ा था, हाथ वहाँ लटकी एक टेपेस्ट्री की ओर बढ़ाए हुए था। पेन ने गर्दन झुकाकर, आँखें गड़ाकर देखा। ज़रूर उसके पीछे कोई तिजोरी होगी जिसे वह बूढ़ा आदमी खोलने ही वाला था।

काश उसके पास दूरबीन होती।

पेन ने देखा कि बूढ़ा कंजूस रुका, अपना सिर घुमाया और दूसरे व्यक्ति से कुछ निवेदन किया। अचानक एक हाथ ने पर्दे की डोरी को पकड़ा और उसे नीचे तक खींच लिया।

पेन ने दांत पीस लिए। वह बूढ़ा आदमी कोई जोखिम नहीं लेना चाहता था, है ना? ऐसा लगता था मानो वह मन ही मन सब कुछ जान लेता हो, उसे पता हो कि बाहर कोई है। लेकिन एक उम्मीद की किरण बाकी थी, नीचे से रोशनी की एक लकीर दिख रही थी। पेन अपने छिपने की जगह से बाहर निकला और खिड़की के पास चला गया। उसने अपनी नज़रें खिड़की पर गड़ा दीं, बुरोज की डायल घुमाती हुई सुई पर, बाकी सब कुछ भूलकर।

बाईं ओर तीन-चौथाई घूमें, लगभग उस जगह तक जहाँ घड़ी के डायल पर 8 होता है। फिर वापस लगभग उस जगह तक जहाँ 3 होता है। फिर दूसरी तरफ वापस, इस बार 10 तक। काफी आसान है। उसे यह याद रखना होगा—8-3-10।

बरोज़ अब उसे खोल रहा था और एक कैशबॉक्स निकाल रहा था। उसने उसे मेज पर रखा और खोला। पेन की आँखें सख्त हो गईं और उसका मुँह गुस्से से टेढ़ा हो गया। देखो, कितना सारा पैसा! उस बूढ़े आदमी का झुर्रीदार हाथ उसमें गया, नोटों का एक बंडल निकाला और उन्हें गिना। उसने कुछ नोट वापस रखे, बाकी

को दोबारा गिना और उन्हें मेज पर रख दिया, जबकि वह कैशबॉक्स वापस ले गया, तिजोरी बंद की और पर्दे को सीधा किया।

इस समय एक धुंधली आकृति थोड़ी सी आगे बढ़ी, छाया के बीच में इतनी करीब थी कि साफ दिखाई नहीं दे रही थी; लेकिन मेज पर रखे नोटों के छोटे से ढेर को मिटाए बिना। बरोज़ के पंजे जैसे हाथ ने उन्हें उठाया और आगे बढ़ाया। दूसरा हाथ, जो ज़्यादा चिकना था, उन्हें लेने के लिए बढ़ा। दोनों हाथ कांप रहे थे।

पेन ने सावधानी बरतते हुए अपने पुराने निगरानी स्थान पर वापसी की। उसे अब तिजोरी का पता था, बस यही मायने रखता था। वह सही समय पर पहुंचा था। एक पल बाद ही पर्दा ऊपर उठा, इस बार बरोज़ के हाथ ने उसकी रस्सी पकड़ी हुई थी। दूसरा व्यक्ति फिर से सीमा से बाहर चला गया था। बरोज़ उसकी पहुंच से बाहर निकलकर उसके पीछे गया, और कमरा अचानक अंधेरा हो गया। एक क्षण बाद बरामदे की छत में एक बत्ती टिमटिमा उठी।

पेन ने क्षण भर के मिले अवसर का फायदा उठाते हुए तुरंत घर के एक तरफ अपना ठिकाना बदल लिया ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उसकी उपस्थिति का पता न चल सके।

दरवाजा खुला। बरोज़ की कर्कश आवाज़ में संक्षिप्त "शुभ रात्रि" सुनाई दी, जिस पर जाते हुए आगंतुक ने कोई जवाब नहीं दिया। जाहिर तौर पर मुलाकात सौहार्दपूर्ण नहीं रही थी। दरवाजा फिर से हल्के से बंद हो गया। एक तेज़ कदम बरामदे को पार करके सीमेंट के रास्ते से होते हुए सड़क की ओर बढ़ा, उस जगह से दूर जहाँ पेन घर की दीवार से सटकर खड़ा था। उसने यह देखने की कोशिश भी नहीं की कि कौन है। इसके लिए बहुत अंधेरा था, और उसका मुख्य उद्देश्य अपनी उपस्थिति को छिपाए रखना था।

जब अज्ञात कदमों की आहट दूर जाकर थम गई, तो पेन उस जगह पर चला गया जहाँ से वह घर के सामने वाले हिस्से पर नज़र रख सकता था। वह जानता था कि बरोज़ अब घर में अकेला है; वह इतना कंजूस था कि उसने एक पूर्णकालिक नौकर भी नहीं रखा था। हॉल के पीछे से आती हुई एक हल्की रोशनी दरवाजे के ऊपर लगे रोशनदान से एक-दो पल के लिए दिखाई दी। अब घंटी बजाने का समय था, अगर वह सोने से पहले उस बूढ़े आदमी से अपनी विनती करना चाहता था।

वह यह बात जानता था, फिर भी कुछ ऐसा था जो उसे बरामदे में जाकर घंटी बजाने से रोक रहा था। वह यह भी जानता था कि वह क्या बात है, लेकिन वह इसे स्वयं स्वीकार नहीं करना चाहता था।

झाड़ियों में छिपकर इंतज़ार करते हुए उसने खुद को बहाना बनाया, "वो सीधे-सीधे मना कर देगा और मेरे मुँह पर दरवाज़ा पटक देगा। और फिर जब वो मुझे यहाँ देख लेगा, तो सबसे पहले मुझे ही शक होगा जब —"

अब रोशनदान बुझ चुका था और बरोज़ ऊपर की ओर जा रहे थे। ऊपर की मंजिल पर एक बेडरूम की खिड़की रोशन हो उठी। अभी भी समय था; अगर वह अभी भी घंटी बजाते, तो बरोज़ फिर नीचे आकर दरवाजा खोल देते। लेकिन पेन ने कोई कदम नहीं उठाया, वह धैर्यपूर्वक वहीं इंतजार करते रहे।

अंततः बेडरूम की खिड़की पर काला रंग छा गया, और घर अब अंधेरा और निर्जीव हो गया था। पेन वहीं रुका रहा, अपने भीतर से लड़ता रहा। असल में यह कोई लड़ाई नहीं थी, क्योंकि वह तो बहुत पहले ही हार चुका था; फिर भी वह खुद को उस काम के लिए बहाने दे रहा था जो वह जानता था कि वह करने वाला है। अपने काम पर न जाने और अब तक जैसा रहा था वैसा ही बने रहने के बहाने—एक ईमानदार आदमी।

अगर वह आज रात खाली हाथ लौट आया तो अपनी पत्नी का सामना कैसे करेगा? कल उनका सारा फर्नीचर फुटपाथ पर पड़ा होगा। रात-रात भर उसने बरोज़ से निपटने का वादा किया था, और हर बार टालमटोल करता रहा, घर के पास से गुज़रता रहा, लेकिन हिम्मत जुटाकर उससे मिलने नहीं गया। क्यों? एक तो उसमें उस तीखे और व्यंग्यात्मक इनकार को सहने की हिम्मत नहीं थी, जिसके बारे में उसे पूरा यकीन था। लेकिन उससे भी ज़्यादा ज़रूरी बात यह थी कि उसे एहसास हो गया था कि एक बार अपनी बात रख देने के बाद, पैसे पाने का यह दूसरा, गैरकानूनी तरीका अपने आप रद्द हो जाएगा। इतने सालों बाद शायद बरोज़ उसे भूल ही गया होगा, लेकिन अगर वह उससे पहले ही बात करके उसे याद दिला दे तो...

उसने अपनी बेल्ट को मजबूती से कस लिया। खैर, आज रात वह उसके पास खाली हाथ तो नहीं लौटेगा, लेकिन वह इसके लिए बरोज़ से भिड़ने वाला भी नहीं था। उसे कभी यह जानने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी कि उसे यह कैसे मिला।

वह सीधा खड़ा हुआ और चारों ओर देखा। कोई नज़र नहीं आया। घर सुनसान था। उसके आसपास की अधिकांश सड़कें केवल दिखावे के लिए ही बनी थीं; उनके किनारे खाली ज़मीनें थीं। वह सावधानी से, लेकिन दृढ़ता से उस कमरे की खिड़की की ओर बढ़ा जहाँ उसने तिजोरी देखी थी।

कायरता सबसे साहसी साहस से भी अधिक जोखिम उठाने का कारण बन सकती है। वह छोटी-छोटी बातों से डरता था—घर जाकर अपनी पत्नी का खाली हाथ सामना करने से डरता था, किसी चिड़चिड़े बूढ़े बदमाश से पैसे मांगने से डरता था क्योंकि वह जानता था कि उसे बुरा-भला कहा जाएगा और भगा दिया जाएगा—और इसलिए वह एक घर में सेंध लगाने वाला था, अपने जीवन में पहली बार चोर बनने वाला था।

यह इतनी आसानी से खुल गया। मानो यह गैरकानूनी प्रवेश का निमंत्रण हो। वह चौखट पर खड़ा हो गया, और खिड़की के दोनों हिस्सों के बीच फंसी माचिस की डिब्बी का ढक्कन कुंडी के सिरे को हटाते हुए आगे बढ़ गया।

वह ज़मीन पर बैठ गया, अपने साथ लाए छोटे से औज़ार को नीचे वाले फ्रेम पर लगाया, और वह आसानी से ऊपर सरक गया। एक मिनट बाद वह कमरे में था, उसने खिड़की बंद कर दी ताकि बाहर से शक न हो। उसे आश्चर्य हुआ कि उसने अब तक क्यों सोचा था कि घर में सेंध लगाने के लिए कौशल और धैर्य की ज़रूरत होती है। इसमें कुछ भी मुश्किल नहीं था।

उसने मुड़ा हुआ रुमाल निकाला और उसे अपने चेहरे के निचले हिस्से पर बांध लिया। एक पल के लिए उसने सोचा कि वह ऐसा नहीं करेगा, और बाद में उसे एक तरह से अफसोस भी हुआ। और फिर भी, शायद

यह सब वैसे भी हो जाता, रुमाल के बिना भी। इससे उसे देखे जाने से तो नहीं रोका जा सकता था, बस उसकी पहचान होने से रोका जा सकता था।

उन्हें कमरे की बत्तियाँ न जलाने की समझ तो थी, लेकिन उनके पास टॉर्च जैसा कोई वैज्ञानिक उपकरण नहीं था। उन्हें साधारण माचिस का सहारा लेना पड़ा, जिसका मतलब था कि पर्दे को हटाने के बाद ही वे तिजोरी का डायल घुमा सकते थे।

यह एक खिलौना था, एक मामूली सी चीज। उसे सही संयोजन भी नहीं पता था, बस अंदाज़े से स्थिति पता थी—8-3-10। पहली बार में यह काम नहीं किया, इसलिए उसने इसे थोड़ा सा बदला, और फिर यह ठीक से काम करने लगा।

उसने दरवाजा खोला, कैश बॉक्स निकाला और उसे मेज पर रख दिया। मानो उसे रखते ही बिजली का मुख्य स्विच ऑन हो गया हो। कमरा अचानक रोशनी से भर गया और बरोज़ खुले दरवाजे पर खड़ा था, दुबले-पतले शरीर पर बाथरोब लिपटा हुआ था, बायां हाथ दीवार के स्विच की ओर बढ़ा हुआ था और दायां हाथ पेन पर ताने हुए बंदूक को पकड़े हुए था।

पेन के घुटने आपस में टकराने लगे, श्वासनली सिकुड़ गई, और वह कुछ देर के लिए मरणासन्न हो गया—ठीक वैसे ही जैसे कोई शौकिया खिलाड़ी अपने पहले ही प्रयास में रंगे हाथों पकड़ा जाए, पेशेवर खिलाड़ी कभी नहीं। उसके अंगूठे में अचानक तेज दर्द हुआ, और उसने यंत्रवत ही अपने हाथ में पकड़ी हुई जलती हुई माचिस निकाल ली।

“मैं बिल्कुल सही समय पर नीचे आ गया, है ना?” बूढ़े आदमी ने चिढ़ भरी संतुष्टि के साथ कहा। “यह कोई बहुत मजबूत तिजोरी तो नहीं है, लेकिन जब भी यह खुलती है तो मेरे बिस्तर के पास लगा बजर बजने लगता है—देखा?”

उसे सीधे वहीं कमरे में पेन के पास जाकर फोन से मदद मांगनी चाहिए थी, लेकिन उसके अंदर प्रतिशोध की भावना थी; वह खड़े होकर उसे चिढ़ाने से खुद को रोक नहीं सका।

“तुम्हें पता है इसके बदले तुम्हें क्या मिलेगा, है ना?” उसने अपने सिकुड़े हुए होंठों को चाटते हुए कहा। “और मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि तुम्हें इसका हर एक महीना भुगतना पड़े।” वह एक कदम आगे बढ़ा। “अब वहाँ से दूर हो जाओ। वापस वहीं चले जाओ और जब तक मैं—”

उसकी चमकती छोटी आँखों में अचानक संदेह की एक लहर दौड़ गई। “एक मिनट रुको। क्या मैंने तुम्हें पहले कहीं देखा है? तुममें कुछ जाना-पहचाना सा लग रहा है।” वह और करीब आया। “यह मुखौटा उतारो,” उसने आदेश दिया। “मुझे देखने दो कि तुम कौन हो!”

अपना चेहरा उजागर करने के ख्याल से ही पेन घबरा गया। उसने यह नहीं सोचा कि जब तक बरोज़ ने उसे बंदूक की नोक पर रखा हुआ है और वह भाग नहीं सकता, तब तक वह बूढ़ा आदमी देर-सवेर उसकी पहचान जान ही लेगा।

उसने अकारण भय से अपना सिर हिलाया।

“नहीं!” वह हांफते हुए, भारी स्वर में बोला और अपने मुंह पर रुमाल फुला लिया। उसने पीछे हटने की कोशिश भी की, लेकिन रास्ते में कोई कुर्सी या कुछ और था, इसलिए वह हट नहीं सका।

इससे बूढ़ा आदमी और करीब आ गया। “तो फिर मैं इसे तुम्हारे लिए उतार देता हूँ!” वह गुस्से से बोला। उसने बंदूक के निचले त्रिकोणीय सिरे की ओर हाथ बढ़ाया। ऐसा करते समय उसका दाहिना हाथ पेन के शरीर से थोड़ा हट गया, अब वह बंदूक से उसे पूरी तरह से नहीं ढक रहा था। लेकिन इस बदलाव को हल्के में लेना ठीक नहीं था।

कायरता। ऐसी कायरता जो आपको ऐसी जल्दबाजी करने पर मजबूर कर देती है जिससे बड़े से बड़ा साहस भी कांप उठता है। पेन ने बंदूक के बारे में सोचने के लिए एक पल भी नहीं रुका। उसने अचानक बूढ़े आदमी की दोनों भुजाओं को पकड़ लिया और उन्हें फैला दिया। यह इतना मूर्खतापूर्ण जोखिम था कि बरोज़ को इसकी उम्मीद नहीं थी, और इसी वजह से यह कारगर साबित हुआ। बंदूक से व्यर्थ ही क्लिक की आवाज़ आई, और वह छत की ओर इशारा कर रही थी; शायद वह जाम हो गई थी, या फिर पहला चैंबर खाली था और बरोज़ को इसका पता नहीं था।

पेन उस हाथ को दूर धकेलने की कोशिश करता रहा। लेकिन उसकी सबसे बड़ी चिंता रूमाल की ओर बढ़ते खाली हाथ को लेकर थी। उसने उस हाथ को दूसरी तरफ बहुत नीचे की ओर घुमा दिया, ताकि वह रूमाल उसकी पहुँच से बाहर हो जाए। उसने बूढ़े आदमी की पतली दाहिनी कलाई के चारों ओर लिपटी दुबली त्वचा को तब तक मरोड़ा जब तक दर्द के मारे हाथ खुल नहीं गया और बंदूक गिर गई। बंदूक उन दोनों के बीच ज़मीन पर गिर गई, और पेन ने अपने पैर के किनारे से उसे एक-दो फुट दूर धकेल दिया।

फिर उसने उसी पैर को बरोज़ के एक पैर के पीछे फंसाकर उसे धक्का दे दिया। बूढ़ा आदमी पीछे की ओर ज़मीन पर गिर पड़ा, और वह छोटा, असमान संघर्ष समाप्त हो गया। फिर भी गिरते हुए भी, वह विजयी था। पेन द्वारा उसे गिराने के लिए छोड़े जाने पर उसका बायां हाथ नीचे की ओर एक चाप में उठा, पंजे की तरह ऊपर उठा और रूमाल को अपने साथ खींच लिया।

वह अब वहीं पड़ा था, एक कोहनी के बल, और उसकी सांसें ऐसी तीखी थीं मानो पेन के दिल में चाकू चुभ गई हों। “तुम डिक पेन हो, बदमाश! मैं तुम्हें पहचान गया! तुम डिक पेन हो, मेरे पुराने कर्मचारी! तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी—”

बस इतना ही कह पाने का समय उसके पास था। यही उसकी अपनी मौत का फरमान था। पेन आत्मरक्षा की सहज प्रवृत्ति से प्रेरित होकर इस कदर तंत्रिका-मांसपेशीय दबाव में था कि उसे गिरी हुई बंदूक उठाने के लिए झुकने का भी होश नहीं था। अगले ही पल, बंदूक उसके हाथ में थी, उस आरोप लगाने वाले मुख की ओर तनी हुई थी, जिससे वह सबसे ज्यादा डरता था।

उसने ट्रिगर को झटका दिया। दूसरी बार क्लिक की आवाज़ आई—या तो गोली अटक गई थी या उस चैंबर में खाली हो गई थी। बाद में उसे उस क्लिक की आवाज़ का बोझ अपने ज़मीर पर उठाना पड़ा—जैसे उसे वो करने से रोकने का आखिरी मौका दिया गया हो जो वो करने वाला था। इसने इसे कुछ अलग बना

दिया, इसने उसके पास अब तक मौजूद उस अस्पष्ट बहाने को छीन लिया; इसने युद्ध की गर्मी में किए गए आवेगपूर्ण कृत्य को ठंडे दिमाग से की गई, सोची-समझी हत्या में बदल दिया, जिसे करने से पहले दो बार सोचने का पूरा समय था। और ज़मीर हम सबको कायर बना देता है। और वो तो शुरू से ही कायर था।

बरोज़ के पास दया की गुहार लगाने और प्रतिरक्षा का वादा करने के लिए भी पर्याप्त समय था। सच है, शायद वह इसे पूरा नहीं कर पाता।

“नहीं! पेन—डिक, नहीं! मैं कुछ नहीं कहूंगा। मैं उन्हें नहीं बताऊंगा कि तुम यहां थे—”

लेकिन बरोज़ जानता था कि वह कौन है। पेन ने ट्रिगर दबाया, और तीसरी गोली में मौत समा गई। इस बार बंदूक धमाका हुआ, और बरोज़ का पूरा चेहरा धुएं के गुबार से ढक गया। जब धुआं छटा, तब तक वह मर चुका था, सिर ज़मीन पर पड़ा था, उसके मुंह के कोने से खून की एक पतली लकीर बह रही थी, मानो उसका होंठ मात्र फटा हो।

पेन अंत तक एक नौसिखिया ही बने रहे। मृत्यु के बाद छाई खामोशी में, उनकी पहली धीमी आवाज में कही गई बात थी: "श्री बरोज, मेरा ऐसा करने का इरादा नहीं था—"

फिर वह सफेद चेहरे के साथ स्तब्ध होकर घूरने लगा। “अब मैंने कर दिया! मैंने एक आदमी को मार डाला—और इसके लिए तो मौत की सजा मिलती है! अब तो मेरी खैर नहीं!”

उसने बंदूक को देखा, मानो वह भयभीत हो गया हो, मानो जो कुछ हुआ हो, उसके लिए केवल बंदूक ही ज़िम्मेदार हो, वह नहीं। उसने रूमाल उठाया, बेसुध होकर हथियार को रगड़ा, फिर रुक गया। उसे लगा कि इसे अपने साथ ले जाना ज़्यादा सुरक्षित होगा, भले ही यह बरोज़ की ही बंदूक थी। उसे उंगलियों के निशानों से एक नौसिखिए जैसा डर था। उसे यकीन था कि वह इसे पूरी तरह से साफ़ नहीं कर पाएगा ताकि उसके हाथ लगाने के सारे निशान मिट जाएं; यहाँ तक कि साफ़ करने की कोशिश में भी, शायद कुछ निशान रह जाएं। उसने बंदूक को अपने कोट की अंदरूनी जेब में रख लिया।

उसने इधर-उधर देखा। उसे यहाँ से निकल जाना चाहिए; उसे यहाँ से निकल जाना चाहिए। उसके भीतर भागने की भावना जाग उठी थी, और वह जानता था कि यह भावना फिर कभी शांत नहीं होगी।

कैश बॉक्स अभी भी उसी मेज़ पर पड़ा था जहाँ उसने उसे छोड़ा था, और वह उसके पास गया और ढक्कन खोल दिया। उसे अब इस पैसे की ज़रूरत नहीं थी; यह उसके लिए बेमानी हो चुका था; यह खूनी पैसा बन गया था। लेकिन पकड़े जाने से बचने के लिए उसे कुछ पैसे तो चाहिए ही थे। उसने यह गिनने की ज़हमत नहीं उठाई कि उसमें कितने पैसे थे; देखने से तो लग रहा था कि कम से कम एक हज़ार तो होंगे ही। शायद पंद्रह-अठारह सौ भी।

उसे जितना मिलना चाहिए था, उससे एक पैसा भी अधिक वह नहीं लेता था।

वह केवल ढाई सौ रुपये ही लेगा, जिसके लिए वह यहाँ आया था। उसके भयभीत मन को लगा कि अगर वह केवल अपना हक लेकर संतुष्ट हो जाए, तो उसका अपराध कम जघन्य होगा। इससे यह स्पष्ट रूप से हत्या और डकैती नहीं कहलाएगा, और वह यह झूठ बनाए रख सकेगा कि यह महज़ एक कर्ज़ की वसूली थी,

जिसके साथ एक भयानक और अप्रत्याशित दुर्घटना भी हो गई। और आख़िरकार, अंतरात्मा ही सबसे खूंखार पुलिसकर्मी होती है।

और तो और, उसने जल्दी से पैसे गिनते हुए, उन्हें अपनी पैंट की पिछली जेब में डालते हुए और जेब का बटन बंद करते हुए महसूस किया कि वह अपनी पत्नी को यह नहीं बता सकता कि वह यहाँ आया था—वरना उसे पता चल जाएगा कि उसने क्या किया है। उसे उसे यह यकीन दिलाना होगा कि उसे पैसे कहीं और से मिले हैं। यह मुश्किल नहीं होना चाहिए। वह रात-रात भर बरोज़ से मिलने आने से बचता रहा था; उसने उसे साफ-साफ दिखा दिया था कि उसे अपने पूर्व बॉस से मिलने का ख्याल अच्छा नहीं लग रहा था। वही थी जो उसे लगातार उकसा रही थी।

आज रात ही उसने कहा था, "मुझे नहीं लगता कि तुम इसे कभी पूरा कर पाओगे। मैंने तो लगभग उम्मीद ही छोड़ दी है।"

तो इससे स्वाभाविक क्या हो सकता है कि उसे यही सोचने दिया जाए कि अंत में उसने ऐसा नहीं किया था? वह पैसों की मौजूदगी का कोई और स्पष्टीकरण सोच लेगा; उसे सोचना ही पड़ेगा। अगर आज रात नहीं तो कल। इस सदमे के थोड़ा कम होने और शांत मन से सोचने के बाद उसे यह बात सूझ जाएगी।

क्या उसने कुछ ऐसा छोड़ा था जिससे उसकी पोल खुल जाए, जिससे उसका पता चल सके? बेहतर होगा कि वह कैश बॉक्स वापस रख दे; हो सकता है उन्हें ठीक से पता न हो कि उस कंजूस के पास कितने पैसे थे। उसके जैसे लोगों के मामले में अक्सर ऐसा ही होता था। उसने अपने चेहरे पर रखे रुमाल से उसे ध्यान से पोंछा, फिर उसका डायल बंद किया और उसे भी हल्के हाथ से साफ किया। वह खिड़की के पास दोबारा नहीं गया; उसने बत्ती बुझाई और घर के सामने वाले दरवाजे से बाहर निकल गया।

उसने रूमाल से दरवाजा खोला और फिर उसे अपने पीछे बंद कर दिया, और सुनसान सड़क का अच्छी तरह से जायजा लेने के बाद, बरामदे से नीचे उतरा, सामने के रास्ते पर तेजी से बढ़ा, अंधेरे में फैली हुई धूसर रंग की फुटपाथ पर बाईं ओर मुड़ा, उस दूर स्थित ट्राम लाइन की ओर जिस पर वह इस विशेष स्टॉप पर, इस विशेष समय पर चढ़ने वाला नहीं था।

चलते-चलते उसने एक-दो बार तारों से भरे आकाश की ओर देखा। सब कुछ खत्म हो चुका था। बस इतना ही था। अब बस एक छिपा हुआ राज़। एक ऐसी याद जिसे वह किसी और के साथ साझा करने की हिम्मत नहीं करता था, यहाँ तक कि पॉलीन के साथ भी नहीं। लेकिन अपने भीतर वह बेहतर जानता था। यह खत्म नहीं हुआ था, बल्कि अभी शुरुआत थी। वह तो बस एक झलक थी। हत्या, ढलान से लुढ़कते बर्फ के गोले की तरह, जैसे-जैसे आगे बढ़ती है, गति पकड़ती जाती है।

उसे एक घूंट पीना ही था। उसे उस कड़वी सच्चाई को भुलाने की कोशिश करनी ही थी। वह इस बात को मन में लिए बिना खाली हाथ घर नहीं जा सकता था। ऐसी जगहें तो चार बजे तक खुली रहती हैं, है ना? वह ज़्यादा शराब नहीं पीता था; उसे ऐसी बातों की ज़्यादा जानकारी नहीं थी। हाँ, एक ऐसी ही जगह सड़क के

दूसरी तरफ थी। और यह जगह भी काफ़ी दूर थी, बरोज़ के घर से उसके अपने घर तक के रास्ते का दो-तिहाई से ज़्यादा हिस्सा।

वह खाली था। शायद यही बेहतर था; लेकिन शायद नहीं भी। उसे आसानी से याद किया जा सकता था। खैर, अब बहुत देर हो चुकी थी, वह पहले ही बार में पहुँच चुका था। "एक सीधी व्हिस्की।" बारमैन के मुड़ने से पहले ही उसने फिर कहा, "एक और।"

उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था; इतनी जल्दी उसे निगल जाना संदिग्ध लग रहा था।

“रेडियो बंद करो,” उसने जल्दी से कहा। उसे ऐसा नहीं कहना चाहिए था; यह संदिग्ध लग रहा था। जब उसने ऐसा कहा तो बारमैन ने उसकी तरफ देखा। और सन्नाटा और भी बदतर हो गया। असहनीय। खतरे के वो धड़कते ढोल। “कोई बात नहीं, इसे फिर से चालू कर दो।”

"अपना मन बना लीजिए, महोदय," बारमैन ने हल्के से फटकार लगाते हुए कहा।

ऐसा लग रहा था कि वह सब कुछ गलत कर रहा है। उसे तो शुरू से ही यहाँ आना ही नहीं चाहिए था। खैर, वह निकल जाएगा, इससे पहले कि वह और भी बड़ी मुसीबत में पड़ जाए। "कितने पैसे?" उसने आधा डॉलर और पच्चीस सेंट का नोट निकाला, बस इतना ही उसके पास था।

“अस्सी सेंट।”

उसका पेट थोड़ा सिकुड़ गया। इतना पैसा! वह इस बात का ज़िक्र नहीं करना चाहता था, वरना उसके चेहरे पर साफ़ दिख जाता। "ज़्यादातर जगहों पर एक ड्रिंक के पैंतीस डॉलर लगते हैं।"

“यह ब्रांड नहीं। आपने बताया नहीं था।” लेकिन बारटेंडर अब सतर्क हो गया था, उसे शक था कि कोई बिल नहीं देगा। वह काउंटर के ऊपर, ठीक उसके सामने झुक गया था, ताकि वह उसके हाथों की हर हरकत पर नज़र रख सके।

उसे दूसरा ड्रिंक ऑर्डर नहीं करना चाहिए था। सिर्फ़ एक पैसे के लिए उसे वो सारा पैसा इस आदमी की आँखों के सामने निकालना पड़ेगा। और शायद कल उसे याद आ जाए, पेन के यहाँ के अजीबोगरीब बर्ताव को देखकर!

शौचालय कहाँ है?

"वो दरवाजा, सिगरेट मशीन के ठीक पीछे।" लेकिन बारमैन अब साफ तौर पर संदेह में था; पेन को उसके लगातार घूरने के तरीके से यह पता चल गया था।

पेन ने उसके पीछे दरवाजा बंद किया, अपने कंधों से उसे सील किया, अपनी पिछली जेब के बटन खोले और पैसों में सबसे छोटा नोट ढूंढने लगा। दस का नोट सबसे छोटा था, और वह भी सिर्फ एक ही था; उसी से काम चलाना पड़ेगा। उसने खुद को ऐसी स्थिति में फंसाने के लिए कोसा।

अचानक उसके पीछे दरवाजा ज़ोर से खुला। ज़ोर से नहीं, पर उसे इसकी उम्मीद नहीं थी। इससे वह आगे की ओर गिर पड़ा और उसका संतुलन बिगड़ गया। उसके हाथ में ढीले-ढाले ढंग से पकड़े हुए पैसों का

गुच्छा ज़मीन पर बिखर गया। बारमैन का सिर खुले दरवाजे से दिखाई दिया। वह कहने लगा, "मुझे तुम्हारा बर्ताव पसंद नहीं आ रहा। चलो, मेरे यहाँ से चले जाओ—" तभी उसकी नज़र पैसों पर पड़ी।

बरोज़ की बंदूक हमेशा से ही उसके कोट की अंदरूनी जेब में रखने के लिए एक भारी और असुविधाजनक चीज़ थी। उसका हैंडल बहुत बड़ा था; वह अस्तर से बाहर निकला हुआ था। उसके अचानक आगे की ओर झुकने से वह हिल गया। ऐसा लगा जैसे वह अपने ही वजन से गिरने वाला हो। उसने उसे जेब में रखने के लिए कसकर पकड़ लिया।

बारमैन ने उस इशारे को देखा और उसके पास आकर धीमी आवाज़ में कहा, "मुझे ऐसा ही लगा था!" जिसका मतलब कुछ भी नहीं या बहुत कुछ हो सकता था।

वह बरोज़ जैसा कोई साधारण व्यक्ति नहीं था; वह बैल की तरह ताकतवर था। उसने पेन को दीवार से सटाकर लगभग बेबस हालत में वहीं रोके रखा। फिर भी, अगर वह चुप रहता, तो शायद ऐसा न होता। लेकिन उसने मुँह फुलाकर चिल्लाया: “पुलिस! लूट! मदद!”

पेन ने अपनी बची-खुची चेतना भी खो दी, उसका शरीर हाथों की गति के एक धुंधले चक्र की तरह हो गया, जिसे नियंत्रित करना या रोकना असंभव था। बारमैन के पेट पर कुछ ज़ोर से फटा, मानो उसने अपनी कमर में पटाखा छिपा रखा हो।

वह खांसते-खांसते फर्श पर गिर पड़ा और इस दुनिया से विदा हो गया।

एक और। अब दो। एक घंटे से भी कम समय में दो। पेन ने इन शब्दों पर विचार नहीं किया; वे मानो उस पर चमक रहे थे, जैसे किसी बाइबिल की कहानी की तरह, गंदे शौचालय की दीवारों पर आग की लपटों में उकेरे गए हों।

वह सफेद एप्रन पहने हुए उस लेटे हुए व्यक्ति के ऊपर से ऐसे अकड़कर गुजरा मानो वह ऊंचे खंभों पर खड़ा हो। उसने दरवाजे की दरार से बाहर देखा। बार में कोई नहीं था। और शायद बाहर गली में किसी ने उसकी आवाज नहीं सुनी होगी; क्योंकि आवाज को दो दरवाजों से होकर गुजरना था।

उसने उस मनहूस चीज़ को दूर रख दिया, वह चीज़ जो उसके पास होने मात्र से ही मौत फैला रही थी। अगर वह उसे बरोज़ के घर से अपने साथ न लाया होता, तो वह आदमी अब तक ज़िंदा होता। लेकिन अगर वह उसे अपने साथ न लाया होता, तो अब तक पहले कत्ल के आरोप में उसे गिरफ्तार कर लिया गया होता। हथियार को दोष क्यों दें, भाग्य को ही क्यों न दोष दें?

पैसे ज़मीन पर बिखरे पड़े थे। वह उकड़ू बैठा, एक-एक नोट उठाने लगा और गिनता चला गया। बीस, चालीस, साठ, अस्सी। कुछ नोट लाश के एक तरफ थे, कुछ दूसरी तरफ; उसे इस खौफनाक कागज़ों की खोज में कई बार लाश के ऊपर से जाना पड़ा। एक नोट तो उसके नीचे आधा दबा हुआ था, और जब उसने उसे किसी तरह निकाला, तो उसके किनारे पर खून का एक निशान था। उसने मुंह बनाया, उसे बाहर निकाला और पोंछ दिया। कुछ खून तो लगा ही रह गया, ज़ाहिर है।

अब उसके पास सब कुछ था, या उसे ऐसा लग रहा था। वह यहाँ एक मिनट भी नहीं रुक सकता था; उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसका दम घुट रहा हो। उसने जैसे-तैसे सब कुछ अपनी जेब में डाला और बटन बंद कर लिया। फिर वह धीरे से बाहर निकला, इस बार उसने अपने पीछे देखा कि उसने क्या किया है, आगे नहीं। इसी तरह वह शराबी को देखने से चूक गया, जब तक कि बहुत देर नहीं हो गई और शराबी ने उसे देख लिया था।

शराबी काफी नशे में था, लेकिन शायद इतना भी नहीं कि उस पर जोखिम लिया जाए। जब पेन पैसे निकालने में मग्न था, तब वह चुपके से अंदर घुस आया होगा। वह सिक्का रिकॉर्ड करने वाली मशीन पर गानों की सूची पढ़ने के लिए झुका हुआ था। पेन के वापस अंदर आने से पहले ही उसने अपना सिर उठा लिया, और अंदर फर्श पर पड़ी चीज़ को देखने से रोकने के लिए पेन ने जल्दी से दरवाजा बंद कर दिया।

“अरे, अब तो समय आ ही गया है,” शराबी ने शिकायत की। “थोड़ी सी सेवा क्यों न कर लें?”

पेन ने अपनी टोपी के किनारे से जितना हो सके अपना चेहरा ढकने की कोशिश की। "यहाँ का मालिक मैं नहीं हूँ," उसने बुदबुदाते हुए कहा, "मैं तो बस एक ग्राहक हूँ—"

शराबी उससे चिपकने वाला था। जैसे ही वह बगल से निकलने की कोशिश कर रहा था, वह पेन के कॉलर से चिपक गया। "मुझे ये सब मत बताओ। तुमने अभी-अभी अपना कोट वहाँ टांगा है; तुम्हें लगता है कि तुम आज रात के लिए जा रहे हो। खैर, जब तक मैं अपना ड्रिंक नहीं पी लेता, तुम नहीं जाओगे—"

पेन ने बिना ज्यादा हिंसा किए और हाथापाई शुरू किए बिना उसे छुड़ाने की कोशिश की। लेकिन वह जान बचाने के लिए मजबूती से चिपका रहा। या यूं कहें कि अनजाने में ही वह मौत के मुंह में जा रहा था।

पेन ने घबराहट के उफान को काबू में किया, जिसका अंतिम परिणाम वह पहले ही दो बार देख चुका था। किसी भी पल कोई सड़क से अंदर आ सकता था। कोई होश में। "ठीक है," उसने भारी साँस लेते हुए कहा, "जल्दी बताओ, क्या चाहिए?"

“अब ठीक है; अब तुम असली आदमी की तरह बर्ताव कर रहे हो।” शराबी ने उसे छोड़ दिया और वह बार के पीछे चला गया। “मैं तो हमेशा बढ़िया फोर रोज़ ही पीता हूँ, सच में—”

पेन ने शेल्फ से बेतरतीब ढंग से एक बोतल उठाई और उसे थमा दिया। “लो, पी लो। तुम्हें इसे अपने साथ बाहर ले जाना होगा, मैं—हम अब रात के लिए बंद कर रहे हैं।” उसने एक स्विच ढूंढा और उसे चालू कर दिया। इससे केवल कुछ बत्तियाँ ही बुझीं। बाकी बत्तियों को बंद करने का समय नहीं था। उसने बोतल से दूध पी रहे शराबी को जल्दी से अपने आगे बाहर निकाला और उन दोनों के पीछे दरवाजा बंद कर दिया, ताकि भले ही वह बंद न हो, फिर भी वह बंद दिखाई दे।

शराबी फुटपाथ पर चक्कर लगाते हुए जोर-जोर से शिकायत करने लगा, "तुम तो बड़े अच्छे आदमी हो, लेकिन पीने के लिए गिलास तक नहीं है!"

पेन ने उसे एक दिशा में हल्का सा धक्का दिया, मुड़ा और दूसरी दिशा में भाग गया।

असल सवाल यह था कि वह कितना नशे में था? क्या उसे पेन याद रहेगा? क्या वह उसे दोबारा देखकर पहचान पाएगा? रात भर गूंजती चीखों और गालियों से प्रेरित होकर वह तेज़ी से भागा। वह दोबारा ऐसा नहीं कर सकता था। एक घंटे में तीन जानें। वह ऐसा नहीं कर सकता था!

रात ढल रही थी जब वह अपने छोटे से आंगन में पहुंचा। वह लड़खड़ाते हुए सीढ़ियों पर चढ़ा, लेकिन दो ड्रिंक्स पीने की वजह से नहीं, बल्कि दो मौतों की वजह से।

आखिरकार वह अपने घर के दरवाजे (3-बी) के बाहर खड़ा था। लोगों को मारने के बाद ऐसा करना कितना अजीब लग रहा था—अपनी जेबों में चाबी ढूंढना और उसे अंदर लगाना, ठीक वैसे ही जैसे हर रात करता था। जब वह यहाँ से गया था तब वह एक ईमानदार आदमी था, और अब वह एक हत्यारा बनकर लौटा था। एक दोहरा हत्यारा।

उसे उम्मीद थी कि वह सो रही होगी। वह इस समय उसका सामना नहीं कर सकता था, कोशिश करने पर भी उससे बात नहीं कर सकता था। वह भावनात्मक रूप से पूरी तरह से उसमें डूबा हुआ था। वह उसके चेहरे को देखकर, उसकी आँखों में देखकर तुरंत समझ जाएगी।

उसने सामने का दरवाजा धीरे से बंद किया, दबे पांव बेडरूम में गया और अंदर झांका। वह वहां सो रही थी। बेचारी, बेचारी बेबस, एक हत्यारे से शादीशुदा।

वह वापस आया, बाहरी कमरे में जाकर कपड़े उतारे। फिर वहीं रुक गया। सोफे पर लेटने की भी बजाय, वह उसके बगल में फर्श पर दुबक कर बैठ गया, सिर और बाहें सोफे की सीट पर टिकाए हुए। डर के ढोल बजते ही रहे। वे बार-बार कह रहे थे, "अब मैं क्या करूँ?"

सूरज मानो आसमान में तेज़ी से ऊपर चढ़ गया, इतनी तेज़ी से कि वह शिखर पर पहुँच गया। उसने आँखें खोलीं तो सूरज पूरी तरह से ऊपर आ चुका था। वह दरवाज़े पर गया और अख़बार ले आया। सुबह के अख़बारों में अभी तक खबर नहीं छपी थी; आधी रात के बाद अख़बार छपने में बहुत देर हो चुकी थी।

वह मुड़ा तो देखा कि पॉलीन बाहर आ गई थी और उसका सामान उठा रही थी। "सारा सामान ज़मीन पर बिखरा पड़ा था, मैंने तुम्हारे जैसा आदमी कभी नहीं देखा—"

उसने कहा, “मत करो—” और उसकी ओर हाथ बढ़ाया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उसने बार में दूसरी बार नोटों को इतनी बेतरतीब ढंग से ठूंस दिया था कि वे उसकी पिछली जेब में उभरे हुए दिख रहे थे। उसने जेब खोली और नोट निकाले, जिनमें से कुछ फर्श पर गिर गए।

वह बस देखती रह गई। "डिक!" वह अविश्वास और अत्यधिक खुशी से झूम उठी। "बरोज़ नहीं? कहीं ऐसा तो नहीं कि आखिरकार तुमने—"

“नहीं!” वह नाम उसके दिमाग में ऐसे चुभ गया जैसे कोई जलती हुई सीख। “मैं उसके आस-पास भी नहीं गया था। उसका इससे कोई लेना-देना नहीं था!”

उसने सहमति में सिर हिलाया। "मुझे ऐसा नहीं लगा, क्योंकि—"

उसने उसे अपनी बात पूरी नहीं करने दी। वह उसके करीब आया और उसके दोनों कंधों को पकड़ लिया। “उसका नाम मुझसे दोबारा मत लेना। मैं उसका नाम दोबारा नहीं सुनना चाहता। मुझे यह किसी और से पता चला है।”

"कौन?"

उसे पता था कि उसे जवाब देना ही होगा, वरना उसे शक हो जाएगा। उसने गहरी सांस ली और नाम याद करने की कोशिश की। "चार्ली चालमर्स," उसने झट से कह दिया।

लेकिन उसने तो तुम्हें पिछले हफ्ते ही मना किया था!

“खैर, उसने अपना मन बदल लिया।” वह पीड़ा से उसकी ओर मुड़ा। “मुझसे और सवाल मत पूछो, पॉलीन; मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता! मैं पूरी रात सोया नहीं हूँ। बस यही बात है; यही मायने रखता है।” उसने उससे अपनी पतलून ली और कपड़े पहनने के लिए बाथरूम में चला गया। उसने पिछली रात बुरोज की बंदूक वहाँ बने कपड़े धोने की टोकरी में छिपा दी थी; काश उसने पैसे भी उसके साथ छिपा दिए होते। उसने बंदूक वापस उसी जेब में रख ली जहाँ उसने पिछली रात रखी थी। अगर उसने उसे वहाँ छुआ तो—

उसने अपने बाल संवारे। ढोल की आवाज़ अब थोड़ी धीमी हो गई थी, लेकिन वह जानता था कि वे फिर से तेज़ हो जाएँगे; यह तो बस तूफान से पहले की शांति थी।

वह फिर बाहर आया, और वह मेज पर कप रख रही थी। अब वह चिंतित लग रही थी। उसे आभास हो गया था कि कुछ गड़बड़ है। वह उससे पूछने से डर रही थी, वह देख सकता था, शायद उसे डर था कि वह क्या पता लगाएगी। वह यहाँ ऐसे नहीं बैठ सकता था जैसे कि यह कोई आम दिन हो। किसी भी पल कोई उसके पीछे यहाँ आ सकता था।

वह खिड़की के पास से गुजरा। अचानक वह अकड़ गया, पर्दा कसकर पकड़ लिया। "वह आदमी नीचे क्या कर रहा है?" वह उसके पीछे आकर बोली, "वहाँ खड़ा चौकीदार से बात कर रहा है—"

“क्यों, डिक, इसमें क्या बुराई है? दिन में एक दर्जन लोग रुककर मुझसे बातचीत करते हैं—”

वह फ्रेम के पीछे एक कदम पीछे हट गया। “वह हमारी खिड़कियों की तरफ देख रहा है! क्या तुमने देखा? वे दोनों मुड़े और इस तरफ देखने लगे! पीछे हटो!” उसने हाथ से उसे पीछे की ओर खींच लिया।

“हमें ऐसा क्यों करना चाहिए? हमने तो कुछ किया ही नहीं है।”

“वे इस विंग के प्रवेश द्वार से अंदर आ रहे हैं! वे ऊपर की ओर आ रहे हैं—”

"डिक, तुम इस तरह क्यों व्यवहार कर रहे हो, क्या हुआ है?"

“बेडरूम में जाओ और वहीं इंतज़ार करो।” वह डरपोक था, हाँ। लेकिन डरपोक भी कई तरह के होते हैं। कम से कम वह ऐसा डरपोक नहीं था जो औरत के लिबास में छिपता हो। उसने उसे अपने से पहले ही अंदर जाने के लिए उकसाया। फिर उसने एक मिनट के लिए उसका कंधा थाम लिया। “कोई सवाल मत पूछना। अगर तुम मुझसे प्यार करती हो, तो यहीं रहो जब तक वे चले न जाएँ।”

उसने उसके डरे हुए चेहरे पर दरवाजा बंद कर दिया। उसने बंदूक खोली। उसमें दो गोलियां बची थीं। "मैं उन दोनों को मार सकता हूँ," उसने सोचा। "अगर मैं सावधान रहूँ। मुझे रहना ही होगा।"

यह फिर से होने वाला था।

दरवाजे की घंटी की झनझनाहट ने उसे और भी दृढ़ बना दिया। वह जानलेवा धीमी गति से दरवाजे की ओर बढ़ा, उसके पैर ज़मीन पर मजबूती से टिके हुए थे। रास्ते में उसने मेज से अखबार उठाया, उसे फ़नल की तरह मोड़ा और अपना हाथ और बंदूक उसमें डाल दी। बगल में उसकी बांह का दबाव ही उसे मोड़े रखने के लिए काफी था। ऐसा लग रहा था मानो वह अभी-अभी पढ़ रहा था और लापरवाही से अखबार को अपनी बगल में दबा लिया हो। जब तक वह उसे नीचे की ओर झुकाए रखता, तब तक बंदूक प्रभावी ढंग से छिपी रहती।

उसने कुंडी खोली और धीरे-धीरे दरवाजे के साथ पीछे हट गया, उसका किनारा दो हिस्सों में बँटा हुआ था, उसका निहत्था आधा हिस्सा ही दिखाई दे रहा था। जैसे-जैसे खाई चौड़ी होती गई, चौकीदार सबसे पहले नज़र आया। वह बाहर था। उसके बगल में खड़े आदमी के सिर पर एक टोपी लटकी हुई थी, घनी मूंछें थीं और वह अपने दाँतों के बीच सिगार घुमा रहा था। वह देखने में ऐसा लग रहा था जैसे कोई तुम्हारा पीछा करने वाला हो।

चौकीदार ने लगभग छिपी हुई धृष्टता के साथ कहा, "पेन, मेरे पास एक आदमी है जो फ्लैट ढूंढ रहा है। मैं उसे तुम्हारा फ्लैट दिखाऊंगा, क्योंकि यह आज से उपलब्ध होगा। कोई आपत्ति है क्या?"

पेन दरवाजे के सहारे बेजान होकर ऐसे डगमगा रहा था जैसे हुक पर टंगा कोई थैला हो, जब वे उसके पास से गुजरे। "नहीं," उसने उदास स्वर में फुसफुसाया। "नहीं, आप आगे बढ़िए।"

उसने दरवाज़ा खुला रखा ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे नीचे तक पूरी तरह से उतर सकें। जैसे ही उसने दरवाज़ा बंद किया, पॉलीन ने घबराकर उसका हाथ पकड़ लिया। "तुमने मुझे उन्हें यह क्यों नहीं बताने दिया कि हम अब बकाया चुका सकते हैं और यहीं रुक रहे हैं? तुमने मेरा हाथ इस तरह क्यों दबाया?"

क्योंकि हम यहाँ नहीं रुक रहे हैं, और मैं नहीं चाहता कि उन्हें पता चले कि हमारे पास पैसा है। मैं नहीं चाहता कि किसी को भी पता चले। हम यहाँ से जा रहे हैं।

“डिक, क्या बात है? क्या तुमने कुछ ऐसा किया है जो तुम्हें नहीं करना चाहिए था?”

“मुझसे मत पूछो। सुनो, अगर तुम मुझसे प्यार करते हो, तो कोई सवाल मत पूछो। मैं थोड़ी मुश्किल में हूँ। मुझे यहाँ से निकलना होगा। वजह चाहे जो भी हो, मैं अकेले चला जाऊँगा।”

“तुम जहाँ भी जाओगी, मैं तुम्हारे साथ जाऊँगी।” उसकी आँखों में नमी आ गई। “लेकिन क्या इसे सुलझाया नहीं जा सकता?”

दो आदमी जिनकी याददाश्त तक नहीं पहुंच सकती। उसने कड़वी मुस्कान दी। "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

"क्या यह बुरा है?"

उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, जवाब देने में एक मिनट का समय लिया। “हालात बहुत बुरे हैं, पॉलीन। बस इतना ही जानना काफी है। मैं बस इतना ही चाहता हूँ कि तुम जानो। मुझे यहाँ से जितनी जल्दी हो सके निकलना होगा। एक पल में बहुत देर हो सकती है। चलो अभी शुरू करते हैं। वे आज किसी न किसी समय हमें बेदखल करने के लिए आएंगे ही; यह एक अच्छा बहाना होगा। हम इंतज़ार नहीं करेंगे, हम अभी निकलेंगे।”

वह तैयार होने के लिए अंदर गई। उसे तैयार होने में इतना समय लग गया कि वह लगभग पागल हो गया। उसे शायद इस बात का एहसास ही नहीं था कि यह कितना ज़रूरी था। उसने यह तय करने में उतना ही समय बर्बाद किया कि क्या ले जाना है और क्या छोड़ना है, मानो वे किसी वीकेंड पर गाँव घूमने जा रहे हों। वह बार-बार बेडरूम के दरवाजे पर जाकर कहता रहा, "पॉलीन, जल्दी करो! जल्दी करो, पॉलीन!"

वह बहुत रोई। वह एक आज्ञाकारी पत्नी थी; उसने उससे यह नहीं पूछा कि आखिर परेशानी क्या थी। वह बस बिना यह जाने कि असल में परेशानी क्या थी, रोती रही।

वह खिड़की के पास घुटनों के बल बैठा था, मानो कोई अलमारी के नीचे कॉलर का बटन ढूंढ रहा हो, तभी वह आखिरकार अपना छोटा सा बैग लेकर बाहर आई। उसने घबराया हुआ चेहरा उसकी तरफ किया। "बहुत देर हो चुकी है—मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकता। कोई पहले से ही इस जगह पर नज़र रख रहा है।"

वह उसके स्तर तक झुक गई, उसके बगल में सरक गई।

“सड़क के दूसरी तरफ सीधे देखो। उसे देख पा रहे हो? वह पिछले दस मिनट से हिला तक नहीं है। लोग बिना किसी कारण के ऐसे खड़े नहीं रहते—”

"हो सकता है वह किसी का इंतजार कर रहा हो।"

“वह है,” उसने उदास स्वर में कहा। “मैं।”

लेकिन आप निश्चित नहीं हो सकते।

“नहीं, लेकिन अगर मैं खुद को दिखाकर इसे परखने की कोशिश करूं, तो जब तक मुझे पता चलेगा तब तक बहुत देर हो चुकी होगी। तुम अकेले जाओ, मुझसे आगे।”

“नहीं, अगर तुम रुकते हो, तो मुझे भी तुम्हारे साथ रहने दो—”

“मैं नहीं रुक रही; मैं नहीं रुक सकती! मैं तुम्हारा पीछा करूंगी और कहीं मिलूंगी। लेकिन हम दोनों के एक साथ जाने से बेहतर होगा कि हम एक-एक करके निकलें। मैं छत से या तहखाने के रास्ते निकल सकती हूं। वह तुम्हें नहीं रोकेगा; वे तुम्हें ढूंढ नहीं रहे हैं। तुम अभी जाओ और मेरा इंतज़ार करो। नहीं, मेरे पास एक बेहतर उपाय है। तुम ये करो। तुम दो टिकट लो और मेरे इंतज़ार किए बिना डाउनटाउन टर्मिनल से ट्रेन में चढ़ जाओ—” वह कुछ पैसे अलग कर रहा था और बोलते हुए उसे उसके अनिच्छुक हाथ में थमा रहा था। “अब ध्यान से सुनो। मॉन्ट्रियल के दो टिकट—”

उसकी आँखों में निराशा की एक और झलक दिखाई दी। "क्या हम देश छोड़कर जा रहे हैं?"

जब आप हत्या कर देते हैं, तो आपका कोई देश नहीं रह जाता। “हमें जाना ही होगा, पॉलीन। अब, वहाँ के लिए हर रात आठ बजे की एक सीमित ट्रेन है। यह डाउनटाउन टर्मिनल से ठीक आठ बजे निकलती है। यह बीस मिनट बाद अपटाउन स्टेशन पर पाँच मिनट के लिए रुकती है। मैं वहीं से चढ़ूँगा। सुनिश्चित कर लो कि तुम भी उसी ट्रेन में हो, नहीं तो हम एक-दूसरे से चूक जाएँगे। दिन के कोच में मेरे लिए अपने बगल में एक सीट खाली रखना—”

वह हताशा से उससे लिपट गई। “नहीं, नहीं। मुझे डर है कि तुम नहीं आओगे। कुछ हो जाएगा। तुम इसे मिस कर दोगे। अगर मैं अभी तुम्हें छोड़कर चली गई तो शायद मैं तुम्हें फिर कभी न देख पाऊं। मुझे अकेले ही वहां जाना पड़ेगा, तुम्हारे बिना—”

उसने उसे दिलासा देने की कोशिश की, उसके हाथों को अपने हाथों के बीच दबाते हुए। “पॉलीन, मैं तुम्हें वचन देता हूँ—” लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ, वह अब एक हत्यारा था। “पॉलीन, मैं तुमसे कसम खाता हूँ—”

“यहाँ—इस पर। इस पर शपथ लो, नहीं तो मैं नहीं जाऊँगी।” उसने अपने पर्स में रखी एक छोटी सी सोने की चेन से बंधी कार्नेलियन की एक छोटी सी क्रॉस निकाली—उन कुछ चीज़ों में से एक जिसे उन्होंने गिरवी नहीं रखा था। उसने उसे हथेली में रखा और उसके दाहिने हाथ की हथेली उस पर रख दी। दोनों ने एक-दूसरे की आँखों में श्रद्धापूर्वक देखा।

उसकी आवाज़ कांप रही थी। “मैं कसम खाता हूँ कि कोई भी चीज़ मुझे उस ट्रेन में चढ़ने से नहीं रोक सकती; चाहे कुछ भी हो जाए, चाहे कोई भी मुझे रोकने की कोशिश करे, मैं तुम्हारे साथ उस ट्रेन में सवार होऊंगा। बारिश हो या धूप, ज़िंदा हो या मुर्दा, मैं आज रात साढ़े आठ बजे ट्रेन में तुमसे मिलूंगा!”

उसने उसे एक तरफ रख दिया, उनके होंठ एक पल के लिए लेकिन जोश से छू गए।

“जल्दी करो,” उसने आग्रह किया। “वह अभी भी वहीं है। वहाँ से गुजरते समय उसकी तरफ मत देखना। अगर वह तुम्हें रोककर पूछे कि तुम कौन हो, तो कोई दूसरा नाम बता देना—”

वह उसके साथ बाहर के दरवाजे तक गया और उसे सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए देखता रहा। आखिरी बार उसने फुसफुसाते हुए कहा: “डिक, मेरी खातिर सावधान रहना। आज रात तक तुम्हें कुछ भी न हो जाए।”

वह खिड़की के पास वापस गया, नीचे झुक गया, उसकी गाल की हड्डियाँ चौखट से सटी हुई थीं। एक-दो मिनट में वह उसके नीचे से बाहर आ गई। वह जानती थी कि खिड़कियों की तरफ देखना ठीक नहीं है, हालाँकि ऐसा करने की तीव्र इच्छा ज़रूर हुई होगी। वह आदमी अभी भी वहीं खड़ा था। ऐसा लग रहा था जैसे उसने उसे देखा ही न हो। यहाँ तक कि वह दूसरी दिशा में देखने लगा।

वह इमारत की कतार के पीछे ओझल हो गई; उनकी खिड़कियाँ इमारत के अंदर बने आंगन की ओर धँसी हुई थीं। पेन सोच रहा था कि क्या वह उसे फिर कभी देख पाएगा। ज़रूर देखेगा; उसे देखना ही होगा।

उसे एहसास हुआ कि अगर वह उसे न देखे तो उसके लिए बेहतर होगा। उसे अपने दुख में फँसाना उचित नहीं था। लेकिन उसने एक शपथ ली थी, और वह उसे निभाना चाहता था।

दो-तीन मिनट बीत गए। लुका-छिपी का खेल जारी रहा। वह खिड़की के पास चुपचाप बैठा रहा; दूसरा आदमी सड़क के उस पार चुपचाप खड़ा रहा। वह अब तक कोने तक पहुँच चुकी होगी। वह वहाँ से बस पकड़कर शहर जाएगी। उसे बस आने का कुछ मिनट इंतज़ार करना पड़ सकता है; हो सकता है वह अभी भी नज़र आ रही हो। लेकिन अगर वह आदमी उसका पीछा करने वाला होता, उसे रोकने वाला होता, तो अब तक शुरू कर चुका होता। वह वहाँ खड़ा नहीं रहता।

फिर, पेन के देखते ही देखते, उसने अचानक कदम बढ़ा दिया। उसने उस तरफ नीचे देखा, अपने अंदर से कुछ धुआँ फेंक दिया और उस दिशा में तेज़ी से बढ़ने लगा। उसके सिर को जिस तरह से उसने झुकाया था, उससे साफ था कि वह किसी को देख रहा था या किसी का पीछा कर रहा था। फिर वह नज़रों से ओझल हो गया।

पेन की सांसें तेज़ और गर्म होने लगीं। “मैं उसे मार डालूँगा। अगर उसने उसे छुआ भी, उसे रोकने की कोशिश भी की, तो मैं उसे दिन दहाड़े, खुलेआम सड़क पर मार डालूँगा।” यह अब भी डर और कायरता ही थी, हालाँकि अब इसे पहचानना लगभग नामुमकिन था।

उसने बंदूक को टटोला, अपना हाथ कोट के सीने के अंदर उस पर रखा, सीधा खड़ा हुआ, फ्लैट से बाहर भागा और सीढ़ियों से नीचे उतर गया। वह छोटे से बने पक्के आंगन को तेज़ी से पार करते हुए, आश्रय देने वाली इमारत की सीमा रेखा को पार कर गया और उसी दिशा में मुड़ गया जिधर वे दोनों गए थे।

फिर जैसे ही उसके सामने का नज़ारा स्पष्ट हुआ, वह लड़खड़ाते हुए अचानक रुक गया और उसे निहारने लगा। उसमें तीन अलग-अलग चीज़ें देखने लायक थीं। उसने पहले तो सिर्फ़ दो पर ही ध्यान दिया। एक थी कोने पर खड़ी बस। उसका आगे का एक तिहाई हिस्सा बाहर निकला हुआ था, दरवाज़ा खुला हुआ था। उसने पॉलीन की पीठ की एक झलक देखी, जब वह बिना किसी के साथ और बिना किसी छेड़छाड़ के बस में चढ़ रही थी।

दरवाजा अपने आप बंद हो गया और वह दृश्य को पार करते हुए दूसरी तरफ गायब हो गया। सड़क के दूसरी ओर, लेकिन पास ही, लंबे समय से पहरा दे रहा वह आदमी दूसरी बार रुका और पार्सल से लदी एक महिला को गुस्से से इशारे कर रहा था, जिसके साथ वह भी शामिल हो गया था। दोनों की आवाजें इतनी ऊंची थीं कि पेन तक बिना किसी परेशानी के पहुंच गईं।

"मैं आधे घंटे से वहां खड़ा हूं और मुझे अंदर आने देने के लिए कोई घर पर नहीं है!"

"अच्छा, क्या इसमें मेरी गलती है कि तुम चाबी भूलकर चले गए? अगली बार चाबी अपने साथ लेकर आना!"

पेन के घर के पास ही, सड़क के उस पार, जहाँ वह आराम से बैठा था, एक आकृति इमारत की दीवार से अलग होकर उसकी दृष्टि के सामने आ गई। वह व्यक्ति पूरे समय कुछ ही गज की दूरी पर था, लेकिन पेन की नज़रें दूर की चीज़ों पर टिकी हुई थीं; अब तक उसने उसे देखा ही नहीं था।

अचानक उसका चेहरा पेन के सामने आ गया। उसकी आँखें स्पष्ट इरादे से पेन की आँखों में गड़ी हुई थीं। वह देखने में तो ऐसा नहीं लगता था जैसे किसी को पकड़ने आया हो। लेकिन उसका व्यवहार वैसा ही था। उसने अपनी बनियान की जेब में कुछ ढूँढा, शायद कोई पहचान पत्र या दस्तावेज़। उसने धीमी, लड़खड़ाती आवाज़ में, जिसमें एक कठोर आदेश छिपा था, कहा, "ज़रा रुको, दोस्त। तुम्हारा नाम पेन है ना? मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ—"

पेन को अपने शारीरिक समन्वय को कोई संकेत देने की आवश्यकता नहीं थी; यह स्वतः ही काम कर रहा था। उसने महसूस किया कि उसके पैर उसे एक सरकते हुए छलांग की तरह वापस आंगन की शरण में ले आए। वह सार्वजनिक सीढ़ियों के नीचे तब तक पहुँच चुका था जब तक दूसरा व्यक्ति इमारत की सीमा रेखा को पार भी नहीं कर पाया था। वह अपने दरवाजे के पीछे तब तक पहुँच चुका था जब तक कि उस धीमी लेकिन स्पष्ट रूप से सुनाई देने वाली पदचाप शुरू नहीं हुई थी।

वह आदमी उसके पीछे अकेला ही आता हुआ प्रतीत हो रहा था। क्या उसे पता नहीं था कि पेन के पास बंदूक है? वह पता लगा लेगा। वह अब सीढ़ियों पर था। ऐसा लग रहा था कि उसे पता था कि किस मंजिल पर रुकना है, किस दरवाजे के सामने ठहरना है। शायद चौकीदार ने उसे बताया होगा। तो फिर वह पहले क्यों नहीं आया? शायद वह किसी के आने का इंतजार कर रहा था, और पेन ने इतनी जल्दी आकर उसकी योजना बिगाड़ दी।

पेन को एहसास हुआ कि यहाँ वापस आकर उसने खुद को फंसा लिया है। उसे छत पर जाकर दूसरी तरफ चले जाना चाहिए था। लेकिन शिकार किए जाने वाले प्राणी की स्वाभाविक प्रवृत्ति, चाहे वह चार पैरों वाला हो या दो, किसी छेद में छिपकर खुले से बाहर निकल जाने की होती है। अब बहुत देर हो चुकी थी: वह दरवाजे के ठीक दूसरी तरफ था। पेन ने अपनी तेज़ साँसों को शांत रखने की कोशिश की।

उसे खुद यह बात छलनी से छानी गई रेत की तरह कर्कश लगी।

उसने न तो घंटी बजाई और न ही दरवाजा खटखटाया; उसने आधे चुपके से, आधे ज़बरदस्ती करते हुए दरवाज़े का हैंडल घुमाया। पेन के मन में फिर से घबराहट का भंवर उठने लगा। वह उसे अंदर नहीं आने दे सकता था, न ही उसे भागने दे सकता था। वह जाकर दूसरों को भी अपने साथ वापस ले आएगा।

पेन ने बंदूक की नली दरवाजे के दोनों कब्जों के बीचोंबीच स्थित दरार की ओर तान दी। दूसरे हाथ से उसने कुंडी पकड़ी और उसे खोल दिया।

अब, अगर उसे मरना ही था, तो उसे यह दरवाजा खोलना चाहिए था। वह आदमी बार-बार नॉब घुमाने की कोशिश कर रहा था। आखिरकार दरवाजा फ्रेम के अंदर चला गया। जैसे ही वह घूमा, दूसरी तरफ की दरार भी चौड़ी हो गई। पेन ने बंदूक की नली को उसके सिर के ठीक बगल में दरार पर तान दिया।

टक्कर इतनी ज़ोरदार थी कि वह फ्लैट में जा गिरा, उसके केवल पैर और टखने ही बाहर थे।

पेन दरवाजे के पीछे से निकला, उसे घसीटते हुए अंदर ले गया और दरवाजा बंद कर दिया। वह रुका, उसके हाथ इधर-उधर टटोलने लगे। उसे एक बंदूक मिली, जो उसकी बंदूक से भारी और अधिक प्रभावी थी। उसने उसे उठा लिया। उसे नकदी से भरा एक बटुआ मिला। उसने उसे भी उठा लिया। उसने बैज की तलाश की।

उसकी बनियान की जेब में कुछ भी नहीं था, जिसे उसने नीचे की ओर बढ़ाते हुए देखा था। उसमें केवल सस्ते में छपे कार्डों का एक बंडल था। स्टार फाइनेंस कंपनी। ऋण। बिना किसी गारंटी के किसी भी राशि तक।

तो आखिरकार वह ऐसा व्यक्ति नहीं था; जाहिर तौर पर वह किसी तरह का सूदखोर था, जो पेन की मुश्किलों की आड़ में आकर्षित हुआ था।

चौबीस घंटे से भी कम समय में तीन बार।

उसे सहज ही पता चल गया था कि अब उसका अंत निश्चित है, भले ही पहले न पता चला हो। पहले दो बार जो घबराहट उसने महसूस की थी, अब वैसी नहीं रही। वह गोलियों से समय खरीदता रहा; अब बस यही एक तरीका था। और ब्याज दर बढ़ती ही जा रही थी; समय सीमा कम होती जा रही थी। अब तो पश्चाताप करने का भी समय नहीं था।

हॉल में बाहर दरवाजे खुलने लगे थे; आवाजें एक दूसरे को पुकार रही थीं। "वो क्या था—गोली चलने की आवाज़?"

"ऐसा लग रहा था जैसे यह 3-बी में हो रहा हो।"

उसे अब तुरंत निकलना होगा, वरना वह फिर से यहीं फंस जाएगा। और इस बार हमेशा के लिए। उसने शव को बाहर से नज़रों से ओझल किया, जैकेट के बटन बंद किए, गहरी सांस ली; फिर उसने दरवाज़ा खोला, बाहर कदम रखा और अपने पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया। बाकी सभी दरवाज़े खुले थे और उनमें से कोई न कोई झाँक रहा था। वे अभी तक हॉल के बीच में इकट्ठा नहीं हुए थे। वैसे भी, उनमें से ज़्यादातर औरतें थीं। एक-दो औरतें उसे बाहर निकलते देख दबे पांव पीछे हट गईं।

“कुछ नहीं था,” उसने कहा। “मैंने अभी-अभी उसमें एक बड़ा मिट्टी का घड़ा गिरा दिया था।”

वह जानता था कि वे उस पर विश्वास नहीं करेंगे।

वह सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा। तीसरी सीढ़ी पर पहुँचकर उसने किनारे की ओर देखा, और पुलिसवाले को ऊपर आते हुए देखा। किसी ने पहले ही फोन कर दिया था या सूचना भेज दी थी। उसने गाड़ी पीछे की, अपनी लैंडिंग के चारों ओर घूमा और वहाँ से ऊपर की ओर चला गया।

पुलिसवाले की आवाज़ आई, "जहाँ रुक जाओ!" वह अब तेज़ी से आ रहा था। लेकिन पेन भी उतनी ही तेज़ी से जा रहा था।

पुलिसवाले की आवाज आई, “अंदर जाओ, सब लोग! मैं गोली चलाने वाला हूँ!”

दरवाजे पटाखों की तरह धड़ाधड़ बंद होने लगे। पेन अचानक रेलिंग की ओर मुड़ा और सबसे पहले गोली चलाई।

पुलिसकर्मी को झटका लगा, लेकिन उसने रेलिंग पकड़ ली और खड़ा रहा। वह दूसरों की तरह आसानी से नहीं मरा। उसने अपनी बंदूक खोने से पहले चार बार गोली चलाई। तीन बार निशाना चूक गया और चौथी बार में गोली पेन को लगी।

गोली उसके सीने के दाहिनी ओर लगी और उसे सीढ़ियों की चौड़ाई में दूर तक गिरा दिया। दर्द से वह तड़प उठा, फिर दर्द कम हो गया। उसने पाया कि वह फिर से उठ सकता है। शायद इसलिए कि उसे उठना ही था। वह वापस आया और नीचे देखा। पुलिसवाला रेलिंग पर झुक गया था और अगले मोड़ तक फिसल रहा था, जैसे कोई बच्चा रेलिंग पर फिसलता है। बस फर्क इतना था कि वह पेट के बल, एक तरफ़ फिसल रहा था। फिर वह लैंडिंग पर गिर गया, लुढ़क गया और वहीं पड़ा रहा, पेन को देखे बिना ही ऊपर की ओर देखता रहा।

चार।

पेन छत पर चढ़ गया, लेकिन अब न तो तेज़ी से, न ही आसानी से। सीढ़ियाँ किसी एस्केलेटर की तरह थीं जो उसे अपने साथ नीचे खींच रही थीं। वह बगल वाले फ्लैट की छत पर गया, फिर वहाँ से नीचे उतरा और अपने फ्लैट के पीछे वाली गली में आ गया। दोनों इमारतें जुड़वाँ थीं, एक-दूसरे से सटी हुई। गश्ती गाड़ी उसके दरवाजे पर पहुँचकर, आँखों से ओझल हो चुकी थी और ज़ोरदार ब्रेक लगाकर रुक गई थी। वह इस तरफ की छतों के ऊपर से उसकी आवाज़ सुन सकता था।

उसकी कमर तक खून से लथपथ थी। फिर घुटने तक भीग गई। इन जगहों पर उसे चोट नहीं लगी थी, इसलिए ज़रूर बहुत खून बह रहा होगा। उसने एक टैक्सी देखी और उसे इशारा किया, टैक्सी पीछे हटी और उसे बिठा लिया। टैक्सी में बैठने में उसे दर्द हुआ। ड्राइवर ने जब उससे पूछा कि कहाँ जाना है, तो वह एक मिनट तक कुछ नहीं बोल पाया। खून की वजह से अब उसके जूते के नीचे मोजा चिपचिपा लग रहा था। वह चाहता था कि यह सब 8:20 बजे तक रुक जाए। उसे ट्रेन में पॉलीन से मिलना था, और इतने समय तक ज़िंदा रहना बहुत मुश्किल था।

ड्राइवर ने उसे सड़क से हटाकर मोड़ पर ले जाकर दूसरी तरफ मोड़ दिया, बिना उसके कुछ स्पष्ट कहने का इंतजार किए। उसने फिर पूछा कि कहाँ जाना है।

पेन ने कहा, "कितना समय हुआ है?"

"पौने छह बजे, कैप।"

जीवन बेहद छोटा था—और बेहद प्यारा भी। उसने कहा, "मुझे पार्क ले चलो और मुझे उसमें घुमाओ।" यही सबसे सुरक्षित तरीका था, यही एकमात्र जगह थी जहाँ वे तुम्हें नहीं ढूँढेंगे।

उसने सोचा, “मैं हमेशा से पार्क में गाड़ी चलाना चाहता था। कहीं जाना नहीं, बस धीरे-धीरे गाड़ी चलाना। मेरे पास पहले कभी ऐसा करने के लिए पैसे नहीं थे।”

अब उसके पास वह पैसा था। इतना पैसा कि उसे खर्च करने के लिए उसके पास समय ही नहीं बचा था।

गोली अभी भी उसके शरीर में ही होगी। उसकी पीठ में दर्द नहीं हो रहा था, इसलिए गोली बाहर नहीं निकली थी। किसी चीज़ ने उसे रोक दिया होगा। खून बहना बंद हो गया था। वह महसूस कर सकता था कि खून सूख रहा है। फिर भी दर्द उसे लगातार परेशान कर रहा था।

ड्राइवर ने यह देखा और पूछा: "क्या आपको चोट लगी है?"

"नहीं, मुझे बस थोड़ी सी ऐंठन है, बस इतना ही।"

"क्या मैं तुम्हें दवा की दुकान पर ले चलूँ?"

पेन ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, "नहीं, मुझे लगता है कि मैं इसे ऐसे ही रहने दूंगा।"

पार्क में सूर्यास्त। कितना शांत, कितना सरल। घुमावदार रास्तों पर लंबी परछाइयाँ। एक-दो देर से आने वाली दाईयाँ बच्चों की गाड़ी को घर की ओर धकेलती हुई। शाम के धुंधलके में बेंचों पर एक-दो आवारा बैठे हुए। एक छोटी सी झील, जिस पर एक नाव तैर रही है—छुट्टी पर आया एक नाविक अपनी प्रेमिका को नाव में घुमा रहा है। एक नींबू पानी और पॉपकॉर्न बेचने वाला अपना ठेला लेकर दिन भर के काम के बाद घर लौट रहा है।

तारे निकलने लगे थे। कभी-कभी पश्चिम के तांबे जैसे आकाश में पेड़ काले रंग के दिखाई देते थे। कभी-कभी सब कुछ धुंधला हो जाता था और उसे ऐसा लगता था जैसे वह किसी भंवर में फंसा हुआ हो। हर बार वह संघर्ष करता और होश में आता। उसे वह ट्रेन पकड़नी ही थी।

"जब आठ बज जाएं तो मुझे बता देना।"

“जी हाँ, साहब। अभी पौने सात बजे हैं।”

ड्राइववे में एक ऊबड़-खाबड़ जगह पर गाड़ी टकराते ही पेन के मुंह से एक कराह निकल गई। उसने कराह को दबाने की कोशिश की, लेकिन ड्राइवर ने उसे ज़रूर सुन लिया होगा।

“अब भी दर्द हो रहा है ना?” उसने सहानुभूति से पूछा। “तुम्हें इसका इलाज करवा लेना चाहिए।” फिर उसने अपनी बदहजमी के बारे में बताना शुरू किया। “मुझे ही ले लो। जब तक मैं तमाले और रूट बीयर नहीं खाता, तब तक ठीक रहता हूँ। लेकिन जैसे ही मैं तमाले और रूट बीयर खाता हूँ—”

वह अचानक चुप हो गया। वह पीछे देखने वाले शीशे में टकटकी लगाए देख रहा था। पेन ने सावधानी से अपनी काली पड़ चुकी कमीज के कॉलर को कसकर पकड़ लिया। वह जानता था कि अब कुछ भी करने को नहीं था।

ड्राइवर काफी देर तक चुप रहा। वह सोच रहा था, और वह धीरे-धीरे सोचने वाला व्यक्ति था। फिर अंत में उसने अनायास ही कहा, "क्या आप रेडियो सुनना चाहेंगे?"

पेन को पता था कि वह किसलिए आया है। उसने सोचा, "वह देखना चाहता है कि क्या वह इस मामले में मेरे खिलाफ कुछ सबूत जुटा सकता है।"

“ठीक है,” ड्राइवर ने आग्रह किया। “किराए में ही शामिल है; आपको कुछ अतिरिक्त नहीं देना पड़ेगा।”

“ठीक है,” पेन ने सहमति जताई। वह देखना चाहता था कि क्या वह खुद कुछ सुन सकता है।

इससे दर्द थोड़ा कम हो गया, जैसे संगीत हमेशा करता है। "मैं भी नाचता था," पेन ने धुन सुनते हुए सोचा, "लोगों को मारना शुरू करने से पहले।"

यह बहुत लंबे समय तक नहीं आया।

रिचर्ड पेन के लिए पूरे शहर में अलर्ट जारी किया गया है। पेन, जिसे उसके फ्लैट से बेदखल किया जाने वाला था, ने एक फाइनेंस कंपनी के कर्मचारी की गोली मारकर हत्या कर दी। फिर जब पुलिस अधिकारी हेरोल्ड कैरी अलर्ट पर पहुंचे, तो उनका भी वही हाल हुआ। हालांकि, ड्यूटी के दौरान अपनी जान गंवाने से पहले, गश्ती अधिकारी ने उस अपराधी को गंभीर रूप से घायल करने में कामयाबी हासिल की। भागने वाले अपराधी द्वारा छत की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर छोड़े गए खून के निशान इस बात की पुष्टि करते प्रतीत होते हैं। वह अभी भी फरार है, लेकिन शायद ज्यादा देर तक नहीं। इस आदमी से सावधान रहें—वह खतरनाक है।

“अगर तुम उसे अकेला छोड़ दोगे, उसे ट्रेन पकड़ने दोगे, तो कुछ नहीं होगा,” पेन ने उदास मन से सोचा। उसने अपने सामने अचानक स्थिर हो चुकी आकृति को देखा। “मुझे उसके बारे में कुछ करना होगा—अभी—लगता है।”

यह घटना ड्राइवर के लिए बहुत ही खराब समय पर घटी। पार्क से होकर गुजरने वाले कुछ मुख्य रास्ते काफी व्यस्त और रोशन थे। उन्हें किसी दूसरी कार से मदद मिल सकती थी। लेकिन घटना तब घटी जब वे एक अंधेरी, सुनसान सड़क पर थे और दूर-दूर तक कोई दूसरी गाड़ी नज़र नहीं आ रही थी। अगले मोड़ पर बाईपास सड़क फिर से व्यस्त सड़कों में से एक पर जाकर मिल गई। जहाँ वे थे, वहाँ से गाड़ियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

“यहाँ गाड़ी रोको,” पेन ने आदेश दिया। उसने बंदूक निकाल ली थी। वह बस उसे गोली मारकर बेहोश करने वाला था और फिर उसे 8:20 बजे के बाद तक बांधे रखने वाला था।

ड्राइवर की साँसों की आवाज़ से पता चल गया कि उसे पेन के बारे में खबर मिलते ही सब पता चल गया था, और वह बस किसी निकास द्वार के पास पहुँचने या लाल बत्ती मिलने का इंतज़ार कर रहा था। उसने ब्रेक लगाया। फिर अचानक वह तेज़ी से बाहर निकला और झाड़ियों में छिपने की कोशिश की।

पेन को उसे हर हाल में पकड़ना था, वरना वो पार्क विभाग को खबर दे देता। वे सारे प्रवेश द्वार बंद कर देते। पेन जानता था कि वो बाहर निकलकर उसका पीछा नहीं कर सकता। उसने नीचे की ओर इशारा किया, उसके पैर या टांग पर मारने की कोशिश की, बस उसे गिराने की।

ट्रिगर दबने से ठीक पहले ड्राइवर किसी चीज़ से ठोकर खाकर गिर पड़ा था। गोली उसकी पीठ में जा लगी होगी। जब पेन उसके पास पहुँचा तो वह बेजान था, लेकिन अभी भी जीवित था। आँखें खुली थीं, मानो उसकी नसें सुन्न हो गई हों।

वह खुद मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था, लेकिन किसी तरह उसे घसीटकर टैक्सी तक ले गया और अंदर बिठा दिया। उसने टोपी ली और अपने सिर पर पहन ली।

वह गाड़ी चला सकता था—या कम से कम मरने से पहले तो चला ही सकता था। वह स्टीयरिंग व्हील के नीचे बैठा और धीरे-धीरे गाड़ी को आगे बढ़ाया। गोली की आवाज़ खुले में दब गई होगी, या फिर उसे बैकफायर समझ लिया गया होगा; गाड़ियाँ बेखबर होकर आगे बढ़ रही थीं जब वह चुपके से उनमें घुस गया। जैसे ही मौका मिला, उसने गाड़ी को छोड़ दिया और अगली सुनसान, अंधेरी गली में मुड़ गया।

वह एक बार फिर रुका, पीछे के दरवाजे की ओर बढ़ा, यह देखने के लिए कि टैक्सी ड्राइवर कैसा है। वह किसी तरह उसकी मदद करना चाहता था। शायद उसे किसी अस्पताल के सामने छोड़ दे।

बहुत देर हो चुकी थी। ड्राइवर की आंखें बंद थीं। इस समय तक उसकी मौत हो चुकी थी।

पाँच।

अब इसका कोई अर्थ नहीं रह गया था। आखिरकार, मरते हुए व्यक्ति के लिए मृत्यु कुछ भी नहीं होती। "एक-दो घंटे में फिर मिलेंगे," उसने कहा।

उसने ड्राइवर का कोट उतारकर उसे ओढ़ा दिया, ताकि अंधेरे में खिड़की के पास आने पर उसके चेहरे की हल्की चमक दिखाई न दे। उसे दोबारा बाहर निकालकर पार्क में छोड़ना उसके बस की बात नहीं थी। किसी गुजरती कार की रोशनी उसे जल्दी ही देख सकती थी। और वैसे भी, उसे अपनी ही टैक्सी में आराम करने देना ज़्यादा उचित लग रहा था।

अब पौने आठ बज रहे थे। उसे स्टेशन के लिए निकलना चाहिए। रास्ते में ट्रैफिक जाम हो सकता है, और ट्रेन अपटाउन स्टेशन पर केवल कुछ मिनट ही रुकती है।

पार्क से बाहर निकलने के लिए उसे वापस मुख्य यातायात में शामिल होना पड़ा। वह ड्राइववे के किनारे-किनारे धीरे-धीरे चलता रहा। कई बार वह सड़क से उतर गया। इसलिए नहीं कि उसे गाड़ी चलाना नहीं आता था, बल्कि इसलिए कि उसका दिमाग सुन्न हो गया था। हर बार उसने खुद को और गाड़ी को उस स्थिति से बाहर निकाला। "ट्रेन, आठ बजकर बीस मिनट," वह अपने मन में लालटेन की तरह लहराता रहा। लेकिन एक फिजूलखर्ची करने वाले की तरह वह मिनटों में अपने जीवन के कई साल बर्बाद कर रहा था, और बहुत जल्द उसका समय खत्म होने वाला था।

एक बार अलार्म वाली कार चीखती हुई उसके पास से गुजरी, पार्क से होते हुए शहर के एक छोर से दूसरे छोर तक शॉर्टकट ले रही थी। उसने सोचा कि क्या वे उसका पीछा कर रहे हैं। उसने ज्यादा सोचा नहीं। अब कुछ भी मायने नहीं रखता था। बस आठ बजकर बीस मिनट—ट्रेन—

वह धीरे-धीरे स्टीयरिंग व्हील पर सिमटता चला गया और हर बार जब स्टीयरिंग व्हील उसकी छाती को छूता, तो गाड़ी बेकाबू होकर इधर-उधर हिलने लगती, मानो उसे भी दर्द महसूस हो रहा हो। दो-तीन बार उसके फेंडर्स को हल्की-हल्की खरोंचें आईं और उसे दूसरी दुनिया से, उस दुनिया से जिसे वह पीछे छोड़ रहा था, कुछ धुंधली आवाज़ें सुनाई दीं जो उसे गालियाँ दे रही थीं। उसने सोचा कि अगर उन्हें पता होता कि वह मर रहा है, तो क्या वे उसे ऐसे ही अपशब्द कहते?

एक और बात: वह एक्सीलरेटर पर लगातार दबाव बनाए नहीं रख पा रहा था। दबाव हर बार अचानक खत्म हो जाता, जैसे बिजली गुल हो जाती है, और गाड़ी रुकने लगती। ऐसा तब हुआ जब वह पार्क से निकल रहा था और बड़े गोलाकार निकास प्लाज़ा को पार कर रहा था। यह प्लाज़ा सिग्नलों से नियंत्रित था और बीच में हरी बत्ती होने पर उसकी गाड़ी रुक गई। एक प्लेटफॉर्म पर एक पुलिसवाला तैनात था। पुलिसवाले ने ज़ोर से सीटी बजाई। पुलिसवाले ने लगभग प्लेटफॉर्म से कूदकर पुलिसवाले को इशारा किया।

पेन वहीं असहाय होकर बैठा रहा।

पुलिसवाला शेर की तरह दहाड़ता हुआ उसकी ओर आ रहा था। पेन को अपनी टैक्सी के पीछे मौजूद किसी चीज़ से डर नहीं लग रहा था; वह उस तरह के डर से बहुत पहले ही बाहर निकल चुका था। लेकिन अगर उस पुलिसवाले ने उसे उस 8:20 बजे वाली ट्रेन में चढ़ने से रोकने की कोई कोशिश की तो—

आखिरकार उसने झुककर अपने पैर को टखने से पकड़ा, उसे ज़मीन से एक-दो इंच ऊपर उठाया, फिर वापस नीचे गिरा दिया, और टैक्सी चल पड़ी। यह हास्यास्पद था। लेकिन मृत्यु के कुछ पहलू अक्सर हास्यास्पद ही होते हैं।

पुलिसवाले ने उसे जाने दिया, क्योंकि उसे और अधिक देर तक हिरासत में रखने से पहले से मौजूद यातायात जाम की स्थिति और भी बदतर हो जाती।

अब वह लगभग मंज़िल पर पहुँच ही गया था। बस शहर के आर-पार एक सीधी दौड़, फिर उत्तर की ओर एक छोटी सी दौड़। अच्छा हुआ कि उसे यह याद था, क्योंकि अब उसे सड़क के संकेत दिखाई नहीं दे रहे थे। कभी-कभी इमारतें उसके ऊपर झुकी हुई सी लगती थीं, मानो उस पर गिरने ही वाली हों। कभी-कभी उसे ऐसा लगता था जैसे वह किसी खड़ी पहाड़ी पर चढ़ रहा हो, जबकि उसे पता था कि वहाँ कोई पहाड़ी नहीं थी। लेकिन वह जानता था कि ऐसा सिर्फ़ ड्राइवर की सीट पर उसके हिलने-डुलने की वजह से हो रहा था।

कुछ ही ब्लॉक आगे जाकर, एक बड़े, आलीशान अपार्टमेंट के ठीक सामने, ठीक उसी समय दरबान सीटी बजाते हुए बाहर भागा। उसने पेन के पीछे का दरवाज़ा पकड़ लिया और उसे पूरी तरह खोल दिया, इससे पहले कि पेन उसे रोक पाता, जबकि टैक्सी अभी भी चल रही थी। शाम की पोशाक पहने दो महिलाएं उसके पीछे से जल्दी से बाहर निकलीं, एक दूसरी से आगे।

“नहीं—ले लिया गया है,” पेन बार-बार कहने की कोशिश कर रहा था। वह इतना कमज़ोर था कि अपनी आवाज़ सुना नहीं पा रहा था, वरना वे उसे अनसुना कर देते। और वह एक पल के लिए भी अपना पैर ज़ोर से नहीं रख पा रहा था।

सबसे आगे वाली चीखी, “जल्दी करो, माँ। डोनाल्ड मुझे कभी माफ नहीं करेगा। मैंने उससे साढ़े सात बजे का वादा किया था—”

उसने टैक्सी के दरवाजे पर एक पैर रखा। फिर वह वहीं टकटकी लगाकर खड़ी रह गई। उसने अंदर का नजारा जरूर देख लिया होगा; पार्क की तुलना में यहां रोशनी बेहतर थी।

पेन टैक्सी को खुले दरवाजे समेत उससे छीनकर ले गया, उसे वहीं बीच सड़क पर अपनी लंबी सफेद साटन की पोशाक में भयभीत खड़ा छोड़ दिया, वह उसे देखती रह गई। वह इतनी स्तब्ध थी कि चीख भी नहीं सकी।

और फिर आखिरकार वह वहाँ पहुँच गया। उसे कुछ पल की राहत भी मिली। माहौल थोड़ा सा साफ़ हो गया। जैसे किसी थिएटर में शो खत्म होने के बाद, रात के अंधेरे में डूबने से पहले बत्तियाँ जल उठती हैं।

शहर के ऊपरी हिस्से में स्थित स्टेशन एक पुल के नीचे बना था, जिस पर रेलवे ट्रैक शहर की सड़कों के ऊपर से गुजरता था। वह उसके सामने रुक नहीं सकता था; वहाँ पार्किंग की अनुमति नहीं थी। और पार्किंग निषेध क्षेत्र के दोनों ओर टैक्सियों की लंबी कतारें लगी हुई थीं। वह एक छोटी सी बंद गली में मुड़ गया जो पुल को आस-पास की इमारतों से अलग करती थी। स्टेशन का एक पार्श्व प्रवेश द्वार पुल की ओर खुलता था।

चार मिनट। चार मिनट में उसे वापस आना था। वह शहर के बीच से निकल चुकी थी, अपने रास्ते पर थी, दोनों बिंदुओं के बीच कहीं तेज़ी से जा रही थी। उसने सोचा, "मुझे जल्दी चलना चाहिए। मुझे पहुँचने में बहुत मुश्किल हो सकती है।" उसे आश्चर्य हुआ कि क्या वह खड़ा भी हो पाएगा।

वह बस वहीं रहना चाहता था और अनंत काल को अपने ऊपर हावी होने देना चाहता था।

दो मिनट। वह ऊपर से गुजर रही थी, वह स्टील के पुल पर उसकी गड़गड़ाहट और टिक-टिक की आवाज सुन सकता था, फिर एक लंबी आह भरते हुए वह रुक गई।

टैक्सी के दरवाजे से स्टेशन के प्रवेश द्वार तक का फुटपाथ बेहद चौड़ा लग रहा था। उसने अपनी बची-खुची ताकत बटोरी, टैक्सी से बाहर निकला, और टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर चलना शुरू किया, हर मिनट उसके घुटने और नीचे झुकते जा रहे थे। स्टेशन के दरवाजे ने उसे सहारा दिया और वह सीधा खड़ा हो गया। वह प्रतीक्षालय में पहुँचा, और वह इतना बड़ा था कि उसे पता था कि वह उसे पार नहीं कर पाएगा। बस एक मिनट बचा था। इतना करीब, फिर भी इतना दूर।

ट्रेनर पहले ही इसकी घोषणा कर रहा था। “मॉन्ट्रियल एक्सप्रेस—आठ बजकर बीस मिनट!—पिट्सफील्ड, बर्लिंगटन, राउज़ पॉइंट, मॉन्ट्रियल! बोर्ड!”

वहाँ लंबी-लंबी बेंचों की कतारें थीं, जिनसे उसे प्रतीक्षाकक्ष की विशाल लंबाई को पार करने में मदद मिली। वह पहली पंक्ति की बाहरी सीट पर बैठ गया, खुद को थोड़ा संभाला, पाँच सीटें आगे बढ़ा और वहाँ जाकर बैठ गया; यही प्रक्रिया तब तक दोहराता रहा जब तक वह टिकट काउंटर के पास नहीं पहुँच गया। लेकिन समय बीत रहा था, ट्रेन चल रही थी, जीवन तेज़ी से भाग रहा था।

पैंतालीस सेकंड बचे थे। देर करने वाले आखिरी यात्री पहले ही ऊपर जा चुके थे। ऊपर जाने के दो रास्ते थे, सीढ़ियों की एक लंबी कतार और एक एस्केलेटर।

वह लड़खड़ाते हुए एस्केलेटर की ओर बढ़ा, और आखिरकार चढ़ गया। अगर उसने टोपी न पहनी होती तो वह टिकट काउंटर से बचकर नहीं निकल पाता—यह एक ऐसी स्थिति थी जिसकी उसने और पॉलीन ने कल्पना भी नहीं की थी।

"बस एक पार्टी में मिल रहा हूँ," उसने लगभग अस्पष्ट रूप से बुदबुदाया, और धीमी गति से चलने वाली ट्रेडमिल उसे ऊपर ले जाने लगी।

ट्रैक प्लेटफॉर्म पर ऊपर एक सीटी बजी। धुरों और पहियों के आधारों से गति की प्रारंभिक चरमराहट की आवाज आई।

एस्केलेटर पर अपने पैरों को स्थिर रखना उसके लिए बड़ी मुश्किल थी। उसके पीछे कोई नहीं था, और अगर वह एक बार भी गिर जाता तो सीधे लंबी ढलान के तल तक जा गिरता। उसने दोनों तरफ लगे ऊपर जाने वाले हैंड बेल्टों में अपने नाखून गड़ा दिए, जैसे जान बचाने के लिए कसकर पकड़ रखा हो।

बाहर सड़क पर कहीं शोरगुल शुरू हो रहा था। उसे एक पुलिसवाले की सीटी की तेज़ आवाज़ सुनाई दे रही थी।

एक आवाज ने चिल्लाकर पूछा, "वह किस तरफ गया?"

दूसरे ने जवाब दिया: "मैंने उसे थाने में जाते देखा।"

अंततः उन्हें वह चीज़ मिल गई जो टैक्सी में थी।

प्रतीक्षाकक्ष की गिरती छत से उसका नज़ारा ओझल होते ही, उसे चारों दिशाओं से दौड़ते कदमों की आवाज़ सुनाई दी। लेकिन अब उसके पास इस बारे में सोचने का समय नहीं था। आखिरकार वह ऊपर खुले चबूतरे पर आ गया था। गाड़ियाँ बड़ी तेज़ी से गुज़र रही थीं। एक प्रवेश द्वार दिखाई दिया, जिसमें एक कंडक्टर अंदर जा रहा था। पेन उसकी ओर बढ़ा, शरीर झुकाए, एक हाथ सीधा फैलाए, मानो किसी फासीवादी कोलैबोरेशन में हो।

उसने बिना कुछ बोले चीख मारी। कंडक्टर मुड़ा और उसे देखा। एक झटका लगा और वह अचानक अंदर प्रवेश कक्ष के फर्श पर गिर पड़ा। कंडक्टर ने उसे गुस्से भरी नज़र से देखा, उसके पीछे सीढ़ियाँ खींचीं और दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया।

बहुत देर हो चुकी थी, एक पुलिसवाला, कुछ पुलिसवाले और कुछ टैक्सी ड्राइवर एस्केलेटर शेड से बाहर निकले। उन्हें एक डिब्बे जितनी दूरी तक चिल्लाते हुए सुना जा सकता था। पीछे खड़े रेलकर्मियों ने दरवाजे नहीं खोले। अचानक लंबा, रोशन प्लेटफार्म बुझ गया और स्टेशन गायब हो गया।

शायद उन्हें लगा ही नहीं था कि उन्होंने उसे खो दिया है, लेकिन ऐसा ही था। बेशक, वे पहले ही फोन कर देते, वे ट्रेन रोककर उसे हारमोन स्टेशन पर उतार लेते, जहाँ बिजली की जगह कोयले से चलने वाली ट्रेनें चलती हैं। लेकिन वे उसे नहीं ला पाते। वह ट्रेन में नहीं होता। सिर्फ़ उसका शव होता।

हर इंसान जानता है कि उसकी मौत कब होगी; वह जानता था कि वह पांच मिनट भी जीवित नहीं रहेगा।

वह एक लंबी, जगमगाती हुई गलियारे में लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा। अब उसे उनके चेहरे मुश्किल से ही दिखाई दे रहे थे। लेकिन वह उसे पहचान लेगी; सब ठीक हो जाएगा। गलियारा खत्म हुआ और उसे एक और प्रवेश द्वार पार करना पड़ा। सहारा लेने के लिए कोई सीट न होने के कारण वह घुटनों के बल गिर पड़ा।

वह किसी तरह उठ खड़ा हुआ और अगली कार में बैठ गया।

एक और लंबी, रोशनी से जगमगाती हुई गलियारा, मीलों तक फैली हुई।

वह लगभग अंत तक पहुँच चुका था; उसे एक और प्रवेश द्वार दिखाई दे रहा था। या शायद वह अनंतकाल का द्वार था। अचानक, सबसे आखिरी सीट से एक हाथ बढ़ा और उसे अपनी ओर खींच लिया, और वहाँ पॉलीन का चेहरा चिंता से उसकी ओर देख रहा था। वह निचोड़े हुए कपड़े की तरह मुड़ा और उसके बगल में खाली बाहरी सीट पर बैठ गया।

"तुम यहीं से गुजरने वाले थे," उसने फुसफुसाते हुए कहा।

"मैं आपको ठीक से देख नहीं पा रहा था, लाइटें इतनी टिमटिमा रही थीं।"

उसने आश्चर्य से उनकी ओर देखा, मानो वे उसके लिए स्थिर हों।

“मैंने अपना वादा निभाया,” उसने धीमी आवाज़ में कहा। “मैं ट्रेन पकड़ने में कामयाब रहा। लेकिन ओह, मैं बहुत थक गया हूँ—और अब मैं सोने जा रहा हूँ।” वह धीरे-धीरे उसकी ओर खिसकने लगा। उसका सिर उसकी गोद में जा टिका।

उसने अपना हैंडबैग उस पर रखा हुआ था, और उसके गिरने से वह हिल गया। बैग ज़मीन पर गिर गया, खुल गया, और उसमें रखी सारी चीज़ें उसके पैरों के आसपास बिखर गईं।

उसकी धुंधली आंखें आखिरी बार खुलीं और कमजोर निगाहों से नोटों के उस छोटे से पैकेट पर टिक गईं, जिस पर एक रबर बैंड बंधा हुआ था और जो बाकी सब चीजों के साथ लुढ़क कर बाहर आ गया था।

“पॉलीन, इतना सारा पैसा—तुम्हें इतना पैसा कहाँ से मिला? मैंने तो तुम्हें सिर्फ ट्रेन के टिकट खरीदने के लिए ही पैसे दिए थे—”

“बरोज़ ने मुझे ये दिया। ये वही ढाई सौ हैं जिनके बारे में हम इतनी देर से बात कर रहे थे। मुझे पता था कि आखिर में तुम कभी उसके पास जाकर इसे नहीं मांगोगे, इसलिए मैं खुद उसके पास गया—कल रात तुम्हारे घर से निकलने के तुरंत बाद। उसने बिना कुछ कहे खुशी-खुशी मुझे दे दिया। मैंने आज सुबह तुम्हें ये बताने की कोशिश की, लेकिन तुमने मुझे उसका नाम लेने ही नहीं दिया...”

******* समाप्त *******

sjeet